ढूँढ़ऽतारी साँवरिया

(भोजपुरी उपन्यास)

आर.सी. निठुर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा तल्फत आग में पर गईल रही। अब जरीये जाएके रहे, दोसर कवनो उपाय ना रह गईल रहे। भागला से जान बचे के कवनों सवाल ना रहे। देह जरला से आ आगि के लहर से झउँसा के पहचाने लायक ना रहि गईल रहे। कूदला छऊकला में कवनों जान ना रहे, लागत रहे कि तुरते शान्त हो जईहें। आगि के सामने केहू के बश चलेला का?

क परकार के आगि होली। दावाग्नि, बाड़वाग्नि, जठराग्नि, कामाग्नि आ विरहाग्नि। एहनी में को बड़ छोट कहत सकुचाहीं। जे जवना आगि में परला उहे ओकर दवँक आ लहर सहेला आ समझेला। काहे कि एक बेर भारी नामी–गरामी दस हजार हाथी के बल अवला कीचक के देही में काम के आग ध लेले रहे त सैरन्ध्री से दाँत चिहार के खखनत रहे कि समयश्व वरारोहे ज्वलन्तं मन्मथानलम्।

ISBN: 978-93-84767-27-3
₹ 500.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12·1

श्री प्रमोद कुमार दीक्षित जी

सादर

[illegible]

10/2/[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढूँढ़ऽतारी साँवरिया

(भोजपुरी उपन्यास)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढूँढ़ऽतारी साँवरिया

(भोजपुरी उपन्यास)

आर० सी० निठुर

जानकी प्रकाशन
पटना नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ISBN : 978-93-84767-27-3

प्रथम संस्करण - 2015

© आर० सी० निठुर

प्रकाशक :

नन्द किशोर सिंह

जानकी प्रकाशन,

अशोक राजपथ, चौहट्टा,

पटना - 800 004.

शाखा कार्यालयः

1979, गंजमीरखान,

दरियागंज,

नई दिल्ली-110 002.

लेजर कम्पोज : शिला ग्राफिक, कंकड़बाग, पटना-800 020.

मुद्रक : एच० एस० ऑफसेट, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002.

Dhundhatari Sawaria (Bhojpuri Upanyas)

By: R.C. Nithur

Rs. 500.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

हमरा हाथ में भोजपुरी उपन्यास- 'दूँढ़ऽतारी साँवरिया' के पांडुलिपि बा, जवना के देख के बहुत खुशी हो रहल बा। खुशी के कारण ई बा कि एकरा माध्यम से हमरा एक रचनाकार श्री रामचन्द्र सिंह 'निठुर' जी के व्यक्तित्व के एगो अछुता आ हमरा खातिर अनजाना-अनदेखा पहलू से परिचित होखे के अवसर मिलल हा। अब तकले निठुर जी हमरा खातिर एगो सफल आ समर्पित शिक्षक के साथे-साथे हमारा जनपद के जानल-मानल शिक्षक नेता रहनी हा। भोजपुर जिला माध्यमिक शिक्षक-संघ के पाँच बरिस ले महामंत्री आ फेरू पाँच बरिस ले अध्यक्ष रहला के साथे-साथे उहाँ के राज्यों स्तर प हमेशा सक्रिय रहनी हा, एह बात से हम बखूबी परिचित रहनी हा बाकिर उहाँ के ई साहित्य-साधक रूप! हम एकरा से अपरिचित रहनी हा, ई कहे में हमरा संकोच त होता, बाकिर इहे सच्चाई बा। अपना एह अज्ञानता खातिर हम सच हूँ क्षमाप्रार्थी बानीं। भोजपुरी साहित्य संसार से सुपरिचित रउआ सभ पाठक भाई-बहिन लोग अपना स्वाभाविक उदारता के परिचय देते हमरा के माफ कर देब जा, एकर हमरा पूरा भरोसा बा।

निठुर जी अपना छात्रे-जीवन से साहित्य-साधना में लागल रहल बानीं, ई जानकारी हमरा सुखद आश्चर्य के कई गुना बढ़ा देलस हा। हिन्दी भासा आ साहित्य से 1960 में पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० कइला के बादे से उहाँ के लगातार सृजन-कार्य करत आ रहल बानी। उहाँ के एगो हिन्दी कहानी संग्रह आ उपन्यास (धारावाहिक) पहिलेहीं छप चुकल बा। प्रकाश्य उपन्यास 'दूँढ़ऽतारी साँवरिया' प्रकाशन-क्रम के हिसाब से उहाँ के कुल मिला के पांचवीं कृति ह। एकरा पहिले उहाँ के एगो अउर भोजपुरी उपन्यास प्रकाशित हो चुकल बा- 'खोलऽतानी'। ऊ एगो आंचलिक उपन्यास ह, जवना में वसंतपुर गाँव के केन्द्र में रख के आस-पास के गाँवन के जीवन आ आधुनिकता के रोसनी में ओकनी के जगला-सुगबुगइला के कहानी कहल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'खोलऽतानी' जहाँ वर्तमान केन्द्रित उपन्यास ह, ओकरा विपरीत 'ढूँढ़ऽतारी साँवरिया' पुराणकेन्द्रित उपन्यास बा। एकर कथावस्तु श्रीमद्भागवत महापुराण के नवम् आ दशम् अध्याय प आधारित बा। एकरा में परम्परा से चलल आवत आ भारतीय जनता के मन-मस्तिस्क में रचल-बसल राधा-कृष्ण के चिरनवीन अमर प्रणयगाथा के बहुते रोचक आ रसगर रूप में प्रस्तुत कईल गईल बा। एकरा के पढ़ला प महाकवि सूरदासजी के 'सूरसागर आ मैथिलकोकिल विद्यापति के 'पदावली' के स्मरण हो जात बा। ठेठ यथार्थ के धरातल प स्वाभाविक रूप से पनपल भौतिक आ मांसल प्रेम के बिरवा कइसे आध्यात्मिक आ अलौकिक प्रेम में बदल जाता, उपन्यासकार ओकरे वर्णन कइले बाड़न। विसय के अनुकूल भाषा-शैली के माध्यम से ऊ ओह समय आ परिवेश के कवना हद तक ले मूर्त्त कर पवले बाड़न, ई उपन्यास पढ़ला के बादे पता चली। वोइसे हमरा लेखे एह उपन्यास में प्रेम, भक्ति आ दर्शन के त्रिवेणी प्रवाहित भईल बा। हमरा एह कथन में अतिशयोक्ति बा कि स्वाभाविकता- एकर निर्णय हम रउआ सभे प छोड़त बानीं।

हम रामचन्द्र सिंह निठुरजी के एह उपन्यासकार रूप के सादर अभिनन्दन करत बानीं आ उहाँ से विनम्र निहोरा करत बानीं कि अपना एह सक्रियता के असहीं बनवले रहीं। भोजपुरी साहित्य के रउआ अइसन समर्पित साधकन के बहुत जरूरत बा।

आरा, 5 सितम्बर, 2015
(श्री कृष्ण जन्माष्टमी)

नीरज सिंह
(डॉ० नीरज सिंह)
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर,
भोजपुरी विभाग,
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,
आरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ढूँढ़ऽतारी साँवरिया" पं० रामचन्द्र दैवे 'निठुर' रचित एक प्रकार से राधा के जीवनी ह। ईहाँ के एकरा के उपन्यास के रूप देवे के प्रयास कइले बानीं बाकिर ई, उपन्यास से बेसी जीवनी बनि गइल बा।

राधा कृष्ण के आधार बना के भक्तिकाल के कवि लोग त अपना के आ अपना कविता के पवित्र कइबे कहनीं जा, रीतिकाल के कवि लोग भी शृंगार रस के स्रोतस्विनी बहवलीं जा आ उहाँ के कहेके परल – तोक विताई ना त राधा कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

निठुर जी भी 'ढूँढ़ऽतारी साँवरियाँ' लिख के अपनो लेखनी के पवित्र कइनीं साथे साथ भोजपुरी साहित्य के भी समृद्ध कइनीं। इहाँ के जवन काव्य-विधा के श्री गणेश कईनी ऊ एक प्रकार से नवीन नया बा।

एकरा पर हमरा सीधे गीत गोविन्द के प्रभाव लउकता। भाषा में कहीं कहीं अंग्रेजी शब्दन के प्रयोग अस्वाभाविक हो गइल बा।

एह कृति खातिर हम निठुरजी के धन्यवाद दे तानीं आ आशा करतानीं कि भविष्य में अपना नव-नव रचना से भोजपुरी भाषा के समृद्ध कर बि।

(डॉ० गदाधर सिंह)
अध्यक्ष, (पूर्व)
स्नातकोत्तर भोजपुरी – विभाग,
वीर कुँवर सिंह, विश्वविद्यालय,
आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ढूँढ़ऽतारी साँवरिया" श्री राम चन्द्र 'निठुर' द्वारा प्रेम वियोग पर एक अद्भुत रचना बा। राधिका अउर कृष्ण विरह वेदना के कहानी संसार प्रसिद्ध बा। कृष्ण के द्वारिका जा के बस गइला के बाद राधा के अपार दु:ख अउर विछोह के कथा वर्णन से बाहर बा। राधा के कृष्ण के वगैर उहे हाल भईल बा जइ से पानी के बिना मछली के तथा स्वाति बूंद खातिर चातक के।

सच्च पूछीं त विरहे प्रेम के कसौटी बा। राधा अउर कृष्ण के विछोह हम सभी के खातिर एक चिराग बा जेवन कई पीढ़ी तक रास्ता देखावत रही। राधा अउर कृष्ण के प्रेम कुछ लोग कहे ला कि शारीरिक ना रहे बल्कि दोनों के जिगर अउर आत्मा के कहानी बा जवना के लेके संसार आज मजाक उड़ावता। एह किताब में लेखक के आपन जीवन शैली के भी उभार बा जवना के कलाकार विरह वेदना के चह कबार देले बानीं। सच्चा प्रेम जीवन के खातिर आक्सीजन बा। मीरा बाई त साफ कह दे ले बाड़ी कि हमार तबे रोग जाई जब कृष्ण साँवरिया वैद होई हें। घायल के गति घायले जाने ला अउर खातिर त ई मजाक के विषय बा। लेकिन कृष्ण कइसन निर्दय रहन जे सोरह हजार एक सौ आठ के साथ रहते रहन अउरे राधा के छोड़ देले रेहन। कृष्ण के ईना चा हीं। कृष्ण त शायद राधा के भूलाई देलन, तबे त राधा आकुल व्याकुल होकर रातदिन रोवत रहतारी। अंत में त लागता कि कृष्ण अउर राधा के प्रेम एक तरफा रहे काहे कि कृष्ण द्वारिका छोड़के कहाँ पुन: गोकुल अईनी?

माननीय निठुर जी एक सुलझल विद्वान के साथ-ही-साथ हिन्दी साहित्य के जानल-मानल लेखक में से बानीं। इहाँ के भी पत्नी बिछोह भइल बा। हम हूँ ओही रोग के रोगी बानीं। प्रेम के बिना त ई जीवन मरूभूमि रेगिस्तान बा।

(डॉ०) महेन्द्र राय
अध्यक्ष,
अंग्रेजी विभाग,
बी० एस० एस० कॉलेज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढूँढ़ऽ तारी साँवरिया

(1)

राधा तल्फत आग में पर गईल रही। अब जरीये जाएके रहे, दोसर कवनो उपाय ना रह गईल रहे। भागला से जान बचे के कवनों सवाल ना रहे। देह जरला से आ आगि के लहर से झउँसा के पहचाने लायक ना रहि गईल रहे। कूदला छऊकला में कवनों जान ना रहे, लागत रहे कि तुरते शान्त हो जईहें। आगि के सामने केहू के बश चलेला का ?

क परकार के आगि होली। दावाग्नि, बाड़वाग्नि, जठराग्नि, कामाग्नि आ विरहाग्नि। एहनी में को बड़ छोट कहत सकुचाहीं। जे जवना आगि में परला उहे ओकर दवँक आ लहर सहेला आ समझेला। काहे कि एक बेर भारी नामी-गरामी दस हजार हाथी के बल अवला कीचक के देही में काम के आग ध लेले रहे त सैरन्ध्री से दाँत चिहार के खखनत रहे कि समयश्च वरारोहे ज्वलन्तं मन्मथानलम्।

ई आग केकारा नईखे लागल! मेहरारून में त ई के हुए के ना छोड़े। एकरा पीरी जे पर जाला उहे जानऽला। सती, लक्ष्मी, उर्मिला से बढ़ि के शाक्तिशाली आ दम-खमवाला कवन मेहरारू होइहें ? उहो लोगिनी भारी चौकस फेरा में पर गईला प जान बचावे खातिर का-का ना कइले रहे ?

‘डूब बची लक्ष्मी पानी में
सती आग में पैठ
रहे उर्मिला करें प्रतीक्षा
सहे सभी घर बैठ ।।’

राधा के देह विरहाग्नि से जरत-जरत खाली झउँसा ना गईल रहे, बलुक अतिना दूबर-पातर देह हो गईल रहे कि साँस लेस त दू-तीन हाथ पीछे आ साँस छोड़स त छव-सात हाथ आगे फेका जात रही। लाल टहऽ-टहऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोर शरीर आ कतरल पान अस ओठवाली राधा एकदम बेजान झाँवर हो गईल रही।

'इति आवत चलि जात उत,
रही उसासन साथ ।
रहे हिंडोरे से चढ़े
छ सातक हाथ ।।'

जे उनका के एह हालत में देखत रहे सभे चिहा जात रहे। देखऽलको अदिमियाँ के तनिको भर चिन्हाते ना रही। बाद में जनला प उनकरा के देख के अदिमी के रोवाई छूट जात रहे। राधा चहके-महंके अवली ना रहि गईल रही, अब त देह सूख के अमचूर आ सिंकिया हो गईल रहे तबे नू साँस छोड़े के बेरी छव -सात हाथ आगे फेंका जात रही। चीन में आँधी अइला प एगों आदिमी अईसन उधियाइल कि फेंड़ प जाके अँटक गईल ना त ओकर जाने चलि गईल रहित। राधा एह हालत में ओहिजा रहिती त बुझाता कि बरसाने से उधिया के भालका मंदिर भीरी सोमनाथ फेंका जईती। के उनकरा के बँचाइत। माधवो के त जरा भील के बाण लागि गईल रहे, छटपटात रहन।

''मा भैजरे त्वमुतिष्ठ
काम एष कृतो हि मे''

राधा के अईसन बदतर हालत हो गईल रहे आगि लगला से कि अब बचे के सोचले बेकार रहे। कहलबा कि आग से के बची? काकु वक्रोक्ति के जवाब साफ बा –

'का नहिं पावक जरि सकै'

राधा मरे-मरे हो गईली त एगो उनुकर सबसे प्रिये सखी ललिता उनकरा खातिर धरहर रहि गईल रही। उहे आके माधव के रहनि के कुछ हाव-भाव पचीसों तरह से बतावस जे मन के घाव प तनी मरहम पटी बन्हाय नातऽ छने-छने छछनते पहर बीते, चार घरी चार पहर हो जात रहे। अदिमी के दुख में परला प आँखि के सामने अन्हरिया उतरे लागेला।

ओह दिन गजबे हो गईल, ललिता के राह ताकत-ताकत राधा के बेचैनी ईतना बढ़ गईल कि मुए के ठेकान लागि गईल। बुझाईल कि सुगना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिंजड़ा से तुरन्ते भाग जईहें। अइसन हालत भईल कि छटपटाए लगली। ओही घरी ललिता आ गईली। राधा खीस से तिलमिला के कहली -

"बोलत न काहे एरी,
पूछै बिना बोलौं कहा ?
पूछति हौं कहाँ भई
देर अधिकाई है।
गई थी उसी साँवरे के पास,
कोने काज,
तेरे लिए ल्यावन सो
तेरी ही दुहाई है।
काहे तैं न ल्याई
फिर मोहन बिहारी जू को,
कैसे वाहि ल्याऊँ
जैसे वाको मन ल्याई है। "

सुन के राधा झँव खा के चारों खाने चित हो गईली।

दिन भर छटपटाते कइसहूँ बीतल। क बेर मुँह प पानी छिरकल गईल। होश हो जाय त चिहा के चारों ओर ताके लागस, बुझाय कि केहू के बेचैनी में खोजऽ तारी। केहू कुछ पूछे त आँख मूँद लेत रही। एही तरी रात एकदम करिया चादर ओढ़ लेलक। बेहोश हो गईली कि नीन्द लाग गईल, केहू के समझ से बाहर रहे आ ज्ञान में समझदारी ना रहे त उहे बउराही कहावेला। सभे चूप रहे। केहू बोलत ना रहें, बाकिर जे रहे सभ मौन हो के देखत रहे, समझे में लागल रहे, बुझात होखे, चाहे ना।

राधा सपना देखत रही। गर्मी से देह तलफत रहे। ठटात ना रहे। ललिता उठ के पूरब चल गईली। पूरा देर के बाद काँपत आ एकदम भींजल अइली। राधा भीरी आवते तपाक से पूछ देली, कहाँ गईल रहू कि काँपत आवऽ तारू? तहरा कुच के कोर के चन्दन छूट गईल बा, ओठ के ललाई एकदमें धूमिल हो गईल बा। दृग-कंजन कोर निरंजन हो गईल बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देह थर-थर काँपत बिया। सरासर झूठ कहाँ से पढ़ि के आ गइलू। तोहरे प भरोसा रहे बाकिर तू हूँ दिन परला प धोखा दे देलू। आपन अन्तरंग सखी के पीर ना समझलू आ झूठें पढ़ के बरगलावऽ तारू। एने से नहाए तलाब में ना गइलू ह गरमी में थरथरात आवऽ तारू। सभ जान गइलीं कि उनके भीरी से एह हालत में आवऽ तारू। खीसी में हाथ गोड़ ऊ फटऽकली आ नीन टूट गईल। जगलो प उनकर चेहरा तमतमाइले रहे।

सभ लोग चिहा गईल कि का हो गईल हऽ? ऊ कुछ राम रहीम बोलली ना बाकिर चेहरा खिसिअइले लेखा रहे। सवतिया डाह से जूझत रही।

अपना मरद जवरे कतनो नियराहुत मेहरारू के जे सूतल जान जाई ऊ अन्य संभोग दुखिया मेहरारू परानों तेयागे प तइयार हो जाई। ऊ कुछुओं कर बइठी। ओकरा खातिर कुछुओ नामुमकिन ना रही, राधा ओही हालत में रही। ऊ भुला गईल रही कि सपना देखली हऽ ललिता के हुमचके एक लात मरली जे ललिता खटिया के ओरचाना फेंका गइली। सभ जानी मिल के बाँह ध के ललिता के उठऽ वली जा आ बगल अवली चउकी प लोग बईठावल।

राधा फुसफुसाहट में बोले लगली, "ई प्यार का ह हमरा ना बुझाय। तू हमरे भीरी रहलऽ आ अब गुम हो गईलऽ। ल त अब का करीं। अतिना देर ले खोजऽ तानी आ तूँ तनि के में छू भंतर हो गईलऽ त तूँहीं खोजऽ हम त थक गईलीं। नजर मिला के मुस्कुरा द। तूँही दुख देले बाड़ आ तूँही दरद देले बाड़ऽ त तूँही बताव कि दरद मिटाई के ? तुरतें आ के मेटाद। तूँही रो आवऽ तारऽ त हँसावे खातिर दोसर के आई। तूँ छलिया हवऽ तोहारा बिना मुरली के बजाई? ई त अधीनक परल बिया। हम त अपने झँखऽ तानी तं इनका फेर में अब परे के केकरा फुरसत बा? ई हमार सवत ह मछझुकवनी, एकरा फेरा में पर के जूझ जाईं? एही खातिर तूँ जानि के हमरा भीरी छोड़ि गईल बाड़? सभ तोहार खेल बूझऽ तानीं। तहार छिनर-झप हम समझीं ला। दोसरा के भलहीं ना बुझाई, हमरा के बुरबक ना बनईबऽ काहे कि हम हूँ लईकइएँ से तहार पढाई पढ़ल बानी। तूही नू हवऽ कि लुका जात रहऽ आ तुरते छन भर में उपर हो जात रहऽ ई चाल बाजी ईहाँ ना लागी? आवऽ का खिलकट कईले बाड़, हम नईखीं जानत? अतिना बउराहिन हईं का? ई मन धो रखिहऽ। हमहूँ एगो हइए हईं? तू का बुझले बाड़ऽ कँकरी खीरा? आपन चतुराई अपने भीरी रहे द। तहरा फेरा में ना परब। जल्दी आवत काहे नइख? तंग-तबाह कइले बाड़ऽ। ढेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया देखले बानीं। इहे देखत जिनिगी सिराए के हमरा बुढ़ाए के ठेकान लागल बा। जानते बानीं कि अइबऽ। सूतला में हमार चूरी काहे फोर देलऽ ह। एकर जवाब बा तहरा भीरी। समझदारी आ दुनियादारी तहरा में रहित त ई बउराही ना करितऽ! लइके रहि गईलऽ तहार लरिकपन ना छूटी। हम त बराबरे कहिला कि अब लइका नइखऽ। विचारऽ कि अब लरिकपन सोभा दे ता? हमहीं बउराहिन बानीं कि बुझाते नइखे? आछा मान लेलीं कि घरी छन खातिर कि हमरें नइखें बुझात। अब आवऽ कतिना देरी भईल! घड़ी देख के अइबऽ। हमरा के कतिना परेशान करबऽ ? रोया देबऽ तबे आँख के सोझा अईबऽ? हार मान लेलीं? अब का कहऽ तारऽ? कान धरीं? किरीया, खाईं? बाते बाते किरीया ना खाईब? तुँही नूँ कहलऽ ह कि किरीया खाईल मेहरारून के ऐब ह आ सुभाव ह! हमरा के रोजे समझावलऽ कि अबे उहें किरीया खाये के कहऽ तारऽ? माई बाप के किरीया खईबे ना करब। आ कोटि करबऽ तहरो किरीया त जिनिगी में ना खा सकीला। कहतऽ त आपन किरीया खा सकिला। हमरा अपना मरला जियला के फेरा बा का। रचिको ना। हमरा भर पेट भरोसा बा कि छने भर में आ जईबऽ? हमार रोआई तहरा ठटाई का, कबहुँ ना? तहरा के हम देखले नईखीं? नया नौहर बानीं ? हई मुरली आपन लेजा। हम फेंकियो ना सकीं। छुअबे ना करब। काहे के छुईं ? ना, ना, लेजा आपन। हमरा ई रचिको सोहात नईखी।''

''आखिर तूँ चाहत का बाड़ऽ? जवन कहेके बा सोझा सामने आ के कहऽ। हम सुनल चाहत बानीं । तहार का इच्छा बा। साँचे चाहत बाड़ऽ का? तनीं सुनीं तऽ। आपना मने का अनुमान लगा लीं? ना,ना, आ के कहऽ? काहें लजातारऽ? बड़ लजकोंकड़ बाड़अ। तूँ मरद ना हवऽ मेहरारू हवऽ? जाये द। कहऽ तारे स त कहे द। हम तहरा छोड़ के कवनो के कवनो बात के कान ना करीं। वोहनीयें के सुन के करे के रहित त तहार अतिना मनावन आ खुशामद करितीं? खुशामद निमन चीज ना ह। खुशामद करेवाला नीचे गिर जाला। केहू के नजर में खुशामदी पानीदार ना कहाला। लोग खुशामदी के देख के नजर फेर लेला। नफरत के माई ह खुशामद।

ईहे हमरा के चाहऽ तारऽ? मुँह ना मारब जे हम खुशामद करब! हमहूँ एगो हईये हईं । तूँ सभ जानऽ तारऽ!जान के माछी लीले के कहऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारऽ? तूँ आज ले हमरा के ईहे जानऽ तारऽ? चुप ना रहब ? ईहे तहार मर्दानगी बा ?"

ऊ फुसफुसाईल बन क देली।

***

(2)

राधा के बाबा सुरभान बरसाने के रहन। उनकर जिला-जवार में चलावा रहे, सामने केहू खड़ा होखे के हिमत ना करत रहे। बड़का अदिमी रहन। जर-जजात के हद ना रहे। लोग-बाग आदर रेत रहे। जागीरदार ना रहन जी, छोट-मोट राजा रहन। सोझ भाषा में बतिआवत रहन बड़ा सलीका से आ रोबदारी से। मोछ के पानी रहे। रवानी रहे आ सुभाव, बात-विचार बेवहार एकदम खनदानी रहे। जबुन आदिमी से कवनो लाग-लपेट आ उठकी-बइठकी ना रहे।

उनकर बेटा वृषभान अहीर अउरी शानियल रहन। दूध-दही के झरना बहत रहे। कमी का रहे। सभ इलाका के अहीर लोग के मलिकार रहन। नाँव बाजल रहे। बड़ऽपन के, रईसी के सगरे सोहरत रहे। चढ़त जवानी में बेटी जनमल रहे। कदिन तक सोहर गवाईल रहे आ पिआव आ गुलजामुन झोरी के झोरी बँटाइल रहे। तेल त मेहरारू-लईकन के माथा प से कदिन ले चूअते रहि गईल रहे। पूरे सोरह दिन ले सोहर घरे दुआरे गवाते रहि गईल रहे। बेटी त बेटी ना रहे, चनमुनियाँ रहे। मेहरारू देखि के सराहे लागत रही स त बूझाय कि ओहनीं के बिहटा मिल लेखा ओंठ सटबे ना करी का दो? आँख बने ना करत रहे लईकी। ओंठ लाल टहटहात रहे। गाल चूमे के लाईन लागल रहे। केहू छोड़ल ना चाहत रहे चूमा के रस। सभे चूमा के गिनती करे के भुला जात रहे, सटे से हटे के नाँवे ना लेवे। छरहर गोड़-हाथ त भगवाने बना देले रहन। टकटकी लगा के लोग देखते रहि जाय। लईकी के मुँह देखे खातिर धाका-धुकी ओरियाते ना रहे। सोहरत मचल रहे। अइसन सुनर लईकी केहू देखले ना रहे। लईकी के मुसुकाइल बन ना होत रहे, असालतन मुस्कान रहे ओंठ प थिरकत।

गोड़-हाथ देखला से बूझा जात रहे कि आगे चल के लमछर होई। मुँह जे देखत रहे ओह गोल-गाल मुँह से नजर ना हटावत रहे, देखते रह जात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। ऊहो देखे अवला के टुकुर-टुकुर ताकते रहत रही। जे जहाँ से सुनत रहे कि वृषभान के खूब सुनर बेटी जनम ले ले बिया, देखे खातिर आ राजा वृषभान के खुशी जाहिर करे खातिर बरसाने के राह ध लेत रहे। लोग लोगनि के आईल-गईल बन होखे के नामे ना लेत रहे। वृषभान के बेवहार से सभे खुश रहें आ बच्ची के खूबसूरती के सोहरत हो गईल रहे। एह से रोजो आदमी के रगरा-रगरी होत रहे। रोजो बड़की दालान भरल रहे। सुन कहियो ना रहे। बुझात रहे कि रोज असालतन धार्मिक मेला जमल बा आ अदिमी के रेला लगल बा।

राधा दिन दुगुनी-रात चौगुनी बढ़त रही आ प्रकृति उनकर लमछर देह गढ़त रही, ई उनकर मइया रोज-रोज पढ़त रही। कंडा अस समूचा इकहरा शरीर फयलत रहे, हिरनी के आँख अस उनकर आँख कान के राह लपकत रहे। चेहरा हरदम चमकत रहे, नाक के सुधराई सुगा के ठोर अस बमकत रहे त गोल गाल के गोराई जइसे पूर्णमासी के अंजोरिया नियन झपकत रहे। लोग के लुभाए खातिर ई ढेर रहे, एह में ना कवनो फेर रहे।

छव-सात बरिस बीतल छव-सात महीना अस बुझाईल, आठवाँ चढ़ते त राधा चहके लगली। आ मन से रंगीली गली में बहके लगली। बाप वृषभान त राधा के पुचकारत रहन, कहियो आँख ना देखावत रहन। राधा के चेहरा-मोहरा देख के मन में आनन्द सागर लहरात रहे आ तनिको आन्ह भईला प ठटात ना रहे। आँखि के पुतरी अस उन्हुकरा के जोगा के राखत रहन।

नन्द राजा वृषभान के बड़ी नजदीकी दोस्त रहन। एक दिन राधा से वृषभान कहलन, ''रधिका काल्हु हम सबेरहीं गोकुल अपना दोस्त नन्द कीहाँ जाइब। तें इहँवे बढ़ियाँ से रहिहे खेलिहे। साँझिले हम चल आईब।''

राधा उनकरा गरदन में दूनों हाथ डालि के लटक गईली। कहे लगली, ''ना बाबा ना, हमहूँ चलब, अकेले ना रहब।''

उनकर मन रोवाईन-पराईन हो गईल। आँखि से लोर झरऽ-झरऽटपके लागल। दू-चार बून उनकरो देही प गिरल। धड़ दे कहलन, ''एह में रोवे के का बा, हम जवरे लिया चलब। चूप हो जा।''

गमछा से वृषभान उनकर भींजल गाल पोंछलन। उहो चुप हो गईली।

ऊ समझवलन, ''कहीं बहरी चाहे हितई-नतई में अदिमी जाला त नीमन-चुमन धराऊँ कपड़ा पहिन ले ला। तूँ हूँ धरउओं नीला समीज-सलवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
पहिन लीहऽ। सबेरहीं चले के जे साँझि ले गाँवें आ जाय के।"

राधा रात में क बे चिहुँक के उठऽली उनकर मइया समझवली अबहीं रात बा, सूतऽ।"

ऊ जानत रही कि काल्हु ई मानी ना गोकुल जइबे करी। साँझि खा ऊ क बेर दुलार-पेयार से समझवले रही कि गोकुल नियरे नईखे, थाक जइबू। बाकिर पत बे ऊ रोवे लागल रही। ना जाये के बारे में रचिको सुनल ना चाहत रही। दोसरा दिन भिन सहरे मर-मैदान होके नेहा लेली। नीला समीज सलवार त झाँपी में से साँझ हीं निकाल के घर के असगनी प ध देले रही। झट दे पहिन के तइयार हो गईली आँगना में चहके लगली।

राधा आपन ड्रेस पहिर के बाबा के साथ ना छोडत रहीं, काहे कि हो सकला बाबा गते निकल जास। एह से उन्हुकरा के घुरिअवले रहत रही। पनही, अचकन आ मुरेठा बान्ह के कहलन, "चल रधिया, तें मनबे ना। घोड़ा दस दिन से बेमार बा, रथ ना जाई, पाँवे के सहारा बा आ साँझिले चलियो आवे के बा।"

चल के राह धइलन। राधा कूदत-फानत-चहकत साथ धईली। पूछली, "बाबा, नन्द बाबा कीहाँ के-के बा?"

ऊ बतवलन, "उन्हकरा घरे यशोदा बाड़ी, उन्हुकर आठ बरिस के लइकवा बा जवन बड़ी चुल्ली ह, अबाटी ह तहरा के मरबो करी। कवनो जना के कनइठी दे देला। गोपी लोग के कंकड़ चला के गगरी फोर देला। बेबात के ओह लोगिन के बाँह ममोरे लागेला। गोपी लोगिन के ना रहला प लुका के घरे घुस जाला आ दही जिआन क देला, मक्खन खा के मुँह उजर बगऽबगऽ क लेला। आवली लोगिन त लमी लेला। ओह लोगिन से धराये के मान में ना रहे। ओह लोगिन के घरे पहुँचते नव दू एगारह। देखिहऽ बड़ी मनसोख ह।"

वृषभान बेटी जवरे बतिआवत दुर्वासा मन्दिर देखते, रमन रेती होते नन्दजी के महलनुमा मकान के फाटक भीरी पहुँचलन त खुले रहे। रूकलन-उकलन ना। गाढ़ी दोसती रहे। धड़धड़वले रधिया के अंगुरी धरवले आँगन में पहुँच के नन्द जी के दूनों हाथ जोरलन। "जयराम जी"।

नन्द बाबा एकदम चिहा गईलन आ उठ के वृषभान के अंकवारी में कस लेलन आ फेनू उनकरा के छोड़ के रधिया के कोरा में ले लेलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहलन, "कहत-कहत अतिना दिन के बाद हमार मईयवाँ के ले अइलऽ अब अपना घरे से एकरा के ना जाए देब।" रधिया मुसुकाए लागल। ओने कान्हा रधिया के मुँह प टुकुर-टुकुर ताके लगलन। दूनों ओर से आँख चार भईल आ करेजा में चेहरा उतर गईल।

यशोदा मक्खन मिसिरी ले अईली आ दूनों ओर से लँगोटिया यार बतिआवे में मशगूल हो गइलन। यशोदा रधिका के मक्खन खियावे के खोजे लगली त ऊ दलान में गइली। नीचे चउतरा प देखली कि राधा चुपचाप गाल पर हाथ बवँारा ध के बईठल बाड़ी आ कन्हैया बतकूचन करऽ तारे।

डूभा में यशोदा राधा के मक्खन-मिसिरी दे के आ कान्हा से जोर से कहली, "कान्हा, गिलास में पानी ले आ के पियइहऽ।" आँगन में जा के बत कही सुने लगली।

आजु पहिले ओहिले अउचक राधा के कान्हा देखलन कि शरीर फयलल बा आ लिलार प टहऽ-टहऽ रोरी टहकत बा, नीला वस्त्र के कमर में फरिया कसले रही, बड़हन बेनी लटकल रहे, लइकिन भी पिछुअवले रही स, कमसीन देह के गोराईमें सुनरपन के खजाना रहे। श्याम राधा प नजर पड़ते रीझ गइलन। नयन से नयन मिलल त बदहवास हो गइलन। जइसे ठगा गइलन, देखते रहि गइलन।

श्याम उनकरा बारे में जाने के, उनका जान-पहचान करे के बेअगर हो गइलन। चुप ना रहाईल। पूछे लगलन, "ए गोरी, तूँ के हऊ? कहाँ के हऊ? कहाँ रहलू, केकर बेटी हऊ? तहरा के ब्रजखोरी में कबहूँ नइखीं देखले?"

ऊ कहली, "काहे के हम ब्रज-तन अइतीं? अपनी पौरी में खेलत रहीं। अउरी उनको बारे में पूछ बैठली, कान से सुनत रहत रहीं कि नन्द के बेटा मक्खन आ दही के चोरी करत चलऽले!"

टप दे कान्हा कह बइठलन, "तहार हम का चोरा लेब? तहरा भीरी हमरा चोरावे लायक का बा, जे हम चोराईब? जोरी बन के हमरा संगे चलऽ! बर जोरी ना करब!"

ऊ रसिक सिरोमनी रहन! बत-कूचन में भोली-भाली राधा के भुलवा देलन आ खेले खातिर लियवले चल गइलन। कान्हा अपना बारे में संक्षेपे में बता देलन "कान्हा हमार नाँव ह, ब्रज हमार गाँव ह। नन्द बबा के इहे हमार ठाँव ह। कबो-कबो हमरा जवरे खेले अइहऽ। दुआर प आ के हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पुकार लिहल करिहऽ। 'कान्हा', पूछबू त सभे जानेला, केहू कान्ह के बता दी। भूलइबू ना! तहार भोलापन देखि के हम तहरा जवरे रहे-खेले के चाहत बानीं।"

राधा भी श्याम के रूप-रंग आ चुलबूल सुभाव देखि के रीझि गइली आ उनका करेजा में ऊ चूभ गइले। बाकिर राधा सखी लोगिन भीरी जनावल चाहत रही कि उहो गिरल परल आ अतिना हलूक घर के ना हई कि बे बोलवले डगरात चलिहें। ऊपर से भारी बनल चाहत रही। सखी लोग से कहली,

"इनका घरे हम जाइब का?"

एक दिन राधा यशोदा घरे गइली। कान्हा यशोदा से परिचय करवले काहे कि चिन्हली ना। यशोदा रूप-रंग निहार के खुश हो गइली। विस्तार से पूछ-ताछ कइली।

"प्यारी बेटी तहार का नाँव ह, कवन मलिकार के बेटी हऊ? तहार मइया के हऽ? ऊ मतारी धन बाड़ी जे तहरा के जनमवलें बाड़ी। ऊ कोख धन बा जवना में तूँ नव महीना रहलू? तहार मतारी-बाप धन बा जेकर अतिना मन लुभावन तूँ बेटी जनम लेले बाडू। हम त तहार चेहरा ठगइला अस देखते रहि जातानीं।"

इहे सभ कहते राधा के अपना गोदी में बइठा के उनकर सिंगार करे लगली। करूआ तेल लगा के चोटी बाँध देली आ कँकही से माँग फार के दुलहिन अस सँवार देली। राधा के आपन माई के दुलार मिलल त उहो रिझ गइली। कान्हा टुकुर-टुकुर उनके प ताकत रहन।

यशोदा राधा के सँवार के खिया-पिया के कहली, "मइयाँ, कान्हा जवरे खेले जा।"

ई सुनि के राधा के मन जइसे झूमे लागल आ ऊ कान्हा जवरे बहरी खेले में रम गइली।

राधा कृष्ण प अतिना रीझ गईली कि उनकरा बिना बुझाय कुछ भुलाइल बा। ऊ रोजो आवे लगलीं दूनों जने के एक-दोसरा बिना बेचैनी होखे लागे। दिन-रात हरमेशा एको छन लोग अलग होखे ना चाहत रहे। भूख-पियास खतम हो गइल। नेहाइल-धोआइल बन्द हो गईल। माई इयाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारस ना त, जबरजस्ती नेहवावस जा, तब दूनों जने नेहास। इयादे ना रहे कि आजु नहाइल नइखीं। खाहुँ के इहे हाल रहे।

अब बहुत सबेरे राधा गोकुल के डगर ध लेस, यशोदा भी मनगर रही कि कान्हा एने-ओने ना जात रहन। राधा जवरे नियरे कतहीं खेले में रमल रहत रहन। खरिक में समय प राधा पहुँच जास। कान्हा गाय दूहस त एकाध धार राधा के गाल ओरे कर देस। राधा के गाल त भींजते रहें, दूध रसे-रसे चूअते कंचुकी के भी भींजा देवे। कंचुकी राधा गारे लागस निहुर के त कान्हा गोल-गोल छाती निहारे लागस। राधा लजा जास आ रोस में कहस, "काल्हु ना आईब।" कान्हा दूध दुहल छोड़ि के पूरा मनुहार आ मनावन करस?

ऊ कहस, "जानि के ना मरलीं हँ धार! जान के मरतीं त ओंठ प आ लिलार प ना नूँ मरतीं, सोझे छतीए प ना मरतीं!"

राधा कहस, "तूँ जवन करऽ तारऽ ऊ हमरा नइखे बुझात का? अइसन हँसी तूँ रोजे करे लागऽ तारऽ? तहार सभ छिनर-झप हम बूझऽ तानीं।"

कान्हा घिघिआ के जवाब देस, "काल्हु हम कुछुओ करब त कहिहऽ। तहार कीं, हम काल्हु एकदम शान्त रहब।

काल्हु हमरा के जाँच लीहऽ।"

एह तरी रोजो होखे। मान-मनअउवल खूबे होखे। फेन राय हो जाय खेल दिनों भर जम जाय।

दूनों जने के उमर आगे भागे लागल आ क गो अंग के उभार होखे लागल। देही में कबो-कबो गुदगुदी के फुरहरी बुताये के नाम ना लेवे। कान्हा राधा के बाँह गते-गते ममोरस। एहतरी क गो अंग छुआय त मन में दूनों ओरे गुदगुदी होखे लागे। फेन ओइसहीं करे के मन करे त राधा फरके हट जास। कान्हा बार-बार उनकरा में कइसहुँ सठल चाहस तनिको देर देह से अलग रहल ना चाहस। उन कर ओंठ अपना ओंठ से सटावस, आँखि से आँखि मिलावस। राधा इनकार ना करस। राधा फेन मुस्कुरा देस कान्हा हँसे लागस। नाक से नाक सटावस, फेन कान्हा उनकरा के अंकवारी में कस लेस। कतिना चूमा लेस एकर कबहूँ गिनती ना करत रहन। बार-बार छाती से सटा लेत रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन वृन्दावन में राधा के पहुंचे में देरी हो गईल। कान्हा के बुझइबे ना करे कि का करीं? मुरली बजावे लगले। राधा त अवते रही बाकिर तनी देरी हो गइल रहे। डेगरगरे जात रहीं। मुरली के आवाज कान में परल त दउरे लगली। हाँफते पहुँचऽ ली त कान्हा मुरली बजावल बन ना कइले। अउरी मधुर ढंग से बजावे लगले। राधा थिरके लगली, मुरली के तान प नाचे लगली आ लीन हो गइली। बेसुध हो गइली। कान्हा दउर के अंकवारी में कस लेलन। ढेर देर ले अँकवारीए में कसले रह गइलन त राधा कहली, "छोड़बऽ कि ना?" ऊ कहलन, "आजु ना छोड़ब!"

"त धइले रहऽ हमहुँ छोड़ाइब ना"!

एही तरी धरा-धरउअल चलते रह जाय। केहू केहू से रचिको कम ना रहे।

एक दिन राधा कान्हा के पुकरली आ उनकरा घर के बहरी चउतरा प चुपचाप बइठ गइलीं। कान्हा अइलन त पूछलन, "का खेले के?"

"तूँ जवन कहबू तवने खेलल जाई।" राधा कुछ ना बोल ली। फेन पूछलन, "का खेले के?"

ऊ चुपचाप मौन!

"कुछ सोच के का आइल बाड़ू? ना बोलबू आज? तूँ जइसे पुकरलू ह हम चलिए अइलीं हँ। हम इचिको देरी त ना कइली हँ। त बोलत काहे नइखू? ना बोलबू, मत बोलऽ?"

कान्हा आपन आँख मूँद के उनकरा सामने बइठ गइले। पूरा देर ले आँख मूँदले रहन। तकले त राधा भी आँख मूँदले रही। फेन आँख मूँद लेले। बहुत देर के बाद आँख खोलले तबो ऊ आँख मूँदऽलहीं रही। तब कान्हा हार गईलन आ उनकरा के अँकवारी में कस लेलन। कहलन, "ना बोलबू त ना छोड़ब।" अउरी जोर से कसले जात रहन। राधा पूरा कसा गइली। कसमाहट से तंग आके त बोलली।

"तूँ त ठहरलऽ परदेसी। एक दिन कहीं चल जइबऽ हमरा के छाड़ि के। हमरा गाँवे के त हवऽ ना जे कबो-कबो अइबऽ। त हम कइसे जीयब? केकरा से बतिआइब! केकरा जवरे खेलब?"

कान्हा चिन्ता समझ गईलन। उनका भीरी सट के बईठ गईलन। उनकर दहिनवारा बाँह ध के कहलन, "हम तहरे जवरे रोज खेलब। दोसरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथे देखींहऽ त कहिहऽ। कतहीं जइबो करब त तुरते चल आइब। तहरा बिना हम रह ना सकीं। कवनो गोपी लोग से बोली ला चाहे खेलीला त तहरे के ताकत रहीला, कब अइबू? खेले में इचिको मन ना लागेला। तहरा बिना हमार जिनिगी कवनो जिनिगी नइखे। हम एकदम साँच कहऽ तानीं। मजाक के बात नईखे। तूँ हमरा से जवन कउल–करार करावे के होखे करा ल। तहरा बिना जिअल जियल ना रहीं। तहरा बिना एको छन ना ठटाई। खेलल–कूदल सभ बन हो जाई। नीन भाग जाई। भूखे–पियास भुला जाई। तहरा के देखला बिना छटपटाए लागब। जानीला जे काल्ह अइबू एही से सूतलो में खोजत रहीला। तहरा बिना हमरा कुछुओं ना चाहीं, तहरे जवरे रहे के, तहरे जवरे खेले के चाहीं। तहरा खेले में हार जाइलाऽ एह से कि तूँ रूसऽ मत, नाराज मत होखऽ। तहार एको छन नाराजगी हमरा से बरदास ना होई। मणि बिना, फणी के हालत हो जाई?" कान्हा चुप हो गईलन।

पूरा देर ले दूनों जने मौन रहले। दूनों ओर से मौन, दूनों जने चूप बाकी राधा के सुनरपन के खिलल रहे धूप।

कान्हा कहलन, "कहऽ त आपन किरिया खाईं? त मनबू नूँ?"

ऊ कहली, "ना, आपन किरिया मत खा! तूँ हीं नू कहऽ लऽ, किरिया ना खाये के चाहीं। ई मेहररूई उदम ह। जाये द, हमरा बिसवास हो गईल, तहरा प पूरा भरोसा बा, अउर मरद लेखा तू ना हवऽ। हम जानऽ तानीं। चलऽ खेलीं जा।"

दूनों जने खेले लगले। कान्हा कहले, "काल्हु के जानऽ तारू कवन दिन हऽ?" मुस्काए लगले।

राधा पूछली,"कहत काहे नइख? कवन दिन हऽ?"

ऊ कहलन मुस्कुरा के, "भीतरे से भिंजा के सरोबार करेवाला दिन ह। काल्ह ना छोड़ब। सराबोर क के कँपा देब अइसन होरी खेलब। रँग से सउँसे देह तहार रंगीन बना देब। काल्ह अउर दिन ना ह। तूँहीं जनबू। छका देब तहरा के!"

राधा जवाब देली, "ललिता आ हमार सभ सखी लोगिन रहीहें।"

ऊ कहलन,"त ठीके बा, समीज–सलवार खोल के रहिहऽ, ना तऽ चहबोता हो जाई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा कहली, "तूँही लँगटे अईहऽ ना त सखी लोगिन तहार पिताम्बर खोल के फेंक दीहें। चेतल रहिहऽ।" ऊ आँख मरली आ घरे परा गईली। राति भर ना राधा भीरी नीन अइली ना कान्हा भीरी फटकली। नौ तरह के जोजना दूनों ओरे बनत-बिगड़त रहल। अउरी काम के केहू के कवनो फिकिर ना रहे। अबीर, गुलाल रोरी के इन्तजाम भरपूर भईल। दुआरी प क जगे राधा रंग घोर के लुका के बाल्टी में हँड़िया में कईली आ सूखा रंग अपना ओढ़नी-फरिया के कोना में खुंटी अवली। बड़ी इन्तजाम अनमुन्हारे से भईल। जगह-जगह रंग धराईल। ललिता अउरी ढेर सखी लोग के अनगुतहीं से जुटान-जमावड़ा होखे लागल। गोपी लोगिन के मेला लाग गईल। ओनहुँ कवनो कमी के सवाल ना रहे। एह काम में त एक बोलावे सतरह धावे।

कान्हा के टोली धूम मचावत आ हराहोर करत रंगीली गली चहुँप गईल। बरसाने के लोग पहिले से कुछ जानत ना रहे। खाली राधा आ उनकर सखी लोगिन जानत रही?

कान्हा के टोली धूम मचावत आ क तरह के रंग उड़ावत राधा के दुआरी प चहुँप गईल। कान्हा के बाँस के बड़हन पिचकारी रहे। हुमच के कान्हा पियर रंग के पिचकारी से रंग मरलन त राधा के छाती प समीज चहबोता हो के छातीए में सट गईल। गोल-गोल अनार-नारंगी लउके लागल त गोप लोग जवरे कान्हा हँसत-हँसत लोट-पोट हो गईलन। राधा के सखी लोगिन रंग के धुरेहरी उड़ावल त लाल-गुलाबी रंग के सगरो धुआँ उड़े लागल। गोप लोग रंगीन हो गईलन। कान्हा फचर-फचर पियर रंग गोपी लोगिन प फेंकत रहन, जोर -जोर से फिचकारी दबावे लगलन। राधा जवरे ढेर सखी लोग अपना जोजना के मुताबिक एक बे जवरे दउर के कान्हा के ध लेलीजा आ ठेलत धकिआवत आँगन के भीतर ले गईल लोग। ललिता फुरती से दरवाजा के बन क के कीली लगा देली। गोप लोग बहरिए घेरा गईलन आ आपुस में रंग के रेला रेली करे लगलन। फगुआ के अहीर लोग के भीर कुछ ना कर सकल। ताकते रहि गईलन जा। गोरी लोगिन कान्हा के गहि के धईले-धईले भीतरे पहुँचा देल।

उनका कपार के उपरे अबीर के सँउसे झोरिए उलट के, भूत लोग बना देल। डाँड़ से पितम्बर छिन के मुँह में, चेहरा प आ गाल प रोरी लोग मलमल देली ललिता कान्हा के लँगटे अस क देली। उनकरा डाँड़ में आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चूतर प एगो बिहिटी खाली रहि गईल। राधा कुछ बोलली ना बाकिर नयन नचा के ईशारा से समझा देली कि लला, फिर काल्हु होरी खेले अइहऽ। कान्हा राधा प आ सखाी लोगिन प ताकते पीछा मेंहें कीली खोल के निकल गईलन। सभ भईल बाकी राधा पछताते रहि गईली कि कान्हा के ओंठ के मीठ रस–पान ना कर सकली। ललिता के डाँटे लगली, "तें काहे ना चूमे के इयाद परलीस ह।"

ऊ कइली, "रंग से उनकरा के भींजावे में रहीं, हमहुँ एकदम भुला गईली हँ। अच्छा, घबरा मत, चिन्ता नइखे करे के। काल्हु फेर अइहें। उनकर मुरली चुरा लेलीं हँ। उन कर मीठ बात सुने खातिर मुरली लुका के ध देलीं हँ। ना देखलू ह, किरिया खात रहन त भौंह से हँसत रहीं जा। घिघियात रहन त देवे के कह–कह के देली हाँ जा ना पछताते चल गईलन हँ। काल्हु उनका फगुआ खेले आवहीं के परी।"

राधा कहली, "जखनी रंग के झोरी उनकरा प उलट देलू ह सऽ त हम त उनकर रूपे देखे में रह गईलीं हँ। अउरी हमरा कुछुओं ना बुझाईल ह। खाली गाली में रोरी मलत रह गईलीं हँ। अतना माजा आईल ह कि मलते रह गईलीं हँ। तोहनी के ना रहतू स त हमरा के नाचनचा देतन माजा आईल ह कि मलते रह गईलीं हँ। बाकिर उनकर अकिल भुलाईल मोरी राम रसिया। आज के फगुआ ईयाद करत रहिहें। काल्ह लँगटे क के नचावे के। खूब माजा आई। हमरा अफसोस नईखे। हम त गाल में रोरी लगावे के बेरी गाल खूब मइसलीं हँ।" हमरा प बड़ी धेयान से निहारत रहन। हम मुस्कुरा के कहलीं, "लला! फिर आइयों खेलन होरी!" अँखिये से बात भईल ह!"

ललिता पूछ बईठली, "अखियें से कईसे बतिया ले लू? हमरा नईखे बुझात?"

ऊ समझवली, "एक दिन उनकरा घरे रमन रेती से होते अकेले गईल रहीं। परिवार के सभे अँगना में रहे। ऊ आँख नचा के हमरा से का–का दो माँगे लगले। हमहूँ अपना आँखी के कोर से उत्तर में नकार देलीं। हमरा नकारला प मुग्धहो गईले। एह प हमरा खीस बर गईल आ खिझ गइलीं। ई कवन उनकरा रीझे के बात रहे। हमरा अनस बर गईल। मेल भईल तुरते त ऊ गुलाब, लेखा खिल गईलन। हम त शरमा गइलीं। सभ हो गइल बाकी ना कुछ रहल। परिवार लोग से घर भरल रहे तबो अँखिए से सभ पूरा हो गईल जवन होला!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललिता पूछली, ''आँख नचा के कह देलू ह त जरूर काल्ह अइहें नूँ?

ऊ कहली, ''पूरा भरोसा बा जरूर अईहें! अविश्वास के कवनो कारन नईखें, नयन नचावल देख के मोर लेखा उन कर जियरा जुड़ा गईल ह। उहो गते नजर मरलन हँ। नजर से नजर खोजत रहे त नजर से नजर बचा के नजर मरलन हँ।''

* * *

(3)

''राधा के कुच बड़े जोर से झटका देके बढ़त बाड़ेसऽ। पहिले बईर अस रहन स। कुछुए दिन में नारंगी अस हो गईलन स। कामदेव अजबे जबुन देवता बाड़न। अंग-अंग टीसे लागल। राधा बेचारी बन गईल बाड़ी। स्तन अमरूद्ध अस होके फेन बेल बन गईलन स। तीन-चार महीना बीतते दूनों सट गईलन स। बराबर डराईल रहऽतारे स, पता न केकरा से डरल बाड़े स। काल्ह नहात रही त हम निहार के देखलीं। भींजल कपड़ा कुच में आ देही में एकदम सट के चिपक गईल रहे। देह दूबर-पातर बा। कनक लता मेरू गिरि उपजवले बिया। उनकरा प से नजर हटे के नाँवे ना लेत रहे। ओंठ टहटहा ता। काजर अउली आँख भौंरा अस बुझातारी स। छव चीज एके जगे बटोरा गईल बाड़ी स। हरिण, चन्द्रमा, कमल, हाथी सोना आ कोइलर। देखबऽ त ताजुब में पड़ जईबऽ। आँख हरिण अस, समूचे देह कमल अस कोमल आ खूब सुगन्धित, हाथी अस झूमत चाल, सोना अस चमकत शरीर आ कोइलर अस पिहकत बोली। नाक के नोकीलापन से सुगा के त काठ मार गईल बा, भाग-पराह लेले बा। चेहरा के दर्शन क के चकोर चिहाते रह जा तारे। कमर पातर बा। जाँघ के भारी हो जाए से चाल धीमा हो गईल बा। नीला कपड़ा बड़ी चहकदार बा। चेहरा के चमक देख के चाँद आकाश में भाग गईलन। स्तन त कपड़ा के हट जाए से कबहुँ आधा त कबहुँ पूरा दिख जाता। बाकी दूनों पहाड़ अस रहते भी काहे दो डरे सटले रहँ तारे स। हम त ढेर देर ले ताकत निरेखत रहीं, ऊ अलगा हटे के नाँव नइखन स लेत। राधा भी डरात बाड़ी आ भुज पाश में बन्हले रहऽ तारी। ललिता बार-बार कहली, जल्दी चल के देख ल!''

कान्हा डेगरगरे चल देलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललिता कन्हाई के राधा भीरी पहुँचा देली। अउरी सहेली लोग जुट गईल रहे। ललिता समझा के कहली, "कन्हाई, सुन ल, हम आपन सहेली सउँप देलीं। राधा के देह कमलाधिक कोमल बा, मुलायमियत से धीरे-धीरे सहलइहऽ। तहार तलहथी कर्कस बा, कहीं इनकर देह छिला मत जाय, ई खेयाल त रखहीं के परी। तूँ त भँवरा अस पियासे तड़पऽतारऽ। कामदेव तहार होश मत गायब कर देस! चोली मत मसक जाय कसक से। टूट मत परिहऽ। देह सहला के बतिआवे में भुलवई हऽ। सखी अनजान बाड़ी। तहरा लेखा खेलल खेलाड़ी नईखी। छका मत हुमचिहऽ! सिंगिल रन से काम चलइहऽ! भँवरा पचीस बे फेरा लगावे ला तब गीत गावते-गावते फुसिलावेला आ रस लेला। तुँ त रसिक सिरोमनी हव ढेर का समझावे के बा। थोरहीं से ढेर समझऽ। हार के मोती गिनती करे के बहाना से छू छाव शुरू करीहऽ! उनकरा ईखेल मालूम नइखे कब हँ कहिहें आ कब ना कहिहें समझल आसान बात ना होई। उनकर देह सिरीस के फूल अस बा, कामदेव के चोख तीर उनका से ना सहाई!"

ईहे सभ कह के ऊ बहरी से सिंकरी लगा देली।

अर्ध खिलल कमल के भँवरा झकझोरे लागल।

अइसन बुझाईल। जाये के बेरी राधा कहत रही, "सखि, हमरा के भीतरे मत ले जा। हम त बड़ी कमसीन बानीं आ ई निठुर खूसट बुझा तारन। हमार देह आ तन दूनों तार-तार हो जाई। हम भारी फेरा में पर जाईब। जानते बाड़ू, बेमार पड़ीला त महीनन फेरा में पर जाईला। काल्हुए रंग अतिना हमरा प उझिल देले रहन कि रसहंग लागल बा, हमरा के क बे रंग से नेहवा देले रहन। ई ओस्ताज बुझा तारन। हमार मरन हो जाई। क दिन ले खटिया धईले रहि जाए के परी। हमरा के जियते मुआव मत।"

उनका ना-ना कहतो रहला प सभ सखी लोगिन भीतरे घर में धसोर देली जा।

"बिहने बिहारी आँख मंईजते बहरी निकललन जब हम सिंकरी भिनुसहरा जाके खोलऽलीं। ऊ फराकित होखे चल गईलन।" ललिता ई बात कहली।

ललिता दउर के भीतरे दिवान पलंग प राघा के देही प जा के घुलट गईली। परते उनकरा के अँकवारी में कस लेली आ पूछऽली "ल खूब रंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कटलू नूँ। बुझाता कि सिरीष के फूल एकदमें रऊँदा गईल बा। राम–राम! उनकरा 'बुझाइल ह ना कि कमल के मंइज देलन हँ। हई दूनों पहाड़ रगरा गईल बाड़े स। लसर–फसर क के ध देले बाड़े। दोसरा के जीव–जीव ना ह? हम ना जानत रहीं कि अईसन निठुर हवन! आ खाली निठुरे ना हवन, भारी बउुराहो बुझा तारन। परोस दियाला केहू के खाये के त ऊ अदिमी अस खा ला नू? कि गरू लेखा जतिना खा ला ओह से अधिका नाद से एने–ओने गिरा के जियान करेला? ई हम पहिले जनितीं त तहरा के भीतरे ना करऽतीं।"

एके सुर में बे साँस रोकले ताबड़तोड़ अतना कहि बईठली।

राधा आपन आँख मींजते उठ के बईठली आ दूबे, तीन बे जम्हाई लेली। तब कहे शुरू कइली, "सुनबू तब नूँ? भारी बउराह से भेंट हो गईल रहे।"

ललिता झट दे पूछ बईठली, "बउरहवा कस के अनसहटे झकझोर देलक का?"

"ना हो, तूँ आपन बरऽ–बरऽ बोले के पांछा, सुनत नईखू नूँ?"

ललिता फेन बोले लगली, "आरे हम पहिले जनितीं कि खूसट बा, त हम अपना सखी जवरे उनकरा के ठेके ना दिहतीं।"

राधा बोलली, "तनीं सुनऽ ना, सुनबो करैबू? हमरा भीतर कईलू जा त ऊ सूतल रहन आ नाक घरघरात रहईन। हम जनलीं कि झूठों के सूते के बहाना कईले बाड़े। एहसे छतीस बन के ओठंग गईलीं। जनलीं कि अपने जगइहें बाकीर ढेर देरी ले हम थाहते रहि गईलीं। तनी उठके देखलीं त ऊ फोय–फोय क के लमहर साँस खींचत छोड़त रहन। बेहोश अस परल रहन। गाल क बेर चूम के ओंठ के रस लेलीं त बड़ी अनन्द बुझाईल। उनकरा देह में रचिको फुरहुरियो ना बुझाईल। हमहूँ त एह में अबोधे–अनजान बानीं, जतिना समझ में आईल ओतिना कईलीं बाकी कवनो काम ना निकलल। सभ घात–परती घात बेकार! हार गईलीं। जाँघन से जाँघ सटवलीं, रातो भर कोरा में कसले रहि गईलीं। 'एतेहु पे समझ्यो न कछु, रहो सोवत सीस धरै छतियाँ? हमार छाती के तकिया बना के सउँसे रात सूतले रहि गईलन। अईसन अल्हड़ से भेंट हो गईल रहे। जनितीं त दुरदुरा देतीं। तहरो लोगिन के कहना ना मनितीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुरझईला लेखा फेर पलँग प राधा पर गईली। दूनों जानीं उदास होके चुप हो गईली।

तनिक देर के बाद राधा ललिता के आपन अंकवारी में कस के प्रेम से पूछली, "आछा साँच-साँच कहऽ, का होला, कइसें होला आ कईसन लागेला। बतावऽना, तूँ सभ जानऽ तारू त हमार सबके से प्रिये सखी तूँही हऊ, खोल के हमरा के बताव? तूँ लोगिन आपुस में रोज बतिआवऽ लू जा त हम अइसहीं सुनते रहि जाईला, कुछुओ समझ में ना आवेला, सुन के तहरा लोगिन के बात हम चकचिहाईल रहीला' तूँ लोगिन जानऽलू कि हम महटिआवत बानीं। हम त सोरहो आना साँच कहऽ तानीं, तनिको तहरा लोगिन के बात समझ में आवे के सवाले नइखे।"

ललिता कहली, "भगवानो के मिलला प ओईसन आनन्द ना आई, जतिना काम-केलि के माजा ह। जब बुझा जाई त राते-दिनों छनों भर खातिर कन्हाई के तूँ छाड़बू ना, हमनी के त तूँ ठेकहूँ ना देबू उनकरा में तनिको, घबरा जन, हम अईसन साईत-संजोग जुटा देब कि तूँ दोसरा के बतावे समझावे लगबू। एगो के लरिका होखे के रहे त तहरे लेखा आपन सखी से कहलक, एहीजे तूहूँ सूतऽ, होखे लागी त हमरा के जगईह ? ऊ कहलक, "भाग छँटऽअवनी, ते गाँव के जगा देबे, त तोरा के जगावे के परी?"

दस पाँच दिन देर ना भईल। भौंरा मधुर आवाज में गुनगुनात चउथे दिन कली के चकर देवे लागल। सखी लोगिन भँवरा के दूरे से देखते होने लुका गईली जा। भँवरा कुँज-गृह में तेजी से घुस गईल। एक-एक कर के सभ लोग एने-ओने छटक गईली जा। सुन्दरी एकदम डेरा गईलीं, ना ना करत रहली तबो कन्हाई हाथ ध के चूम लेलन। ना-ना होत रहल, भँवरा पिआसे छछनत रहे। एने सुन्दरी काँपत रही कि का होई? दूनों बेल सटकल रहन स। पहिले ओही लोग प झपट्टा मरलक, नोंह के निशान लाग गईल आ राधा छनछना गईली। ओने तनिको मोह-दया नइखे। सऊँसे डाढ़ भँवरा झकझोर देलस। थरथराहट बढ़ि गईल। राधा बिस्तरा के किनारा से सट गईली। कन्हाई बेदाया के निर्मोही बन गईलन। नीबी के गाँठ खींचते खुल गईल। राधा साड़ी के छोर से मुँह ढेंक लेली। आँचर सभ निहारत रहल, उहो माजा लेत रहे। राधा बेकाबू हो गईली। छाती आ चेहरा लाल हो गईल।

अंत में उरोज प हाथ ध के नट-नागर झपकी लेवे लगले। पुजारी कनक-शंभु के पूजा क के अब ओकर रखवाली करऽता। ओकरा उमेद बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि फेन तुरते अवसर मिली। फेन नोंच-खसोट शुरू करे लगले त राधा से ठेटाईल ना, कहे लगली, सुनऽ कान खोल के सुन लऽ, भोर हो गईल सनम, अब हमरा लागे शरम, चनरमा फीका हो गईलन, आसमान साफ हो गईल। गाय गली ध के चरे जाये लगली स। लोग-बाग का कही, तहरा तनिको बुझात नईखे1 एको तारा नइखन स लउकत। दीया मद्धिम हो गईल। देह छोड़ऽ? सऊँसे देह दुखातिया।''

बिहारी जी झटदे हाथ बढ़ऽवलन, ''द गतरे-गतरे दबा दे तानी।''

मदन के मथानी अतिना जोर से चलल रहे कि देह अचके झोरा गईल रहे। अलसाहट बढ़ गईल रहे, जम्हाई प जम्हाई के तोर ना टूटत रहे।

अगिला दिन नहा-धोआ के आ नोह रंग के, काजर लगा के, कस्तूरी के लेप कुचन प लेप के इन्तजार करत रही। भँवरा भरपेट राते रसचूसले बा आजुओ मानी ना। परिकले आई आ रस लोभी आव देखी ना ताव, बाकीर आज ना लागी दाव, खूबी छछनाइब। राधा ईंहे सोचत रही। आज सबेरे गोपी लोगिन जवरे चउल-ठाटी करत उनकरा के देखले रही, एह से अनसाईल रहीं। सोचले रही, जल्दी देह छुए नादेब, छछने लगिहें। उरूआ बना के रहबि। आज अहीरिन अस पेश आईब। बूझा जाई आटा-चाउर के भाव। जतिने देरी होखे ना लउकस ऊ ओतिने बेअगर होत जात रही। झट दे छत चढ़ जास, ना लउकस त झट दे नीचे उतर के दुआर के साामने उझक-उझक के देखत रही। बुझात रहे कि नागर-नेह में नट के बटा बन गईल बाड़ी, पईसा देला प मट्ठा नईखे मिलत, उधारे घीव लेवे आवतारे, आज बुझ जइहें कि अदमी से पाला परल बा, खाँटी अहिरिन हईं, सोचत रही। हमरा अपने जाँघ में तनाव आ गईल बा, छाती प नोंह के खरोंच छनछनात रहता। करेजा टीसऽता। देह में आग लागल बा। कहते रह गईलीं, कवनो दलील काम ना कईलक। पसीना से देह तर-बतर हो गईल, बाकी निरदइया जान ना छोड़लक। नोचत-झझोरत रह गईल, भारी हलकान में पर गईल रहीं। जे टालहा गहना देखले बा ओकरा मणि के दाम बुझाई? काँच-कंचन में अन्तर ना समझी, गुंजाफल आ रत्न के बराबरे-बराबरे तउलत बाड़े। बानर मोती के माला पहनी?

ऊ बार-बार चिहा के पछिम के ओर ताकत रही। देर ले ताकते रह गईली। माधव अईलन ना सुनले रहीं मधु खातिर ऊ बेअगर हो जाले आ मधु के कतहीं पता चलला त टूट परऽले, बेदम हों जाले, कवनो जोखिम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
उठावले बाकीर अबहीं ले काहे ना अईले भारी अचरज बा, जमुना किनारे एहीं खातिर बेखईले पियले मुरली टेरत रहऽले, गोपी लोगिन से लपटा जाले, बाँह ममोरले आ बेधरम करले, आ काहे नाअईलन! ईहे सोचते जे नीन लागल त घाम उग गईल। बिहने चुपचाप परल रही, दुख से उठे के मन ना करत रहे। करवट फेर ले ली। मन में सोचत रही कि अइहें त बोलबो ना करब।

ओही घरी, ललिता दउरल अइली आ चिचिआए लगली, "जल्दी दउर के आवऽ। नव कुंजन में आ के कबे से बाँसुरी बजा-बजावत थाकल बाड़े! काल्हु ना आईल रहन एह से जानऽ तारे कि तूँ खिसियाईल बाडू। तूँ आज रूसीहऽ मत। हम तहरा के बतावत बानीं। खीस में कुछ बोलिह मत।" उनकरा जवरे राधा डेगरगर पहुँचली जहाँ सभ कोक कला के विशेषज्ञ माधव बेसबुर रहन। आ दिन हीं में दूती ललिता महाछविधाम राधिका के भुराय के बुला ले अईली। पहुँचते धाय के पिया माधव अंकवारी में कस के उठा लेले। तब अतिने कहली, "अजी, तूँ हमरा से छलिया आपन छल के दाव लगा के बोलवलऽ हा खखने लगली, हमरा लाज लागता, लला! दिन में अईसन मत करऽ, हम तहार पाँव परऽतानीं? 'दिन ही हहा, ऐसी न कीजै लला।"

***

(4)

राधा रात में दीवान पलंग प आराम करत रही सावन के महीना रहे। उनका हरमेशा सावन बड़ी मन भावन लागत रहे। 'नव कुँजन' में माधव विंराजमान रहन। क दिन से ओढ़न-डासन ओहिजे रहे। ऊ आज कृष्णाभिसार की तइयारी में लागल रही। चाँद से आरजू करे लगली, "खूब सुनर कृष्ण के मोहलेवे अउली करिया अलपका के मदुराई साड़ी पहिनले बानीं, प्रियतम देखते रीझ जइहें आजु राति तूँ जनि उगऽ! पिया के पाँति तुरते पठाईब। सावन से हम दुहाई मँगले बानीं। कृष्णाभिसार के जतिना तौर-तरीका बा ओकरा अनुसार करब। ना मनबऽत हँसी में बझा के राहु के मना लेब। ऊ तहरा के पी जइहें त कहब कि शीतल चन्द्रमा के उगिलिहऽ मत नातऽ धोखा हो जाई; क जने देखि के जान जइहें काम बिगड़ जाई! जलधर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनती कईंली, कोटि रतन ले लऽ आ भकसावन अन्हरिया क दऽ। सभ पुराण में ईहे कहल गईलबा, भल आदमी परोपकार करेला।''

कान्हा के पाँती लिख के बतवली, ''हमार दोष नईखे, निर्दोष बानीं। अतिना बरखा झमाझम हो रहल बा, सराबोर हो जाईब, खेल बिगड़ जाई। कुल कसूर विधाता के बा। राह में भारी बिछिलहट बा, गोड़ बार-बार बिछिला जाता। जाँघ देखते बाड़ऽ। भारी बाड़ी स, गिर जातानीं। बिजली चमकता त बुझाता कि साँपिन उलट जातिया। करेजा काँपे लागता, पीछे भागे परता। अन्हरिया डरावन बिया। कवनो दिशा नईखे बुझात, भारी आफत में परल बानीं, पानी रूके के इन्तजार करऽ तानीं।

दोसरा दिन, दिने रात हो गईल। सखी आ गईली, कहली, ''विधाता बड़ी प्रसन्न बाड़े। करिया बदरी अन्हरिया कइले बिया। सूरज छिप गईल बाड़े। घर से बहरी निकले के केहू के मौका नइखे।

मूसलाधार बरखा लगातार होता। सँवर ल। नीमन लगबू त जाते लपटा जइहें। मनुहार के जरूरत ना रही। सिंगार पटार से सोभा बढ़ि जाला। आजु दिवसाभिसार के मौका आ गईल बा, जल्दी निकलऽ। आज के समागम के इयाद जिनिगी भर रहीं, बूढ़ पुरान के डर छोड़ऽ? बिना खतरा प्राप्ति ना होखे। बिना हिम्मत के मनोरथ पूरा ना हो सके। रचिकी भर सहवास से जिनिगी भर प्यार ताजा बनल रही। करोड़ो उपाय से दिवसाभिसार हाथ ना लागे!''

राधा के पहुँचते कान्हा गदगद हो के कहले बईठऽ। ऊ बइठली ना, खड़े रहली।

कान्हा कहे लगले, ''देखऽ बढ़ियाँ मौका मिललबा, समय गँवावल बउराही होई। बरखा बन हो जाई त लोग-बाग आवे-जाये लागी, फिर बड़ी अफसोस होई। क दिन से बोलत नईखू, अईसन रूखा बेवहार मत करऽ। प्यार नहियों होखे तबो हमरा से बोलऽ। तहार स्तन सोना के कलश अस बा, मोती के हार नागिन अस लागता। काल्हु हम कवनो गोपी जवरे ना रहीं। एहसे ना पहुँचलीं। कि हमरा करेजा में दरद होत रहे। गलती त होइए गईल बा। तहार जवन दण्ड देवे के इच्छा होखे उहे करऽ। हम सजाय भोगे खातिर तइयार ना होखीं तब नूँ?

कवनो दोसर नारी प हम हाथो धईले होखीं त ई नागिन से डँसवा द हमर छाती प ओलर के। पत्थर लेखा तहार छाती बाड़ी सन, एहनी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा छाती पर जतना मन करे मारऽ। हम सहे प तइयार बानीं। एहु से मन ना भरे त अंकवारी में खूब हमरा के कस के सजाय द। अवरू कठोर सजा देवे के होखे त दूनों जाँघ से हमरो के जतिना मन होखे दबा द। ना तऽ अपना दिल के कैद में गिरफ्तार क लऽ। कहलीं त कि जवन दण्ड बुझाय हमरा के द।

बोलत नइखू त हमार करेजा निकलल आवता, हम गिर जाइब भरभरा के। फेर तहार देह ध के सम्हरे के परी।" ऊ हड़बड़ा के बड़ी चतुराई से रसिक बिहारी सुता देलन।

राह में राधा आपन ललिता सखी जवरे घरे जात रही त सभ समझा के कान्हा के चतुराई आ छल-प्रपंच के बात समझवली। कहली, "ओह छलिया से हार मान जाये के परल, हमरा बुझाईल कि उनकरा से केहू जीत ना सके। हम त चुप लगा के उनकर इम्तहान लेत रहीं। बाकी तुरते परास्त हो गईलीं। हमार बकार तक ना निकलल। हमार त इहो दोष रहे कि एकरा बारे में पहिले से हमरा कवनो जानकारी ना रहे। एह से उनकरा अउरी मोका मिलल। आ मनमाना कईलन। हमरा बउराही के खूब फायदा उठवलन। हम त जानल चाहत रहीं कि ईका बेवहार करऽ ले, से सभ समझलीं। तूँ हूँ त कुछ बतऽवले ना रहू। क बेर तहरा से पूछ ले रहीं बाकिर तूँ हमरा सवाल प कहियो रचिको जे धेयान देले होख! तहरा से हम त अजीज होके रहि गईल रहीं। एही सभ से हार माने के परल। तहरा हमरा के सभ बता देवे के चाहत रहे, बाकिर तूहूँ, आपन ना समझलू, तनिको तहरा दया ना अईल। हमरा के मझधार में छोड़ के परा गईलू।"

"सखी, तहार बेमौका के सलाह अच्छा नइखे लागत। अंधकार आ परकाश में आकास-पताल के अन्तर होला। गाँठ पड़ गईला प अच्छा इहे होला कि तूर के धागा जोड़ देल जाय। पानी त अपने तरल आ ठंढा होला, ओकरा के खउला के फेन ठंढा कर दियाय त ओकर सुगन्ध ताजा लेखा ना रह जाय।"

"अच्छा रहित कि अदिमी पैदाईस ना होईत! होइबो करित त लड़की ना पेदा होईत। जदी जुवती होईत त रसिक ना होईत। जदी रसिक होईत त बढ़ियाँ खानदान के ना होईत, विधाता से हम मर जाये के सराप माँगऽतानी। ओहू घरी हमार मन चंचल ना होईत त आछा रहित। स्वामी मिले त मजेदार मिले आ छलिया मत मिले छल-परपंच क के खाली आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम निकालेवाला। दोसरा के देह देह ना हऽ। दोसरा के दरद बूझे वाला मरद चाहीं। प्रेमी विचारवान होखे के चाहीं मुरूख –बउराह, उलटा-पुलटा करे वाला ना चाहीं। विवेक बुद्धि वाला प्रेमी होई त कवन जुवती वाजी हारी? तनी समझदार प्रेमी होखे के चाहीं। हँ, एकरो उपाय त बड़ ले बा। हँ जान के बाजी लगा देला प सभ झमेला हवा हो जाई। निष्ठा चाहीं, समर्पण चाहीं। हारे के कबहूँ सवाले पैदा ना होई। सखी, तूँ तनिको ईशारा कइले रहतू आ समझा देले रहतू त नादानी ना होईत।''

''सखी आज त अजबे हो गईल ह। तूँ त हमरा के आजू ले कुछ ना बतवले रहू कि रूसला प मान के छव गो उपचार होला। पाला परल ह त सभ जानकारी हो गईल ह। काम सभ चतुराई, आ राह बता देला, आज हम जनलीं हँ। गोकुल के चाँद जमीन पर लोटे लगलन। हमार मान दूर करे आइल रहन। हमार पैर के नोंह चमकावे के बात रहे, बाकिर ई त सरासर बहाना रहें। आँख से लोर ढरके लागल ह, ना पता चलल ह कि ऊ क बेर बिनती कइलन हँ? गिनती करे के केकरा फिकिर सतवले रहे। पहिले से तनिको हम ना जानत रहीं कि अतिना ढंग से मनावल जाला। बाकिर सभ सीख गईलीं।। बेवक्त हमहूँ रूस गईलीं हँ। ना चाहत रहे, अतिना निठुराई देखवलीं हँ कि अपनहूँ मने-मन दया आवे लागल ह आ भीतरे से त एकदम पसीज गइलीं हँ। बरफ पिघल के पानी-पानी हो गईल ह। हम रत्न के आँकड़ समझ लेलीं हँ। बाद में नूँ बुझाईल ह ! खीस में हम जीभ पीसत रहीं अनेरिया। अब बुझाता कि परान निकल जाई। निठुराइयो के हद होला। आन्हर हो गईली हँ।

सखी समझवली, ''सुनऽ, राधा, अबहूँ कुछ बिगड़ल नईखे। आपन मान छोड़ऽ। कान्हा के मनालऽ उपचार क के। ऊ त रसिक सिरोमणि हवन, पिघले में रचिको भर देरी ना लागी, हम सभ जानऽ तानीं। अइसन होला रूसला प कि भीरीए पलँग प रहते बुझाला कि एक दोसरा देश में होखस। कवनो बात नईखे, तूँ त उपचार सीख गईल बाड़ू, मना ल।''

अचानक ललिता दान घाट पहुँचली त देखली कृष्ण क गो गोपी लोग के भावमय ढंग से पीछा करऽतारे। गोपी लोग छछिया भर मट्ठा खातिर उनकरा के बार-बार नचावता लोगिन। बहुत नाचला प मट्ठा मिल पावता। कुछ लोगिन जवरे रगरा-रगरी करऽ तारे। दही के मटकी फोर देत बाड़े। ओह लोगिन के अंग झकझोर दे तारे। घर में सुनसान पा के मक्खन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंकहर से उतार के खा जा तारे। कवनो जानी के मटकी फोर दे तारे। बहुत नुकशान कर दे तारे तबहुँ ऊ नाराज नइखे लोगिन होत। कुछ जानी यशोदा से ओरहन देवे पहुँच जा तारी।

"यशोदा जी राउर कान्हा बहुत अबाटी बाड़न। बाँह ध के झकझोर दे तारन। साड़ी-चोली फाट गईला प लँगटे- उधारे देख लेलन हँ।"

जसोदा आपन माथा पीटे लगली, कहली, "आज उनकरा के ठेठाईब, आवे द जा।"

सुन के गोपी लोगिन दाँत चिहार के खखने लगली जा। "ना, ना, मारब जन, लइका हवन, एक बे माफ कर देब।"

जशोदा कहली झमक के, "तब का ओरहन देवे आईल बाडू जा। आपन-आपन काम देखऽ जा। तूँहीं लोगिन कुल्ह करावत तारू। हमरा कान्हा के कवनो दोष नइखे।"

कुल जानी चलि गईली। कुल बात ललिता राधा के बतवली। राधा बोलली कुछ ना बाकिर भीतरे-भीतरे खिसिया गईली।

ललिता कान्हा से वृन्दावन में एकान्त में मिलली। कहली, "तूँ जवन करऽ तारऽ नीमन नइखऽकरत। आपन धन छोड़के दोसरा खातिर फिफिहरी भईल चलऽ तारऽ। नीमन नईखऽ करत। जेकरा ना रहला, अभाव रहला से चोरी-छिनारो करेऽला। तूऽ कवना लोगिन के ताक-झाँक करत चलत बाड़ऽ? तहार प्रेयसी रति-रानी से भी सुन्दरी बाड़ी राधा, आ तूँ अबाटी अस एह घर से ओह घरे घुसल चल तारऽ! ऊ तहरा खातिर जान दे तारी आ तोहरा के सभे मखौल उड़ावता। दोसरा के धन के लालच में दउरऽतारऽ, आपन धन बिलाता। आपन धन अछइत दोसरा के पिछुअवले चलऽ तारऽ!"

ओकरा बाद कान्हा साँझ होते बरसाने के राह धइलन। पहुँचलन त राधा मान क के घूँघ तान लेली आ खड़ा हो गईली।

ऊ कहे लगलन, "तहार रूप हमरा सपना हो गईल बा। हम तहार मध अस बोली के मिठास सुने खातिर तरसत बानीं। फूल खिलल बाड़े स, बसन्त जवानी के जोर लगवले बा, सूखलो पौधा फूल से लदा गईल बाड़े स। आम मोंजर से गमकत बा, सूँघ के भौंरा झूमऽतारन स। दखिनी हवा धीरे-धीरे सिसकत बिया। विधाता चन्द्रमा के क बेर काँट-छाँट के तहरा चेहरा अस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बनावल चहले बाकिर फेल हो गईले। तूँ लक्ष्मी अस चहकत बाड़ू। कवनो तुलना नइखे।" कृष्ण राधा के चेहरा से घूँघट तड़ दे हटा देलन!

राधा रोष से बोलली।

कान्हा मउरा गईलन। आरजू करे लगलन, "राधे कान लगा के सुनऽ। बिना अपराध के कहीं सजाय ना दियाय। पता ना हमरा बारे में का का सोचऽ तारू? थकल बानीं राते रात भर जगला से, अवरू कवनो कारन नइखे, शिरात रहे, रात भर पूजा तहरे खातिर कइले बानीं। तहरा खुशहाली के आशीर्वाद मँगले बानीं। गालन प एही से चंदन आ कुंकुम के दाग लागल बा, दोसर बात मत सोचऽ। कस्तूरी भी ओहिजे लागल रहे। रात भर मंतर के पाठ करे से ओंठ सूखऽ तारे स। देर ले जगला से आँख ललाईल बाड़ी सन। तूँ अवरू जवन कहलऽ, खिसियाइब ना। चोर-छिनार न हईं! अपना भरोसा खातिर जवन कहऽ हम तइयार बानीं।"

ऊ ओंठ प झुकलन, बाकिर सफल ना भईले। आगे हाथ सरकवले बाकिर राधा पीछे हट गईली। आधा छाती उधार हो गईल बा, बाकिर राधा आँचर से तुरते झाँप देली। कान्हा देखि के मधुर-मधुर मुसुका तारे।

बड़ी मन में साध रहे, कान्हा के देखब। देखलीं, त बुझाईल कि बड़ी भुला गईलीं। दूनों आँख से लोर के बान्ह टूट गईल बा, पानी के बान्ह पूअरा-पुअरसी आ माटी-ईंटा से बन्हा जाला, ई लोर के कईसे बान्ह बन्हाई, रचिको बुझाते नईखे।

देखा-देखी भईल, जिद में जीव निछावर क देली। ऊ चोर-चुहाड़ कईसन बर्ताव करिहें, कुछ मालूम नईखे होत। दोसरा गोपिन जवरे बने-बने फिफिहिया भईल बाड़े। ओह दिन के सभ कार-बार दिखावा रहे? ओह घरी के बात भुलाते नईखे! ऊ छूवन, आँखि के कोर के ताकन, ऊ जहर के बान करेजा में समाईल जे छने-छने टीसत रहऽता। कसहूँ कइला प करेजा दूखते रहऽता। एह दुख के ओर-छोर नईखें, मुरलीं के टाँसी हिया में धुस के झकझोर जाता। देह गनगना जाता आ मन खलोर हो जाता। कभी-कभार नीबी खुल जाता, लोग-बाग के बीच में सम्हारते बीतऽता। विधाता लाज रख ले तारे। कामदेव त अऽर बउरा दे तारे। आँख के कसूर से करेजा के सजाय भोगे के परऽता। खेत खाय गदहा आ मारल जाय जोलहा! आधा कनखी से देखले रहीं। इहाँ सँउसे देह में रोआँ खड़ा रहतारी स। सउँसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव उनकरा के देखत होई, बाकिर काम देवता सभ बोझा हमरे प उझिल देतारे। पाँचों बान हमरे प हुम्चत रह तारे। कमसिन देह से साँचो सहात नईखे। ऊ ढनकहलू आवतारे कहियो त देह तान के फों-फोंय करे लागतारे, अल्हड़पन दूर नइखे होत। जागऽ तारे त बिहाने हो जाता। बिधाता बाम बाड़े।

कुलही लोग हमरे के कहला, "उनकरा ओर काहे के ताकलू? उनकरा से केहू ना कहे, काहे के बन-ठन के आवले आ, छने-छने मुरली काहे के बजावले, रात-भर काँपत रहऽतानीं।"

ओही घरी ललिता अईली, "फूल काँटन के बीच में खिलल बा, भौंरा परेशान बा। फूल तक पहुँचे के हर कोशिश करता, बाकिर मुश्किल में पर के भी रस भीरी नइखे पहुँच पावत। तूँ त मध के खजाना लेके बइठल बाड़ू आ बेचारा एक बूँद मध खातिर जान जोखिम डाल के कूद-फाँद करऽता। तरस के रह जाता। तहरा दया नइखे त कम-से-कम शरम आवे के चाहीं। भौंरा के जिए के तने तराह लागल बा। तहरा खातिर रेती में लोट् रहल बा। कमसिन लोगिन के कमी नईखे, पिछुअवले चलऽतारी जा, बाकिर ओकरा जियरा में त तूँ ढुकल बाड़ू! काम के विष उनकरा के आगि में झुलसावत बा। भकसावन नागिन डँस देले बिया। अमृत के बिना उनकरा के जिआवल आकाश से फूल तुरला लेखा भईल बा, काँच अस तहरा शील खातिर नीलम के हार ले आईल बाड़न, तूँ हार गला में डाल के उनकर हार बन जा। कान्हा जवरे रंगरेली क लऽ, क जनम के साध मिट जाई, नदी के किनारे खड़ा होके ताकऽ तारे, कोरा में लेके नदी पार करा दीहें। कवनो डर नईखे, परेशानी ना बुझाई। पार हो गईला प माजा मिले में कवनो कांटा ना रहि जाई। तहरो त रोग धइलहीं बा। आउर लोग के नइखे बुझात। हम रोग एकदम नाड़ी धरते पहिचान लेले बार्नीं। काम के रोग भारी रोग ह। नदी किनारे दवाई तुरते मिल जाई। बैदा बँसुरी टेर-टेर के बुलावता। नीली साड़ी पहिन ल। बदरी लागल बा। रंग छिप जाई। ओंठ के चमक बिजुरी अस बुझाई, बउराही छोड़ के तनीं आँख मूँद लीहऽ। तकलीक के बादे आनन्द आवला। एह में झिझक का बा? दवाई कइसे रोगी पियेला? मन टाँठ रखिहऽ!"

राधा नीली साड़ी में चलली बाकिर काँपत रही, सभ सहेली लोगिन घेरले रही। बड़ी डरात रही, चूँटा-भाटा अस सभ जानी सहारा दे के लिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातारी। चाँद रात से जइसे काँपऽला ओईसे थरथरा तारी। सहेली लोग गते-गते खिसके लगली जा।

ललिता कहतारी, "सखी, तूँ खूब खिल उठल बाड़ू। रस से सराबोर हो गईल बाड़ू। सुन्दर चेहरा चाँद अस चमचमाता। करिया गूँथल बार करिया नागिन अस फूफकारऽता। छाती के तेज से चोली दरकऽ तारी, देखिह, हिसाब से सभ काम होखे के चाहीं ना त उनकर कर्कस हाथ के ताव ई ना सही, पेवन लगावे के परी जवन नीमन ना लागी, चोली मसके के ना चाहीं। 'कसक मसक गई चोली' के कथा सुनलहीं बाड़ू तहरा तिरछाचितवन के कोर से अंजन चमकऽता। तहरा खातिर उनकरो बेअगरता बा। छटपट-छटपट करत रह तारे। ऊ बराबर कहले, रधिया बिना उनकर केहू आपन नइखे। कहऽलन, उनकरा बिना परान निकल जाई, उनकरा बिना जियल कवनो जियल नईखे। तहारनाँव लेते ऊ पेयार से लबालब भर जाले। असाध काम-ब्याधि से जूझे लागऽले। राधा-राधा जबान प जपत रहले। तूँ इ बड़ऽ बड़इ हऽ मत। गंभीर बनल रहिह, बाकिर एकदम निठुर, निरदई, मत बनिहऽ, रंग में भंग मत होखे दीहऽ। चतुर खेलाड़ी से भेंट भईल बा, धीरज से काम लीहऽ!"

कान्हा धीरे-धीरे मुरली बजावत रहन। नन्दलाल कदम्ब वृक्ष तर बइठल रहन। गोरस बेंचे जतिना ग्वालिन आवत रही, कुल्ह जानी के बिलमावस, राधा के बारे में बड़ी बेचेनी से पूछस, "राधा आवऽतारी? लउकली ह? का करऽतारी, अइहें कि ना? गोपी लोगिन बनवारी के बेचैनी देख के ताजुब ना करत रहीं। रोज के इहे हाल रहे। ओह डगर से, राह से जे आवे, जन-जन से बनवारी ईहे सवाल करस, राधा आवऽतारी? छन-छन बीतल जाय, राधा आवस ना। ऊ अउरी बेचैन भईल जास। बेचैनी अपना पराकाष्ठा तक, हद तक पहुँचत जाय। अनगुते से साँझ हो जाय, अन्हरिया के करिया चादर फयलल जाय बाकि बनवारी के आशा नया होत जाय। कवनो कुकुर-सियार बिलार, साँप-बीछी के चलला से खड़ख्ड़ाहट होखे, आवाज होखे त बुझाय कि आ गईली। जियरा खिल जाय। मन-मयूर नाचे लागे, थिरके लागे। उल्लास से भीतरे मन आ जीव भींज जाय। देह में मिजाज अन्दाज से जादे जाम्बाज बने लागे। नजर दउरे लागे एने देखस, ओने देखस, ना देखस, फेन देखस, थोरे देखस, जादे देखस, भूखे देखस, पिआसे देखस, पूरब देखस, पछिम देखस, ना देखस तबहूँ देखस एने लउकस, ओने लउकस, ना लउकस, तबहूँ लउकस जियरा में फोकस रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
कुछ-कुछ होखत रहे। फेन हार दाव देख के मुरली बजावे लागस, गोपी लोगिन से पुछे लागस, ना मन थाके ना देह थाके, गते-गते नेह पाके।

सोंचत रहन, आजु मन ना मानी, जमाना के छोड़ देब, कुल हद तोड़ देब, राधा कुँज-भवन में पग घइली त ठगा गईली। देर ले मुरली के सुर प थिरकते रहि गईली। नाचे लगली, गावे लगली, गूँज के मालपहिन लेब, पिताम्बर धारन क लेब बाकिर ओंठ प मुरली जवन रस लेत बिया, अपना ओठ प सटहुँ ना देब। हार धरे लगलन त देह छुआ गईल, गनगना गईल।

राधा कहली, "हार छोड़ऽ, टूट जाई।" ऊ जबाब देलन, "छोड़ब ना?"

राधा बिनती कईली, एहीजे बइठत बार्नीं, तोहरे माला अइठतानीं!"

हार छोड़ि के हाथ धऽ लेलन।

राधा कहली, "अंगुरी ध के पहुँचा धईलऽ। छोड़ऽ, छोड़ऽ, हम सभ बूझ गईलीं, अन्हारा में चलत चलत जूझ गईलीं, तहार का हाल बा? हमार मन फजीरहीं से बेहाल बा। सभ समझऽतानीं, रउआ मूल छोड़ के फूल तुरऽतानीं, डाढ़ नवाइब त टूट जाई, कलश प दाब परी त फूट जाई।"

"हमार त मत पूछऽ, आज मत रूसऽ, फजीरहीं से रेती में लोटत बार्नीं, हियरा में जियरा के भाँग अस घोंटऽ तार्नीं।"

"दिन भर उदासी रहे। कइसहूँ जान-में-जान परल, अनगूते से अबगे मन भरल, दिन भर त जियरा तलफत आग में जरल!"

कान्हा मुसकाए लगलन, त राधा मुँह फेर ले ली। ऊ राधा के चेहरा से नजर ना हटावत रहन। राधा के दबावल हँसी दबल ना रह सकल। हाथ सरकते ऊ तड़प गईली, कान्हा उनका आँख में झाँके लगले। हँसी-खूशी से प्रेमालाप प्रारंभ भईल। पहाड़ अस दिन कइसहूँ कट गईल।

राधा कहली, "डोरा डाले के नईखे!"

"तऽ तूँही कहऽ, कोरा डाले के बा?"

ऊ कहली, "जिनिगी जिये के बा सरल! शिवजी लेखा परहित में गरल पिये के बा, हम ईहे कहब कि जीभ आ जवानी के सिये के बा।"

"भौंरा रस आ मध खातिर छटपट-छटपट करत रहेला, रसोपलब्धि के उपरान्त झाँकीओ ना मारे। समझदार चोर चोर-कर्म पारंगत होला, नव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
सिखुआ चोर डाँड़े प धरा जाला। आपन धन गुप्त रूप से लुका के, ढाँक के रखल जाला। दोसरा के पूँजी जियान करे में माजा आवेला!''

''कान्हा कान देके सुनलऽ फजिर हो गईल। बहस कईला से भोर फेन अन्हार ना हो जाई? गगन के तारा छल क के तहरे अस छलिया बन गईले स। चाँद फीका पड़ गईलन, मुँह के पान मलिन हो गईलन। गाय सभ खोरी धईली स। तहरा दिमाग में अबहीं रात बा? कुमुदिनी पराग से पूरित हो गईल। ई ठीक ना होई, दुनिया भर में निन्दा होखे लागी, सुनी से उचित आ ठीक ना कही! अब अंगिया अंगुरियावे के नईखे। चतुर अदिमी पर सलाह भी मानेला। जिद ना करे। गालब, नहुष नरेश लेखा हठी अदिमी भारी फेरा में पर जाला। अपने चतुर बनल कवनो चतुराई ना ह। तनी धीरज भी रखे के चाहीं। अधीर बनला से काम बिगड़ जाला सभे जानऽता। अलक खुल गईल, पलक–दल मूँदा गईलन स, श्रम–सुख के हद ना भईल? बाल सम्हारत बाला के ना देखलऽ? मुख-लट–पट सम्हऽरली, दीप बुझा के हँस के कहऽतानीं त तहरा बुझाता कि हम गलत कहऽतानीं? ई ठिझोली भुलाई का? तहार कर्कश हाथ त बड़ी क्षति पहुँचवले बा। एक बसना हो के निहोरा करत रहीं त तहरा बुद्धि प पानी परि गईल ह! कांटा के बीच कली के हालत तउला गईल ह। हम त एक मुट्ठी के होके रहि गईलीं हँ। दोसरा के दुख जल्दी ना बुझाय।'' समुद्र तरंगित होला। मर्जादा कबहुँ ना भुलाय। हम त मुरली के धुन सुनत रहीला। खाली सुनबे करीला। तूँ त मुरली के तान देलऽ बाकिर हम जानऽ तानीं त बिना तहरा के केहू कतिना उछली–कूदी, मुरली बाजिए ना सके।

आशा के लता पता सहित लागि गईल बा, पूरा खिले देवे के बा। झटका से मइंसा जाई त मुरझा के गिर जाई। अधखिली कली में परिमल, पराग के अबहीं अभाव बा। इ छिपल नइखे। कच्चा फल में मिठास खोजे के परी, निठुर मरद के निठुराई, सगरो काम ना आई। करिया प अतिना गुमान बा?''

बिहारी जी बवाँरा हाथ धर लेलन आ उनकर बात टार देलन। एगो नया खेल खेले चलऽ! कहली, ''कवन खेल, कइसन खेल?''

''चलऽ ना, बताईब। मन एकदम अनन्दित हो जाई।''

मनगर गईली। डाढ़ में मोटा बरहा बान्हल रहे। दूनों ओर नीचे तक लटकावल रहे आ निचला छोर प बड़का पीढ़ा कस के बान्हल रहे बाकिर राधा के पहिले से ना जानल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहारी जी पीढ़ा प बइठ गईलन आ राधा के प्रेम से कनखी से ताक के बोलवलन, "एही प आवऽ"। ऊ पूछली, "एह प का होई?"

जवाब देलन, "माजा लेल जाई?"

ऊ कहली, "हम अईसन-ओईसन कवनों काम ना करब?"

ऊ समझवलन, "ओईसन कवनो काम नईखे, एह प अईबू तब नू बुझाई?"

"ढिलुहा ह, तूँ कुछुओं मत करिहऽ पेग मारब त माजा आई।"

राधा कहली, त घाव ना नू लागी? सोझ कहऽ?"

"ना भाई, अनटिआवऽ मत, जल्दी हे प आवऽ बईठऽ। शुरू करीं जा?"

राधा किनारा के जोर ध के धीरे से बईठली। कहली, "हमरा के गिरईहऽ मतडर लागऽता!"

उनकरा बईठते कान्हा गाल चूम लेले। ऊ पट दे गोड़ नीचे बढ़ा के जमीन प खड़ा हो गईली।

कहली, "एही खेल खातिर अतिना देर ले बेचैन रहऽ?"

तली कान्हा अपनहूँ उतर के उनकरा के जल्दी-जल्दी क बे चूमले, गिनले ना। राधा आँख नचा के भागे लगली, कान्हा हुमच के बवाँरा हाथ ध लेलन आ पीढ़ा प बईठा देलन। गते-गते पेग मारे लगले, आ एक वे खूब हुमचउअल क देलऽन। राधा के लट के बन्धन खुल गईल, कमर लचक गईल, उतर के डाँड़ प से निहुरगईली। कान्हा उतर के अंकवारी में कस फेर से ढिलुहा प चढ़ावे लगले।

ऊ खिसिया के बोलली, "हम अब तहरा जवरे ई खेल ना खेलब। एह तरह से मचकी मचकवलऽ कि हमार डाँड़ लचक गईल मचकी के मचका देला से। तहरा जवरे मचक उवल ना खेलब! हम अनाडी, तूँ खेलाड़ी!" आँख नचा के रोसिअईली आ आँख देखवली, देखते-देखते झट दे झटक के परा गईली। बोलली, "अईसन अबाटी से आजु ले भेंट ना भईल रहे।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(5)

कान्हा से क दिन से राधा के मिलन ना भईल। कान्हा राधा से मिले ना गइले। सोचत रहन कि जाईं बाकिर फेन दिमाग में बात आवे कि ऊ काहे नइखी आवत। क दिन से इहे सोचे-विचार करे के विषय रहे। उनकरा कुछ बुझाते ना रहे कि का करे के चाहीं। कबहुँ मन में आवे कि राधा से मिले जास। कबहुँ मन में आवें कि ऊहे अइहें। एही उहा-पोह में क दिन बीत गईल। देखे खातिर, बेचैनी रहे, बाकिर जात ना रहन। बुझाय कि गोड़ में लबादा बान्हल बा, जाये में भारी लागे। मन करे फेन मन हिचक जाय। कवनो काम में मने ना लागे। खाये-पीये के भी मन ना करे, आ इयादो ना परत रहे कि नईखन खइले। भीतर के बेचैनी रचिको कम ना होत रहे। बरसाने के डगर ओर ताकत रहन। केहू आवत लउके त बुझाय कि आवऽतारी बाकिर देखत-ताकत आँख थाक जाय! गोप लोग खेले खातिर आवस तनिको रूचि ना देखावस। कह देस कि मिजाज ठीक नईखे। ऊ लोग उदास होके वापस हो जास। गोप लोग हाथ पकड़ के झकझोरस बाकिर बात ओहजे के ओहिजे रहि जाय। लोग उदास होके वापस चल जास।

दान घाट प आजु बनवारी बाँसुरी बजावत रहन आ केहु खातिर भीतरे से बड़ी बेअगर रहन। देही में तितिकी लागल रहे, हलचल रहे। रोज अस आजु गोपी लोग से दही-मक्खन दान ना माँगत रहन। आवे-जाये वाली हर गोपी से, हर अदिमी से राधा के बारे में जरूर पूछत रहन!

राधा के अलगे बेचैनी रहे। कान्हा के क दिन से देखला बिना, बोलला बिना, हँसी ठिठोली बिना कुछुओ सोहात ना रहे। जब से उनकरा से भेंट नईखे मौन बाड़ी । छने में घूमे-टहले लागस आ दोसरा छन खटिया प एह कर से ओह कर देह करे लागस। कुछ दूर पर घर से निकल के जास, फेन के जाने काहे लवट जास। देही में उखी-बिखी लागल रहे। बुझइबे ना करे कि के का बिगरले बा जे अनसाईल बाडी, खिसिआईल बाड़ी। केहू से केहू कुछु कहला तब नूँ बुझऽला कि का माजरा बा, मतलब का बा।

ललिता उनकरा से अतिना नियरा रही, अतिना लागल रही आ अतिना परिकल रही कि उनकर हर गति-विधि के जानकार आ उनका मन के परत-दर-परत के गेयान रखेवाली रही। उनकर हर भाव-भंगिमा आ हरकत के सही अन्दाज लगा लेत रही। अईली त टहरत, बहरी-भीतरी आवत-आज आ करवट फेरत, छने-छने चेहरा के रंग बदलत छटपटाहट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ बेचैनी के, दरद के थाह लगा लेली। तुरते उनकर छाती आ दरकत अंगिया आ जियरा के टीस ध लेली।

ललिता समझवली, "मुअला से, परान तेअगला से का होई? हम जा तानीं लिया आवे। तुरते आ जाईब, हमरा प भरोसा करऽ? हम सभ दाव जानऽ तानीं! उलटी पाकड़ होई कि भईंस ममोरी होई? कइसे चित होइहें, सभ जानऽ तानीं। हम पटकनी देवे के उलुटो दाव जानीला। उहे ना आवेलन! तूँ मुअऽ जन। जल्दी कहऽ, दउरले लिअवले चलि आईब, रचिको सुसताहुँ के मौका ना देब, तूँ कहऽ तऽ?"

राधा त तलफत चिनगारी के दवँक में जरते रही, ईशारा करे में रचिको देरी लागल? तुरते मुड़ी हिला देली। ललिता उनकरा ओर ताक के लमी लिहली। हँकासल-पियासल आ हाँफत पहुँचली।

एनहीं नजर भिड़ऽवले रहन। देखलन कि ललिता दउरले आवऽतारी। तब उनकरा तनी दम परल।

जाते पूछलन, "का हो गईल कि अतिना हाँफऽ तारू? का बात बा?"

हाँफते कहली, "अइसने अजूबा हो गईलबा!" "त कहऽ कहत काहे नईखू कि का हो गईल बा? जोर-जोर से हाँफऽ तारू, कुछ कहत नईखू? साफ-साफ कहऽ ना?" उठ गईलन आ अवरू बेचैन हो गईलन। समझ में ना आवे कि का हो गईल? बेताबी से पूछऽलन, "साफ सोझ भाषा में जल्दी कहऽ? का करे के बा? का भईल बा?

"एगो अचरज अवला बगइचां देखली हँ?" "त बतावँ खोलि के बतावत काहे नइखूँ?"

"कहऽतानीं, तनीं दम त परे द?"

कान्हा उतावला हो के उनकर हाथ ध के नीचे बईठवलन आ पूछलन, "अब अस्थिर से कहऽ? का देखलू ह?"

ऊ सुसता के कहे लगली, "अजबे बगईचा बाऽ, दू गो कमल के फूल बा, दूगो विशाल आकार के मदमस्त हाथी दूनों कमल पर खिलकट करऽ तारे सऽ! ओहनी प शेर प्रेम से छेड़-छाड़ करऽ ता"

कान्हा पूछलन, "आरे कमल बहुते कोमल होला, मुलायम होला। ओह प हाथी कइसे बईठी?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"त ईहे देखि के नूँ दउरले अइलीं हँ। रउरा अतिने प्र अचरज के सवाल करे लगलीं। पूरा सुनब त देखे खातिर दउर चलब!"

"आछा, अउर आगे कहऽ?"

राधा के सखीं समझा के कहे लगलीं, "सिंह के ऊपर एगो तालाब बा लबालब पानी से भरल। ओकरा ऊपरे बड़का पहाड़ बाड़े स! पहाड़ प कंज के पराग गमकत बा? सूँघ के फरके से जियरा जुड़ा जातिया। भीरी आ नियरा से सूँघब त होश में ना रहब। अउरी आगे सुनीं ना? ओकरा ऊपरेनीमन-चुमन कबूतर एगो आराम से निश्चित बईठल बा। कबूतरवा प मदमस्त मृग बईठल शोभा बढ़ावऽता। आ काग ओहिजे आराम फरमावता! ओहनी के ऊपरे खंजन पंछी धनुष तान के चन्द्रमा के मारे चाहता। चन्द्रमा के ऊपरे एगो मणिधर नाग फन काढ़ि के फुफुकारऽता! भयभीत होके रउरा के देखावे खातिर एक सुरियें-दउरल आवऽतानीं। उठीं जल्दी चलीं, ई अइसन अनुपम बगईचा देख के पनपना जाईब! पहिले अईसन बगईचा के कबहुँ सुनले बानीं?"

कान्हा हड़बड़ा गईलन आ ललिता जवरे हबकूरिए दउर चललन।

हाँफते ललिता जवरे कन्हैया राधा भीरी पहुँचले। लमी लेवे में गोड़ के आ सउँसे देह के कचूमर निकल गईल, बाकिर अचरज के बगीचा देखे में सभ भुला गईल। ललिता से हाँफते पूछलन, "बगईचा कहाँ बड़ुए। जल्दी देखावऽ"

ऊ कहली, "आन्हर का हवऽ?"

बगईचा हमरा कतहूँ नजर नईखे आवत, त हम आन्हरे नू बानीं। खाली मजाक करलू, दउरा के मुअवले बाड़ू।"

ऊ अतिना कह के रोसिअईलन। तमतमा गईलन। कहलन, "जल्दी देखावऽ? बुझाता कि तू झूठ के मोटरी हऊ।"

ललिता कहली अपनी सखी से, "तनीं चीत पर जा। ई का-का दो खीस में कहिहें।" राधा दीवान प एकदम चीत हो गईली। तब ललिता डपट के आ आँख नचा के कहली,

"तनिको गेयाने नईखे त देखऽ, देखावतानीं। बउराह के कतिना बताईं?

"हई गोड़ कमल अस राधा के कोमल बाड़े स। एहनी प हाथी के सूँड़ अस जाँघ छरहरी बाड़ी स। ओह प हई बीता से भी कम मोटाई-अवली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाँड़ पर शेर बइठल बा। शेर प हई पेटवा बउली ह। बउली प दूगो ओस्ताज पहाड़ तरनात रहऽतारे स। एहनी के तोहरा अस सुकसुकाह मरद के ढकेल दीहें स त उधिया जइबऽ! पहाड़ प गरदन कबूतरी बिया। एकरा ऊपर आँख पर धनुष तनले खंजन बिहरतिया। लिलार प चाँद अपने बिराजमान बा आ ओकरा प से करिया नागिन लपकत बिया। ओठ पर अमृत रस चूअता। जल्दी से रस पीए के काम लगावऽ। बगईचा में त पहुँचिए गईलऽ। अब का बउराही करऽतार?

ललिता गते लापता हो गईली।

***

(6)

राधा के माई बड़ी होशियार मेहरारू रही। राधा के सवाँर के जतिना सुधर बनवले रही ओह से अधिका उनकरा के आदमियत के सीख उनको जेहन में ओरच के कस दिहले रही। बरसाने में कवनो लइकिन के या औरतन के कुछ रोग बेआर होखे त तुरते ऊ बेना लेके ओहिजा पहुँच जास आ बेना घन्टन हँकस। उनकरा के ओहिजा देख के लोग-बाग, बाग-बाग हो जास। एह काम में उनकर सखी आठों जानी आगहीं रहस।

उनकरा सखीं लोगिन आठो जानीं ललिता, विशाखा, चित्रा, कम्पमलिका, कम्पलता, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगादेवी आ सुदेवी रहीं।'ललिता उमर में सबसे बड़ रही। उनका के सभ जानी जादे मानत जानत रही। ललिता राधा जवरे आठो घरी लपटाइल रहत रही। ललिता बिना राधा, एको छन-चैन से ना रह सकत रही। दूनों जानी दू देह एक प्रान रही।

ललिता राधा से उमिर में चौदह बरिस आठ महीना सताईस दिन बड़ उमीरदार रही। एह से राधा के अनुभव के अनेकन रंग ढंग सीखावत-बतावत रही। दूनों जानीं में आखिरी नेह-प्रेम सराबोर रहे। एक-दूसरा से भेंट ना भईला प छटपटाहट वर्णनातीत रहे। कान्हा के एगो प्रेमिका चन्द्रावती रही जहाँ कान्हा के उनकरा से प्रति दिन भेंट होत रहे। ललिता के पति आ चन्द्रावती के पति आपुस में दोस्त रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा के माई कीर्ति कुमारी पूर्व जन्म में भी वृषभानु के पत्नी रही। पूर्व जनम में वृषभानु के नाँव सुचन्द्र रहे आ कीर्ति कलावती कहात रहीं। दूनों जने में पूर्व काल में भी अतिशय प्रेम रहे।

ललिता के पति भैरव चन्द्रावती के पति गोवर्धन मल्ल के जमुना पार करे में जान बचवले रहन, तब से दूनों जना में खूब दोस्ती हो गईल रहे। जब दूनों जने साथे गप-सप करत रहन त राधा के पहुँचला प खूब दूलार-पेयार करत रहन लोग। राधा के जल्दी बरसाने लोग जाहीं ना देत रहन? राधा के बुझाय कि अपनहीं घरे बानीं।

ललिता के बाप विशोक गोप आ माई शरादी भी राधा के जी-जान से दुलारत रहे लोग, ललिता जवरे राधा के सखिऔरा से ऊ लोग खूब परिचित रहन। राधा अतना चिकन-चाक़न आ सुनर रही कि ऊ लोग राधा से सोरहो छन बतिआवते रहल चाहत रहे। उनके में चार घरी चार पहर लोग लागल रहत रहन। रधियो ललिता के माई-बाप में अझुरा जात रही। दिन गुदस्त हो जात रहे। कहियों, कहियों करिया अन्हरिया कूचू-कूचू रात हो जाय त कँगना के मणि के अंजोर में बीरत रात खा घरे पहुँचस आ कीर्ति दउर के अंकवारी में जाँत लेस। कहस, "हमार करेजा दिन भर कहाँ रहली ह? हम मनी बिना फनी अस फिफिहिरी भईल रलीं हँ?"

जँइसे उनकर जान दिन भर फफनत रहे आ जोखिम मे परल रहे। दिनों भर मन आज कउआईल रहे, भुलाईल रहे। अब उनका जान में जान परल। राधा बिना दिनों भर बेखइले-पियले एकादशिए रही। एक ठोप पानी मुँह में ना गईल रहे। राधा बिना कीर्ति बेअगर हो जात रही। छछने लागत रही। दिन-दिन भर पचीसों लईका लईकी से पूछत रहिहें, "राधा काहाँ बाड़ी, केकरा जवरे बाड़ी, कब अइहें? दूरन्त अनन्त संसार में रधिया कतहीं भुला मत जाय। बेखइले-पियले कबो भर दिन सोचते रह जास कि रधिया भुला जाई त हम का करब, कईसे रहब? जिनिगी जियान हो जाई, देह झवान हो जाई, मन-मयूर के नाचल हमेशा-हमेशा खातिर बन हो जाई, मुरदा हो जाई तब हम का करब, हम मेहरारू जात कहाँ जाईब कहाँ खोजब आ कईसे जियब? राधा बिनाऽ जियल कवनो जियल ना होई?

हरमेसा मोक्षानन्द में गोता लगावत दिन-रात बितला से जिनिगी कवनो काम के ना रह जाई! सभे हमरा के अशुभ अमंगल आ अपावन माने लागी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू-केहू त हमरासे बोले-बतिआवे आ छुआए से बचे लागी। घिनाए लागी। हम अदिमी के गिनती में ना रहि जाईब। हम अपने नजर में गिर जाईब। कईसे जियब? जहर-माहुर खा जाईब?''

केहू प आपन प्रान निछावर कर देल बड़ भारी काम ना ह। आपन सर्वस्व हार के विजयी के सामने जीवित आ सुखद सम्पन्न रहल सचहुँ असम्भव काम ह। राधा चरणारविन्द सर्वथा इच्छित कन्हैया सदा सर्वदा आपन गुणज्ञता के द्वारा राधा जी के सुदर्शन आ उनकरा अंगन के छुए के कामना से प्रेरित रहेलन आ कबहुँ साथ छोड़ल ना चाहस, ई विचारणीय आ सोचनीय बा। राधा प्रिय पुजारी पद सभ करे खातिर काम्य बा। गोपिन लोगिन के राधा चरण धूलि मस्तक प धारण करें से रसिक शिरोमणी कन्हैया के साहचर्ज आ संस्पर्श प्राप्त होता, सभे जानता। लक्ष्मी, सुकदेव आ नारदादि भक्तन के जवन-चरणारविन्द प्राप्ति में जीवन उत्सर्ग हो जाता ऊ राधा के किरिपा से सभ गोपी लोगिन सहजे प्राप्त कर लेता। नातऽ सँउसे जिनिगी जियान कइलो प दर्शनो होईत कि ना, ना कहल जा सके।

राधा आपन अलौकिक आनन्द रस-सार स्वरूपी अंग स्पर्श से जेकरा के जीवन-दान देत रहली आ करोड़ों काम-बान से मूर्छित रसिक लाल के संजीवनी सिद्ध हई, उनका खातिर माई आ सखिन लोगिन के बेचैनी स्वाभाविक बा, एह में कवनो अचरज नईखे। राधा, बिना पानी के अभाव वाली मछरी अस लोग तलफत रहला, चाहे मइया कीर्ति आ बाप वृषभानु होखस आ चाहे गोपिन लोग अउर उनकर ललिता, विसाखा चित्राादिक सखी लोगिन काहे ना होखस।

राधा जी के स्थिति अइसन बा कि लीला बिहारी रसिक सिरोमणि कन्हैया जी से नजर मिलते राधा के अंग-अंग में स्फुरण, भाव प्रतोदन रस संचरण से भंगिमा बदले शुरू होखे लागला। दृगभंगी आ भ्रू भंगी चंचल चलायमान हो जाला। गाड़ी खुल गईला पर कहीं कतनो जरूरी रहलो पर ठहरे के सवाले ना रहे। देह आ देह के कवनो अंग प रोक लगावल संभव ना रहि जाय। राधा के लिलार प आ कमसीन सुकोमल गाल पर रंग बदले में रचिको देरी ना होखेला। लीला लालित्य आ रूप लावण्य के चमत्कार से रसिक लाल प्रभावित ना पराजित हो जाले बाकिर चिन्हाए ना चाहस। मरद मेहरारू भीरी कभी भी आपन हारल मंजूर ना कईल चाहे, काहे कि मरद के मर्दानगी, ना त जिनिगी कवना काम के?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्हैया जी राधा जी के भंगिमा के रस पोरे-पोरे पान करे में मस्त हो जाले, दुनिया के एकदमें भुला जाले, सभ सीमा लाँघ जाले।

राधा जी प्रेम मग्न होके भी सावधानी बरतली कि कवनो चेष्टा-परचेष्टा से रस-कलह मत उपस्थित हो जाय।

वृषभानु जाया रस-चातुरी में पूर्ण पारंगत हई। रस-भंग के अन्देशा से छनकल रहली। ना कहाला कि छनकल.... चूच पर हाथ। रसिक प्रिय के रसप्रिया हई। रसिक शिरोमणि के समस्त साध्य के सफल साधिका आ साँच आराधिका हई। राधा वृषभानुजाया उन कर रस स्वामिनी हई आ ऊ प्रेमधामाधिनायक मोर मुकुटधारी काकु चाटु वाणी दीन प्रेमाधीन नायक हवन। रस प्राप्ति में उनकर चाटुकारिता असली सहायिका हई। कभी कभार राधा के किंकरीगण के सामने रस आतुर-चातुर रसिक लाल अपना कीमती सुन्दर सुललित मोर मुकुट से काम बनावे खातिर श्री पदरज मार्जन करे से भी ना चुकस। एही रस माधुर्य अप्रतिहत धारा में गोता लगा के प्रफुल्लित हो जाले? मान-मनौअल आ मनुहार के त ऊ सरताज सिध कइले बाड़न अपना के। एह उदम में उनकरा के केहू परास्त ना कर सके। मनुहार के इहे अन्तिम गुणों ह जवना बिना रसिक सिरोमनि ऊ ना कहा सकस।

दृगभंगी आ भ्रूभंगी राधा जी के दूगो अस्त्र के कन्हैया भीरी कवनो दाव ना रहे, कवनो जवाब ना रहे। ई दूनों अस्त्र राधा के ब्रह्मास्त्र रहन स। स्नान कुंज, क्रीड़ा कुंज, केलि कुंज, चाहे शयन कुंज में, कन्हैया जी जब मान विवश होके कुछ करिश्मा आ खिलकट कईल चाहस त तमाशा त शुरू कइए देत रहन। विशाखा, चित्रा आ कम्पमलिका कान्हा के मोहित करे खातिर भिन्न प्रकार के पुष्प माल तईयार क के बझावे के खूब लोगिन स्वाभाविक चेष्टा करस जा आ कान्हा के आपन हथियार डाल देवे के परे। बाकिर कबो अइसनो होखे कि कान्हा प सब हथियार फेल हो जात रहे। कान्हा सुने प तइयार ना होखस आ केनहुँ से घबरइबे ना करस। सखी लोगिन के पाशुपत अस्त्र भी नाकाम हो जाय त राधा के ब्रह्मास्त्र के अतिरिक्त कवनो उपाये ना काम करे। सखी लोगिन राधा जी के ताके लागस कि हमनीं के हारऽतानीं जा, बोकाबू हो गईलीं जा, अब तक पटकाए के, चित होखे के स्थिति आ गईल! राधा समझ जास कि सखी लोग निरूपाय होके गिरे चाहता। त तड़ दे राधा दृष्टि भंगी के नारायणास्त्र चलावस, फेन तुरते भ्रूभंगी ब्रह्मास्त्र चला देस जवन एकदम अचूक आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमोघ अस्त्र कन्हैया जी के थरथरा देसऽ आ कंपा देसऽ। कन्हैया जी अस चतुर शिरोमनि मरद झट दे झटक के पराये में नाकाम होके ठेहुनिया जास, शयन कुंज से कतरिया के केलि कुंज में प्रवेश कर जास, हेल जासं अब आगे कवनो चारा ना रहे, निरस्त्र हो के दूनों बाँह उठा देवे के रहे। लीला प्रेरक आ लीला विधायक धाम प पहुँचला के उपरान्त त खाली एक प्रान ना एक देह भी हो जाये के रहे। साज-बाज, पुष्पगंध, प्रकृत सिंगार हाव-भाव संचारी सहित कामोद्दीक सुहावन मौसम अग्रिम मोर्चा सम्हरले तइयार रहन स। भाव धारा प्रवाह में अवगाहन करते राधा निधि के प्राप्ति सरल सरस हो गईला प अगिला कदम रसिक शिरोमनि के बतावे के ना रहे। अब अनिर्वचनीय चतुर शिरोमनि के द्वारा श्री चरणों में निपतन ही अन्तिम उपाय रहि जाला। मझधार के चकोह में हाथ-पैर मारला से कवनो लाभ के संभावना ना रहे। बूड़की लगा के रसातिरेक में निमग्न होखहीं के परेला। दोसर कवनो चाह भी ना रहे। से रसिक विहारी सँचहुँ तब निमग्न होके सुस्त पर जाले।

परिरम्भन रसोत्सव समाप्ति के पहुँच जाला।

सौरत रस में निमग्न प्रेमी जुगल छवि शैया भवन के रंध्र जाल से सहचरी गण निरख निरख के ब्रह्मानन्द , अनुभव करऽतारी जा। केहू कुछु में निमग्न केहू-केहू में निमग्न! श्रीवन, अलि, शुक, पिक, मोर-मरालादि कलरव करे लगलन। मुखरित कलरव आ मनोहारी प्रातः बेला के उपस्थिति हो रहल बा। प्रातः पवन डोलऽतीया। मुख लट पट संभारे में लागे के बा।

कन्हैया जी उच्चारण करत बाड़न, "चतुराई की गहराई, वत्सलता आ प्यार-दुलार की सीमा, मधुरता की मदहोशी, रस की अजस्त्र धारा, लावण्य की निर्वाध सरिता आ प्रेम की पहुँच, केलि की करतूत, हमरा के कमसीन बाँह से धीरे से उठावऽ? अनन्यता की अतृप्ति, चटपटी चाह अबहीं मेटल नइखे, हृदय के संस्पर्श से मधुर मिठास जियरा में भर दऽ! रस धार के अवगाहन से मन भावन मजा में मंज लेवे द। साध मिटल नईखे। एह से अनुरोध नकारऽ मत। अन्तरंग केलि के आनन्द ना बुझाईल! प्रणय कोप से रस विवशता के विचार के विफल मत करऽ? हमरा आँखिन के दैन्य सागर के लहर, तट से टकराईल चाहऽतारी स। तूँ विवेक से विचार करऽ। अनुरोध के अन्तरंगता के पहिचान करऽ। कोरा परिहास के कल्पना मत करऽ। निः संकोच प्रसन्नतापूर्ण नजर से झाँकऽ आ कोरा में समा जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जियरा जुड़ा जा। निठुरता तहरा शोभा नईखे देत। हम प्रणय रस से एकदम अपरिचित बानीं। तनिको जनईबे नईखे कईल। भरोसा नइखे होत त अंकवारी में अन्दाज कऽ लऽ? हम मिथ्याभाषी ना हईं!

हम रस के उच्छलन आ उज्जम्भन चाहऽतानीं। तरंग के विस्फुरन ना, तत्काल अन्तर्लीपन के अपेक्षा करत बानीं जवन तहरा किरिपा से सहज सुप्राप्य बा। आना दोकरा में हो जाये वाला बा। पहर–दूपहर के काम थोड़े बा? रसानुभूति चाहऽतानीं। माँग ऊ माँग जवन माँग दिल माँग लेलक। आ टाँग ऊ टाँग जवन टाँग दिल टाँग लेलक! कतिना समझावे के परी? तूँ त समत्व भाव से अन्तरंग आ अभिन्न हृदया हऊ! कतिना मनुहार करावऽ तारू? रहम करऽ? रस निमज्जन चाहऽतानीं, अवरू कहँवाँ कुछ कहऽतानीं? अपना भीतरी भाव में बहऽतानीं। पलकन पानी ढाँपऽतानीं!

राधा जी रसिक वर प्रीतम के प्रति विवशता, दीनता आ अधीनता के स्मरण से आनन्द विह्वल हो गईली। देह ढील दिहली! कान्हा निमग्न हो गईलन! डुबकी लंगा के बूड़ गईलन!

***

(7)

सहज कोमल प्रकृति राधा जी कन्हैया के साथ कुंज भवन की पुष्प शैया पर विश्राम कर रहल बाड़ी। शान्त हृदय राधा रस लम्पट प्रीतम के मिठाई अस मधुर बात ध्यानस्थ होके सुनऽतारी। ऊ जानऽतारीं कि इहाँ के रस लम्पट हईं आ घुमाफिरा के निष्कर्ष केलि–क्रीड़ा तक पहुँच जाई। एह से सतर्क जीव छनकल बा। बतकही प्रेम से मधुर ढंग से निरंतर जारी बा। चेतल रही कि बतकही में उलझावस मत। उनकर देह रतिए से बथत बा। अलसाईल बाड़ी उन करा अउर कुछ सोहात नइखे।

कतिनो अक्षम्य अपराध भईला पर भी प्रिया जी अप्रसन्न ना होली आ अनसइबो ना करस। अइसने सुभाव हईन। उनका सुभाव के सभ लोग लईका–लईकी, सखी सलेहर आ मरद–मेहरारू सराहत रहला लोग। केहू प प्रिया जी के कबहुँ अनसाईल देखलहीं नईखे केहू। सम सुभाव के हईं। सभ करे से मिसिरी घोरल आवाज में मुस्कुरा के बोलली। कम से कम शब्द में जवाब देली आ गुमार से बड़ी दूर रहली। कन्हैया से अवरू थाह के, तउल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कवनो जवाब देली। अनतउल बोली उनका से केहू सुनलहीं नईखे। लपर-झपर बोले के आदत नईखे। हवक के ना बोलस। 'हबकि न बोलिबा'-जानऽली गोरखनाथ जी के। बोलली त लाल-लाल ओंठ खुलला प कुंद कलिका अस खारौली दाँत में चमक चेहरा भीरी अंजोर क देला। एही तरी विहारी जी से मधुर आनन्द दायक आलाप चल रहल बा। कुन्द कलिका की दशनावलि अंजोरिया विस्तारित करऽतीया!

ललिता सभ सखी लोगिन के साथ मुस्कुरा के ईशारा कईली। वार्तालाप बन हो गईल। सखी लोगिन कुंज भवन में विहँसत प्रवेश कईल।

बतरस लालची सखी लोग बात बनौवल शुरू कईल जे आनन्द के रस-धार में सभे गोता लगावे लागल। आनन्द मूर्ति कन्हैया राधा जी के अंग-प्रत्यंग के विभूषित वर्णन करे में मग्न हो गईलन। राधा स्नेह विगलित हो के लाज में संकुचित होखें लगली। कान्हा के प्रीति सागर के बतकूचन के तरंग अमर्यादित भी हो के हृदय तट से टकराये लागता। सुन-सुन के आ विशेष रूप से आपन बड़ाई राधा जी के कचोटे लागता। स्वर्णाभ शरीर में चमक के उतार-चढ़ाव जारी बा। सखी लोग बिहँसत बा। राधा जी के भीतरे उथल-पुथल मचल बा एक दम आन्दोलित विलोड़ित बाड़ी। उन कर असहज रूप प्रकट हो रहल बा। ना चाहते हुए भी ऊ सहजता के दूर छोड़ रहल बाड़ी। सभके, भूख-पियास भुला गईल बा।

परिचारिका श्री रमणी पहुँच चुकल बाड़ी। राधा जी के मुँह ताकऽतारी कि ऊ कब आपन कंचुकी खोलिहें आ श्री रमणी उनकरा स्वर्ण कलश अस हमेसा डेरा के एके में सटल दूनों कुचन पर चन्दन के लेप लगइहें आ सुगन्धित नव कंचुकी धारण करईहें? श्री चरण में मणि नुपुर पहिरावे के बा। अपना नख से श्री राधा जी के उलझल केश राशि के सुलझा के काली सर्पिणी के रूप में सजावे खातिर चिन्तित बाड़ी। आँख के कोर से राधा जी के मन मुँह परखऽतारी, मने-मने हरखऽतारी कोमल स्पर्श सुख खातिर छने-छने तरसऽतारी।

बिहारी जी अइसन बातन के चकोह में बझवले बाड़े कि दोसर सुने के बेंवते नईखे लागत।

मोक्षानन्द आ सच्चिदानन्द के सागर में लोग बड़ी सरधा से इयाद करऽला आ चरचा होला। बाकिर एह घरी जवन बिहारी जी के बतकूचन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आनन्द सागर में आपन कुल सखी लोगिन के साथे राधा जी भीतरे से आनन्दानुभव में रस मग्न बाड़ी, ऊ त एकदम अतुलनीय, वर्णनातीत बा। केहू एह आनन्द के सही आ यथार्थ वर्णन करे में समर्थ नईखे।

ऊ कहऽतारन, "राधा! तहार कटि-देश देख के मन लुबलुबाइल रहता कि धके अपना में अनन्या बना लीं। ताकऽतानीं त मन हहरे लागता। 'करान्तमित मध्यासि' ईहें ह! 'विशालं जघनं पीनमूरू करिकरोपमौ' एकरे के भावुक रसिक लोग बतावला। हमार मिजाज त देखि के भींजल बा आ चिकनाहट प मन विछिलात रहऽता, पनपनात रहऽता। मन करऽता कि मुट्ठी में तुरते कस लीं। हई कुल जानी हँसऽतारी नातऽ कुछुओं करे के मन करऽता। तूहीं बोलऽ का करीं। मार दीं कि छोड दीं? तऽ मुसुकी छोड़ऽ तारू, किछु बोलत नईखू? अत्यल्प मधुर ध्वनि भी उच्चरित कर दऽ त हम कुछ के कुछ कर बइठब। हम निठुराई से दूर रहीला आ अपना ओरी से कबो दबाव ना बनाईला। तूँ त जानते बाड़ू। हई कुल्ही तहरे सेना लोग ह। केहू हमार मददगार ना बा। एह से एह लोगिन प हमरा रचिको भरोसा नईखे। ई लोग तहार मन मुँह भाँप के तहरा के लोहा लेवे के ललकारतो नईखीं जा। एहीजा कंटकाकीर्ण करीर कुन्जन में मिजाज छनछनाता। तूँ मौन सधले बाड़ू। अईसन नयन-बान मत चलावऽ कि जान चल जाय, बुत से प्रान निकल जाय। स्वर्ण कलश स्वागत नइखन स करत। हमरा अस सरल सुभाव वाला से एहनी के कवन भय बा कि एके में सटल जा तारे स! अयथा अन्यथा लुकात काहे बाड़े स?"

श्री विहारी जी के नयन सौरत रसानुभव इयाद क के अरूनाईसे तरूनाई दिखा के मदहोस हो रहल बाड़े स। ओहनी प नशा के चढ़ाव तेजी से हो रहल बा। ओहनी में बड़ी सहजता आ तीव्रता से सम्पूर्ण शोभा, उत्साह, सुरूचि, लज्जा, उत्कंठा आ अतृप्ति झलकऽता।

राधासखी कम्पमलिका राधा के पाँव में महावर लगावे के ले आईल रही बाकिर बिहारी जी के बतकूचन में अतना मगन हो गईल रही कि बईठ के बात के माजा लेत रही। दोसरसखी तुंगविद्या उनका लगे बईठल रही। ऊ ईयाद परली। तब राधा के गोड़तारी बईठ के कम्पमलिका महावर लगावे लगली। महावर ना छुअत रहीं। अपना अंगुरी से राधा के एँड़ी मीड़त रही। बतकूचन में अतिना भुलाईल रही कि कुछ दोसर बुझाते ना रहे आ राधा के एँड़ी अतिना टहऽ टहऽ लाल रहे जे उनकरा बुझात रहे कि महावर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगुरी में लगा के एँड़ी मलऽतारी। अईसहीं बहुत देर ले मीड़त रहि गईली त रंगादेवी टोकली, "कतिना देर ले एके गोड़ में महावर लगइबू?"

तब उनकरा आपन गलती बुझाईल! दोसर का गोड़ में कम्पमलिका प्यारी सखी एक बे महावर छू के लगावे लगलीं त फेनू ओइसहीं एँड़ी मीड़े लगली त मीड़ते रहि गईली। राधा प्रिया जी के एँड़ी त अपनहीं टहटहात रहे; बाकिर उनकरा बुझाय कि ऊ महावर मीड़ऽतारी। इन्दुलेखा आ विशाखा दूनों सखी एके बे टोकली जा, "आरे महावर एको बे छूअते नईखू आ एँडी मीड़त रहऽतारू हटऽ, हमनी के छने भर में गोड़ रंग दे तानीं जा। बड़ बउराहिन बाड़ू। तहरा क बे कहलो प नईखे बुझात? हटऽ ना?"

ओह लोगिन के अईसे बतिआवल कम्प मलिका के अच्छा ना लागल।

ऊ बोलली, "हमसखी के महावर लगावतानीं त तूँ लोग के काहे कपार दुखता, अनसाहट के कवन कारण बा, तेली के तेल जरे आ मसालची के लाद फाटे।

अतिने में विहारी जी राधा जी से कहलन, "तनी आपन बँवारा हाथ के अंगुरीया हमरा हाथ में द त?"

ऊ आपन दूनों हाथ फैला के उनकरा घेंध में माला असु लपटा देली, अ मुसुकाए लगली!

बिहारी जी भाव विह्वल हो के कहलन,

"हम मँगलीं हँ माठा, त देलू ह घीव?"

"ए रउताईन, तहार कईसन बा जीव?"

राधा जी जवरे कुल सखी लोगिन एक बे ठटा के हँसे लगली जां ढेर देर ले हँसते रह गईली जा।

सभ सखी लोगिन हँसते-हँसते बोले लगली जा, "रउरा त निठुर, निरदई हईं, क गो मौका प देखले बानीं जा, हमनी के बात प त रउरा कबो कान ना दीं, अनटियावत रहीला। आ हमनी के सखी के देखलीं नूँ कि कतिना उदार मन के बाड़ी? कईसन सहज, सरल आ समुदार बाड़ी? बिना लाग लपेट के बात करऽली, आ एकदम निष्कलुष बेवहार करऽली! ओहू में रउआ खातिर त छने-छने आपन देह के के कहो, परान निछावर करत रहली!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बिहारी जी मुस्कुराए लगलन।

फिर कहे लगलन, "तूँ लोगिन कहऽतारू त हम तहरा सभ लोगिन के बात ना काटब, मान ले तानीं, तोहनीं के बात सही बा। बाकिर ई तहरा लोगिन के प्रिये सखी कबो-कबो हमरा प शंका करली, भरपूर भरोसा ना राखस।

एक बे जाड़ा में एही जे शयन कुंज में इन्हकरा के हम बोलवले रहीं। ई राही में डगर ध के मने-मने अगर-मगर करत आवत रही। सोचत रही कि झीमी-झीमी बूनी परऽता, भींजतो बानीं, जड़हऽतानीं, कान्हा बोलवले बाड़े त जाहीं केबा। फराक-पैजामा सिमसिमाह भईल जाता, कान्हा जाड़ा में आज मुअइहें! कवनो इन्तजाम त कुंज-भवन में नहीएँ कइले होइहें। जाड़े कुठुरत बीती रतिया। कइसे जुड़ाइब आपन छतिया। आज बेकाम हो जाई मतिया। देखीं कवन होला गतिया? इनकरा प कवन भरोसा, गोबार के हवन जतिया! अविश्वास से भरल रही, कबहूँ उफनत दूध से जरल रही। आवते सरिया के कोरा में जँतलीं। पूछलीं कि जाड़ लागत होखे त कहऽ, लजा मत।" ई कहली, "जाड़ त लागते रहे, हई बुनियाँ फूही-फूही पड़तीया, ई नूँ थरथरा देलक ह?"

"हम आपन हई गदराईल जाँघ देखऽवलीं आ कहलीं, हई मोटकी खोलिया त सिरहने धईल बिया, जाड़ लागे देब?"

सभ सखी लोगिन खूब हँसली जा। विहारी जी के मुख मुद्रा निहारत रही जा। ऊ फुल्लित रहन। मधुर मुस्कान से शोभायमान रहन। उन करा सुमनोहर कटि देश में फूलन के करधनी शोभा में चार चाँद लगावत रही स। नितम्ब देश अत्यधिक परिशोभित आ लाावण्यमय रहे। विम्बाघर प विन्यस्त मनोज्ञ वेणुवादन सभ लोगिन के विमोहित क के निरन्तर बेसुध कइले रहे। आजानुलंबित भुज द्वय छवि विलसित रहन स। कुल जानी के उनकर आभा आ सुललित सुन्दर चेहरा देखि के मन-मयूर झूमत रहे। एक टक बिहारी जी के मुँह निहारत रही जा। प्रिया जी के मन में गुदगुदी होत रहे कि के जाने अब का कहिहें आ कवन सम्बाद शुरू करिहें? एह तरह मुस्कुरात आन्दोलित प्रफुल्लित कुल जानी जवरे हँसी ठिठोली में सभे मस्त रहे, आनन्द सागर में गोता लगावत रहे, भरपूर माजा पावत रहे। दुरन्त अनन्त संसार के सभ कठिनाई, दुख दर्द आ परेशानी अपने-आप दूर हो गईल रहे। खाली आनन्दे आनन्द रहे। राधा जी नीचे पैर के नख से जमीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुरचत रही आ मुस्कान सहित कबो-कबो सभ के के देख लेत रहीं बाकिर कान्हा के चेहरा निहारत-निरखत नयन-बान चलावे में कवनो कोरकसर ना छोड़त रहीं। कान्हा नयन कोर से जवाब देवे में बेजोड़ साबित होत रहन। ऊ जवाब में आपन सानी ना राखत रहन। ऊ त धुनषधारी लोग के बान काट के चोखा तीर धंसा देवे में बेजोड़ रहन।

कान्हा नयन कोर से तिरछे राधा जी प ताकत रहन। राधा जी सभ हाव-भाव उनकर पहिचानत रही। ऊ जान गईली कि कुछ अन्तरंग बात कहल चाहत बाड़न, बाकिर कुल सखी लोगिन के ओहिजा देख के बार-बार लजातारे आ कह नईखन पावत। श्री राधा चरण रेणु मस्तक प धारण करे के लालसा वाली सखी लोगिन राधा पद दास्य के काम्य भाव प्रेरित बाड़ी जा, एह लोगिन से हमरा प्रेम मार्ग में आ चेष्टा-परचेष्टा में अवरोध से ऊ एकदम आशंका रहित बाड़न तथापि कहे में लजात बाड़न, सकपकात बाड़न, कुछ कथन में भारी संकोच बा। अईंसहीं कुछ कहे खातिर उतावली के प्राबल्य से पूरा प्रभावित बाड़े। अइसन संकोच उनकरा शायदे कबहूँ होला उनकर आँख के भाव आ चेहरा के रंग से राधा जी आलोड़ित बाड़ी। भंगिमा से बुझाता कि प्रिया जी मधुर प्रश्न सुने खातिर भीतरे से एकदम तरंगित बाड़ी।

ऊ जान गईल बाड़ी कि कुछ विशेष बात बा तबे विहारी जी अतिना आंदोलित बाड़े बाकिर लाज वश कहे में अतिना विलम्ब करऽतारे। उच्चारण करे खातिर ओंठ खुलल चाहता बाकिर फेर-फेर अवरोध उपस्थित हो जाता। चाह के भी ओंठ पुट खुल नइखे पावत।

प्रिया जी बात के गंभीरता आ विचित्रता खूब जान गईल बाड़ी एह से ऊ अपने पूछल नीमन नईखीं समझत। पेयार के मिठास से मन मीठ होत जाता। मिठास बढ़त जातिया। जीव सरस हो रहल बा। जियरा मदहोस बा। सभ सखिन लोग भी मीठ रस-धार में बह रहल बा, बूड़-उतरा रहल बा!

सर्वस्व त्याग भाव तरंगित बा। राधा चरण बिलोड़ित रूचिर चंदन अस बिहारी जी समर्पित भाव चेष्टा परगट कईल चाहऽ तारन बाकिर पूरा आगे बढ़ के फेनू अवरोधित बाड़न। लागल हं कि अधर सम्पुट खुलल, तली फेन सट गईल, आ लागता कि पूरा डट गईल, नईखे बुझात कि हट गईल!

श्री राधा प्रिय पुजारी पद काम्य बा। सेवा देवे खातिर मनोहर प्रीति योजना बा। योजना संचालित चेष्टा के दरकार बा, बाकिर सभ-जतन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बेकार बा, प्रिया जी जान गईली कि कुछ जीवंत बाकिर दुर्लभ सरोकार बा। सहज सरोकार में ई अतिना असहज ना होइते जरूर से जरूर अनचलावल कवनो बात बा, बुनियादी बदसूरत विचार बा!

प्रीति की रीति विहारी जी से अधिक शायदे केहू जानत होई? उहे निबाहे के कवनो राह खोजऽ तारे। एह से आभयंतरिक जोजना के साफ करे के सहज राह उनकरा नईखे मिलत आ बात बोले में देर हो रहल बा।

वृषभान नन्दिनी बिहारी जी के नयन कोर पर ध्यानस्थ बाड़ी, के जाने का कहिहें? मदन घन से पीड़ित व्यथित बिहारी जी के स्वाभाविक जानकारी राधा रखऽली। राधा जी देर भईला से बेचैनी के अनुभव करऽतारी। एहिजा त सखी लोगिन के अतिरिक्त कोई अन्य किंकरी केहु उपस्थित नईखे। फिर काहे मन के बात कहे में संकोच बा। जतिना देर होता, राधा जी के मन में ओतिने चंचलता आ विकलता के बढ़ोत्तरी होत जा रहल बा। बेअग्रता के वृध्दि तेजी से हो रहल बा। उत्सुकुता त एक दम दर्शनीय बा।

सभे बेचैनी से बेअगर हो रहल बा। अचरज हो रहल बा कि कवन बात कहिहें? कहत काहे नईखन। अतिना देर ले काहे अपना के रोकले बाड़े? ई त डेरास ना। हमनी भीरी सहजे सभ बात परगट करऽलन? का कहे के बा जे रोकले, थम्हले बाड़े? बात तउले में भी ई एसपट हवन। परिस्थिति सभ के समझ के परे हो रहल बा। केहू पहुँचत नईखे। ओहिजा ललिता तुंगविद्या, रंगा देवी, सुदेवी आ विशाखा, चित्रा अस सयान समझदार सखी लोग रही। केहू के कुछ बुझाते नईखे! सभे बूड़ता! राधा जी मुँह उठा के ईशारा से कनखी चलवली आ जानल चहली कि का कहल चाहत बाड़ऽ? कुछ कहऽ? उनकरा नजर ओर नजर कईली। ऊ मुस्कुरा देलन।

राधा जी साफ पूछली, "का चाहऽतार? किलियर कहे परी, ई बुझउअल से काम ना चली। सोझ-सोझ खोल के कहऽ? एहिजा के बा जेकरा से लजा तारऽ? केहू त नईखे। सभे अपने बा, दोसर के बा जेकरा से संकोच बा, कीर्ति कुमारी प्रिया जी समझवली।"

विहारी जी ओंठ से आ कनखी से खाली मुस्कुरात रहन, कुछ कहत ना रहन। उनका मौन के सभ सखी लोगिन अपना-अपना मन में अपना ढंग से व्याख्या विश्लेषण में लागल रही जा। उहो लोगिन में खुल के केहू कुछ कहत ना रहे। मन ही मन अनुमान चलत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोचऽतारीं जा कि काम के उदय सहेतुक होलाऽ आ सकारण होला। काम की मूल-भूत प्रेरक रति हई जवन सहेतुक हई। प्रेम आ पेयार सहज स्वाभाविक ह। एह में हेतु आ निमित्त खाली अनिर्णायक ना होखला बलुक ई नित्य भी मानल जाला। पेयार में रति उज्ज्वल आ बेदाग अस्तित्व राखऽली।

विहारी जी वासना प्रेरित ना हो सकस आ परम्परा में टूट के भागी या समर्थक भी ना होइहें। विहारी जी आदर्श छोड़ि के हलुक आचरण भी कबहूँ ना करिहें। सभ जानी सच्चाई से परिचित बाड़ी। ई सोचे के कदापि नईखे। ई दिन में अनहोनी के कल्पना भी ना करिहें। एकदम निश्चित बात जानीं। अबहीं तक ले दिवसाभिसारिका के प्रोत्साहन नईखन देले। त कईसे सोचल जाई कि दिन हीं में रति प्रेरित आ काम प्रताड़ित बाड़े। अईसन इनकरा बारे में कल्पना कईल त एकदम अनर्गल बा। अइसहीं सोचऽतारी जा। केहू सोझ साफ उच्चरित नईखे करत। ऊ त मुसकाये छाड़ि के कुछ बोलते नईखन। कुछ कहितन तब नूँ थाह मिलित आ उपाय रचाईत!

प्यार उत्प्रेरक रति के अधिकांश सहयोगी के उपस्थिति के अनिवार्यता के अभाव भी नईखे लउकत। सधर्मा, समवयस समरूप सामीप्य आ अवसर, समय, पात्रता सभ के उपस्थिति बा। इहाँ के बाकिर खोलत-खुलत नईखीं जवना से भ्रम आ उहापोह भरपूर उपस्थित बा। आरे अनुमान अनुमाने ह! तर्कशास्त्री लोग अबहीं तक तय नईखे कईले कि सभ अनुमान के धरातल सत्य ह?

पेयार के ना तऽ परिणति रति ह आ ना रति के तुष्टि। दू प्रेमी जन के अस्तित्व उदय एक तन-मन-प्रान कर देला बाकिर रति ओकर कसौटी ना ह। दूसर बात सोचनीय ईहो बा कि कान्हा लूचा लफंगा ना हवन, माननीय सालीन अउरी समृद्ध विचार के सचहूँ आदर्श पुरूष हवन। सभ्यता आ शिष्टाचार के जे हरमेशा पाठ पढ़ावला उहे अदिमी समय-असमय सभ्यता के सबसे नीचला पायदान प उतर जाई, अईसन कल्पना भीनिराधार आ निरर्थक, अनर्गल बा। सभे एही तरह के विचार सागर में खूब सूझ-बूझ से हाथ-पाँव मार रहल बा, किनारा के अन्दाज केहु के नईखे चलत। श्रीकृष्ण चेतन सम्राट हवन। अचेतन के हाव-भाव या बउराही से दूरी बना के सदैव गढ़ल आ चिकन-चौकोर राह के मंजिल तक पहुँच बनावे वाला सजग सतर्क राहगीर हवन। अचके अकारण विछिला के नाक भूभून सरकावे वाला पथिक ना हवन। अईसन त सोचले बेकार बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पेयार क्रीड़ा से तुष्ट-पुष्ट होला त उनका क्रीड़ा से कबहूँ इहाँ तक कि सूतलो में अरूचि ना ह। क्रीड़ा उनकर जीवंतता ह आ क्रीड़ा उन का जिनिगी के दारोमदार ह। ईहो जवन भाव-भंगिमा पेश बा एगो बहुत बढ़ियाँ खेले समझीं। ईहाँ के क्रीड़ा निमऽन बानीं बाकिर खाली सहजे चिन्हाई नईखीं देत। सभे तबे से चिन्ह हीं में लागल बा, कुछ जनाते नईखे।

राधा जी ठटले बाड़ी, जाने खातिर चेष्टा चल रहल बा आ कोशिश छाड़े के फेरो में नईखी। अईसही सभ जानी अपना तौर तरीका से कान्हा के लक्ष जाने खातिर छटपटा तारी, ओह नईखे चलत। तनी मनी के बात नईखे, गहराई में सभे उतर गईल बा। बूड़की में अब की बार रतन मूठी में आवे के अन्दाज बुझाता बाकिर फेर सफलता दूर भाग जातीया।

अनुरागी दिल के गति के बारे में कयास त सभे लगा रहल बा। आपन-आपन तोर तरीका बा, सभे सोचता। का चाहऽ तारन, कहत केहू नईखे। राधा जी चिहाईल बाड़ी, कुछ-कुछ धबराईल बाड़ी। भारी सोच के मेंह में ऊहो नधाईल बाड़ी!

केहू उनकरा से पूछत नईखे। जानल सभे चाहत बा। उनकर सभे मुँह ताकता। फुलुँगी तक केहू पहुँचत नईखे, चढ़े के चेष्टा सभके बा, बाकिर ऊपरे चढे के लूर होखे तब नूँ?

एगो अजबे उलटा कहाउत बा। जतिने करिया में बूड़ी ओतने उजराईल जाई। बग बगाईल जाई। विहारी जी के जवरे इहे बात बा। उनकरा में जतिने सटी, ओतिने मोह घटी। लोग-बाग जानऽता। राधा परख चुकलबाड़ी। उनकर सखी लोगिन भी उनकरा श्याम रंग में भींज के चहबोता भईल रहऽला। लाज के एकसुरे पी गईल बा लोग। उनकरा प उहो लोगिन निछावर बा।

समय बहुत बीत रहल बा। ओह-पोह नइखे चलत जे उनकर का चाह बा? कम्पलता आ तुंगविद्या एके बे मुस्कुरा के पूछ बइठली जा, "का रउरा चाहऽतानीं? केकरा-केकरा के थाहऽतानीं? हमनीं के आपन जाऽनतानीं त मस-माछी जान के काहे मच्छरदानीं तानऽतानीं?"

ऊ तउल के मुसुकी साथे कहलन, "शयन कक्ष आज अपने सजावल चाहऽतानीं! इहाँ के जियरा जुड़ावल चाहऽ तानीं! आजु संचारी के समुझावल चाहऽ तानीं! अनुभाव के भरमावल चाहऽ तानीं, हाव के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हहरावल चाहऽ तार्नी! राधा जी बिना देर कइले कहली, "जब किंकरी लोग एह काम खातिर मुस्तैद बा आ हरदम कमर कसले बा, प्रेम बा, काम के दीवानगी बा त अपने दोसरा के बोझा उठावे के का उतावली बा। ई कुल्ही अदिमी एगो ईशारा खातिर मुँह ताकत रहऽ तारी त रउरा काहे के दीवानगी बा, बेचैनी बा? पहर भर से इहे कहे खातिर सभकरे के ऊभ-चुभ में डलले बार्नी। सभे सोचत-सोचत थकल रहल ह कि का कहब?

किंकरी लोगिन एही खातिर बाड़ी, रउरा बेअगर होखे के कवनो कारन नईखे। अनेरिया काम खातिर अतिना चिनतन-मनन दूर तक करत रली हँ? ऊ लोगिन जानी कि ओह लोग के काम से रउआ संतुष्ट नईखीं। एह से ऊ लोग के तकलीफ बुझाई। ओह लोग के काम रउआ नईखे करे के।

ईहो जान लीं कि हमनी के सभ सखी तुरते बरसाने के राह धरब जा। आ आजु डगर ध के डेगरगरे जाइब जा, ना त बेर बूड़े चाहऽता, अन्हार हो जाई! कान्हा ओरे मटकी मरली आ मुस्कइली।"

तड़ दे ऊ कहलन, "अबहीं त सुरज दहिने झुकलो नईखन, बेर बीते लागल? घाम सीधे ऊपर से आवऽतीया, हई लउकत नईखे? हमरा दिने नइखे बुझात? आ अन्हार होई त हम पहुँचा देब चाहे एक रात कुंज भवन में बीती त का हो जाई? एहीजे सभ अदिमी मिल के लिटी-भंटा लगावे के। बड़ी माजा आई।"

सखी लोगिन हँसे लगली आ कहली जा, "रउरा खाली आपने माजा लउकऽता, हमनीयों के सोचीं कि हमनी के घरे लोग का सोची, का कही?"

प्रिया जी के नयन कोर में अनन्त रूपायित काम के लक्षण साफ-साफ लउकत रहे बाकिर कुछ कहि के तनिको चिन्हऽईली ना, मौन सधले रहली। उनकर अतिशय आनन्द जनित ई प्रेम रूप ह जवन कबहुँ केकरो से व्याख्यायित ना हो सके। अनुभूति के तत्व आ परमानन्द के तात्त्विक कारण ह ब्रह्मनन्द भी एकरे संज्ञा ह। जेकरा एकर रचिको अनुभूति नइखे ऊ विश्लेषण के क्षमता से अतिने दूर बा जतिना आकाश से पाताल।

प्रियाजी प्रेम परिपूरित नेत्र से टुकुर-टुकुर ताकऽ तारी। कान्हा के नजर भी गति में सक्रिय बिया। वार्ता चल रहल बा, निर्णय नईखे हो पावत। अउर लोगिन घरे जाये के चर्चा में निमग्न बा। प्रिया जी त्वरित कदम ना बढ़ा के घुसकुरिया काटऽतारी! विहारी जी तवरित निर्णय के अपेक्षा से जल्दबाजी में बाड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिया जी की गहराई सराहनीय बिया। ऊ बिहारी जी अस खुरचालू ना बन सवऽस। अतिशय गंभीर हई। टस से मस नईखी होत। वासना से ऊ शायद कदापि पराजय अंगीकार ना कर सकस। एही से साध के सोच के जवाब दे तारी। पछाड़ ना खा सकस।

बहुत आँख चलवलन त धीरे से पपनी गिरा के फेन नकार गईली। एकटक ताके लगलन।

फेन शुरू कईलन। राधा जी निरूत्तर क देली ऊ हार माने प तइयार ना रहन। पांसा ताबड़तोड़ फेंकत रहन बाकी गोटी मरा जाय। बेकाबू हो चललन आ शिथिल होखे लगलन त राधा जी आँख नचा के पांसा पलट देली आ मुसकाए लगली।

पराजय त विहारी जी के भी अंगीकार ना रहे। दोबारा चले लगलन। इनकार प हँस देलन। ऊ मौन सधली। ई बेचैन हो के हाथ पाँव मारे लगलन। खेल बन करे के तनिको मन ना रहे। उलटी दुलत्ती मरलन। ऊ आँखि के कोर खोल देली। ई फेनू ताके लगलन। लीला के भिन्न-भिन्न रूप परगट करे लगलन। महामोहनी भंगिमा परगट करे लगलन त प्रिया जी के भी मोरचा सम्हारे में विलम्ब ना भईल। हाव-भाव के दुर्लभ दर्शन सहजे सुलभ हो गईल। लीला से विछित्ति विव्वोक तक के प्रकटीकरन में दूरदर्शिता आ विलक्षणता दर्शनीय आ प्रति शोभनीय बन गईल। सभ सखी लोगिन त चकचिहाईल रही। पैंतरा पैंतालीस रूप से रूपायित भईल। के केकरा से कम रहे? उनईस-बीस पलड़ा ना रहे। अमोध बान चलत रहे। मोध के अस्मिता आ अस्तित्व के कल्पना कईल एक दम वृथा रहे। समझदारी आ चतुराई के खिलकट में सखी लोगिन बूड़त रहीं, निरखे के साउँस ना रहे। अनुराग के पराग मदमस्ती के प्रतिमा स्थापित कईले रहे। तरकस के तीर चोख रहनस आ असहनीय चोट से टीसत रहन स। कभी-कभार मेल मिलाप के बारी आवत रहे त बेरा कुबेरा के भाव के लोप हो जात रहे।

सखी लोगिन थाह ना पवली त कहे परल कि चोखा तीर धोखा दे तारे स, तरकस बन कईल जाय।

बिहारी जी प्रिया जी के एक टक ताके लगले। प्रिया जी खड़ा हो गईली। सभ सखी लोगिन से घिर गईली, मुस्कुराहट के प्रकाश फैल गईल। विहारी जी बाँह अचके ध लेलन। प्रिया जी बाँह छुड़ावे के कवनो हरकत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना कइली। देह एकदम ढीला कर दिहली। उनकरा भीतरे बड़ी निमन लागल। देह गनगना गईल। रोवाँ खड़ा हो गईली स।

दू जानी सखी लोगिन बाँह ध के एने से छोड़ावे लगली। कबो एने खिंचात रही त कबो ओने फेंका जात रही। ऊ तनिको एने चाहे ओने कवनो चेष्टा ना करत रही। जोर-जोर से खिचउवल चाहे हुमचउवल ना रहे। खिंचउवल के आनन्द लियात रहे। प्रिया जी के अउर आनन्द रहे। ऊ त आपन देह ढील के रसबोर रही केनहूँ खिंचाए में ओतिने माजा रहे। जे खींचे ओनिएँ खिंचा जास!

सभ सखी लोगिन लागि गईली। तबहूँ उहे बतिया रहे। आठ जानी एक ओर आ अकेले विहारी जी विहार करत एक ओर। राधा जी कहली मुसका के कि खूब जोर केनहूँ से ना होखे के चाहीं ना त हमार बाँह कबर जाई त का होई?

विहारी जी बिहँसले, "अच्छा हो जाई। ई ढेर लोगिन बा त बवाँरा कबार दीहें जा। हम तहरा के ले के शयन कुँज में समा जाईब! ई लोग एगो बाँह लेके गिरत-परत अपना घरे जाई लोग।"

राधा कहली खिसिया के, "हटऽ हमार बाँह छोड़ऽ? एक बाहीं हम अपंग रहब, ईहे कल्पना करऽतारऽ?"

विहारी जी झट दे जवाब देलन, तूँ काहे बेचैन हो गइलू, हई हमार बाँह बिया नूँ? तहरा के कबार के दे देब! परान देवे में हमरा पल भर भी ना लागी, बाँह के का मोल बा तहरा सामने। जबे मन चाहे अजमा के इम्तहान लेऽ देख त लऽ, हम पास होतानीं कि फेल? हाथ कँगन के आरसी का? अजमा लेबू तबे नूँ बुझाई, परिनाम सामने आई?"

राधा कहली, "निमन सलाह दे तारऽ। आपन बाँह कबरवा के तहरा प्रेम के हम परीक्षा लीं!"

"आच्छा जाये द, त एह लोगिन से कहऽ कि तहार बाँह ई लोग छोड़ देस, छोड़ दी लोग त बाँह कबरे के कवनो सवाल ना रही।"

राधा के बाँह में गुदगुदी बरत रहे, ऊ चाहत रही कि विहारी जी ओइसहीं बाँह गते-गते खींचत रहस आ माजा मिलत रही। विहारी जी भी सभ बूझत रहन। उनको कम माजा ना मिलत रहे। तनी जोर लगा के खींच देले। बँवारा हाथ सखी लोगिन से छूट गईल। सभ सखी लोग गिर गईली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा आ हँसे लगली जा। ओने प्रिया जी अचानके विहारी जी की गोदी में समा गईली। ऊ अँकवारी में जाँत लेलन बाकिर तुरते अँकवारी ढ़ीला क देलन त राधा जी देह झार के खड़ा हो गईली। आँख तरेरली, "ई सभ हमरा नीमन ना लागे। का से का करे लागऽ लऽ?"

"ल, त हमरा प खीस निकाले लगलू? हमहीं सभके से कमजोर बानीं। आपन सखीं लोग से काहे नइखू पूछत कि काहे बाँह छोड़ देलक ह लोग?

प्रिया जी के दैहिक संस्पर्श से रसिक लाल जी अभिभूत रहन, खूब मनगर रहन। प्रिया जी के तनी चोट लागल रहे, एह से रोष में रही। आँख से खिस सोझ लउकत रहे। बिहारी जी रसिक लाल हवन। विम्बाधर पर विश्वविमोहनी मुरली रखके मधुर ध्वनि से राधा सहित सभ गोपी लोगिन के दिल दिमाग प छा गईलन। सभ जानी ध्यानस्थ हो गईली।

बईठ के सुने लगली जा। घर जाये के चिन्ता दूर हो गईल। सभे मौन हो गईल। मुरली विमोहित कर लेलक। बीच-बीच में विहारी जी नयन कोर से राधा जी से परिरम्भ रसोत्सव दान के सांकेतिक याचना करऽ तारन। ईशारा से मुरली राधा चरण प रखे के बा आ रस-दान के बार-बार याचना हो रहल बा। राधा जी नकार दे तारी। बाकिर ऊ याचना बन नईखन करत। राधा जी उनकर हाथ ध ले तारी आ मुरली बजावे में अवरोध करत बाड़ी। सखी लोग ओर उनका के तकावत बाड़ी आ याचना के एकदम नकार दे तारी। दोनों जने विह्वल हो रहल बाड़े। राधा जी कनखी से कान्हा के समझावऽतारी आ ऊ जिद कईले बाड़े। राधा जी उनकर अंगुरी अपना हाथ में लेके आपन स्थिति के जानकारी दे के मधुर ढंग से प्रभावित करऽ तारी।

विहारी जी अन्ततः मान ले तारन। मुरली बजावल बन क के ओह लोग ओर देखे लागऽ तारे। राधा ज़ी उनकर हाथ धीरे से दबा के कहतारी, "काल्हु आ जाइब, आ तनिक पपनी गिरा देली। रसिक लाल जी सभ समझ गईलन आ एक तरह से जाये के प्रेमानुमति प्रदान कर देलन।

श्री प्रिया जी विहारी जी के हाथ के स्पर्श सुख प्राप्त क के तुरत खड़ा हो गईली। कुल सखी लोगिन एक बे झट दे खड़ा हो गईली। राधा जी प्रेम पूरित नजर विहारी जी पर डलली। ऊ कुछ उत्तर ना देलन आ कवनो हरकत ना कईलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधा जी मनुहार पूरित वचन बोलली, "जा तानीं जा काल्हु तड़के जुटब जा। मुस्कुरा देली। सभ जानी मुस्कुरा के उनकरा ओर तकली आ राधा जोरे चल देली। विहारी जी ताकत रहन एकटक। तनी आगे बढ़ के राधा जी फेन मुड़ के तकली। ऊताकते रहन। राधा जी राह में कुंज डगर प जब तक अदृश ना भईली तब तक दूनो ओरे से ताका-तकउअल बन ना भईल!"

कान्हा काल्हु के विस्तृत परिरम्भ रसोत्सव के मानसिक कार्यक्रम में निमग्न हो गईले। आजु त आँख के ईशारा से अनुमतिआ स्वीकारोक्ति होइए गईल बा, स्वीकृति के मुहर कनखी से लगिए गईल ह। राधा जरूर आपन वादा के अनुसार पहिलहीं फजिरे आ जईहें, आ केलि कुंज के ओर तुरते सरक जाईब जा।

अन्य सखी लोगिन के जूटे के पहिले अदृश जगह प उत्सव के आनन्द में निमग्न हो जाईब जा। दुनिया के भुला देब जा! काल्हु कवनो बाधा व्यवधान ना आई। दुईए अदिमी रहबे करब जा। दोसर कवनो कामो नइखे।

कान्हा तेजी से गोकुल के राह धईले। खूब तेज गति रहे। अउर कुछ ना लउकत रहे। खाली राधा के कनखी के चलावल आ ईशारा लउकत रहे। कईसे अंगुरी ध के पूरा अनुराग से कनखी से परिरम्भ रसोतसव के अंगीकार कईली ह आ कवनो सखी लोग ना समझली ह। ऊ हमार मन के भाव जान जाली। हमरा प एक दम समर्पित बाड़ी, हमरा में निष्ठा सत प्रतिशत भरल बा। पूरा के पूरा हमार मरम जान जाली! हमूँ उनकर चेष्टा परचेष्टा से रगे-रगे पूरा परिचित बानीं आ उनकरा हाव-भाव के पारंगत बानीं। ताकली त बेकहले सभ जान जाईला। कुछ विशेष कहे के ना परे।

हमहुँ उनकर एक-एक बात जानीला। हमार मन राखे खातिर ऊ कुछुओ कर सकली। उनकरा कवनो अंग छुवते हमरा सऊँसे देह में लहर दउर जाला। मन करेला कि सउँसे देह, सभ अंग हरमेसा अपना में सटवतो रहीं। एको छन अलग अनछुआ रहे में बेचैनी होखे लागऽला। भीतर से मन कउआ जाला! उनकरा प्रणय कोप से त हमार जियरा थरथराये लागेला। हम सचहुँ काँप जाईला। मन आ मिजाज मुरझा जाला। करेजा कचोटे लागला। फेन तनीं तिरछी कनखी चलावली त जान में जान परेला। रस से भीतरे मिठास भर जाला!" ईहे सोचत-विचारत घरे पहुँचले।

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(8)

रसिक प्रिया जी के राते बढ़ियाँ नीन ना लागल। बहुत विलम्ब ले रसिकवर लाल जी के बारे में सोचते रह गईली। सूते खातिर कोशिश करे में लागल रही, ऑख मूँदत रही, बाकिर नींद भाग जात रहे।बड़ी फेर में परल रही, कवनो उपाय काम ना आवत रहे। अईसहीं करत आधा रात हो गईल। रसिकवर के ऑख में बन क लेली आ उनकरा के मनावे लगली कि नीन लगावे में मदद करऽ! ऊ मुस्कुराए लगलन। प्रिया जी हाथ जोरली। गिड़गिड़ऽईली। ऊ धीरे से मुस्कुरात रहन। इनका बात प धेयान ना देत रहन। उनकर गोड़ धरे लगली त ऊ भागि गईलन। ई खिसिया गईली। ऑँख मूँदली। अईसहीं सोंचते सोंचते ऑँख लाग गईल। बाकिर सपना देखे लगली।

रसिकवर लाल जी इनकर माँग सँवारत बाड़े। ई चुपचाप उनकर तमासा देखऽतारी। मने मने विह्वल होत जातारी , देही में गतरे-गतरे झुरझुरी उठे लागऽता। भीतरें से भींजे लागऽ तारी। कबो-कबो धीरे से उनकर हाथ ध लेतारी आ उनकरा अंगुरी के गति रोक दे तारी आ ऊ फेन बार में अँगुरी उलझावे लागऽ तारे। पूछऽतारी, "बता द तूँ उहे का हवऽ?"

ऊ कहलन, "के?" "उहे हमार पिया"

ऊ कहलन, "ई हम नइखीं जानत!"

श्री प्रिया जी देर से जगली आ देर से बृंदा वन पहुँचतारी। शैथिल्य से ग्रसित रहीं बार-बार देह में ऐंठन आ मरोड़ जन्मत रहे। जम्हाई प जम्हाई लेत रही। मन नीमन ना बुझात रहे। बाकिर रसिकवर लाल जी से मिलन उत्कंठा रचिको हलुक ना रहे। लाल जी के बेचैनी त बेसुमार रहे बाकिर रसिकवर हइं, एह से खिलकट में लागल रहीं आ बृन्दावन के एगो अनजान बीथी में लुका गईल रहीं। उहाँ के आहत रहीं कि राधाजी का करली आ कहाँ-कहाँ खोजऽ ली? इहे थाहे में रहीं। संकेत स्थल में राधा जी पहुँचल बाड़ी, कलहान्तरिता अस चिहाईल बाड़ी, दुखी बाड़ी, चिन्तित बाड़ी।

रसिक वर जी कौमार में नव कैशोर वैभव के प्रदर्शन खातिर छटपटात बानीं बाकी खिलकट से भी मन नईखे रचिको मानत। एकान्त हास-परिहास के बेचैनी त बड़ले बा। सघन निकुंज में छिपल बानीं। कोक कला के प्रवीणता त दूनो जना में आइए गईल बा। प्रिया जी भी अब रस विदग्धता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भरूपर बाड़ी। मुग्धावस्था पार क लेले बाड़ी। मध्या के स्थिति में बाड़ी। कभी कभार त प्रौढ़ा के भी आचरण निर्वाह करऽली।

जुगलबर के अस्नान के भी समय नियराईल आवऽता। एह से जुगलवर के खाली बेचैनी नइखे बढ़त बलुक सखी लोगन के भी कुंज रन्ध्र से स्नान-क्रीड़ा आ जल-क्रीड़ा देखे के बेचैनी बा। जुगलबर आ प्रिया जी कब स्नान-कुंज में ढुकी लोग आ एह लोग के सभ तमासा आ जल-क्रीड़ा के खिलकट देखे के मिली कुंज रंध्र से?

सघन लता से समावृत अस्नान कुंज में जवरे अस्नान खातिर प्रविष्ट बा लोग। बाकिर मनोरम जल-क्रीड़ा हो रहल बा। श्री राधा जी के कमनीय केश राशि से मालती की लड़ी टूट के जल में गिर गईल। झका झूमर से सभ अंग के सजावट समाप्त हो गईल। गोल-गोल श्रीफल के कमनीयता आ चिकनाहट कुंज रन्ध्र से देख सखीं लोग विमोहित बा। बाग-बाग बा। स्निग्धता से परिपूर्ण सखी लोगिन मौन रूप में एक-दोसरा प ताक-ताक के झूमऽतारी जा। प्रिया जी के खुलल नंगी जाँघ केरा के गाभ अस चिक़न आ सुडौल लागता आ विद्युत के चमक के लजवावते चकाचौंध पैदा कर रहल बा। सुडौलता से सुधरता अवरू कूद फाँद करऽतीया। सुन्दरता के खजाना सखी लोग के सुलभ हो गईल बा! ओह लोगिन के अपना देही के सुध नइखे त ओनहूँ जुगलवर के जलक्रीड़ा में पूर्ण निमग्नता बा। दूनों जना में केहू-केहू से हलुक नईखे। दूनों जने के देह पूरा उधार हो जाता, एकरा से दूनों जने एकदम निफिकिर बाड़न! जल-क्रीड़ा के उल्लास-विलास में आनन्द-सागर साक्षात तरंगित होके लहराता। रस से बाहर-भीतर सभे पूरा सराबोर बा, जियरा भींजल बा, नहाये से केहू थाकत नईखे। स्निग्ध परम्परा परवान प चढ़ल बिया। मन मयूर नाचत-नाचत मदहोश बा। मध्या के अस्तित्व सभाप्त बोलऽता पौढ़ता एकदम दृश्य मान बा। मुग्धता त कहिए भाग गईल, केहू के इयादो पारे के कवनो जरूरत नईखे।

रसिकलाल के बवँरी बाँह से प्रिया जी धकिया के गचाका खा जातारी आ डुबकी लगा ले ताड़ी। उनका प्रणय कोप से ऊहों भहरा के पानी में गिर जाता रे, पूरा के पूरा ओठंग जातारे आ ओठंगले मुसुकी छोड़ऽ तारे त प्रिया जी भी मुस्कुरा देतारी। रसिक वर जी अनुशोच में पड़ के पराजय से प्रभावित बाड़े। ईंतऽ उनका से अकस्मात अपसारित रही, काम्य भाव जरूर रहे, काहे कि ऊ अयां होके इनको के पहिले धंसोर देले रहन, गिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के गचाक हो गईल रही। इनका ओह से अशंसय के स्थिति रहे। बुझात रहे कि रसिकवर हार के असज्ञ हो गईले, बाकिर त्वरित रूपेण सचेत होखे में विलम्ब ना भईल। असंकुलता के आभास रहे, बलुक ओने सखी लोग संकुलित, माजा के भरमं में बूड़त रही।

तुरतें प्रिया जी नयन कोर से नहाईल बन करे के संकेत कईली आ अनमना अस भईली त रंध्र से सभ तमासा निरखेवाली सखी लोगिन अनुशयाना अस उदासी महसूस करे लगली जा। अनायत हो गईलजी जा।

प्रिया के देही में जवन एक-दू गो आभरण रहन स ऊ देही से अइसन सटल रहन स कि डरा-गईल रहन स कि तुरते हमनीं के निकाल के हटा दीहें, ओहनी के कवनो गतरी साथ छोड़े के तनिको उत्सुक ना रहन स।

प्रिया जी कनखी से रसिकवर के हो मुहें होके कपड़ा बदले के ईशारा कइली, ऊ मुसुकी मरलन त ई झवान होके आँख देखवली। ऊ मुस्काते रहन त कहली, "हम बहरी चल जाईब। हमरा हाथ गोड़ में घाव का भईल बा?"

ऊ भाव-भंगिमा के माजा लेवे में पूरा के पूरा संलग्न रहन। प्रिया जी के भाव आ कवनों चेष्टा प धेयाने ना देत रहन। उनकरा मन के भाव ई जान गईल रही। एह से बड़ी बेअगर रही कि अब कवन उपाय करस? उहाँ के रस काटत रहीं। इनकर बेचैनी के उनका कवनों परवाह ना रहे। मंजल रसिक रहीं। कहलीं कि सुनऽ, "हमरा प तहरा भरोसा नईखे? हम रचिको तकबे ना करब। हम गईल गुजरल अदिमी ना हईं। जवन कहीला उहे करीला। अंगदी गोड़ ध दिहिला त इचिको टस से मस ना होखिला। हमरा के अतिना दिन में जनलू ना? हम असली मरद हईं। मरद अपना कहला के पानी राखला। मरद मेहरारू ना ह कि छने रूष्टा छने तुष्टा, रूष्टा-तुष्टा छने छने। अबहूँ हमरा के समझऽ। हम दोसर मरद ना हईं, जवन कहब तवने करब। हम आँख मूँद लेवे के कहऽतानीं त आँख खोलबे ना करब। पपनी गिरा देतानीं। तूँ धेयान से देख ल। हम त पूरा कउल करार करऽतानीं। तनिको ताकब ना। हम गंभीर होके कहतानीं, हरमेसा मजाके होला? हमरा प काहे नइखू विसवास करत? हम गिरल-परल ना हईं। हमरा नन्द बाबा के तूँ नइखू सुनले? मथुरा नरेश के रचिको कान ना करस। उहो एगो हइले हवन। त हमरा के का समझतारू, हम कम हईं का? हमरा मोछ नइखे त मोछ के पानियों नइखे हमहूँ खन्दानिएँ हईं? तूँ समझत काहे नइखू? अच्छा ई बतावऽ कि हम तहरा जवरे अइसन कबो धोखा कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानीं? कपड़ा बदल के, आ हुई सूखल नया चुनरी नीला रंग अवली पहिर ल। हम आपन पपनी गिरा लेतानीं। भरोसा करऽ! हम त एकदमें ना ताकब, भरोसा करे के सीखऽ। दुनिया भरोसे प चलत रहली ई भरोसा ना रही त एको काम पूरा ना होई, कवनो कामें ना होई आ होई त सही ना होई। तूँ अतिना संका काहे करऽतारू? हमरा के आपन नइखू समझत! हम अईसन जबून हईं? तूँ कपड़ा बदलऽ, हम आँख मूँद ले तानीं। जब ले तू ना कहबू, हम मूँदले रहब। ई कहली, "त ओह मेहें मुँह क के खड़ा होखे में कवन दुविधा बा?"

मधुर से मधुराति मधुर प्रिया जी के हाव, भाव आ व्यवहार के उत्कट पियास रसिकवर जी के हरदम हरमेसा रहेला। उहाँ के कहीला खोल के कि तहरा बिना जियल कवनो जियल ना रही। दूनों जने एक देह आ एक प्रान हवन। एह में रचिको शक सुबहाँ नईखे। फेनू एह घरी ई हालत बा। इनका मन में अइसन लागऽता कि कपड़ा बदले के बेरी ऊ जरूर ताक दीहें, आ जिनिगी भर डहकावत रहिहें। उनका बार-बार के कउल करार प रचिको भरोसा नइखे। ऊ जतिना परतुक देके भरोसा दियावऽतारे ओतिने अविश्वास से इनकर जियरा भरल जाता। विश्वास दियावे के जतिने अधिका जतन होला ओतिने अधिकाधिक मात्रा अविश्वास के बढ़ल जाला!

रसिकवर जी समुझावे में बेचैन बाड़े बाकी प्रिया जी के भरोसा ओही मात्रा में भरभरा के बालू के बान्ह अस थसकल जाता। बान्ह जमीन धईले जाता, अगल-बगल पसरल जाता। ईं जान गइली कि ऊ बात ना मनिहें, आपन जीद ना छोड़िहें। ऊ पट दे बाँह ध लेलन आ इनकरा के अपना ओर झप दे फेर लेलन।

कहलन, "ल, हम हो मेहें मुँह क लेत बानीं। तूँ जीत गइलू। हम चित हो गइलीं!"

प्रिया जी पट दे कंचुकी के पुटपुटिया बटाम खोलि के निकाल देली। उनकर चटपटी नजर प धेयान रखले रही। ऊ संयोग सापेक्ष आनन्द से परिपूरित रहन, परतीक्षा में रहन कि तुरतें ताके प रोक हटा लीहें। हड़बड़ाइले रहन। इसपरेस गाड़ी छूटे चाहत रहे। आनन्द आ रसानुभूति से भरल रहन आ अवरू बुड़की मारल चाहत रहन, जइसे छटपटाहट रहे, जल्दी रहे। ताक-झाँक क के आनन्द के अजस्रता खातिर लुबलुबाहट रहे। तुरन्ते रस निष्पत्ति के ललक लबालब उछिलत रहे। उत्कटता लउकत रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाली आभासे ना रहे। ई परकीया ना रही, बाकिर उनका बुझात रहे कि सांस्पर्शिक आ आंगिक नग्नता के दर्शनानन्द से वंचित के स्थिति मत बन जाय। आनन्दाभाव आ रसाभाव के रेगिस्तान में मत पहुँच जाईं! बेचैनी साक्षात अवर्णनीय रहे।

श्री अंगन के देखे के ललक ओरिआए के त ठेकाने ना बुझात रहे। उत्सुकता आ जिज्ञासा के स्वानन्द के मकरन्द खातिर ई छटपटाहट रहे। एह भाव के अभाव के गुंजाईश ना रहे।

स्तन जुगल सूखल दोसर कंचुकी में झट दे लुका गईल लोग। केरा के गाभ अवली जाँघ जुगल आ तरनात मुसकात शेर के छिपे के अबकी बारी रहे! ऊ पूछ देलन, "आरे कतिना देर ले हे मुहें अनावश्यक बेकाम के ताकत रहीं? अब ले त हम कबे सवाँर देले रहतीं। कतिना देर ले हमरा के जूझइबू? तहार सखी लोगिन कहऽ ला कि तूँ बड़ी समुदार, अवरू समझदार हऊ? अब हमरा तनिको ठटात नइखे, एकदमें एक सुरिए बड़ी बोर हो गइलीं!"

"एने कुछुओं लुटाता का जे एने ताके खातिर हबुआईल बाड़ऽ" चुनरी चुनिअवले रही ऊ चून मुठिया लेली आ दूनों हाथे धइले खड़ा होके नीबी सरिया के बान्हें लगली!

ऊ झट दे भीरी आके कहलन, "रहऽ रहऽ, हम पट दे नीबी के गिरह लगा देतानीं, ऊ हाथ बढ़वलन त ई झपट के पीछे मुँह फिर गईली, आ कहली, "हमरा हाथ-गोड़ नईखे का? हम लंगड़ लूल्ह अपंग हईं? हमरा के सिखावे के नइखे, हम अपना काम में पूरा के पूरा पारंगत बानीं, आपन काम अपने के सम्हारीं! हऊ मोर के पाँख नीचे गिरे चाहता, उहे सवाँरीं, ना, अनेरिया सोच में काहे परल बानीं?

ऊ मुस्कुरा के कहले, "अतिना देरी कइलू ह चुनरिआवे में एहसे हम समझलीं हँ कि हमहीं झट दे चुनरिया दीं, हमरा प अतिनों भरोसा नईखे हम अतिना बउराह हईं कि तहरा के लंगटिआ देब? हम तनी-मनीं सोझवक हईं, बउराह हईं जवन तूँ समझऽतारू?"

"हम त तहरा अनुराग रस के सार-सरोवर में तहार मुखचन्द्र देख के कमल कलिका अस बराबर खिलले रहल चाहीला। तहार कुछ बिगर जाय, हम सपनों में ना सोच सकीं! तूँ काहे दो हमरा से छनकल रहलू हमरा प! तहरा हाव-भाव के हम हरमेशा एकदम भूखाईल रहीला आ तूँ हमरा हर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात के हँसी में उड़ा देलू। सूरत क्रीड़ा के त हम कबो सपनों में चरचा ना करीला, नातऽ अवरू नाक चढ़ावे लगितू?"

"जानऽ तारू, काल्हु तहरे टोला के रसवन्तीया चिचिया-चिचिया के खिसी अपने भसुरा से कहत रहे कि एक बे जाँघ लड़ाईब त तोरा के छव महीना भीतरे सराईब, तें हमरा के का जनले बाड़स? हम मथुरा के दूध मनियाँ हईं जे जबे चहबे, जेने देखबे हुमच देबे? ओइसन अबर-दूबर हमरा के मत जनिहे, हमरा से लगबे त तुरते ध के तोर कउड़ी अइंठ देब, दादा परदादा के इयाद करे लगबे आ गोहरावे लगबे!"

राधा जी साड़ी-चोली पहिन के पूरा सज लेली त चोन्हा के ललचौंही नजर से रसिक वर जी ओरे कटाक्ष कईली,

"ई रसवन्तिया आ दूधमनियाँ के कथा कहे के अपने के का उदेस बा? कहीला कि बड़ी सयान आ समझदार हईं, बउराह ना हईं? एहीजा हमरा भीरी एह परतुक के का जरूरत रहे, हमरा से कहल का चाहऽतानीं? खुल के आ खोल के काहे नइखीं, आवत!

"खुल के तूँ आवे दे तारू?"

"काहे हम केकर राह रोकले बानीं?"

"त अब कवनो पेंच नइखे नूँ? अब त पूरा बस्तर के लबादा डाल नूँ लेलू? अब हई खुलल-खिलल कुच कमल **"के का होई, ई केकरा के नेवता दे तारे सऽ? ई नइखे बुझात, हमहीं बउराह हईं?"**

ई कनखी से ताक के स्नान कुंज से बहरी सखी लोगिन भीरी मुस्कान के बिजली से अंजोर करत पहुँच गईली।

बोलली चिहा के, "त तूँ लोगिन भीतरे काहे ना अइलू ह जा? कवनो लाज शरम के बात रहे का? हम कवनो छिनार हईं, चोरी, छिनारों में रहीं जे भीतरे ना अइलू ह जा?"

सभ सखी लोगिन ललिता ओरे ताके लगली कि ईहे जवाब दीहें!

ऊ कम्प मलिका ओरे ताक के फेन प्रिया जी ओरे तकली आ कह बइठली,

"ओने बे बोलवले कइसे जइतीं जा;

'बे बोलवले मड़वा गइलों,
माँग धोआ के घरे अइलों!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई हमनी के नइखीं जा पढ़ल का? हमनी के घरी भर से जादे भईल होई अईला। बे पूछले-कहले अईसहीं घूसकूरिया काटे लागीं जा आ रसिकवर लाल जी अनसाये लगितन त कईसन लागित। का जाने लँगटे उघारे नेहात होखस, जलक्रीड़ा करत होखस आ हमनी के सरसरइले बे पूछले अँछले आ जाईं जा, त का होइत? तहरा के त जानऽतानीं जा समुदार-हऊ, कुछ बोलबू ना बाकिर उनकर बात दोसर बा, ऊ कुछुओं अनसा जइहें त लागे अउली बात हो जाई, आ दाल-भात में ऊँट के ठेहुन डालला से नीमनों गाड़ी बेपटरी हो जाई, फेन के जवाब दी? सरहटले-परपटले कहीं गईल बढ़ियों ना होखे!"

राधा जी उनका ओर कटाक्ष कइली, "तूँ एह घरी बड़ी चल बिधर हो गईल बाडू। का-का दो कहे बोले लागऽ तारू? तहरा भीरी पहुँच बनावल सहज नइखे। अउर सखीं लोग त बेसबुर ना होखस बाकी तूँ कईसे सबुर धईलू हा, इहे भारी अजचरज बा? तूँ सबुर धरे वालू त ना हउ? कईसे भारी बनलू ह?"

"भारी चाहे हलुक बने के कवनो बात नईखे, बात ई रहे कि जानकारी बा सभ बात के। ई अस्नान कुंज ह बाकिर मन त राजा ह। राजा कब का करी केहू के मालूम नईखे। नहाऐ छोड़ि के परिरम्भ रसोत्सव दान होता, सौरत रस निमग्नता बा, एकात्म जुगल क्रीड़ा चल रहल बा, मधुपात माधुरी दान शुरू बा, कि नागर के नागरता के मान मनुहार चल रहल बा? कवने अवसर का भयेऊ के स्थिति पैदा करे हमनीं के जाईं जा? भारी विलम्ब होत रहे एह से उत्सुकता बढ़ल जात रहे हमनीयों के आ रस में भंग डालल हमनी के नीमन ना बूझलीं हँ जा। ईहो लागत रहे कि बतरस मत चलत होखे?"

"आच्छा ईं कहऽ कि अतिना देर काहे भईल ह निकले में, कवन केलि चलत रहल ह?"

ई सोझ भाषा में साफ कहली,

"कुछुओं अनचलउवल त ना भईल हा, नहा धोआ के आपन-आपन बस्तर बदलाईल ह। दूनो अदिमी उल्टा मुँह क के कपड़ा बदललीं हँ जा। दोसर कवनो उदम ना भईल, त तूँ खाली एही में रहलू! बुझाला नूँ कि जिनिगी में जईसे दोसर-कवनो कामें नईखे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओही घरी रसिकवर लाल जी बहरी आ गईलन। सभे चुप हो गईल त लाल जी मुस्करा के पूछलीं,

"का बतकही होत रहे कि हमरा आवते सन्नाटा हो गईल? हमरा सुने लायक नईखे का?"

केहू कुछ बोलत नईखे, सभे मौन साध लेलक आ मुस्कुराए लागल!

रसिकवर लाल जी मधुर आवाज में कहलीं, "त हमरा सुने लायक नईखे आ हमरा चलते बतकही बन हो गईल त हम जा तानीं।" ऊहाँ के आगे बढ़ल चहलीं। सभ जानीं हँस के राह रोक लेली आ कहल लोगिन "ना ना जाईं मत, बईठीं त कहाई नूँ?"

एकरा बाद ललिता कहली संछेप में आ कहली कि बे बात के बात रहे, अइसन कवनो बात ना रहे।"

बेर विसवे के बेरा भईल आवत रहे। रसिक प्रिया जी रसिकवर लाल जी के कनखी से तकली आ सभ जानी बरसाने के राह धईली।

***

(9)

रसिकवर लाल जी खातिर राधा जी में हरमेशा मिलन 'उत्कंठा, नव संयोग आ नव परिचय के लाज, भय आदि भाव असालतन से वर्तमान रहे। उनकरा में नव उज्वल उद्दाम प्रीति भाव के अभाव कबहूँ ना होखे। उनकरा में लाल जी के प्रति लाज आ नवीनता के नित्यता निरंतर एक अस भरपूर बनल रहला। हर संयोग उनकरा नया संयोग बुझाला। राधा जी रसिकवर लाल जी के मिलली त समझली कि पहिले पहिल मिलन भईल, संयोग भईल। नयापन के धार कबहूँ कुन्द ना होखे, हरमेशा उतावली आ जिज्ञासा तथा उत्कंठा एक समान बनल रहेला। जब ले ना भेंट होखे तब ले जान में जान ना रहे। बेअग्रता सचमुच दर्शनीय आ अतुलनीय होला। दूनों ओर अखंड नवीनता बोध लबालब भरल रहेला। एही से प्रत्येक मिलन नया मिलन आ नया संयोग के अनुभव करावेला। पूर्वानुराग के भी स्थिति विराजमान रहली। राधाजी प्रत्येक मिलन में कन्हैया भीरी नव दुलहिन के रूप में प्रस्तुत होली। कबहुँ नयापन के अभाव ना रहे। क्षण-क्षण नवीनता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोध उपस्थिति देत रहला। एह से प्रेम भाव भी असीम, अथाह आ अलौकिक प्रस्तुति देला। परमाराध्या राधा जी में नित्यता सहित नवल रूप सौन्दर्य रूपायित होत रहेला। हर बार नवल दम्पती के नव संगम बोध के अस्तित्व विराजमान रहला। प्रणयी आ प्रणयिनी के अभेद स्थिति के अनुभव में ब्रह्मानंद प्राप्ति साक्षात प्रकाशित हो जाली। रसानुभूति से रस निष्पति सम्यक् सहज प्रस्तुति देत रहली।

नव वधू के साहचर्य आ सानिध्य प्राप्त क के बिहारी जी के नित्य नव बिहार होत रहला। नाना विध बिहार अकल्पनीय आ अवर्णनीय सीमान्त तक, अनन्त तक, प्यार के उदात्तता तक पहुँचला।

राधा जी के अंगुरी, नोह आ पिंडली के ललाई हरदम टहटहात रहला। जाँघ के सुडौलता हमेशा सुधराई देत रहली आ गोर चिकनई मिजाज चिकना देली बिहारी जी के, देखते रहि जालन त प्रिया जी तोपे लागली चुनरी से! जाँघ के चिकनाई प उनकरा जी में आवेला कि ओह प तनी अँगुरी छलछलाईं। बाकिर राधा जी जाँघ छूअहीं ना देस! केरा के गाभ ओइसन सुघर आ चिकन ना होई! बाँह के मुलायमिगत आ कमसिनी देखे खातिर बिहारी जी के ललचा देली। बार-बार बाँह देखे खातिर मन मसोसत रहले। बाँह के चाहले कि कवनो बहाना से अपना अंगुरिन जवरे निर्वाध निरंतर कवनो तरी लाग लपेट बनवले रहीं। आपन अंगुरी इनकरा बाँह से आ लमछर अंगुरी से लपटवले रहल चाहले। अंगुरिन के दूरी उनका जियरा में छनछनाहट पैदा क के मन के उकिल-विकिल क देली स। एही से छनो भ ऊ इनकरा से अलग ना होलन। बिहारी जी के अंगुरी त सपरस करन आ कुचन विमर्दनहार हई स, ऊ बरजलो पर माने अवली ना हई स। उनकरा से कम अबाटिये ना हई स! कुछ-कुछ सिनियरे बूझीं! जाँघन जाँघ दबावे के जतिना होड़ रहेला ओह से अंगुरी में अंगुरी अझुरावे के कोशिश कमतर ना होला, अधिके समझीं, एही उदम में दिन गुदस्त हो जाले। निरंतर छूवत रहे के मन करत रहेला। ई करत अन्हरियो हो जास त का चिन्ता बा?

बिहारी जी त अपने बिहारी हवन बिहार करे में का अकुताए के बा? माजा बनल रहे के चाहीं। ऊ रचिको कमजोर चाहे हलुक ना होखेके चाहीं! प्रिया जी सभ बूझत रहली, इनकरो एने खटिया बिनाते रहेला, खटिया खाड़ा होके के त कवनो सवाले नईंखे। ओरचाइयो जाय त अवरू नीमन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधाजी एकदम अस्थिर हईं, डगमगास ना। आ देखउअल, नामकरूअल ना चाहली। गहिड़ाई में सदा बूड़ल चाहली। पनडूबी अपने आप बूड़ल जातीयां त इनकरा घोड़ा के बाग खींचला के का परल बा, निकहा ढ़ीला क दिहली, दउरो जतिना दउरे के बा! दरिआव के पानी नइखे ओराये के।

अइसे ई बहुते ना आत्यन्तिक गंभीर हईं। बड़का पहाड़ तरजुई प तउलाय ना, सभे जानेला। सैरन्ध्री कहले ना रही कीचक से 'मोघं तवेदं वचनं भविष्यति!' हम अतिना हलुक ना हईं आ हमार सतीत्व तरजुईं प ना तउलाई! ओही तरी प्यार के परकाष्ठा प पहुँचा के उदात्त छवि अवली ईहो हई। अईसन ओईसन गोबर धिचोर एहिजा ना पहुँचिहें, पहुँचिहें त आकाश से धम दे नीचे उलट के हरीचन्द्र के बाप लेखा लार चुआवे लगिहें!

रामायण के 'इदं ते चारू संजातं यौवनं ....यदतीतं पुनर्नैति के स्थिति बिहारी जी के सामने राधा जी कभी कभार आवहीं ना दीहें! बिहारी जी भी अब लरिकाईं में नईखन, लरिकपन से ढेर ऊपर पहुँच गईल बाड़े। एह से अइसन सोचहूँ के नईखे आ ना अइसन कबो होई?

राधा जी के ओंठ के ललाई प से त बिहारी जी टकटकी हटईबे ना करस अमृत रस मिल गईला प, के अइसन मरद बा जे छोड़ दी? आगे बढ़ला प जुधिष्ठिर के स्वर्गारोहन बा। रसिकवर लाल जी ई मोका कबहुँ छोड़े अवला ना हवन, सभे जानता कि रस-लोलुप रसिक सिरोमनि हवन। कइसनों ऊँचा पहाड़ होखे, ऊ आरोहण से मुँह ना फेर सकस, निराला जी के कर्कस बेवाइल तलहथी से त चमकत चोली मसक गईल रहे। बाकी बिहारी जी अइसन खखुआइल हहुआइल नईखन?

राधा जी के अंग-प्रत्यंग अईसन सुनर आ सुघर बा कि जवना अंग प बिहारी जी टकटकी लगावऽ तारे ओहिजे ताकते रह जातारे आ ओही में अझुरा जा तारे। आगे अउरी अंग के सुघराई नईखे देखे के मिलत। एह से ऊ चंचल हो के चपलता बरतत बाड़े कि सभ अंग देखीं, बाकिर सफलता शायदे मिलऽतिया! एके दू जगे सुघराई ठोकर लगा देतिया। आगे बढ़े के मोका नईखे मिलत, नातऽ गाड़ी गतिशील होखे में बड़ी देरी होता, जंक्शन तक गाड़ी कहियो नईखे पहुँच पावत, बड़ी निराशा आ जिज्ञासा बा।

राधा जी के आँख खंजन बाड़ी स कि हरिनी लेखा बिहारी जी सोचते रह जा तारे। ऊ अतिना चलविधर बाड़ी स कि तुरते बुझाता मीनाक्षी के संज्ञा देस। कान के राह धईले बाड़ी स त मृगी जेहन में ईयाद पर जातिया!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहारी जी भारी फेरा में पर जात बाड़े। तुरते चन्द्रमा के जोत बिजुरी के मात करे लागता त ईयाद आवता व्यास जी के बात कि **'विभ्राजते विद्युत इव अन्तरिक्षे'**। ऊ त चकचिहा जातारे। ई बोलऽ तारी मुस्का के त खीरा के बिया चमके लागता बगऽ बगऽ!

राधा जी के सुघराई प बिहारी जी निछावर हो जा तारे त राधा जी बिहारी जी के एक एक अंग निहारते रह जातारी। राधा जी बिहारी जी प अतिना विमोहित हो जातारी कि सभ कुछ भुला जा तारी। देह के सुध नईखे रहत, इनकरा बुझाते नईखे कि का करस? उठे, बइठे, चले, फिरे के जरूरत के अनुसार ऊहे बिहारी जी समुझावत बाड़न आ सूतल राधा के झकझोर के जगावऽ तारन। एही से उनकर नाँव 'मोहन' पर गईल! विश्वविमोहन उनकर चेहरा बा, चितवन मन लुभावन बा आ तिरभंगी रूप प त पशु पक्षी भी बेसुध हो जाता, त राधा जी सज्ञानी आ सयानी बाड़ी। भुवन मोहन रूप प होस गँवा देतारी आ अचेत हो जातारी त विहारी जी कोरा में लेके छुअत-छावत नानाविध होस में लावऽ तारन! इनकर बेहोशी दूर करे में विहारी जी तत्पर हो तारे त उनको सहजे सफलता नईखे मिलत। रसोद्रेक आ भाव विह्वलता के जतन क के दुलारत प्यारत बाड़न।

अईसन भईल ह कि विहारी जी प आज नजर पड़ते ई एकदम मोह में पर गईली ह। अचानक वनमाली कुंज भवन में अइलन हँ। उनकर गोड़ में रत्न जटित खड़ाऊँ रहे। मनोहर ध्वनि करेवाला नूपुर निनादित रहे। बुझात रहे कि पद-कमल के लोभ में ऊजर हंस बच्चा बइठल आनन्दित बाड़े स। नीलमणि से बनल केरा के खम्भा अस दूनों जाँघ सँवार के जइसे उल्टा कइल बाड़े स। डाँड़ में सोनहली डाँड़ा मधुर आवाज से मन मोह लेता। छाती प मोती माल विराजमान बा। त्रिभंगी रूप में मोर मुकुट धारी खाड़ा हो के रस चूवेवाला लाल ओंठ प अंगुरी से मुरली राख के विश्वविमोहन राग छेड़ देलन। साँवर सुन्दर देह प आ मनोहारी चेहरा प नजर गड़ गईल आ प्रिया जी देखते रह गईली, तुरते टूटल फेड़ लेखा, भरभरा के मड़क गईली, धराशायी हो गईली!

बनमाली के दउर के सम्हारे-सम्हारे में उनका सुशोभित गोड़ भीरी धमाक दे गिर गईली। विमोहित हो के बेहोश हो गईली। ऊ जल्दी-जल्दी दूनों हाथे उठावे लगले त ई लार-पुआर हो गईली। कोरा में लेके बड़ी प्रेम से बिहारी जी इनका लिलार प हाथ फेरे लगले। माथा प आ मुँह प पानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के छींटा चार पाँच बे छिरकले तब जाके तनी-मनी आँख के पलक खोलली। बिहारी जी नजर से नजर मिला के खूब मीसीरी लेखा मीठ आवाज में बोललन, "राधे!"

राधा बड़ी प्यार से उनकरा प तकली। कुछुओ बोलली ना। टूकुर-टूकुर उनकरा प कोरा में परले-परले ताकत रहीं। ओहघरी राधा के आनन्द के कवनो सीमा ना रहे। विहारी जी फूलित हो गईलन, चेहरा खिल गईल। उहो आनन्द के चैन के साँस लेले। विहारी जी के बवाँरा हाथ के कनगुरिया प लागातारे टपटप दू बून्द गरम लोर गिरल!

बिहारी जी अकचका गइले! मीसीरी घोर के पुचकरलन,

"राधे, का हो गईल ह? हम त तहरा सामने बार्नीं, हम त तहरे में बार्नीं, हम तनिको अलग नईखीं! हमरा तोहरा में का अन्तर बा? का तकलीफ बा, दिल खोल के कहऽ?"

बिहारी जी मुस्का के अंगुरी से लिलार छूअले आ चेहरा प अंगुरी बड़ी मुलायमियत से फिरावे-घुमावे लगले। पुचकारे लगले! राधा जी के जियरा में गुदगुदी होत रहे, बड़ी नीमन लागत रहे। चाहत रही कि अईसहीं करस!

ऊ राधा जी के कोरे में बइठा लेलन आ मुस्का के पूछलन,

"कुछ कहऽ, तहार मधुर बोली सुनल चाहऽतार्नीं। कुछुओं बोलऽ?बोलत काहे नइखू? हम बेचैन बार्नीं, हमार, बेचैनी नईखे बुझात? कहऽ का कहल चाहऽतारू?"

राधा जी मुस्का देली, कुछ बोलली ना। बिहारी जी के दिमाग में आईल कि अईसहीं रहल चाहऽतारी। ऊ कहलन मीठ बोली में,

"हम कुछ कहब त सुनबू नूँ?"

ई कहली कुछ ना, बाकी मुड़ी हिला के आपन सहमति देली।

सुनऽ, "काल्हु हम जमुना किनारे कदम्ब तर रहीं त क गो गोपी अइली जा। आवते ना आव देखलीं जा ना ताव, आपन-आपन गगरी ध देली जा आ हमरा से कहे लगली जा, "काल्ह काहे गगरी फोरले रहऽ?"

हम त चकचिहा गईलीं कि काल्ह त हम एहीजा आइले ना रहीं त गगरी कईसे फोरलीं। बाकिर बतिए ना सुनत रहीं स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम क बे कहलीं, "काल्हु हम ना आईल रहीं। काल्हु त हमदिन भर दान घाट प रहीं आ संझकी पहर बरसाने रहीं, एहिजा आईले ना रहीं?"

ऊ कहली जा, "त इयाद पारऽ?" त इयाद पारऽ कहिया गगरी फोरले रहऽ? "हमरा जवरे आज अझुराये के सोच के जोजना बना के आईल बाडू जा?" हम डाँट देलीं।

अतिने में सभ अझुरा गईली स। हमार हाथ ध के झोरे लगली स, एगो-दूगो डाँड़ ध लेली स आ पितम्बर छिन के लंगटिआवे लगली स। हम त कुकुर छिनारों में पर गईलीं। झकझोंरे लगली स। बुझाईल जे अब लंगटे भईलीं! हमरा ई बुझइबे ना करे कि हमरा जवरे काहे के फरफेन करऽ तारी स। एक हाथें पितम्बर धईलीं कि लँगटे मत हो जाईं! मरद समाज में लगंटिया दियाय त अब अवरू बाकी का रह गईल। हम त पहिले एकदम अचरज में रहीं बाकिर बाद में इज्जत-आबरू के बात दिमाग में आईल। देर ना क के हमहुँ सम्हर गईलीं आ दहिना हाथे सभ जानी के हुमच के धंसोर देलीं। सभ जानीं टूटल फेंड़ अस भरभरा के केहुनिया के जमीन ध लेली जा। ओह लोगिन के समहरें सम्हरे में कंकड़ चला के सभ गगरी भुरकुस क देलीं। भीरी दउर के दू तीन जानी हमरा से लपटा गईली त झकाझूमर में दूजानी के कंचुकी फाट के दू ओर ओलर गईल आ गोल छाती एकदमें उघार हो गईल! हमरा मुसुकी छूट गईल त ऊ लोगिन फेन दउर के अझुराये लगली जा त हम लमी लेलीं। ऊ लोगिन जशोदा भईया भीरी जा के ओरहन देली जा, आ नमक तेल मिला के तिल के तार कइली जा। जशोदा मइया आगबबूला होके एगो छड़ी अलगे सरिया के धइली, कहली कि आज कान्हा के एही छड़ी से सटसटा देब, आजु सुधारिए के रहब। आज उन्हकर नानी इयाद परा देब, बड़ी तैस में रही, अतिना सुनते गोपी लोग घिघिया के दाँत ऊ चिहारे लगली जा, "ना, ना, मारब मत, ऊ गलती क देलन त अईसन मत करब, अबहीं लरिकाई बा, कमसीन देह बा, हाथ जोरल लोग, "अईसन मत करब, लईका बाड़न, हमनी के लंगट-उघार हो गईलीं हँ जा, जाए दीं, छोड़ देब, माफ क देब!"

जसोदा छड़ी होने झटहा अस फेंक देली आ तमतमा के बोलली, "हम जानऽ तानीं, हम साफ-साफ कह दे तानीं, हमरा भीरी ना अईलीं, ओनहीं जतिना छिनरपन करे के बा, कईलीं, तोहनीं के सभ छिनरझप हम समझऽतानीं!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधिका जी मुकसुराये लगली आ दबी जबान में जीभजाँत के पूछली,

"आ ई सभ करे में तहरा नीमन ना लागला?" ऊ एकदम खामोस हो गईलन। चेहरा शान्त रख के कहलन,

"देखऽ, ई सभ हमरा नीक ना लागे। हम ई सभ से बहुत दूर रहल चाहीला। तहरा खातिर छटपटात रहींला पानी बिना मछरी अस। हम अनेकन बे कह चुकल बानीं कि राधा खातिर कुछुओं करे में हमरा कवनों संकोच आ लाजो लिहाज नईखे। हम तहरा बारे में पूछीला, जानल चाहीला, ओही लोगिन से ना, सभके से, राहगीर से, आवे-जायेवला से, गोप-गोपी से पूँछ के तहरा के पता लगाईला बाकिर ओह लोगिन से कवनो मतलब नईखे। ऊ लोंगिन कुछ चाह के, कुछ सोच के, कबो-कबो जोजना बना के हमरा से अझुरात रहऽ ला लोग। त हमहूँ ओईसहीं खरा-खरा जवाब दिहीला। हम अझुराईल ना चाहीला, हम त फरके भागल-पराईल चहीला। बाकिर केहू जबर जस्ती बाँह खींचे लागी, जाँघी प ताल ठोके लागी, लंगी लगावे लागी त हम कतिना भागीं! भाग-पराह कईला से मकोह फँसा लेला त जीवन भर जान ना छोड़े, अझुरा के बेकाबू आ बेदम क देला! छोड़वलो प कुरंग लेखा अउरी अझुरा के मरे के ठेकान लाग जाई। मजबूरन हमरा अझुराये के ठेकान लाग जाई। मजबूरन हमरा अझुराये के परेला आ हमरे प ओरहनो दियाला।"

"सभ के सभ तूँ यानी एकदम पूरी के पूरी राधिका, वृषभानु जाया कीर्ति कुमारी राधिका, बरसाने अवली राधिका, सुर भान पौत्री, ललिता सखी राधिका, कान्हा से रार आ दुलार अवली राधिका, कन्हैया से मान मनुहार आ प्यार के तकरार अवली राधिका, विहारी से विहार अवली राधिका, मधुसूदन के मिठास के मझधार अवली राधिका, गिरिधर के गोदी में प्यार के इजहार अवली राधिका, के अतिरिक्त हमार दोसर कवनों दुनिया नईखे। तूहूँ जानऽलू, हमहूँ जानीला!"

"तूँ अनन्त मिठास के बरखा करत रहलू? रसानन्द से सदा परिपूर्ण, हमरा महान सौभाग से हमरा आँखि के अतिथि बनल रहलू, तहार नजर निरन्तर करेजा में रसदायी-सुखदायी बनल रहली, तूँ भीतर में आनन्द से तृप्त रहलू, तहार प्रसन्न सुघर सलोना चेहरा मधुर, सौम्य आश्चर्य बनल रहला, तूँ रजोगुण के हरियर कलिका हऊ, इच्छा शक्ति, ज्ञान आ क्रिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति सभ तहार, अनुहारी हई जा। सर्वांग सुघर तूँ बाड़ू, सम्पूर्ण सुन्दरता, कोमलता, कमनीयता आ जियरा के जीवन्तता प्रदायिनी मुग्धता समर्पित हो के तहरा के निरन्तरावृत कइले रहता लोग, तहरा विलास पूरित कटाक्ष आ आँख मारल, नजर चलावल गति हमरा करेजा में घाव करत रहेला जवना से सम्हरत-सम्हरत हम बेदम होके ओठंग जाईला! अनन्त कान्तिमयी राधा, बिना तहरा सम्हरले हम भाव-बोध में हरमेसा लंगड़ात रहीला!''

''प्रेम के शिफ्ट करे अवला कबहूँ हमार भाव ना ह? हमरा तहरा से कनछियाये के जिनिगी में कवनो सवाल नइखें। हमनी के समझदारी से काम लेके जीवन कला के नवीनता के रंगरोगन से अइसन रूपायित करे के बा कि लोग चिहाते रह जास। अईसन आयाम एकर देवे के बा। हम खाली पेयार के उड़ान ना भरीं, बलुक तहरा दीदार खातिर दिन के दिन गँवा दिहीला।''

''गोपी लोगिन से हम पेयार के पिंग ना बढ़ाईं, उहे लोगिन लपटाईल चाहऽली। फ्लर्टिंग के एगो अलगे मजा ह, हमरा प मरता लोगिन त मरे द! हमरा के दही मक्खन के तोहफा शवख से लोग देला त हमहूँ भाव भंगिमा के ओभरलुक ना कईल चाहीं, बाकिर हम मुँह चोर ना हईं। जहाँ रहीला, शान से आ आन बान से। केहू के दुत्करबो ना करीं, तोहरा से छिपल नइखे!''

कतिनों देवता पितर मना के हमरा के ठगल-चाहे लोग त लीपल बोली ना बोलीला आ ना बोलब। बेपानी ना होखब आ बे पानी ना करब! हमरा से ना सहाई त शनिचर के हमहीं गाँव के बटोर क देब, कवनो फेरा नईखे। ओह लोगिन से हम खाली तोहार खोज खबर लेवे में बे अगर रहीला, हम अझुराईल ना चाहीला। हमरा के कहेली जा कि आठो पहर चउअनियाँ मुसुकी छोड़ेलन। अछरंग लोग लगावली। हमार त ओठवे अइसन बा त हम का करीं? हम त मसखरियों ना करीं, हमार कवन ऐब बा? कहली जा जे चसकल बाड़े। सरासर झूठ! हम तहरा बारे में पूछीला-बूझीला, त ऊ लोग रगरा-रगरी शुरू क देली, त हम कइसे चसकल बानीं?''

''कहला लोग कि बाट अगोरऽतारे! त इहो झूठे ह! ऊ लोगिन रोज अनगुतहीं ओही मेंहें काहे आवेली? हम कवनो अलोता त ना बइठीं, कदम तर बइठीला, सभे जानऽता। ओह लोगिन के ओने आवत जात देखीला त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सँचहूँ हमरा भीतर के सूतल घोड़ा एकदम सरपट भागे लागेला। हम खाली पेयार के उड़ान ना भरीं, तहरा-दीदार खातिर सउँसे दिन गवाँ दिहिला। तब ई बात जरूर बा कि ओह लोगिन के पल्लू में हम बंधाईल ना चाहीं बाकिर ओभरलुक कईल भी आसान ना होखेला! क बे त ओह लोगिन के शब्द हवा में अँटक जाला, हर बात के हम कान ना करीं। कठघरा में खड़ा नइखीं-जे झूठ के पहाड़ा पढ़ीं। दया आ जाला एही से जादे सिरियस ना होईला। हम त इजी लिहिला। हम तहरा से सोझे कह देल चाहऽतानीं, हम कन्फिउज ना होईला। हमरा ओठ प सोरहो घरी मुस्कान के नदी थिरकत रहली, चिन्तन के आ तनाव के बोझा ना ढोईला। तहरा खातिर दिनों भर टाइम जाया क दिहिला, काहे कि उछल-कूद पसन ना करीं, नाक-मुँह में पानी ना समाये दीहीं आ ना उजबुजाईं! जानीला, स्वीटहर्ट का कहल जाला? ओकरा आयाम के आऽस्फालन आस्वाद्य ह। जोश में चमक-दमक में रम जाईला, जिनिगी आ जाले, पेयार के मार्केट में हमरा रहते मंदी के त कलपनो ना कईल जा सकें, अब केहू मरऽता त मरे द! ओने हम फिक्स ना होईं आ ढेर शिफ्ट ना होईं! एनज्वाय के पोषक हईं? शोषक ना हईं! हमरा पल्लू में कतिना लोग बन्हाई? निधड़क बोलीला, अविश्वास से तहार आँख कबहुँ फैल ना सके।''

''हमरा चाहत प तहार एकाधिकार बा आ एहसे तहरा भरपूर राहत बा। तहार तनाव छू मंतर हो जाई! तूँ आँख में बइठल चाहऽतारू त हम आँख बन ना करब। देह केहू के बान्हे के सही आधार ना ह।''

''मन के गाँठ मजबूत होला। फेर दोहराइयों के हुमचला प ऊ गाँठ ढीला ना होखे, ढिलुहा ना होखे जे अवरू केहू के झूले के चानस मिली!''

***

(10)

राधिका जी पहिलहीं से कुंज भवन में बईठल रहीं। रसिकवर लाल जी के चिन्तन में ध्यानस्थ रही। उनकरा अंग-प्रत्यंग के नजर में रखले रही आ उनकरा सुख-दुख के कल्पना से कुंज भवन में बईठल रही। उनकरा अंग-प्रत्यंग के नजर में रखले रही आ उनकरा सुख-दुख के कल्पना में निमग्न रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ओही घरी लाल जी आ गईलन त राधा जी अचानक चिहुँऽक गइली हऽ!"

"काहे हो, चिहुँक गइलू हऽ?"

ई कुछ बोलली ना, खड़ा हो गईली आ ऊ बईठलन त भीरिए बईठ के अपना गोदी में उनकर कमल–चरण रख के फरिया के फांड़ा से दूनों हाथे बढ़ियाँ से पोंछली। एकरा बाद दूनों उरोज प सटवले रहली। उनुकरों बड़ी नीमन लागल, हटावे के रचिको कोशिश ना कइले। दूनों ओरे एके बात रहे, एके भाव रहे। पेयार के नाव उतरात बहत रहे। लगी डाले के कवनों साइत संजोग ना रहे।

अपार आनन्द सागर में लोग बूड़ल रहे। कवनों अन्यथा भाव–विचार के गुंजाइश ना रहे। दुनिया भुला गईल रहे चाहे बहुत पीछे कोसों दूर छूट गईल रहे। बहुत छोट जगह रहे जहाँ तीसरके अंटावा में सकेता सकेती आ धोंसरा–धोंसरउअल होईत। तिल रखे के भी जगह बड़ी मुश्किल से खोजे परीत। रस काटे में केहू दूबर–पातर ना रहे। तरंग में छिपाव से कहू–केहू के लउकत ना रहे। दूनों अदिमी खखुआईल रहन। पुरखीन लेखा निश्चिन्त पूरा भरोसा से आनन्द के ढेर में दूनों जने एक दम अपना के इयाद ना रखले रहे लोग! बेधड़क केहू के ओहिजा अबहूँ कवनों चानस ना रहे। जतिना रस हो सकत रहे, ऊ लोग अरजत रहे कोड़ारी में जईसे बिरवाई के रखवारी होला ओई–सहीं दूनों जने रस प्राप्ति में एक दोसरा में भरपूर समाईल रहन। एह काम के शुरूआत आज पहिले पहिल भईल ह, एह में दूनों में से केहू पहिले से चसकल ना रहे, बाकीर ई अईसन माजा बा कि चसक त लगिए जाई! प्रिया जी त आपन लहँगा–पटोर तक भुला गईल रही, देह के अब केकरा सुध रहे। टिकुली, चोली, सारी के खेयाल ना रहि गईल रहे।

कहली, "कबो–कबो अइसन बुझात रहे कि केहू करनिहार नइखे, आ अइसन लागत रहे कि अईसहीं केस पाक जाई! बाकिर अब भरोसा हो गईल हमरो करनिहारी बा! मन में सूल उठत रहे कि कइसे मान रही? अब समऽझलीं कि रउरा बाँह धइलीं त मान राखब।"

ऊ कहले मुसका के, "पहिले हमरो ईहे बुझात रहे कि मँगनी के मिरजंईई लगा के दुलहा बने के परी, तहरे लेखा हमरो करेजा सालत रहे, रह–रह के जियरा जरत रहे कि चढ़ल जवानी लोर ढरकत माटी में मिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाई, कवनों एतबार ना रहे, भरोसा भरकत रहे! जनात रहे कि हाड़ में जाड़ समा जाई। एकदमें ब्रह्मा विसुन बाँव हो गईल रहन, गोपी लोगनि जवरे दिन ना बुझात रहे बाकिर परोजन में खईला से जिनिगी कटी? बाझ बटेरी के हालत रहे, एही से जियरा सालत रहे। तहरा से भेंट भईल आ छ्व आंगुर के तोई अवला झूला बैंगनियाँ पर नजर परल तबे से परान तोहरे में टँगाइल रहता! पहिले त बुझात रहे सँचहुँ चदर तान के सूत जाये परी। चउल ठाठा के त मुसीबत नहीं ए रहे, बलुक परला के संघऽतिया तकलो प लउकत ना रहे, लागे कि जिनिगी जिआन ना गीधवा मसान हो जाई अब जाके जीव में जीव परल, रसोई पानी से जीव भरल! पाँव परल दाढ़ी धईल भुलाइल। अब देह के पिसान ना पिसाई! परिहथ ध के बैल हाँके में अपनहुँ नधाईले रहे के रहे, गोपी लोगनि जवरे सुस्ताए के त सवाले ना रहे। अब प्रणय रस से नयन जोर लगाव तारे स, कल्लोलमान उछलत सागर के तरंग में हिलोर मारे के आजादी भईल, दिन भर दँवरी में नधईला से जान छूटल। रस विवशता के अँकवारी में कसईलो प मनगर रहे के बा। वृन्दावनेश्वरी के सुरभि समन्वित देह के स्पर्धा से मकरन्द में मिजाज सराबोर हो गईल। ताप अपने आप कहाँ दो भाग गईल, रगरा–रगरी के कवनो मोल नईखे, अन्तरंग केलि के आनन्द पसर गईल। भोग्य आ प्राप्य प्रेम आप्त काम बा। रमणीय दृश्य सहज सुलभ बा, अचिन्तनीय रमण रस सुप्राप्त बा।"

एह तरी रसिक राय रस पूरित हद छूवऽ तारन, मिजाज भरल बा। रस छलकत बा, मन चसकत बा, दायाँ नयन फरकत बा। दखिनी पवन सँसरत बा, जियरा हरसत बा। रंग बरसत बा।

रसिकवर लाल जी कहलन समय देख के, "हमरा प्रान के रानी, हम आजु अतिना फूलित आ सन्तुष्ट बानीं, तृप्त बानीं कि सभ कहल संभव नईखे, प्राणेश्वरी! धेयान से सुन लऽ, हमरा जिनिगी के सम्पूर्ण साध आ साधना तूँहीं बाड़ू। इहो कइसे कहीं? सचमुच में हम आ तूँ एके हईं जा। दूगो ना हईं जा, जवन तूँ हऊ ऊहे हमहूँ हईं, जवन हम हईं उहे तूँ हऊ! इहे सत्य ह। ई कहे में हमरा कवनों संकोच नइखे। हमनी में कवनो भेद हइले नइखे। दूध जँइसे बगऽबगऽ उजर होला आ आग जइसे दाह से भरल रहेला ओही तरी हमनी के दूनों अदिमी में, राधा, कृष्ण में तनिको कदापि भिन्नता नईखें। तूँ बाड़ू त हम बानीं, तहार अभाव में हमरो कवनो भाव नईखे। सोनार जइसे सोना बिना सुनहला गहना ना बना सके,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओइसहीं राधा बिना कृष्ण कुछ ना कर सकस, कुछुओं करे में समर्थ नईखन। तहार नाम भी हमरा अतिना प्रिय ह जवन अवर्णनीय बा। राधा नाम हमरा कान में अमृत धारा के निरमान क देला। राधा के रूप हमरा के चुम्बक अस खींच लेला। तहरा नाम के 'रा अक्षर के आवाज सुनते कान बहुत सजग हो जाला आ 'धा सुनला के बाद हम तहरा सिवाय दुनिया के सभ बात, सभ विचार, सभ चीज एकदम भुला जाइला। राधा से हम एकदम अभिन्न हो जाइला, अपना के हम एकदम तहरा में समाहित कर जाइला, अस्तिव विहीन हो जाइला! अलौकिक प्रेममयी दिव्य स्नेहमयी, अप्राकृत विग्रह रूपा राधा रानी में हम बेसुध बन जाइला। प्रत्यक्ष दर्शन, साक्षात्कार, विविध लीलानुभूति, भाव-भंगिमा में सान्निध्य, चेष्टा परचेष्टा में सामीप्य आ स्नेहिल संस्पर्धा में आनन्दा-तिरेक में बूड़ जाइला, फेन त किछुओं इयादे ना रहि जाय। हम त अपनहूँ ओतिना देर खातिर खतम हो जाइला, नदारद हो जाइला, नव दू एगारह हो जाइला, अनबूझ बुत बन जाइला, हमार एह भाव के केहू हिला ना सके, अर्पित आस्था के डिगा ना सके आ हृदय रानी वृन्दा वनेश्वरी के हमरा से दूरी ना बना सके, अलग ना कर सके। हमार प्रेम, प्रेमी आ प्रेमास्पद तूँहीं हऊ! हमार उपासित, आराधित, परम गौरवमयी, महिमामयी, सहज साधिका तूँहीं हऊ1 अचिन्त्य अनुनयिनी, अनिर्वचनीय, अपरिसीम अनन्त स्वाभाविक स्नेहास्पद आराधया तूँही हऊ! हमार स्वानुभूत विश्वासवम्बन, विशुद्ध भाविका, प्रकाश्य धैर्य, जीवन्त हृदय स्वरूपा, नित्याभिसारी प्रिया, नित्यानुगामिनी, मधुरातिमधुर प्रियतमा, सम्पूर्ण रस आ ममतामयी रस प्राप्ति भी तूँही हऊ! तहरा मोहनी मूर्ति पर हम नित्यत: निछावर बानीं, तहरा एक-एक भृकुटि प, एक-एक कटाक्ष प बलिहारी, तहर टहऽ टहऽ ओंठ से निरन्तर चूवे अवला रस प बलिहारी आ मुनक्का अस मीठ बोली प बलिहारी! हमरा प असालतन तहार मुसकान किरन के बरसात प बलिहारी।''

''परसों हम समय प तहरा भीरी ना पहुँचलीं त कम्पमलिका हमरा विरोध में तहरा से जली-कटी सुनावे लगली। रचिक देर तक उनकर बात सुन के तूँ कहलू बिना कवनों परतीकिरिया के आ ऊ तुरते हमरा के सभ दाल-भात नून तेल मसाला सहित सुनवली।''

''चातक पपीहा आकाश ओर मुँह क के ताकत रहेला, मूड़ी दुख जाय टूट जाय, ताकते रही! स्वाती के बून्द के कहाँ सवाल बा, बरखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होखे चाहे मत होखो, ऊ ताकल बन ना करे। ता जिनिगी ताकते रही, आपन टेक कबहुँ ना छोड़ी। आपन दुख दर्द के ओकरा चिन्ता ना रहे। ऊ अपना के एकदम सोरहो आना भुला जाला। अइसन भी होला कि पानी साथे बजर भी गिर जाला, बजर के आघात से चाहे बिजली के आग से ऊ क्षत-विछत हो जाय, जर के राख हो जाय, कवनो चिन्ता चाहे भय से उँ परभावित ना होखे, आपन विनास,, हो जाय, रचिको ओकरा टेक में अन्तर ना आई!''

''ऊ प्रेम करला, विशुद्ध प्रेमी खातिर प्रियतम खातिर कवनो तेयाग के उ तइयार रहला, प्रेयसी के जान प्रेमी ह, प्रेयसी के आन, बान शान प्रेमी ह? प्रेमी के अभाव ऊ सह ना सके, प्रेमी के दोष ऊ कबहूँ ना सुन सके। चातक मुँह नीचे ना करी भलहीं चोट खाके मर जाय। सुनऽ, व्याधा के बान से घायल चातक गंगाजी में गिरल त चोंच ऊपर उठवले डूब के मर गईल, बाकिर गंगाजल जवन मरे बेर मुँह में दियाला समाये ना देलस। बदरी के पानी के खास कर स्वाती नक्षतर के पानी के ओकरा पियास बा, कवनो भारीपन नईखे1 ऊ त अपना बरत में अपना करार में, अपना लक्छ में, अपंना प्रेम में पागल बा, अरपित समरपित आ गगन ओर मगन बा!''

''ओकरा के केहू डिगा ना सके, रचिको हिला ना सके। अडिग बा, अथाह बा। असीम बा, अकूत बा, अथक के सबूत बा, अपना काम में सभ मजबूत बा, समय के अनगूत बा, कहे में अजगूत बा, सुने में बहुत बा!''

वृन्दावनेश्वरी के प्यार के ऊ विवरन फयलावत रही।

''हमहूँ आपन सखी के नियरा रहते भी काल्हु परसों उनकरा के नियरा से जनलीं हँ! ऊ जहाँ बाड़ी ओहिजा तक हमनी के जिनिगी में पहुँचब जा कि ना, ना कहल जा सके। अतिना त्याग हमनीं में आई तब नूँ कुछ सोच बनावल जाई। ओह दिन रउआ जवरे ढिलुहा प बईठ के झूलत रही आ रस-सागर में बूड़त रही त उनकरा बुझाईल कि सखी लोगिन के हमरा अतिना रस नइखे मिलत। एही से इसारा क के हमरा के रउआ दहिने बईठवली। रउआ हमरा गरदन प एगो हाथ ध के पेग मारे लगलीं। आ एगो हाथ प्रिया जी कान्ह प धईले रहीं। बाद में बारी-बारी से सभ सखी लोगिन के अईसहीं मोका देली। फेन उनका बुझाईल कि ऊ तऽ हरमेसा रउआ बावें बईठ के ढिलुहा प माजा ले तारी, एह से सखी लोग्गिन के जबुन बुझाई। ई समझ के उतर गईली आ जवरे बईठा के अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढिलुहा जोर से हिलावे लगली तब उनकर जियरा हलुक भईल। उनकरा एह में आनन्द आईल सभ सखी लोग दरद बूझलीं ना तऽ एकरा पहिले करेजा में खोंच मारत रहे कि सखी लोगिन के उनकरा अतिना रस नईखे मिलत, ऊ बूझ गईली। हालाँकि सखी लोग में से केहू ई बात ना कहले रहे।

प्रिया जी अइसन बड़ दिल के हईं, स्वारथी ना हईं। रउआ खातिर उनकर मन के भाव अथाह बा। हमनी के रउरा से भेंट ना भईला प आपन भँड़ास रउरा प तड़ दे निकाल देलीं जा आ राउर शिकाइत करे में कवनों कोर कसर ना छोड़ी लाजा। तुरते राउर उलटा बेवहार के चार्चा करे लागींलाजा। ई बात उनकरा रचिको नीमन ना लागे। ऊ नाराज लेखा हो के हमनी के समझावली सिखावली, क गो परतुक देके बतावली कि अपने लेखा दोसरो के समझे जाने के चाहीं। दोसरो के मजबूरी पर खेयाल करे के चाहीं ऊ मरद हवन, उनकरा अनेकन कार बार बा? खाली हमनीएँ जोरे बतकूचन करिहें त कईसे काम चली। उनकर ढेर जवाबदेही बा,ढेर काम बा, अनगिनत लोग से सरोकार बा। सभ के देखे के बा, सम्हारे के बा, मदत करे के बा। उनकर दुनिया बड़हन आ अउरी फाँफर फयलल बिया हमनी अस खाली कुंज भवन आ वृन्दावन में सिमटल नइखे। खेले-कूदे में खाली बाझल नईखे रहेके, सिरदामा आदि गोप बालक लोग बा, गाय-गोरू चारावे-सम्हारे के बा, गोप लोग के सूझावे के बा, नन्द जसोदा से पलखत पा के केनहूँ निकले के बा, जमुना किनारे अनेकन गोपी लोग लोगनि से पार पावे के बा, क गो अझुरहट से निबरे के बा आ हमनीयों के हँकासल पियासल आ के रोज सझुरावहीं के, निपटावहीं के बा!''

''राधाजी सम भाव के, विचार के हईं! खाली अपना स्वारथ से कोसों दूर रहली, अपना सुख-चैन के त कबहुँ सपनों में चरचा ना करस। हमनी सभनी के हरमेसा चारों पहर सोंचत रहली, पूछऽली आ उपाय बतावत रहली। केहू के, सखी लोगिन के, पशु-पक्षी के आ चिरई, चुरूँग के जीव जंतु के दुख उनकरा ना देखल जाय, ना सहाय। एगो साँप रथ के पहिया से दब गइल रहे, ओकरा के बाती से उठा के राह से अलगा फेंड़ के छाँह में ध देली आ लहँगा भींजा के ओकरा मुँह प गरली आ कहली कि एकर सहायक साथी बा जे मदद करी, सेवा करी। ब्रम्हा विशुन हमनी के ज्ञान बुद्धि देले बाड़े त सोंच के समय प सभ कर सहायता मदत करे में कबहुँ संकोच ना करें के चाहीं। जतिना बने, करे के चाहीं। हमनीयों के आफत में परला प केहू के मदत चाहीं लाजा। हर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदमी आ जीव-जंतु जरूरत परला प, साँसत पर केहू के देखला प खोजऽला। आफत केहू प आ सकऽला। समय जानल नईखें। आदमी केहू के दुख में हाथ लगावे खातिर सवख से तत्पर रहला प आदमी कहाला, इन्सान कहाला। जे अईसन ना करे ऊ हेवान कहाला।।''

''इज्जत के तसवीर के जिल्लत में ना डालें के चाहीं, प्रिया जी सदा सर्वदा हमनी के समझावली। सामाजिक काम में ऊ खूब मनगर रहली। केहू के तकलीफ में ऊ दाँत ना निपोरस, तड़ दे कमर कस के एकदम बीजी हो जाली, इन्तजारी ना करऽली।

ंतिना के बाद भी एको छन कन्हैया के पेयार में आँख ना मूँदस। रउआ उनका नजर से लोप ना होईला। रउरा नाम के जाप करत रहली, बाते-बाते मोहन मन मोहित कइले रहले, मोहन बिना एको छन प्रिया जी हरअिर ना रहऽली, तुरते कोंढ़ी मउरा जाली।

ऊ हरमेसा मेघ अस मनोहर श्याम शरीर निहारत रहली। पीताम्बर बिजली अस, बगुलन के पांती अस मोती माला, रसमयी बंशी ध्वनि के कबहुँ ना भुलास। कमल के समान चेहरा के चारों ओर घुँघराला बाल आ त्रिभंगी रूप हर छन हृदय में सजवले रहली। मनमोहन उनकर मन असालतन मोहित कर लेले बाड़न। उनकरा मन के दोसर कुछुओ अच्छा ना लागे। बईठली, उठली, गिर-गिर परली, बराबर राउर मोहन रूप के सामने देखत रहल चाहली, छनों भर मोहन रूप दूर ना होखे देली। उनका दोसर कुछ निमने ना लागे। रउरा इयादगारी में ऊ खाईल पियल, नहाईल धोआईल, सूतल जागल सभ भुला जाली। दिनों भर अकेले रउआ के जपत रात क देली। गुरूजन लोग के सामने कइसे उठल-बईठल जाला उनका रचिको भर इयादे ना रहे। हरमेसा बउराहिन अस कइले रहली।।''

''कहत रही कि श्याम के चंचल पुतली अस सोभा मछरी के ना होखे। खंजन के बनावट भी ओइसन नइखे। वंशी के ओंठ प लगा के हाथ झूकल रहऽ लईन त बुझाला कि कमल चनरमा से शतुरता छाड़ के उनकरा से भेंट करता आ चनरमा मधुर आवाज करऽता। प्रिया जी मने-मन राउर सभ अंग के इयाद करत रहली आ आपन जान-परान रउआ प दिने राती हर छन निछावर करत रहली। कहली कि नटवर नन्द किसोर हमनी के मन चोरवले रहले आ तीन टेढ़े टेढ़ अंग क के बाँसुरी बजावले त मन मोहित हो जाला, दुनिया सभ चीज आ सभ काम भुला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाला। अवरू किछुओ लउकबे ना करे, कुछ बुझइबे ना करें, मन एकदम मतवाला हो जाला। वंशी ध्वनि जियरा में खोभत रहली आ छोड़हुँ के मन ना करे। उन करा के त अपलक देखत रहीला जा। ऊ दाया के खजाना हवन, विद्या आ बल के मतवाला हवन, छल-परपंच में दिवाना हवन, कला कौसल राशि आ बड़ी चतुर मरदाना हवन!"

"राधाजी कहऽली, कन्हैया जी के आँख अतिना चलविधर हई स कि खंजन, मछरी चाहे मृगशावक के परतुक ना देल जा सके। नील कमल, लाल कमल, श्वेत कमल सभ के सम्पुट रात में बन हो जाला बाकिर मधुसूदन के आँख बराबर असालतन खुलले रहली, कईसे परतुक दियाई? लिलार प चन्द आ भौंह के बीच में कालिमा देखला प बुझात रहला कि आधा चनरमा भीरी अमृत चोरावे साँपिन आईल बिया। कम्पमलिका सभ बात कहत रही आ अपना धुन में धार अस बहत रही!

मधुसुदन भाव में पेआर के पगार फान के मकोह के फाँस में अझुराइल रहन, रसधार में समाइल रहन, अपना के सपना में भुलाइल रहन, आ सूझत ना रहे, काहाँ रहन केहू बूझत ना रहे!

***

(11)

राधा फजिरे कान्हा के घर भीरी चहुँपली। कान्हा अतिना सबेरे देख के एकदम चिहा गइलन। ऊ दउर के बाँह ध लेलन आ दुआरी प के सुनहरी चंपा के ठहरे बइठवलन। मीठ बोली में कहलन,

"राधे, जानऽतारू कहाँ बइठल बानीं जा?" मुसकात रहन आ उनकर दहिनवारा हाथ धइले रहन कस के। उनका बाँह धइला से बुझात रहे कि राधा चम्पा तर चमपत मत हो जास। चम्पा से भँवरा भागल चाहेला! उ कहली, "हाथ छोड़ऽ, हाथ काहे कसले बाड़ऽ?" ई आपन मन के बात कहलन, "आइल बाडू त हमरा घरे चलऽ, एहीजे से पराये के नइखे'।

ऊ कहली, "त कँटहवा लगाम का लगइबऽ?"

"लगाम त घोड़ा-घोड़ी के लगावल जाला आ उहो कँटहवा त पुसतक चलावे वाला घोड़ा के लगावल जाला। तूँ त एकदम सोझिया हऊ! चलऽ मइया से भेंट क लऽ? ढेर दिन ले तहरा के खोजऽ तारी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ना बाबा ना, हम जासेदा मइया भीरी ना जाइब, छोड़ऽ हम कदम तर जाइब, ओहिजा ना लउकलऽ ह त चल अइली हँ। मइया त ध लीहें आ सँवारे सजावे लगिहें, माँग फरिहें, गोर लिलार प चन्दन बिन्दु लगइहें, सारी चीर के फरिया बनइहें, अँचरा से मुँह आ सभ अंग पोछ के करिया फरिया पहिरऽ इहें। तिल, चाउर, बतासा आ मेवा फॉके के बन्हिहें। आ तूँ टूकुर-टुकुर हमरा सभ अंग प चितवत रहबऽ! नयन के सयन से करेजा में खोभत रहब! ई हमरा रचिको निमन ला लागे।''

ऊ मुस्कइली आ खिसिया के बोलली,

''तहार मइया हमार मइया कीरती के गारी देवे लागली कि छिनार हई! हमरा बाबा के कहली कि बड़का धूर्त हवन। ई हमरा रचिको ना सोहाय। हमार कीरती मइया आ बबा वृषभान अस नीमन अदिमी कतहीं खोजलो प ना मिल पाई। हमार बाबा कब उनकरा के ठगले रहन जे बड़का ठग कहली। ई हमरा ना सहाय। हमार जीव कचोटे लागेला, जोर से भीतरे टीसे लागेला। तहरा के खेलौना तहार मइया देली त हमरा सोझे नू कहले रहऽ कि अबहीं ना, ना त रधिया चोरा के लूती लागी, ओह दिन के कहले रहे? तहार त अपने रहनी बगदल बा मखन चोरावत घरे-घरे डगरात चले लऽ!''

जमुना किनारे कदम तर गोपिन जोरे रोज गिधवा मसान करेलऽ आ हमरा के अनेरिया अछरंग लगावे लऽ। आ लाई लगावे में त ओस्ताज हवऽ। फेर हमरा जवरे रगरा-रगरी करे लगबऽ त हमार तीन पाढ़ के सारी लसरा जाई आ नयकी बैंगनिया चोली मसक जाई त कीरती मइया अनसाये लगिहें। ढोढ़ी लउके लागी त बरसाने के लोग-बाग का कहिहें? हम नाहँक बेपानी हो जाईब! हमरा अलोता लुकाए के परी! तूँहीं नूँ ओह दिन चोलिया के बनवाँ भंग क देले रह कि दोसर केहू रहे? सगरो अंग लउके लागल रहे। बड़ी मीठ बोली एह घरी बोलऽ तारऽ। तूँ त पचीस छबीस से नइखऽ कम, बानी नव के दूना हम! कमसीन बानीं, हमार चोली नइखऽ देखत एक दम सलोर होता?''

''तहरा ढकना के ढकना कींची निकलऽता, पहथन घीव दोसरे घरे से चोरा के खइले बाड़ऽ? हमरा के देखऽ तारऽ त देवाल फाने लागऽ तारऽ? कुछुओं अपना बारे में तहरा से कहीला आ कहीला कि दान घाट प आ कदम तर मत ज़ा त नव दस के पहाड़ा पढ़े लागऽ लऽ! हतेयार हवऽ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परसों खेले-खेल में लंगट उघार क देले रहऽ कि ना? ऊ दोसर मरदा कवनो रहे? तहार कवन ठीक बा, का जाने कब पगहा धरा देबऽ त चेरिया के छेरिया बन जाये के परी! तब हम अफतरा में केकर दाढ़ी धरब, केकर बाँह धरब? जरे मरे के पर जाई! बाँह धरऽ तारऽ, बाँह धइला के माने जानऽ लऽ? तूँ त नान्हें से बावन बीर हवऽ, कहीं छिपल बा? ललिता लहरा लगा देले रही त एको करम छोड़ले रह? अपना बेरी परा के चुहानी लुका जालऽ! फजीहत क के ध देलऽ। कवनो बात परऽला त दादा लेखा आ पुरखा लेखा बतिआवलऽ। आँख में बइठे खातिर त नसीहत के पट्टी पढ़ावऽलऽ। चिड़चिड़ा ल त लछमी के लछन उतारे प उतारू हो जालऽ? जनाला कि जरिया से अरिया काट देबऽ!

हमरा के पियहा से छूतिहर घइला बनावल चाहऽतारऽ? हम जिनिगी भर गोबर करसी करब? जियरा छछन जाई! हमरा काम लागी त करिया मुँह चमकावे में देरी ना करबऽ। हम सभ समझऽतानीं जानऽतानीं एहीजा उठा पटक कइला से राउर दाव ना लागी। एह भरम में मत रहीं कि हम एकदम बउराहिन आ सचहुँ सोझबक हईं! हम राउर सभ ओस्ताजी जानीला। हम रउरा घरे जा के तोहमत में परीं कि हमार खेलौना राधा चोरा लेली?

मुँह ना मारब खेलौना के? बोरसी ना उझिल देब? हम चोरिन ना हईं। हमार माई-बाप अइसन शब्द हमरा भीरी कबहुँ ना उचरले होइहें! हमनी के घरे-दुआरे चोरी के नावों निसान नइखे। सपनों में अइसन चरचा नइखीं जा सुनले। हमनी गाँव में आपुस में झंझट झगरा केहू से ना होखे, सभे आपन धान, बूँट, जौ, जई, मंसुरी, मटर, मकेया, जोन्हरी आ रहर के खेती समय प जम के करेला। टाइम प बरखा से पटवन होला, कवनो तरह के जियानी ना होखे। टाइमे प कटनी-दँवनी हो जाला। सभे मिल-जुल के एक दोसरा में हाथ बँटा के काम ओरियावे ला। कवनों गीला शिकाइत नइखें दाल खातिर आ बैल गोरू खातिर खेंसरियो भरपूर होला। तोरी-तीसी, मेथी मसाला सभ उपऽजला। सभे खुश रहला, मर मोकदमा ना चले। होरी फगुआ, देवाली, करमा धरमा सभ तरह के उत्सव हँसी खुशी मनावल जाला, उत्सव में लोग-बाग नया बस्तर पहिर के आपुस मेंसभे मिलला जुलला। सभके घर दुआर सजावल बनावल जाला, रंगाई-पोताई होला। पूआ पकवान लइका-सेयान सभे खूब परेम से धुँआधार कचरऽला, भकोसऽला। कतहीं केकरो से मार-तकरार, हल्ला-गुल्ला, रगरा-रगरी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झोंटा-झोंटी खदेरउल पटकउअल उठा-पटक के नामों निसान नइखे। सभे जीयता आ दोसरो के जीये देता, मेल-जोल से रहता। तहरा गाँवें लेखा हमनी कीहाँ चोरी-छिनारो आ ओरहन बटोरन कबहूँ ना होखे?''

राधा इहे सभ कहत रही आ कन्हैया के रूप प लट्टू रही, कन्हैया मुस्कात रहन आ तिरभंगी रूप में खड़ा रहन।

राधा उनकरा चेहरा प देख लोट-पोट हो गईली। पीताम्बर बिजुरी अस चमक जात रहे। सभ अंग गमकत रहे, गूँथल बेनी झूमत रहे, मुँह पान से अवरू टहटहात रहे। राधाा उनका छाती के बनमाला प बलिहारी रही। लाल कोमल गाल प से नजर ना हटावत रही उनकरा डोलत कुन्डल प त बिका गईल रही। मिसिरी अस बोली प बशीभूत रही। रसमयी नूपुर मन मोहित कइले बिया। सोनहुली डाँड़ा के आवाज जियरा के झकझोरत रहता। ओंठ के ललाई मरकत मणि के शोभा बनावऽतिया। आँख अइसन चलविधर बाड़ी स कि खंजन आ मछरी लोगिन फेल हो जातारी। राधा उनकरा प मोहित हो गईल बाड़ी। कान्हा मुस्काते घर में मइया जसोदा भीरी जाये लगले त राधिका भी पिछुआ लेली आ जशोदा के गोड़ छू के पॉव लगली। देखते कान्हा कहले, ''मइया, रधिका के माई-बाबू के शिकाइत मत करीहऽ! करेजा दुखाये लागेला।''

जशोदा रधिया के अंकवारी में कस के मिसिरी घोर के मीठ आवाज में बोलली, ''हमार बिटिया कहाँ से आ गईल, हम त हँसी करीला। कीरती आ बीरीसभान अस त दुनिया में नीमन अदिमी खोजलो प ना मिली। आ हमार बिटिया अस सुनर बेटी कहाँ मिली। हम एकरा गोदी में से नीचे ना उतरे देब। एकर तलुवा अतिना चिकन बा कि फोरा हो जाई, जमीन प।''

राधाजी जशोदा जी के मीठ बात सुनते गदगद हो गईली। जसोदा मइया मखन मेवा मिसिरी खिया के दूनों जने के खेले के भेजली आ चेतवली,

''दूर बन में ना गईलीं, एनिये नियरे खेलिहऽ जा आ रगर-झगर ना कइलीं। दुपहरिया में आ के दोहरावन खा लीहऽ जा। कान्ह, इयाद पार हमार चुनमुनियाँ बेटियो के लिअवले अइहऽ। मरलीं पीटलीं ना! आपन बिटिया के तोहरा हाथे दे तानीं, लसरिह फसरिह मत खेले में, एकर मइया हमरा प अनसइहें कि उनकर बेटा लेटा देले!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान्हा बहरी निकलले त मुसका के कहले, "देखलू नूँ, हमार मइया कतना सोझबक हई? जानतारी कि रधिया अबहीं नादान बिया। एह से तहरा के हमरा हाथे सऊँपली ह आ तहरा के सम्हारे खातिर हमरा के अनघा समझवली ह।

"तहार का खेयाल बा?"

"कवन चीज के?"

"इहे अपना नादानी, मासूमियत आ कमसिनी के बारे में? हमरा मर्दानगी भी आ सयानापन समझदारी के बारे में?"

ऊ टुकूर-टुकूर इनकरा ओर मुस्की आ मटकी मार के ताके लगलन।

ई हँस देली आ बोलली,

"झूठ का कहली ह, मइया तहरा के पूरा-पूरा जानऽतारी! तूँ के हवऽ आ तूँ का हवऽ?"

"आच्छा आच्छा, तहरो के कुछ जानऽ तारी कि ना?"

"हमरा के का जानऽतारी?"

"नानूँ, रचिको ना नूँ?"

"हमरो के जानत काहे नइखीं?" ई जवाब देली ऊ पूछ बइठलन, "तहरा के का जानऽतारी?" "हमरा के जानऽतारी कि अबोध, बेसमझ आ बेजान लूरू लूरू बिटीया बिया, सम्हारे के बा, समझावे बतावे के बा!"

"अइसन बेजान आ लूरू लूरू बिया, आ इहाँ पगार फान जातिया?" ऊ मूड़ी हिलवलन। आ मुसुकी छोड़लन।

ई बईठ गईली आरी प आ आँख मार के कहली, "त, तहरा नियन हम जवान बानीं? तहरा नियन उमीरदार बानीं? ऊ झूठ कहतारी?"

"ना हो तूँ अबोध बाड़ू! एकदम सोरहो आना कमसीनी खेल रहल बा, अबहीं का रखल बा? बाकिर आसरा वाला त आसरा लगा रखल बा!"

"जा, ना खेलब तहरा संग, के रोज झकाझूमर क के तूर देला चोली के बन, लउके लागेला सभ अंग?"

"खेले के बेरी तूँ टेकुआ अस सोझ खड़ा रहलू, रईस बनल रहलू आ हम अबाटी हईं? खाली हमहीं रगरा-रगरी करीला, कूद फान करीला, तूँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त कोईरी के देवता बनल रहलू? गोपी लोगिन लेखा तूहूँ लगावे लगलू अछरंग! ना खेलबू त मत खेलऽ। कईसहूँ करबू हमार मजा ना होई भंग!''

विहारी जी ओहिजे से आठ-दस गो झिटिका चुन के इनका भीरीए बईठ गईलन आ गोटी खेले लगनल। गोटी ऊपरे फेंकत रहन त सभ लोकात ना रही स, दू-तीन गो फेंका जात रही स। पत बे अईसहीं हो जात रहे तबो ऊ खेलत रहन। अबकी बे फेन चार-पाँच गो गोटी ना लोकऽइली स त राधा के ना ठटाईल।

कहली, ''अईसहीं गोटी खेलल जाला?'' ऊ पूछलन, ''त गोटी कईसे खेलल जाला?''

ई सभ गोटी ले लेली आ ऊपरे फेंक के लोक लेली। अईसहीं पांच छव बे कइली। एको बे गोटी गिरल ना।

ऊ कहलन, ''लरिकाईं त हमरे में बा। पत बे गोटी गिर जाता तहरा में जवानी बा, तहरा से गोटी नईखे गिरत! हम जान के गोटी थोरे गिरावऽतानीं? तूहीं सेयान बाड़ू।''

राधिका हँसे लगली, ''तहार तरक बढ़ियाँ बा कि हमार गोटी नईखे गिरत त हम सेयान बानीं आ तहार सभ नईखे लोकात त तूँ बहुते नबोज बाड़ऽ?''

विहारी जी रधिका जी के बँवारी बाह ध लेलन आ खड़ा होके कहलन,

''के सेयान बा आ के नबोज बा, छोड़ऽ ई तरक-वितरक, चलऽ आजु रमन रेती चलीं जा, आज वृन्दावन छोड़ दीं जा, रेती में धूर, गरदा झाड़ दीं जा!''

ऊ बाँह खींच के खड़ा क देलन। दूनों जने डेगरगरे चले लगले। ओहिजा पहुँचल लोग त रधिका के क गो सखी सलेहर पहिलहीं से खेल के ताना बाना बुनले रहे लोग। बाता बाती होत रहे कि बिकी कटी त रधिका हमरा में रहिहें आ केहू कहत रहे कि कान्हा हमरा में रहिहें। एह बात में एकमत रहे कि रधिका के आ कान्ह के एके में ना रहे देवे के, नातऽ पत बे उहे पाटी जीती आ हमनी के दोसरकी पाटी पतबे हारत हारत निरास हो जाई, थाक के बदहवास हो जाई, खेला तुरते बन हो जाई, कईसन दो हमनी के मन हो जाई।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहारी जी जाते फरिअवलन, "सुनऽ जा, आजु रधिका के आ हमार बीकी एक में कटी काहे कि हरमेसा हमनी के अलगे-अलगे बीकी कटला से गते-गते हमनी के अलगाउझ भईल जाता! दूरी आ फासला बढ़त जाता। आजुए महमूली तरक बितरक नईखे भईल आपुस में कि के लइका बा आ हमनी में के सेयान बा? ई अपना के पत बे कहऽतारी कि ई बड़ी नबोज बाड़ी आ हम बूढ़ा के बाबा दादा हो गईल बानीं। इहे कहऽतारू नू हो, हम नून तेल मिला के नईखीं नू बोलत? सेहू कहऽ?"

"ई कहली, ऊ छोड़ऽ बाजार, काल्हु हमरा गरदन में हाथ लगा के सारी फार देले रहऽ कि ना? हजार के मोती हार तूर देले रहऽ कि ना? भर के अंकवारी में धइले रहऽ कि ना? सचहुँ हम लाँगट उधार हो गईल रहीं कि ना? आवत खा डगरिया रोक के मसखरिया कईले रहऽ कि ना? हमार बाँह काहे धईले रहऽ? हमार माई भउजाई सुनिहें से त का कहिहं स? तूँ त एकदमें नबोज बाड़ऽ तबे नूँ तहरा प रोज हजार ओरहन के बौछार लागल बा? तहरा अस मुँह जोर दुलरूआ हमनी के नइखीं जा देखले? गाल से देवाल उड़ावे में त खूब ओस्ताज हवऽ पुरवासाख करे के परी? हम कवनो जुग में तहरा जवरे बीकी ना कटाइब। हम अउरी सखी लोग जवरे तहरा के आजु दबोचब/ हमरा जीते हारे के फिकिर नईखे लेसले। हमनियों के आज तहार पीतमबर छिन के लँगटिआ देब जा। आजु एको चाल ना चली। तोहरो के लँगट उधार करिए के रहब जा, फगुअवा के भुला गइलऽ का?"

ऊ बंशी ओठ प धरे लगलन त रधिका अनसा के कहली, "एकरा के होने फेंकऽ चाहे फेंटा में बान्ह ल ना तऽ एको करम ना छोड़ब जा। ओह दिन दइअवा से पाला परल रहे त कईसे बे पेन के लोटा अस मुँह क देले रहऽ? कहले रहे नूँ कि करिअंठु जादे ओंठ बिदोरबऽ त एक बे टंगरी लड़ाइब नूँ त छव महीना करीयवा घर में भीतरे कराइब! नानी इयाद परे लगिहें।"

बिहारी मुस्कुरा के बोललन, "कहाँ कँकरी कहाँ मचान गाड़े लगलू? उधवा पुरान उचारे लगलू? हम कुछ बोलते नईखीं तूँ अनाप सनाप हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत गावे लगलू?"

ई जवाब देली, "हमरा के खीस मत बरावऽ, काल्हु कँकरी भतिया अस बाँह के रोवाँ टूट गईल बाड़े स, जवन अबहीं ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममोराइल ठीक नइखन स होत जे रगरा के खाड़ा होखे के नाँव नईखन स लेत, डराईल बाड़े स।''

एही से नू कहऽतानीं कि नीमन होई कि हमरे जोरे बीकी कटावऽ? हमरा जवरे रहबू त रोवाँ रकराये के कवनो चानस ना नू रहीं?''

ऊ हँसे लगलन। समझवलन, ''ओने रहबू तऽ बसइता के संघार चीका में बोलबू हमरा खातिर? तहरे खातिर कहऽतानीं। तनी सोचऽ, हम तूँ एक में रहे के त निश्चित बा कि पत बे हमनीएँ के जीतब जा, गिरह पार ल अपना बैंगनियाँ फरिया में। कबहूँ ना हारब जा। हारला प मन रोआइन पराइन हो जाला, जीव कउवा जाला, फेन खेले के मन ना करे, खेले में दउरल पहाड़ बुझाए लागला। जियल जंजाल बुझाए लागेला। खेल सँचहूँ खेल ना बुझाय, ओह घरी कवनों उपाय अदिमी जीते खातिर लगावेला। झूठ साँच भुला जाला। साथी संघतियारो काम ना करे। आपन-दोसर के विचार खतम हो जाला। कईसहूँ जीत हो जाए के चाहीं।''

राधा के कुचन के बीचे उनकर अलकावली शोभा पावत रहे। चाहत रहन कि अंगुरी डाल के उनका बेनी से खेलस।

परेम स पूछले, ''राधे, का होई, केने रहबू? केकरा जोरे रहबू खेलबू? साफ-साफ बतावऽ?''

ई जवाब देली, ''हमार त गाय-डाढ़ सोहराई के सूअर के हाल भईल बड़ूए! एने रहीं चाहे ओने रहीं? ई लोगिन हमरा ओरी भूखईला नजर से ताकऽतारी जा आ रउरा का का दो बड़हन कथा कहानी झकझोरले बानीं। हम त कुकुर-सियार के हों एथी में परल बानीं। का करे के चाहीं, सकदम बानीं! पइयाँ परत बानीं गइयाँ के बतिया नइखे, कइसे ओरिआवल जाई?''

ओह घरी 'तुम सी तुम ही राधा श्याम मन भाई' के स्थिति बन गईल रहे। ऊ चाहत रहन कुछ हरकत कईल आ भीतरे से जीव लुबलुबाइल रहे। ठहात ना रहे। ऊ कहलन, ''तुरत कुछ कहऽ, ई रमन रेंती ह, एकर अलगे बेवहार हऽ। तूँ जानत नइखू? हम कतिना देर ले, कबले बतकूचन के पैतरा बाजी करत रहीं? अब हम अधई लेखा बइठब ना?''

खाड़ा हो गईलन बिहारी जी, अनसईला लेखा हो गईलन। ऊ कुछ हरकत चाहत रहन, चित्त व्याकुल भईल आवत रहे, मन में कइसन दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझात रहे, कुछ कईल चाहत रहन। उहो सभ लोगिन कान्हा के हाथ बिकाईल रही जा! राधिका क हालत अउरी बदतर रहे। इ त चिहा गईली परेशानी देख के।

राधा जब बउरईला लेखा हो गईली, चेक चिहा गईली! मन में बुझात रहईन कि का मुअला प पिण्डा पानी दिआई? सखीयन में ई अपना के सयानी लगावत रही बाकी अबगे अयानी हो गइली! हरि के हाथ बिकानी अस बोलत बाड़ी बानीं। लागऽतारी अधिके दिवानी, इनकर लीला देख के सभ लोगिन भईल जाता बेपानी। बिहारी जी अईसन बात में गते-गते मुसुका तारे सभ जानी निछावर हो जातारी!

राधिका जी उनकरा प एकटक ताकऽतारी त ऊ इनका घेंघ में दूनों हाथ डालिके अउर मुसकुरा तारे। सभ जानी घेर के उनका ध ले तारी जा चूँटा-माटा लेखा आ अझुरा जा तारी जा।

विहारी जी ओइसहीं अझुरईले कहलन, "चलऽ जा जमुना जल में नहाईं जा आ देह तपनि बोताईं जा!"

ऊ पछेंयारी राह ध लेलन। सभ लोगिन डगर प डगराय लगली, बाकिर प्रिया जी पिछुआ गईली ऊ पीछें मुँहें फिर के इनका के गोदी में उठावे कईले त आँख देखवऽली! पट द छाड़ि के बाँह ध लेलन, कहलन, "जल्दी चलऽ?"

ई आँख मार के कहली, "बईठल बानीं सुसुतानीं? चलत नूँ बानीं? हम बटोही हईं, हरहटल परहटल रहगीर हईं? अंकड़ीला डगर बा, काँट अस तरुआ में गड़ऽता, दउरत फिफिहिया बन जा तानीं, निहुर के ओहिजे बईठ गईली! कहली, "हमरा से नईखे चलल जात, अब हम ना जाइब, तूँ जा!" थहलीया गइली।

कान्हा हँसे लगलन आ हाथ आगे बढ़ाई के बोललन "रहऽ कोरा ले चलऽ तानीं।"

ई तड़ दे खाड़ा हो गईली, कह बैठली, "हमार सभ इजतिए का उतार देबऽ? सखी सलेहर लोग में बईठहूँ लायक ना रहे देबऽ का? जिनिगी सिरा जाई मेंहना सुनत-सुनत, कान पाक जाई!" मुसुका के उनका प तकली। ऊ बाग-बाग हो गईले आ सलाह देले, "त चलऽ गते-गते चलीं जा, कवनो गाड़ी का खुलऽतीया। ठीके कहतारू, कुआर के हत्आर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस घाम कईले बा, अखड़ेर जान चल जाई। देह प के चाम जर जाई त फेन कवन सरजाम होई?''

''हम त पहिले माथा मीसब तब नहाइब तहरा के चेता देतानीं, नहात खानीं हमरा नियरा मत अईहऽ, तूँ ओस्ताज हव! ओस्ताज! केहू से लजइबो ना करस! आ हऊ सुदेवी जइसे होने फरके नेहइह, हमनी भीरी लइकिन में तूँ का नहइब? मउगड़ा लेखा? तूँ आपन अलगा डफली बजइहऽ।''

कनछिया के तकली। कन्हइया मुसुकी छेड़लन। ''हमार अनेरिए नाँव बदनाम करलू जा! अपने तहार सखी कम चलिविधर ना लोग ह! ललिता त ओस्ताज हई।

कुदेवी हई ओईसहीं रंगा देवी, रंगादेवी ना हई, ऊ कम्पादेवी हई, ऊ त हमरो के कंपा देली, दादा ऊ त जाने ना छाड़स, जान खाली सांसत में ना डालस, जाने लेवे के ठेकान लगा देली। तूँ तनी धेयान से देखिहऽ, के का करऽता त अपने पतियाए लगबूँ? विशाखा आ तुंग विद्या त सभ विद्या पढ़ल बाड़ी जा, नाच नचा देला लोगिन। आ इन्दुलेखा कम ना हई! सिरमौर हई! तूँ त पूरा सोझबक हऊ, तहरा रचिको ना जनाय दुनियादारी। तूँ ओहिजा पहुँचबे ना करलू? तहरा के त हम कतिना ईशारा करीला, तूँ जानियो के अनजान बन जालू, महटिया देलू। तहरा सखी लोगिन में केहू मझोल नईखे, सभे नासपाती बा!''

प्रिया जी समझा के विहारी जी से कहली, ''देखऽ अइसे नहऽइह जे कवनो शिकाइत मत होखे, काहे कि जानते बाड़ऽ कि यक्ष के जलक्रीड़ा देख के रेनुका जी मोहित हो गईली, स्खलित हो गईली आ एही खातिर मूड़ी कटौवल हो गईल। त एह प धेयान देवे के बा कि रीति अनरीति मत करे लगिहऽ? एहीजा चसके के नईखे, अउर गोपी लोगिन ना, सभ हमार सखी सलहरे लोगिन हई! झकाझूमर करबऽ, कछनी छिन ली लोंग पानी में त छछन जइबऽ। लाई लासा में हम ना परब, हम नबोज बानीं, कमसीनी बा सउँसे दुनिये अबरे नईखे, शेखी भुलवा दीहें स। उटुकी खुटुकी बोलल काम ना करी! तहार छपन भोग के बल आ बरजोरी फेल हो जाई, सरदिया दीहें स। फेन हमरा भीरी कछनी खातिर दउरत दउरत गोड़ के छाल छूट जाई। हमहूँ कोदो मसूखीं देके नईखीं पढ़ल कि हमरा भीरी नौ के पहाड़ा पढ़ला से सहजे काम निकल जाई! तूँ थोरहीं में उतराये लागलऽ! हमरा भीरी अइबऽ नूँ त बिना देर कईले कह देब कि दोसरा जगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाके कबड्डी जमावऽ! जानऽ तारऽ, लोभ लालच अतिने करे के चाहीं जतिना दाल में नून परेला! करिया जुलुकी फारल आ अचकन छकलिया पेन्हल काम ना आई। सोच लिहऽ, समझ लिहऽ! नातऽ फजीहत में परबऽ। जतिना जोम अरजले बाड़ऽ सभ खरचा हो जाई आ करजो चढ़ जाई। बिरज के चोरावल दूध फटनस हो जाई, मखन दही पितरा जाई! कहीला नूँ कि फजीरहीं से नून खा के परोजन के भोजन से कईसहूँ पेटे ना भरी! गोड़तरिया तक चदर तान के सूतला से खाली पेटे, नीन लागी का?

जमुना किनारे चहुँप गईल लोग। आपन–आपन ऊपर के बस्तर खोल के किनारे तीथा प धराईल। बूड़की सखी लोग लगावल। रधिका जी बूड़की लगा के फेन तीथा प बईठली आ माथा मीसे लगली, सभ सखी लोगिन बार भिंजा के जल्दी–जल्दी माथा मीसे लगली जा। निहुर के माथा मीसला से खूलल बेनी छाती के उभार के ढक पावे में समरथ ना रहें, विहारी बूड़की लगा के खड़ा होखस त एनीएँ ताके लागस। रधिंका जी आ सखी लोगिन हो मेहें मुँह क के माथ मीसे लगली जा विहारी जी के ना चलल त दिकदिकावे लगले कि जल्दी नहा जा, जल्दी नहा जा।

कहली जा, "रावाँ अतिना बेअगर काहे बानीं? रावाँ आपन नहा लीं। हमनी के माथ मीसिए के नूँ नहाइब जा।"

रंगादेवी मुसुका के कहली, "घबड़ाईं अकुताईं मत। आवतानीं जा त रउरा देह के मईल–छोड़ा देब जा।"

ऊ मुस्कइलन, "जेकरा देह में मईल बा ऊ जानो, हम त पत बे गमकउवा साबुन लगा के नहाईला। एही जा केकरा गम बा? गोकुल जेकर घर बा कवना बात के डर बा?"

बूड़की लगवलन आ फेर देह मले लगवलन खूब तलहथी जांघ में आ पीठ में रगरलन।

रंगा देवी पानी में भीतरे समा के बूड़की मरली आ माथा कचकचा के धोवली, झपलवली। ललितो आ गईली, एक बे बूड़की लगा के अलकाली झपिला देली। तली कुल जानी आ गईली। रंगा देवी आ ललिता तड़ दे एके बेरी अंजुरी से उछाल के कान्हा के मुँह प पानी के छींटा मरलीं जा। झपाक दे उनका मुँह प झटहा अस लागल आ बैखरा छूट गईल, आँख मूँदा गईल ना त झटका लगिए जाईत। अनसा गईलन। एक हाथे कछनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कसले रहन आ एक हाथे जोर से ओहू लोगिन प पानी फेकऽलन। ऊ लोग जोर-जोर से पानी उनका प फेंके लगली जा आ बीछे लगली जा। तोर ना टूटे देत रही जा, नवो जानी एकवट गईली जा। रधिका जी भीरिए मुसकात, हँसत रही? कन्हो खूब जोर लगवले रहन आ अब दूनों हाथे जोर से पानी उछाल के ओह लोगिन के आँख मूँदवा देलन। रंगा देवी के चोली के बन खींच देलन त रेशमी चोली पट दे फाट के नीचे मुँहे ओलर गईल, छाती उघार हो गईल। सउँसे अंग लउके लागल, उहे चुनौती देले रही, सरमा के पीछे हट गईली। कहली, "ई लइका बगदल बा। ध के झकझोर द जा।"

ऊ हँस देलन। ललिता इन्दु के ललकरली, "इनकर कछनी खींच लऽजा।"

ऊ आगे हो गईली, बिहारी जी छनक गईलन। उनका बुझाईल कि सभ एकजुट होके लगिहें स त लंगटिया दीहें स, एह से एक हाश से अब कछनी कस के ध लेलन। ललिता कहली, " ई कवन, कईसन खेल हऽ? बस्तर ध के कवन खेल एके हाथे खेलल जाला? लूल्ह का हाथ बा? छनकल बेसवा चूतरऽ प हाथ? सभ मखन आ मिसिरी, आँखि मेंहें लिकस गईल? कछनी धार में दहा जाई? जमुना जी में अइसन धार में दहा जाई? जमुना जी में अइसन धार बहता? लाज नइखे लागत, मेहरारू हव? हमनीएँ के मरद हईं जा, मरदूमी जाँघ में धुसर गईल? ढोंढ़ीं काहे नईखऽ छूवत, ढोंढ़ी छूवऽ? मर्दानंगी चुहानी भाग गईल? कम्पमाला, तनी जल्दी दूगो चूरी निकालऽ आ एगो टिकुली द, इनका पहिरावल जाय!"

फेर पानी फेंकाए लागल, केहू केहू से कम ना रहे। सेकन केहू ना बनल चाहत रहे, फस्टे सभे मारल चाहत रहे। दूनों ओर से खूब हुमचउवल होत रहे। अनाधून पानी फेकात रहे, एक ओर से दोन चलत रहे आ दूसर ओर से सैर चलत रहे।

प्रियाजी पूछली, "आछे साँच-साँच बताव् कि काल्हु गोपी लोगिन नहात रही त लफंगई कइले रहऽ? ओह लोगिन के सारी ले के कदम प चढ़ गईल रहऽ? सँचकी बतकही करी हऽ? जानऽतारऽ नूँ कि जमुना जी के जल में भीतर बाड़ऽ। एहीजा झूठ केहू ना बोले, गंगा जमुना साँच के, संरचिका हई जा। एहीजा के तुरते फल प्राप्त हो जाला, नागा ना जाय, उल्टा पुल्टा काम के नतीजा भोगे के परला!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ जवाब देलन, ''आई हो दादा, एहीजा साँच कहऽतानीं, रचिको भर झूठ के पाँजरा ना जाईब जमुना जी के सेत रखे के बा, इनकर सेत के कबहुँ उलंघन ना कईल जाय!''

''हमरा पता चलल कि गोपी लोगिन कदम तर जुटल बाड़ी जा। तुरते हमहुँ पहुँचलीं। देखलीं त कहूँ केहू ना नजर आईल, बाकिर दूरे से रंग विरंग के बस्तर लउकल! बुझा गइल कि दोसर माजरा बा। डेगरगर हो चललीं। ओहिजा घाट पर नियरा गते-गते चहुँपलीं त ऊ लोगिन लँगटे नेहाए में एकदम मसगुल रही। आपुसे में झिंझिरी खेलत रही लोग।''

''सुनले रहीं कि उजयिनी के बुला अलका नदी में जुवती लोगिन लँगटे नेहात रही जा। सुकदेव जी भी लँगटे पराईल जात रहन ओही राह से तपसेया करे खातिर, त उनकरा घाट भीरी पहुँचलो प जुवती लोगिन लजइली जा ना। लँगटे नहाते रह गईली जा। एहसे कि ऊ लइका बारन, साधू संत के विचार आचार बा, ओह लोगिन प उनकर कवनो धेयान नइखे आ सभ से बड़ बात कि ऊ अपना सुर में बेअगर बाड़े!''

''तुरते पीछे-पीछे उनकर बाप व्यास जी पीठिअवले दउरल आवत रहन। उनकरा प नजर पड़ते सभ जानी जल्दी-जल्दी आपन सारी चोली पहिरे लगली जा। व्यास जी के बड़ी उत्सुकता भईल।

प्रेम से पूछले कि ''सुकदेव गईले ह त लँगटे नहाते रह गइलू ह जा आ हमरा बेरी काहे सारी चोलो में देह लुकवावे लगलू जा? हम का क लेतीं? हम त सन्यासी हईं!''

ऊ झट दे जवाब देली जा, ''हमनी के अईसन बउराहिन हईं जा? जानत नईखीं जा कि दूगो तीन गो लईका जनमा के रावाँ कुरू वंश के विस्तार कईले बानीं! रावाँ अबहीं दुनियादारी में बानीं। तबहीं नूँ दउरत-दउरत पसीने-पसीने भईल बानीं!''

''धीरे से गते-गते एही से चहुँप के गोपी लोगिन के सभ सारी चोली वंसी से खींच के कदम प, जहाँ तहाँ टाँग के बाँसुरी के आवाज से अपना आगम के आ उपस्थिति के अन्दाज देलीं। ऊ लोगिन हमरा उपस्थिति से आ हमरा से रचिको लजाईल ना, खूब झकझोर के, मल-मल के आ अपना में रगरा-रगरी क के, हमरा के खूबे ललचावली जा! हमहूँ मने-मने मुसुकाते रहीं आ बसुँरी टेरत रहीं। मनमाना झपिलावल लोग। मन मान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गईल त बहरी निकले के राय बनावल लोग। धेयान में हम नजर परलीं त चिचिआइली जा, 'हो मेंहें मुँह क के बजावऽ?' हम मधुरे बोललीं, "मुँह फेर लेलीं, आ हम त लरिका बानीं, कवनो सेयान बानीं?" तब एक जानी के लउकल कि रंग विरंगी हमनी के साड़ी सभ कदम प टाँगल बा, तीथा प एको सारी चोली नईखे! आपुस में फुसुरवली जा कि सभ बस्तर विहारी फेड़ प लटका देले बाड़े! अबका होई? भारी फेरा लागल, कईसे पानी में से निकलिहें जा, लँगटे बाड़ी जा, उहो कपड़ो सभ ऊपरे फेंड़ प लटकल बाड़े स, धराये भेंटाए लेखा एको नईखे, कवन उपाय कईल जाव? सभ जानी सोंचे लगली, लँगटे छाती भर पानी में बाड़ी जा!" भूताह पीपर के फेड़ लेखा सीधे खड़ा होके लोग अपना बस्तर खातिर खखनत रहे। कम से कम सारी मिल जाय त काम चल जाई, इच्छा रहे।

कुल जानी कहली जा, "गोड़परिया करऽतानीं जा, सरिया गिरावऽ? सभ कउल-करार मानलेब जा, बहाना ना करब जा, इहे एगो बात मान ल, मनावन करऽतानीं जा।"

हम बतऽवलीं, "सुरूज बाबा के गोड़ लागत कदम तर चहुँपऽ जा, सारी-चोली गंजी पायँट सभ गिरावऽ तानीं"

ऊ लोगिन हमार मुँह ताके लगली जा, आ कहे लगली जा, "सुनिला जा कि तूँ बहुते दयालु हवऽ, तूँ दया करऽ लऽ! केहू के तकलीफ देख के तुरते पिघल जालऽ, कवनो जीव के कादो सतावऽलऽ ना। बहुत रहम करऽ लऽ। तूँ त दानी हवऽ, ई कवन बानसीख लेलऽ? ई सभ तहरा शोभा नइखे देत। दान मँगबऽ त रोज मखन दही दान देब जा। अब कबहुँ कवनो बहाना तहरा खातिर ना चलीं, तहार सभ बात मानब जा। हमनी के इज्जत मत ल! हमनी के इज्जत पार लगावे अवला तूँहीं बाड़ऽ। दोसर कवनो उपाय चाहे आसरा नईखे। रसिकवर जी, हमनी के आसरा तूँहीं बाड़ऽ? अब त बेआसरा के बे आह अलम के हो गईल बानीं जा। अब हमनी के, के मदत करे अवला बा? एह अफतरा में केहू नइखे लउकत, तूँहीं आह अलम बाड़ऽ अउर के बा तहरा के आ तहार साथी गोप लोग के दोना में पतुकी से उझिल के मीठ सजाव दही पाँती में बइठा के परोसब जा। जेवाँइब जा। हमनी जवन ढीठाई कइलीं जा, ओकर भूल-चूक आज बकस द! हँस हँस के खिझावत रहीं जा, अब कबहुँ अइसन चूक ना होई किरिया खा तानीं जा। हमनी के बाछी हईं जा, अतिना गुहार क के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खखनत तानीं जा आ रउरा कान में बजर परल बा, फेर हमनी के खोजत खोजत राउर गोड़ के चाम छिला जाई! हमनी के परला प सुध नइखऽ लेत, आ हमनी के हालत के तहरा रचिको धेयान नइखे। तूँ खूब जानऽ तारऽ, हमनी के कहीं गईलीं जा ना अईलीं जा, आ सगरो सभ के मुँह से, फलना बो कहा तानीं जा, किछु बाकियो का रहि गईल बा? तूँ त उखमजल बाड़ऽ त तहरो ई उखमजल छूट जाई, गोड़परिया करऽतानीं जा आ तूँ करऽ तारऽ मसखरिया? हमनियों के बुझागईल कि परला के केहू संघतिया ना होखे। घामा में हमनी के सूख के खँटाई हो गईलीं जा, तहरा प कवनो असर नईखे परत, अईसन कठजीव निठुर निरदई बाड़ऽ। हमनी का ना जानत रहीं जा कि तूँ अतना चूली हबऽ? हमनी के निश्चिन्त नहात रहीं जा, आ तूँ सभ सारी चोली ले के पाही धईले बाड़ऽ! हमनी के कुआर के दुपहरिया में मुआ देबऽ कि पूरा गोहार जुटावल चाहऽ तारऽ? गाय गोरू बछरू के सानी-पानी करे अवला गोबार हवऽ, सोझ बात ना सुनबऽ। सोझिया के मुँह कुकुर चाटेला, जानऽतानीं जा। हमनीं के सउँसे मन के खजाना लूट लेलऽ आ तबहूँ पेट ना भरल? खाली सारी द, चोली देबऽ चाहे ना, बकसऽ बिलार मुरगा बाँड़ रहिहें। अब कतना सबुर धरीं जा, अब सहात नईखे। अरज करत बाँह दुखा गईल जोरले जोरले, रावाँ ऊपरे फेड़पऽ एँड़ा लगवले बानीं? जतिना मनकरी ऊख रावाँ चाभब, हमनी के अब अरज निहोरा सुनीं आ सारी सभ गिराईं। जियरा एकदम हलोरा गईल, एह घाम में चाम सींझ गईल, अब दाया करीं, रचिको माया नईखे?''

कान्हा मुस्कुरा के बड़ी प्रेम से कहलन, ''हमरो बात प कान द जा। हम सारी चोली सभ कपड़ा उतार के तहरा लोगिन के सउँप देब, सूरूज बाबा के दूनों हाथे गोड़ लगते आवे में काहे घबरा तारू जा? का दिक्कत बा?''

कुल जानी एके आवाज बोलली जा, ''हमनी के उहाँ के देवता हईं, गोड़ लागते आवऽतानीं जा।'' ऊ लोगिन एक हाथ से दूनों जाँघ आ दूसर हाथ से दूनों स्तन तोपले चलली जा, आगे बढ़जी जा! ऊ देखलन त हँस देलन,

''ईहे भईल? अईसे त हम आजु ले केहुए के गोड़ लागत, परनाम करत ना देखले बानीं आ ना कबहुँ केहु से सुनले बानीं? तहरा लोगिन के ई गजब पूजा के, नमस्कार के विधि गोड़ लागे में कवन मेहनत मजदूरी बा? कहँऽ लोगिन गोड़ लागे के कइसे विधि आ तौर तरीका हऽ? बोलऽ जा त हम बढ़ियाँ से बताईं? नातऽ कहऽ जा त फेड़ प से उतर के हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तहरा लोगिन के हाथ उठवा के सूरज के गोड़ लगवा दीं? ई त मामूली बात बा, हमरा त एह में कवनो बोझा नईखे लउकत? का हरज बा, कवन दुख-दरद बा हाथ उठावे में? आ ना त तहरा लोगिन के कवनो कठिनाई नजर आवत होखे त बतावऽ जा, कवनो दोसरे उपाय आ राह-रास्ता सोचाई। कुछ बोलत काहे नइखू जा? कुछ कहऽजा!''

कुल जानी अनसईला अस हो गईली। दूनों हाथ के, सभ जानी के पोजिसन पहिलहीं लेखा रहे। एगो दूनो स्तन पर दहिन बारा आ बवँारा दूनों जाँघ तोपले रहे। विहारी जी सभ जानी प एकटक देखतो रहन आ मुसुकी काटत रहन फेंड़ प से। ऊ लोगिन ओही रूप में फेंड़ तर चित्रवत खाड़ा रही जा, तस्वीर बनल रही जा। ओह लोगिन के दिल प क मन क्रे दो बोझा लदाईल रहे, लागत रहे कि क जानी तलफत हतेअरउ घाम में अब तलमला के गिरिहें जा कि तब! क़न्हैया स्थिति के भाँप के धम दे सभ सारी चोली आ अउरी कपड़ा गिरा देलन, ओनहीं दउर परली जा।

कन्हैया जी बड़ी इत्मीनान से रधिका जी के सभ विवरन सुनवलन।

कहलन, ''ई नाया नईखे। जुवती लोगिन अक्सर अईसहीं सपाट नहाईल चाहऽला लोग। ईहे तमासा देखि के नूँ जमदग्नि रिषि के पत्नी कामातुर होके भारी फेरा में अझुरा गईल रही बनबईर के काँट में, जे मूड़िए कटा गईल! अईसन उल्टा-पुल्टा काम कबो ना करे के चाहीं। कुराह चलेला प परिनाम त भोगहीं के परी, गड़हा में गिरहीं के परी। ई स्वयंसिद्ध बा, सिद्ध नईखे करे के। हरमेसा सही आ सीधा राह धरे के चाहीं। सही राह से चलला प झंझट मुसीबत के बहुत कम चानस रहला, कम गुंजाईस रहला।

सभ धेयान से सुनला के बाद ललिता आ कम्पमलिका एके बे कहली जा सभ त ठीके बा बाकी रधिका जी अपना आधा आँख से रावाँ के पूरा खरीद लेले बाड़ी? रउआ पूरा के पूरा बिका गईल बानीं। इनकरा चालाकी के सामने रउआ फिसल गईल बानीं आ किना गईल बानीं। बाजार के मलिकार बसन्त रहन, कामदेव दलाली क के तय तपड़ा करा के रउआ के लफड़ा में फंसा देलन, जान लीं कि दलाल केहू के ना होला! जेने रसगर, मलगर देखेऽला ओनहीं लरक जाला। कोइल बाभनी मकरन्द के सियाही से भौंरा के पातर गोड़ के कलम से दस्तावेज आ मजमून काम केलि के कागज प तइयार क के रउआ के बिकवा देली। मान मनअउअल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के तनी मनी फीस के लालच में दलाल रउआ के बय करा देलक। ई बात समझलीं कि गवाह आ पहचान कर्त्ता जबरजंग रहला, त बयनामा कोटो कचहरी से टूटे ना। रउआ हरमेसा खातिर बिका गईलीं, जिनिगी में अब रोपेया ना फिरी!"

विहारी जी रमन रेती में बइठल गंभीर बनल रहन, उनकरा ओर, राधा आ उनकर सभ सखी लोगिन कनछी से ताकत रही जा, मुसुकी काटत रही जा।

***

(12)

"काहे तूँ चलावेलऽ नजरिया ऐ साजन?" "देखऽ राधिके, प्राणेश्वरी? आज गिधावा मसानो हो जाइ।?" बिहारी जी जल्दी बोललन गंभीर हो के।

प्रिया जी उनका घेंघ में बाँह डाल के भाव परगट कईली, "चोरी-चोरी रोज सपना में आवला केहू, सारी-सारी रात जगावला केहू? धीरे-धीरे दरद बढ़ावला केहू? हौल-हौले मर्ज बढ़ावला केहू? चार पहर चार घरी केहू बेचैन कईले बा? रावाँ ई नइखीं जानत? हमार बात साँच नइखीं मानत?"

शरद ऋतु के पूर्णवाँसी के रात ह? दूधिया अंजोरिया के बगऽ बगऽ उजर, बड़हन सीवान प ले चदर बिछल बिया। डगर प अन्हा धुन धूर कन्डो भईल बा? रात अधिया गईल बिया। जोर के आवाज आ रहल बा। मुरली कान्हा ताबड़तोड़ बजावऽ तारे। कभी कभार बजावते-बजावते आँख मूँद ले तारे। रंग-बिरंग के मधुर अति मधुर ध्वनि गूँज रहल बा? सउँसे ब्रज में, गोकुल में, बरसाने में, बृन्दावन में हलचल हो गईल? कन्हैया जी मुसकुरा तारे, राधिका जी के बात अनसुना कर दे तारे, उहो नाचे लागऽतारी, कान्हा भी नाचे शुरू क देलन?

गोपी लोग हबकूरिए गिरत भहरात चहुँपे लागल? जे-जे चहूँपता, सभ के साथे बिहारी जी अदभूत परेम से नाचे कै सुर बन्हले बाड़न। केहू अकेले चाहे खाली नईखे?

गोपिका जईसे-जईसे जुटता, बिहारी जी के चेहरा प नजर गड़ा देतारी जा, घुंघराली बेनी भौंहन लटकल बिया। ओह विश्व विमोहक रूप प

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवते सभ गोपी निछावर हो जा तारी जा? अमृत भरल चेहरा के दूनों नेत्र-कमलन के भौंरा मधुपान करे से डरऽ तारे स। मुँह के एने-ओने, आर-पार लटकल बार देखला से लागता कि आकाश से करिया नागिन कमल दल के छूए खातिर बेअगर बाड़ी स। ओठ प सुन्दर मुरली राग कल्यानं, बिलावल, बिहागरो, रामकली, नट, नटनारायनी, मलार, सारंग, केदारो, कफी, मारू, गौरी, टोड़ी, देव गंधार, सोरठ आ बसंत के धुन से सभे बेसुध बा? दोसर बात सोंचहुँ के केहू के फुरसत नइखें? शारदीय कमल अस आँख के छटा अईसन मनोहारिणी बा कि नीला, लाल आ उजर सभ कमल के गुन ओहनी में बिराजत बा। खंजन, मृग, मछरी सभ लोग देख के भुलाईल बा। मोहन कटाक्ष से ताकऽ तारे त सभ गोपी लोगिन उनकर देह में सट जा तारी जा? उनकर अंग-प्रत्यंग देख के गोपी लोग शोभा के समुद्र में बुड़की लगा के आनंद से सराबोर होके जवरे नाचे में लवलीन हो गईल लोग। रासलीला के शुरूआत हो गईल रहे।

ओने डगर त शांत होखे के नाँवे ना लेत रहे। मुसहरवा बाबा भीरी बाँझ के, निस्तानी के, कोढ़ी के, चरखाह के, दमाह के, सुगर अवली के, हर्ट रोगी के, गठिया वाली के, लंकवा वाली के चहुँपे खातिर प्रीतिकूट बजार से गटहबा पुल तक लाईने ना ओरात रहे, रातों भर सँड़क दउरत रहे ओइसहीं कान्हा भीरी तुरते चहुँपे खातिर गोपी लोगिन के डगर प तोर ना टूटत रहे। रातों भर डगर जागले रहे। गिरत भहरात लोग हबकूरिए चहुँपत रहे आ उनका जवरे नाचे में लवलीन हो जात रहे। सभ गोपी लोगिन तब बेखबर हो जात रहे?

अमृत रस से भरल वंशी बज रहल बा, समूचा संसार प्रेम ध्वनि से परिपूरित बा, फूलित बा, चकित विस्मित बा। जमुना जी ठहर गईल बाड़ी। श्यामसुन्दर के लाल ओठ प सातों सुर एके साथे शोभायित बा। सुन के सभकर सुधि, बुद्धि, गति भूल गईल। तान से गंधर्व लोग मोहित बा? पशु, पंछी गाय, गोरू, बछड़ा, बछिया सभे भुलाईल बा। सिद्ध महात्मा के समाधि हिलऽ तीया? देवता ऋषि मुनि लोग के धेयान त टूट गईल, सभे चकचिहाईल बा?

अभियो डगर बन नईखें, डगर आँख मूँद के दउरऽता। चउधुरी कुकुरलेढ़ देखले रहन आ ओहू हाल में एगो अउर बूढ़ कुकुर हिस करे से मानत ना रहे त उनकरा हँसी छूट गईल आ फेनूँ राति खा मेहरारूजवरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पलंग प ओठंघले त हँसी छूट गईल। उन कर मेहरारू चिहाईल रही आ चउधुरी के हँसी क घरी ले बने ना भईल। उ दृश इयाद परला प, ओईसहीं डगर चलल बने ना भईल, हहास बन्हले रहि गईल?

कन्हैया जी के प्यार खातिर गोपी लोग कतिना दिन से उख मजल रही जा त आज टाईम आ गईल बा। जे हँकासल–पियासल चहुँपऽता, नाचे में लाईन लाग जातारी जा आ बेसुध होखे में रचिको भर देरी नईखें होत?

हईलीं, अब जमुना जी स्तंभित नईखीं, उलुटा बहे लगली, देवता लोग के परेम के लोर गिरे लागल, सभे रस धार में बूड़े लागल। गोपिका आवेश में कन्हैया जी के बाँह में जकड़ले लोग बा आ रफतार में नाचऽता। कन्हैया जी ओईसहीं सभ लोगिन जवरे अकेले–अकेले बहिंअवले नाच में लवलीन बाड़े। उ तऽ अवरू सवखीन बाड़े? काहे कि गोप लोग कुलीन बाड़े? नंदलाल हवन, रस में मालोमाल हवन, लरिकाइएँ के नाच–गान में कमाल हवन, आनंद के पयमाल हवन? एही तरी रासलीला जवानी प बा? राधा रमण के बंशी के आवाज पेड़–पौधा, गाय–गेरू नदी–नाला, जीव–जंतु सभ के प छा गईल बा, सभ के में पोरे–पोरे समा गईल बा। सुर, गंधर्व, नर–नारी सभे विमुग्ध बा, विमोहित बा, पशु–पंछी ध्वनि सुन के चुप बा, एकदम मौन बा चित्रवत्? नंद नंदन के रास क्रीड़ा के आनंद अनिर्वचनीय बा, अकथनीय बा। गोपी लोग, जवरे नाचे में लंगट उघार हो जाता लोग, ओकर केहू के कवनो फेर नईखें। बाँसुरी के बिहारी जी कभी ओठ प रखऽतारे, कभी हाथ में, कभी बजावऽतारे, कभी चूमऽतारे कभी झूमऽतारे?

गोपी लोगिन बेटा, बेटी सानी–पानी, छोड़ के आईल बाड़ी जा। दउरली ह जा त केहू गिरऽता धायँ बच्चा–बच्ची करता कायँ, गाय गोरू करता भायँ, बकरी पाठी कर*तीया मायँ बाकिर सभे दउरे में निफिकीर रहे। कीली–केवारी लागल कि ना, के जानता? ननद–भउजाई सभे सभे दउर चलल। लहँगा, छकलिया आ झाँपी में से तीन पतिया झूला निकाले के केहू के मोका ना मिलल ह आ ना इयाद परल ह।

उनकरा भीरी सभ गोपी लोगिन के जल्दी चहुँपे के चिंता में सिंकरी, बाजुबन, कंगन, पहुँची, आ मोटका गोड़ाँव के पहिरल ह? चले बेरी त एक जानी के नथिया, हलका आ चनरहार खटिया प से झन दे नीचे घर में फेंका गईल, ओने फिर के तकबो ना कईली? पहुँचे में खायको भुला गईल लोगिन के। फटल के रेशमी चीर पहिरले दउर गईली जा जवन क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन से फिंचाइलो ना रहे। चुहानी में रहे अवली गोपी लोगिन भी दउर चलली, गोबर-पानी करे अवली लोगिन के का कहे के रहे? कोठा-कोठी, घर-दुआर, देवर-भतार के एह घरी सभे भुला गईल, हरदी-धनियाँ, रसोई-पानी सभ बिसर गईल। राही में भूतहवा पीपर के केहू के डर ना रहल, ढेलहवा बाबा के ढेला नेंके के इयाद ना रहल आ बीच राह में बबुआ बरम्ह आ बउरहबा ब्रह्म के भी केहू हाथ जोर के गोड़ ना लागल! सरदी-बोखार आ तिजरा हो जाई, सभे महटिया देलक सवतिन के लईका लोग के उभ-चुभ बोलियो बेअसरे रहल।

एगो गोपी अपना सखी से कहली, "खुशी के बात बा, गीत ना गावे आवऽ लवऽ? गावते चलीं जा।"

ऊ हाँफते बोलली, "हम त गावत रहीं त आरे जिला से छपरा मथुरा तक हिला देत रहीं, गावहीं ना आवेला? बाकिर एह घरी एको छन देरी होई, कान्हां ना मिलिहें त परान छूट जाई? चुपचाप दउर चलीं जा आ पहिले झोंके चहुँप जाये के बा?

क जानी के अदहन खदकत रहे चाउर डाले के रहे बाकिर बंसुरी के अबाज कान में परल त बेचैनी लेस देलक, अब त दउरे छोड़ के किछु सोंचहीं के ना रहे। माँग सँवारे आ ऐनक ओरे के ताको? सभ लूर अछइत सिंगार पटार भुला गईल। कपड़ा त कहिए के फींचल रहे। माँग हप्ता भर पहिले मिसाईल रहे। एगो गोपी कहली राह में,

"तनी मनी देरीए हो जाई त बजर का पर जाई?"

क जानी एके बे खिसिअइली, "चहुँपीं जा जल्दीय, चउल-मसखरी के टाइम नईखें।"

केहु के सबुर ना रहे। एह घरी दोसर कुछ सोंचहीं के ना रहे। सभ कान्हा के चरन के शरन में तेजी से चहुँच गईल चाहत रहे। तनिको कल परे के सवाल ना रहे। बोझल नाव बूड़ जाई ना पहुँचला प, फेन जिनिगी ओरा जाई तबो ऊ भेंटइहें कि दुलम हो जइहें, के भविष जानइता? सभे के जिनगी भर जिअरा छछन के रह जाई? दउरल धूपल बेकार हो जाई, सभे फेन बेपानी हो जाई। गोबर करसी करत जिनदगानी हलकानी के हिचकोला खाये लागी? छव अंगुरी के तोई अवला तीन पतिया झूला आ नौ पाढ़ के बैंगनिया सारी तवाँ जाई? करिखाहा हाँड़ी लेखा मुँह हो जाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ रतिया खा छतिया में बतिया जरते रहि जाई। पगहो धारवला प अदिमी चोन्हाए लगिहें आ चेरिया के छेरिहा बना दीहें? तियनो चोखा खातिर जीभ लुबलुबाते रहि जाई। आँखी से कींची बहे लागी? पान कसईली कचरे के सपना हो जाई। खोजलो प करनिहार ना भेंटाई। बिना इंजन के रेल फेल हो जाई। परोजन के आसरा रह जाई? चढ़ल जवानी लोर ढरकत माटी हो जाई! समय प तजबीज क के एकर लाभ उठा लेबे के बा ना त मूरो बूड़ जाई। सूखल चमड़ी अवला के दाढ़ी धरते जिनिगी कटले ना कटी? सभ जानी गोपी लोगिन डगर धइले रहे बतकूचन करत सोंचत बिना एको छन ठहरले दउरत रही जा आ रासलीला में मुरली के तान सुन के अउरी सरपट हो गईली जा जे अबहीं ले पिछुआईल रहे।

श्याम सुन्दर बन में बाँसुरी के तान मारत रहन, ओहिजा चहुँप के हँकासल पियासल गोपी लोगिन उनकरा से लपटा गईली आ नाचे में लवलीन हो गईली। सभ थकान आ दुःख बिसर गईल। ऊ अमृत के बरखा में विहार करत रहन, रमत झमत रहन, नाच में झुमत रहन। सभ के बुझात रहे कि कान्हा उन्हुके जवरे नाचऽ तारे, देह माँजऽतारे, जियरा के जरनी बुतावऽतारे? सभे अपना सुख आनंद में अतना कान्हा में गंतरे-गतरे समाईल रहे कि दोसरा के आ दुनिया के सभे एकदमे भुलाईल रहे?

ओने मुरली के तान सिद्‌ध, महात्मा, ऋषि, महर्षि, साधु, संत के करेजा में समाईल रहे, देवता पितर सभे सोंच में आपन काम छोड़ छोड़ के बन बईरी के काँट में अझुराईल रहे। देवांगना लोगिन चित्र लिखी अस रह गईली। गरह नक्षत्र आपन चाल बन क देलन। चर अचर सभ के उलटी गति हो गईल। पत्थर पिघल के हिलकोर करे लगले। एकदम द्रवित हो गईले। पशु-पंछी फल मूल खाईल बन क के चुपी साध लेले। गाय ध्वनि सुन के चिहा के जहाँ तहाँ खड़ा हो गईली जा। सभ जीव जंतु रोमांचित हो गईल। मदन मोहन सम्पूर्ण संसार के विमोहित कर देलन। सभे स्थिर अचंचल आ निस्तब्ध हो गईल? आदिमी अतिना गदगद पुलकित आनन्दित हो गईले कि सभ के आँख से लोर ढुरके लागल। केहू के कवनो दोसर सोच ना रह गईल।

मदन गोपाल पीताम्बर आ मोर मुकुटधारी बेहद शोभायमान रहन? बदरी अस नीला श्याम शरीर के शोभा अतुलनीय कांति दरसावत रहे। वनमाला से सुन्दरता के नमकीनी करोड़गुना विस्तारित, आस्फालित आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपायित रहे? मन विमोहित करे अवला रूप परगट क के मदन मोहन कामदेव के सुनरपन छिन लेले रहन। नन्द नन्दन वृन्दावन में मदन के मान मर्दन क के प्रेमामृत सरोवर में सभ गोपी लोग के बूड़की लगावे के प्रेरित कइले रहन आ गोपी लोगिन बेसुध हो के उनका जवरे बाँह में बाँह देके, उनका सुललित नेत्र आ भुवन मोहन चेहरा प विह्वल होके नाचे में लवलीन रही जा, तमासबीन ना रह गईली जा। विहारी जी के जवरे अनसुनी, अनजान, अविरोधी, अभिन्न, अचिन्त्य, आत्यन्तिक आनंद में अइसन अझुराईल रही जा कि स्तन एकदम उघार हो जात रहे, तोपे के केकरा फिकिर लेसले रहे? जाँघ नाचे में कतनो तोपला प रेशमी लहँगा के फहराये से लाल टहटहात रहे। गोपी लोगिन लाँगट उघार रहे, ढेर लोगिन के तीन पतिया झूला कसक के मसक गईल? सभे आनंदा तिरेक में, प्रेम विह्वलता में, कामातुरता में, मन मोहकता में, रस मधुरता में आ अधिकाधिक माजा लूटे में लपटा गईल?

वृन्दावन विहारी सभ गोपिन जवरे अतिशय आनंद से, हर्षातिरेक से लपटा के नाच में लोट-पोट करत बाड़े, केहू के विह्वलता से रचिको दूरी नईखे रहि गईल, सभे रस मग्न बा, निमग्न बा, ब्रह्मनंद में संलग्न बा? केहू एकरा के छोड़ल नईखे चाहत, मोह के ममोरल नइखे चाहत, अब दोसर खोह में अपने बोरल नईखे चाहत त, कन्हाई के देह झोरल नईखे चाहत आ एह अमृत रस गगरी के फोरल नईखे चाहत, उनका से लाग लपेट लगाव के खंखोरल नईखे चाहत? नाक मुँह जाँत के रस सागर में बूड़ले रहल चाहत बाड़ी जा, मनहटु नईखी जा होत?

प्रिया जी रसिक वर जी से बाँह में बाँह, जाँघ में जाँघ, छाती में छाती, आँख में आँख, ओठ में ओठ, नाक में नाक, डाँड़ में डाँड़ अंगुरी में अंगुरी, गाल में गाल आ जियरा में जियरा सटा के एकदम समा गईल बाड़ी, अपना के भुला गईल बाड़ी, निदेह हो गईल बाड़ी, बेसुध हो गईल बाड़ी, होस छोड़ गईल बाड़ी, नाचे में व्यस्त हो गईल बाड़ी उनकरे में प्रिया जी बूड़ गईल बाड़ी, देश-दूनिया से मुड़ गईल बाड़ी, भीतरे से पूरा के पूरा, समूचा खुल गईल बाड़ी। एकात्म जुगल हो गईल बाड़ी? एकदम अभिन्न हो गईल बाड़ी। प्रिया जी सान्द्रानुराग चाहे प्रौढ़ानुराग रस सागर में भीतरे ढुक गईल बाड़ी? बसनाभरन आ देह के कवनो खोज खबर नईखें। कायिक, वाचिक आ मानसिक अनन्यता प्रिया जी के अनन्या बना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गईल बा? प्यार के बोखार के बवछार से आँख मूँदा गईल बा? श्री लाल के भुजा से प्रिया जी गृहित कंठ हो के सटल बाड़ी त कबहुँ हटल नईखी चाहत। प्रिया जी के अदभूत सौगन्ध्य सौन्दर्य आ सौरस्य से अनंत विलासी रसिकवर भी अभेद आ अभिन्न, अनन्य होके जबरजस्त सटल बाड़े? पीताम्बर, मोर मुकुट, वंशी आ कटि काछनी भी स्थानच्युत हो जाता?

प्रीति से प्रेरित ई सभ रासलीला क्रीड़ा रस विहार के स्रष्टा, द्रष्टा आधारभूता ह। विहार के आनंद खातिर खासकर विह्वलानंद खातिर प्रेम, श्रद्धा स्वरूप अप्रतिमेय, अनिर्वचनीय आ अपरिहार्य बा। हजारों गोपिका लोगिन के साथ मदन मोहन के कटाक्ष से आहत आ छत विछत राधा के दिल में एगो बड़हन जुआर उठल। ऊ अनमना, उदास आ खिन्न हो के रूआँसा हो गईली। बेमन के, बेजान के, बेप्रान के, बेजीव के होखे लगली, गरमी शांत होखे लागल। ओठ से मुस्कान दूरी बनावे लागल। आँख के थिरकन जवाब देवे लागल। बाँह के बंधन लुंज-पुंज होखे लागल, जीव जंजाल होखे लागल। क्रीड़ा के मियाद आ माजा ओराये लागल। नाचल, देह आ बाँह झकझोरलो प नाच बोझिल बने लागल। जगावे के चेष्टा पर चेष्टा त जियान होखे लागल।? प्रिया जी धइलो प देह ढीले लगली, विहारी जी उन कर देह थाम्हे लगले, अकचका गईले, घबरा गईले, बेसबुर हो गईले?

प्रिया जी के मुख म्लान हो गईल बा। मोती माला टूट के लटक गईल वा। कंचुकी के बन खुल गईल बा। निरलंकार हो गईल बाड़ी, चिन्तित आ उदास बाड़ी। पिय संगम के प्रफुल्लता समाप्त हो गईल बा। मुखारविन्द प खिन्ता के रेखा साफ-साफ लउकता। प्रीतम से अयुक्त हो गईल बाड़ी। कंचुकी कुछ उलटा पसर गईल बिया। प्रिया जी प्रेम विह्वल विहारी जी के भुजा अपना गरदन में नईखी लपटावे देत, ऊ हाथ बढ़ावऽ तारे त हाथ झटक दे तारी। इनकर चरन छूए के कोशिश में बाँह ऊ बढ़ावऽ तारे त गोड़ धड़ दे पाँछा खींच ले तारी। आँचर से मुँह ढँक के होने फिर जा तारी।

"एह घरी हमरा प बेकार प्रणय कोप क के हमार माथा ठनकावऽतारू, का बात हो गईल, का भूल हो गईल, काहे बेखबर हो गईलू, दाल भात में ऊँट के ठेहुन कहाँ से पर गईल? रस बिघ्न कईसे हो गईल? का कमी हो गईल, काहे, रस भंग हो गईल? काहे नाराज हो गईलू? कहत काहे नइखू? कुछ कहबू तबे नूँ बात जानब? तूँ तीन तसिया खेलऽतारू कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतावत नइखू? अईसहीं दिन भर जाँता चलावत रहीं, पिसा जाई सतुआ बे झिरी डलले? झिरी डालऽ?'' विहारी बेचैनी में बोलऽले।

ई एने ताक के कटाक्ष कईली, तिरछाबान जहरीला नोक अवला फेंकली। अइंठाइल बोली झोंक में गिरऽवली, ''होने चलीं, एहीजा से दूर, एह लोगिन से अलगे हमनी के लीला होई? एहीजा ना?''

फेर जमीन नोह से खुरचे लगली। विहारी जी बूझ गईलन। सवतियारो सखियारो में भारी बाधक हो जाला। सभ सहा जाई मेहरारून के, ई एकदम असह हो जाला, करेजा में छेद क के, क फारा फार देला।

ऊ इन्हकरा में तनी सटलन। ई घूसकूरिया काटे लगली।

तब मुसुका के कहलन, ''त सुनऽबू ना त कईसे होई? फरके फरके चिरई के फुर्र भईला से अंडा पराई? अतिना रंज भईला से रस भंग हो जाई कइसे चूल्हा झोंकाई, बे फोरन डलले सोन्ह होई? तनी भीरिया आवऽ। बात सुन ल, जोजना बिना कार-बार सुस्ताए लागी, पकवान सेराये लागी? हमरा के ना सटे देबू त तूँही आ के सटऽ, बेसोचले, हरहटले, फरहटले हटबू त कईसे आपन बात कहब, कईसे आग-खर डालब, कईसे चरखी चली? बे सुहुरअवले-गुदगुदवले भइंस कईसे पेन्हाई, कईसे दुहाई? लतारे चलाबत रहजाई त दूध के सोन्हावल सुखावल नादी खालीए रह जाई, अऊँटाई का?''

''तहार अबहीं काँचा जीव तनिके में उतराये लागता? पूरा आ खूब गहराई में समाये के कोशिश करऽ तब नूँ रस प्राप्ति होई? ऊपरे उतरईला से रतन ना भेंटाई?''

कम्पमलिका, विशाखा, ललिता, कम्पलता चित्रा, इन्दू लेखा, सुदेबी, रंगादेवी सभ राधा के प्रिये सखी प्रेम रस में बूँड़ के, कान्हा जबरे आनंद में लपेटा के, रास क्रीड़ा में तन्मय रही जा, एने ताकहूँ के फुरसत ना रहे, एको छन झांका झुकी के टाइमे ना रहे, सभे गोताईल रहे, बूड़की लगवले रहे।

राधिका जी आपन तलुवा देखऽवली, ''हई देखीं का भईल बा, दउरत-दउरत गोड़ के छाल छूट गईल बा, अब विसवास भईल कि कतिना दुख-दरद सह के कइसहुँ एहीजा पहुँचल बानीं आधी रात में? रावाँ एह प धेयाने नईखीं देत? गंभीरता से लीं, हलुक मत बनीं, हर बात हँसी में मत उड़ाईं? हमनीयों के मउर आ छकंलिया पहिरे आवला?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आज तक एह दिन खातिर हम इहे अरजले रलीहाँ कि हमरा ओर ओतिना धेयान ना देब, होने लोगनि में बाझल बानीं? रउवा त तनी ताकहुँ के इयाद नइखे, एकदमें भुला जातानीं, त जाईं रास करीं हम एहीजा से जातानीं! एही से सभ कहली सऽ कि भारी अबाटी हवन! दगाबज हवन! चितचोर आ मुँहचोर हवन, कवन ना कहऽली सऽ? ऊ नया लहँगा पटोर पहिर के आईल बाड़ी स त ढेर नीमन आ सुनर बाड़ी सऽ? रउआ बउराह लेखा पिछुअवले चलऽतानी आ लपटईल चलऽ तारी स मरद मानुष के इहे चाल ह, नया नवहर देखला प खखुआ के पर जाले आ गोड़परिया करे लागले, नाक रगरे मे रचिको आव आ ताव ना लोग देखे। परला के संघतिया शायदे कवनो मरद होले! रउआ भीरी जौ गेहूँम सभ एके भावे बिकाता। रउआ सभ समझ के नासमझ बउराह सनकी लेखा बैंल–बाछा के एके लेखा दऊरा के मुअवले बानी! रउआ ताजा पूरी बुनियाँ में घंटी बजा के नाक डूबाबऽतानीं! आपना के खाली ओभरलुक नइखी करऽ तऽ बलुक हमरा के त अपना भाग बसे दनबार क देले बानीं! हम अपना ओर से त जानें में रचिको चूक नइखीं कईले, तलुवा देखवलीं हँ नूँ कि लहूलुहान भईल बा करीर के काँट से? जवन रावाँ करऽ तानीं ईहे एनज्वाय ह? बउराहिन बनबले बानीं? रावाँ शिफ्ट कर ऽ तानीं? बात बा बहार के त आज हजार के आँख में बइठा लेलीं, हमरा नइखे बुझात? हमहूँ छीना झपटी करे नईखीं आईल, जान ऽ तानीं रावाँ धांसू मरद हईं? खाली छोटके पहाड़ा पढ़ल बानीं, धमूचा, चालीसा नईखीं पढ़ल? जियरा जरत बा हमार, रउआ के राऊर मनवों नईखे कहनीहार? जोरन देवे वाला लूज कर जाला, छीन के दोसर खाला? हम दाढ़ी धरऽ तानीं, बाँह धरऽ तानीं, पाँव परऽ तानीं, आ रावाँ बराबरे ओभरलूक कर ऽ तानीं! गला में परेम के फाँसी लगा के झाँसी चल जा तानीं? रउआ बोहनीं बनाबऽ तानीं, हमरा का बुझाता? हम रऊआ में रात दिन टँगाइल बानीं आ रउआ बटेर बझावे में अझुराईल बानीं!

अब विहारी जी अतिना सुन के साँचो बेअगर हो गईलन। दउर के इनकरा के कोरा में उठा लेलन आ गाल चूमे में लाईन लगा देलन, बे गिनती के आ बेफिकिर के चूमते गोदी में टँगले होने, बृन्दावन में दूरी लेलन त हाथ आ मुँह ढीला कइलन? कह लन कि चलीं जा हमनी के ओह लोगिन के पंजरा से दूर अति दूर हऊ जहाँ पेड़ पौधा आकाश से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सटल बाड़े स ओहिजा चलीं जा, जहँा ओह लोग से रचिको ना लउकब जा। साँचे एहीजा माजा किर किरा हो जाता।''

प्रिया जी प्रसन अति प्रसन्न हो गईली! जवरे चले लगली, खूब मुसकुराए लगली, उनकरा ओर रह रह के आँख गड़ा के ताकस आ डेगरगरे चले लागस ।

कुछ दूर जात-जात उनकरा जवरे अंजोरिया के आनन्द लेवे लगली। असालतन बिजली चमक गईल बिया। चारू ओर बन में जगजगाहट, बगबगाहट बा। अंजोरिया उजर हो के सगरो पसरल बिया। नजर उजलापन प थिरकत बा, मन गदगद बा, मिजाज भरल बा, तगड़ के फूल झरल बा, कुन्द आँख मूँद के फूलल बा, उजर गुलाब गमकत बा, विहारी जी के मन चसकत बा, राधा के देह ओरे लचकत बा! राधा बूझऽ तारी. बाकिर राह के थकावट से अब जूझ ऽ तारी, विहारी जी ओर बार-बार मुड़ ऽ तारी? मने मन उनकरा कंठ के कंठहार बनल चाह तारी, देही के खुमार छोड़ावल चाह ऽ तारी, नेत्र के नोक से कनखियावऽ तारी, आपन थकावट के भाव ईशारा से बतावऽ तारी!

कान्हा तुरत बईठ गईलन चूका मूका आ मुस्कुरा के ईशारा कईलन, ''आवऽ कन्हैया के कन्हैया सवार हो जा, आपना देह के भार से एईजा ओलार हो जा!'' ऊहो कनखिअवलन!

राधिकाजी, आव देखली ना ताव, तड़ दे कान्हा के कान्हा प टाँग रखे के जमीन से दू-तीन हाथ ऊपर उठवली आ देर से उठवले रहती तली ऊ गायब! नव दू एगारह! गोड़ हार दाव देख के नीचे जमीन प रख के खड़ा हो गईली, उनकरा ओहिजा ना पा के गुम हो गईली, चकचिहा गईली, चारू ओर ताके झाँके लगली। उ कतहीं ना रहन, लापता हो गईलन, अदृश हो गईलन। ई खड़ा बाड़ी, इनकर नजर चारू ओर उनकरा के खोजऽतीया, वेचैनी बढ़ल जाता, दिमाग आ मन चंचल हो जाता। चारू ओरी ताक के चिहाईल बाड़ी, एह काम से अनाड़ी बाड़ी! हँसी खुशी से खाली बाड़ी! मन मार के उहा-पोह में परल बाड़ी, चिन्तित बाड़ी, घबराईल बाड़ी, माँह जंगल में बीती रात में अकेले बाड़ी, बेचारी बाड़ी!

भारी आफत में परल बाड़ी, अबगे आनन्द के अतिरेक रहे, रस के भरमार रहे, खुशी बेशुमार रहे, बेठिकान रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब, एह घरी सामने दुख के पहाड़ बा, केहू नईखे लउकत, आँजर-पाँजर सगरो अंजोरिया झाँझर बिया। तकलीफ के सागर बा। अब कुछुओ बुझात नईखें, का करीं, केकरा के कहीं, आ कइसे खोजीं, केकरा से पूछीं केहू नइखे।

अब का कईल जाय? कवन उपाय बा, केने राह लउकतऽता? के सहारा बा? मझधार में नाव बूड़तीया, हल कोरा मार ऽतीया। खेबइया नईखे, अब का होई?

आदमी के साथी-संघतिया, भाई-भतीजा, माई-बाप, बेटा-बेटी आफत परला प केहू ना लउके, एकदम बेसहारा हो जाला, दुख के पहाड़ सामने खड़ा हो जाला, आँखि के आगे अन्हरिया छा जाला आ धीरज साथ छोड़ के परा जाला त उन्हुका छोड़ि के केहू ना लउके! अछता पछता के हार-दाव दे के उन्हुकरे केईयाद कईली ह। आँखी से लोर गोर गाल प ढरक के चिन्ह बनावे लागल ह।

ताबड़तोड़ रोवे लगली ह। मन में चैन नइखे, बैखरा ले ले बा, बेचैन बाड़ी, निराश बाड़ी हतास बाड़ी, ''जल्दी आवऽना तऽ हम अब मर जाईब, आपन अखड़ेरे परान दे देब, अनजान नईखऽ, जान मत मारऽ?''

रोवऽतारी, लोर से छाती चोली धोवऽतारी! सारी-लुगरी मोव ऽ तारी, जीव के खीस खोवऽ तारी, बार-बार लगातार रोव ऽ तारी! लोर पोंछे वाला, समझावे अवला, चुप करावे वाला, आसरा अलम देवे वाला एह घरी केहू नइखे। धीरज धरावे अवला केहू नईखें। अछोधाह होके रोवऽतारी। लोर के चिन्ह गोर गाल के शोभा बिगाड़ऽतारे स। चोली भींज के चहबोता भईल बिया! अब ठटात नईखे, कुछ बुझात नइखे। अबगे बुझाईल ह कि दुख का कहाला! जे खाली सुख के दिन देखले बा, रस आ माजा लेवे में हरमेसा लागल रहल बा, खाली जिनिगी के चानी कटले बा, दुख के आफत में परला प निष्प्राण हो जाला, बेजान हो जाला, बेसहारा हो जाला।

इहे हालत रहे राधा जी के। अईसन दुख से, आफत से, दिकत से मुसीबत से इनका कबो भेंट ना भईल रहे। बड़ी भारी जोखिम में जान परल रहईन। सभ होशियारी आ चालांकी चुहानी भाग गईल रहे, कुछुओ सूझ-बूझ ना रहे, कवनो तरकीब ना लउकत रहे। अजगुत आफऽतरा में पड़ गईल रही! असहता अकल्पनीय रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनों हाथ जोर के रोवते-रोवते कहली, "अब हमार इम्तहान मत लीं, हम हाथ जोर के हार मान ऽतानीं, छमा माँगऽ तानीं, हम गलती कइलीं, अब जिनिगी में अईसन गलत हरकत कबहुँ ना होई, ई हम कबहुँ ना भुलाईब, राउर ई सीख इयाद रही! मरतेदम तक अहंकार ना करब, राउर परतिज्ञा प आँच ना आवे देब। रउरा सम्मान के लक्षुमन रेखा के उलंघन के हमरा से कबहुँ संभावना ना रही। हम हरदम, हरछन सजग रहब, सतर्क रहब आ खेयाल बनऽबले रहब! "

विहारी जी बड़ी तेजी से, बड़ी बेसब्री से राधिका जी के भीरिए सामने विहँसते त्रिभंगी रूप में खड़ा होके बाँसुरी टेरे लगले, बाँह ध लेले आ मधुर-मधुर मुस्कान के बारिस से इनकरा के जान में जान डलले, बाँह ध के रास में रत हो गईले!

राधिका जी के तबहुँ लोर ना सूखल, अउरी जोर-जोर से रोवे लगली, उनकरा में भींजल कपड़ा लेखा एकदम सट गईली, लिपट गईली!

श्री राधारमण जी मुस्कुरा के बतवलन,

"हम कबहीं भागल रलीं हँ? तहरा का बुझाता, हम तहरा बिना चैन से, सुख सें एको छन रह सकीला? कबो ना, एकदम ना! हम त तहरा के थाहऽत रलीं हाँ, अजमावत रली हँ! तूँ कतिना पानी में पहुँचल बाड़ू, इहे देखत रहलीं हँ! तावा प, आग के अंगोरा प लिट्टी भाँटा सेंकत रली हँ, जरे ना नूँ दिहितीं! काम बिगड़े ना नूँ दिहितीं? हम नइखीं कहत कि जाँचत रलीं हँ आ इहो कहऽ तानीं, मनहिं मन काँपत रलीं हँ, आ हाँफत रलीं हँ! तू डराइल रहू त एनहूँ तहरा से रचिको कम ना डराईल रहीं, बुझात रहे कि अईसन मत हो जाय जे तूँ होश हवास खो बईठ ऽ? हमहूँ निश्चिंत बईठल ना रहीं, हाथ मलते रहीं कि कुछ अकुआ मत हो जाय अउरी फेरा लाग जाय, आ डेरा डाले के पर जाय? हमहूँ त बेखबरे रहीं बेचैन आ बेअगर रहीं!"

"अब काहे रोवऽ तारू? अब त हम तहरा नियरे बानीं, अब भीरिए बानीं, का लोर टपकावे के बा? अब प्रसन्न होखऽ, रास के रस में आवऽ बूड़ जा।"

राधिका जी उनकरा के कस के धईले रही, तनिको लूज ना होत रही। बच्चा जईसे कवनो भीर परला प आफत अईला प दउर के घरे माई के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाँड़ा में घुस जाला आ जल्दी निकलल ना चाहे ओही तरी दूनों हाथे उनकरा के जकड़ले रही, देह चाहे हाथ गोड़ फाँफर ना होखे देत रही!

राधा रमण उनकरा के पुचकरले, कान्हा कान्ह सुहुरवले, गाल प हाथ फेरले, ओठ चूमले, लिलार चूमले, हाथ चूमले, आँख चूमले, गतरे-गतर रस भरले, जान फूँकले, मान-सम्मान कईले, सरहले, सूँघले आ आँख में आँख डलले, धरहर भईले त रोवते-रोवते कहली,

"अईसन मजाक हमरा से ना कईलीं! हमार परान निकल जाई! अईसन मसखरी से हमार जियरा जर जाला, करेजा में लुकवारी धरा के आ अब चउअनियाँ मुसुकी काटऽ तारऽ!"

मदन मोहन इनकरा के कोरा में बईठा लेलन। मुस्करा के राधा के स्थिर कईलन। पुलकित रोवाँ से अत्यंत सुशोभित, कम्पयुत, अत्यंत मधुराति मधुर देह धारिनी राधिका के कुच जुगल प कस्तूरी से विचित्र चित्रावली बनवलन! कुच धअईला प जब तब ई सीत्कार करस, कांप जास, श्याम श्याम करे लागस, पुलकितांगी, अत्यंत पेयार से परिपूर्ण प्रकृष्ट मदयुत मदन गोपाल के रस से सरावोर क देवे वाली राधा स्वर्ग सुख के अनुभव करे लगली! प्रीतम के मन चोरा लेवे अवली राधा एकदम आप्याचित बाड़ी, आनन्द सागर में बुड़की मार के आँख मूँद लेले बाड़ी! तूलिका से विहारी जी धीरे-धीरे इनकर गोड़ में अलता लगा के रंगीन बनाव ऽ तारे। अवनवरत प्रेम रस प्रवाह के बरखा करे अवली, उत्तरोत्तर उत्तमोत्तम रस केलि सम्पत्तिशालिनी, करुणा धार कल्लोलिनी, बृन्दावनविहारी के चित्त रूपी मृग के प्रकाश मान बन्धन रूप श्रीराधा रसिक वर के पेयार रस से अधिकाधिक सराबोर बाड़ी। कुच जुगल के छुअईला प एकदम सिहर के 'सी' करे लागऽ तारी। ऊ जब तब जान के उरोज अंगुरी से छू दे तारे? इनका शोभायमान अधर से अमृत माधुरी के कोटि कोटि सागर तरंगित हो रहल बा। इनकर कनखी काम देव के करोड़ों तीखा अचूक बान फेंक रहल बिया। इनकरा सुनयन पर मदन मोहन निछावर होके रासलीला में फेन से लवलीन हो जा तारे! मोहन मणि जटित मनोहर कुण्डल आ मस्तक प मोर मुकुट, कस्तुरी के तिलक, घुंघराला बाल लटकवले, छाती प वनमाला सहित, मेघ अस श्याम शरीर प पीताम्बर धारण क के करोड़ों कामदेव के शोभा सहित मधुर रासलीला में चंचलातिचंचल हो गईलन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधिका जी प्रफुलित होके बोलली, ''हमरा ओर देखीं, भादो महीना के हम तीज चउथ के चाँद हईं! हमरा ओर मुस्कुरा के देखीं, अब छल प्रपंच मत करीं! हम हरमेशा रउरे बात मनले बानीं, रउरे मन रखले बानीं! कुमुदिनी जइसे चनरमा के अनुरंजन करत रहली, ओइसहीं हमहूँ अपना प्रीतम के अनुराग में रमत रहीला। हमार चित्र चंचल बा, हमरा के बढ़ियाँ से सम्हरले रहीं! हम गिरे-गिरे हो जातानीं! एह घरी हम अपना में नईखीं, अचऽके भहरा जाईब। हमरा गरदन में हार लेखा बाँह डाल के गरदनी अवले रहीं! देखत नईखीं, आधा हार हमार गरदन में आ आधा रउरा हाथ में बा, हम अपने असहज बानीं! राधा मीठ हँसी हँसली!''

अतिने में कन्हइया इनकरा गाल पर चूमा के छाप छोड़ देलन बाकीर छाती छुआते राधा तड़प गईली? कान्हा बार-बार इनकरा आँख में झाँक के ओठ के अमृत पान कईले, इनकर लट से ढेर फूल झर गइले स। ऊ इनकर अंगिया खोलल चाहत रहन, बाकिर बाकी लाग गईल! एगो लिलार दोसरा लिलार से सट गईल बा, कान के जड़ाउ कुंडल डोलत रहन स, तिलक चंदन पसीना जवरे लुका गईल, कंगन मगन बाड़े स, पायल झनझना तारी स आ कामदेव हार गईलन आ मोटा जाँघ त थाक गईली स! दूनों जने के बाल खुल के तितर बितर हो गईल। आपन बस्तर सम्हारे के केहूए के होश नईखे रह गईल! दूनहूँ जने विभोर बाड़े, बेसुध बाड़े! वृन्दावन में खूब मिठास बा, सब कुछ मधुर बा, मधुराति मधुर बा! मायिक जगत से दूर लोकोत्तर रास रस से सराबोर सभ रम गईल बा!

***

(13)

मधुरापुरी के राजा कंस बड़ बलबान आ प्रतापशाली रहन। दूर-दूर तक उन्हकर नाँव रहे। दोसरो राजा के राजा लोग उनका से डरात रहन। दोसर राज के राजा लोग भय से भ्रमित रहन कि कंस के चतुरंगिनी सेना कबहुँ चढ़ाई क के हमरा राजा के तहस-नहस मत क देवे। एह से रात दिन लोग छनकल रहत रहन।

एही बीच में नारद जी के मधुरापुरी में शुभागमन भईल। महाराज उहाँ के आसन दे के स्वागत कईलन। फेन कहलन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कईसे-कईसे महात्मा जी रावाँ हम ईयाद परलीं हँ?"

उहाँ के विस्तार से विवरण सहित सभ बतऽवलीं कि रउरा भीरिए गोकुल में नंद के दू गो बउँकार बालक बावन वीर बनल जा तारे! नियरे गोकुल बा, रउआ कुछ खबर नईखे मिलत, रउरा एकदम बेखबर आ निश्चिन्त सूतल बानीं? ई चरचा रउरा से राउर आदिमी जन आ चाहे परजा पवनी, नाऊ बाभन आवे-जाये वाला केहू ना कहल ह? राजा के त राजनीति के अनुसार चाक चाउबंद आ बेसवा लेखा हर दम छनकल रहे के चाहीं, आँख मूँद के आ घोड़ा बेंच के सूते के ना चाहीं।! राजा राजनीति के गेयान आ चालाकी के अभाव में बल आ सेना रहते घेरा के, चकोह के काँट में बाझ जाला, अझुरा जाला, फेन निकले खातिर जतिने हाथ पाँव मारऽला ओतिने अधिका अझुराला। नाकोंदम हो जाला।

"अईसे हम एही राह से जात रलीहँ त सोंचली हँ कि तनीं रावाँ भीरी सुसता लीं, ठंढा लीं! अउर कवनों विशेष आ जरूरी काम नईखे।"

महाराज झूठपुराई कईलन "रावाँ अस रिषि महर्षि के हमरा प बड़ी किरिपा बा कि हमार धरती के आ के पवितर कईलीं, रावाँ से कृत कृत भईलीं।" हाथ ना जोरलन, जबानी जामा खरज भईल!

नारद जी गोड़ के तलुआ त जइसे भूंभूरी में जरल रहला, तुरते कहाँ दो हवा हो गईले। बाकी जाते-जाते डहका गईले, "आरे कृष्ण-बलराम उहे नूँ लईकवा हवे स जवना के रावाँ बारे में आकाशबानी भईल रहे?"

ऊ चल गईलन बाकिर इन्हकर करेजा में ढुक के बड़ी आँच-लहर अवली आग लगा गईलन!

ई दिन में त नहिएँ खईले रहन, रतियो में बे खईले-पियले पलंग पर पलट गईले। नीन काफूर हो गईली, आँख के पंजरा ना पसरली। कईसे पूतना बध, बकासुर बध, चीर हरण, भईल रहें, रोज-रोज के घटना जवन दूत के मुँह बखान सुनले रहन ईयाद परे लागल, गोवर्द्धन धारण ईयाद परल, अब आँख रचिको सटवे ना करे। चाहत रहन कि नीन पर जाय बाकीर काहे के नीन लागो, आँख सटो? मन उकिल बिकिल हो गईल, नीन ना लागल। बाद में पर पेशाब क के परलन त कब दो आँख लाग गईल।

कंस सपना देखलन कि राम श्याम दू गोप महाबली चारों ओर लउकऽतारन, जेने नजर जाता ओने दूनों वीर मार काट कर तारे, कंस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल काफूर हो जाता, हाथ पाँव बन्हाईल बा, चुपचाप बाड़े, इनका शरीर में कवनो हरकत नईखे होत, ऊ लोग जेनहीं चाहता, लतियावता, टंगरी चीरता लोग, लात, मूका चलावता लोग, उलट पुलट करऽता लोग। जब कृष्ण मुआवे लगले ह त नीन भंग हो गईल आ जोर से चिल्ला के कहले, ''बचावऽ?''

सभ रानी लोगिन हल्ला सुन के जाग गईली जा आ दउरली जा, ''पूछे लगली जा का भईल ह? के रहे?''

कांपत रहन, एकदम डेराईल रहन, सुखाईल रहन, घबराईल रहन, पूछलो प कुछ कहत ना रहन। सभ रानी लोग घेरले रही पूछत रही, जानल-समझल चाहत रही जा, ई कहे में बरनन करे में लजात रहन, शरमात रहन। अब रात भर जगले रह गईलन।

फजिरहीं दूत के डपट के बोलवलन, ''जो जल्दी अक्रूर जी के बोला ले आव, ना लिया अइबे त जान मार देब, जल्दी जो।''

दूत उनकरा के समझा के जल्दीये जवरे लिया के चलल। ऊ बहुत तरह सोंचे लगले, का बात बा, ई त भारी खल ह, एक से बढ़ के एक खुराफात करऽता, पानीयों में आग लगा देता, आग में रोज मूतऽता, बदमाशी आ नृशंसता के ओर-छोर नईखे? एकर ससुर हईक जरासंध उहो एकर मन बढ़ावत रहता, उलटा-पुलटा करे के उसुकावत रहता, पता ना, काहे के हमरा के बोलावले बा, हमरा से का कुकर्म कराई? आकि हमरा के केनहूँ फँसाई? इहे सोचत, जीव जाँतत पहुँचलन! देखते बड़ी हरसाईल! ऊपरे से खुश होके स्वागत कईलक, आव भगत कईलक!

रावाँ हमार अजीजी दोस्त हईं, हमरा के भुला गईलीं। हम ना नूँ भूलाईब! दोस्त के भुला देला प नरक में जाए परेला, जानीला नूँ! आरे सालाना जलसा के सभ सजावट-बनावट हो गईल, राउर कहीं पते ना चलल? आरे भगिनन के नाँव सुनत-सुनत कान पाक गईल, हम नजर से आजु ले देखलीं ना, ओढ़न पहिरन देवे के त बाते दिगर बा! रावाँ जल्दी रथ से नंद गाँव जाईं आ कह सुन के जलसा में भाग लेवे के रथ प चढ़ा के लिया आईं। एही में राउर बहादुरी बा, काल्हु सबेरे एहीजा पहुँचा दीं! एहीजा स्वागत-सत्कार के सभ तइयारी रही। जिगरी संघतिया हईं, अपना भतीजन के कईसहूँ टाइम पं एहीजा पहुँचा दीं! हम आ हमार सभ समाज अगवानी खातिर तइयार रही, रचिको संकोच नईखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे के। रावाँ लेखा बेधड़क बोले करे वाला दोसर नईखे लउकत! जल्दी करीं, रथ प सवार होखीं।

ऊ सुफलक सुत सम्हार के, खँखार के आ हडबड़ा के अनुरोध कईलन, "महराज घबराईं मत, हम जा तानीं, हमार दूनों आपन भतीजा ह लोग, बलराम आ श्याम। फजीरहीं ऊ दूनों जने गोचारन में बन में निकल जाले, हम अबहीं रात में लेट सेट पता ना कब पहुँचब, नंद जसोदा के बहुत तरे समुझावे-बुझावे के परी त देर होई! हम काल्हु ना परसों भिनुसहरे लिया के चलब आ बेर चढ़त जरूर पहुँचा देब, रावाँ एकदम निफिकर रहीं।

महाराज पशु गैबती समझवलन "रावाँ के चतुर चालांक बुझ के भेजऽतानीं, कवनों गलतफहमी ना होखे के चाहीं, रउआ त हमार अजीजी दोस्त हईं! हम दुलार पेयार से ओहनी के जलसा में सत्कार करे खातिर बेचैनी में बानीं! जाईं चढ़ीं?"

ज्ञान किरन सम्पात से अक्रूर जी में माधुरी अवगाहन के छमता भरपूर बा। ऊ सभ बात समझऽतारे, मने-मने गुनऽतारे। कल्पना लोक में उड़ऽतारे।

एह तरी अक्रूर जी नंद गाँव रात में पहुँचलन। नंद जी आवभगत शुरू कईलन आ सर समाचार भईल। पूछलन परेम से "भाई जी कईसे-कईसे? कवनो विशेष नईखे नू?"

विशेष त बड़ले बा, सभ कहऽतानीं, रावाँ से राये सलाह खातिर नूँ आईल बानीं! बढ़ियाँ से सोंच विचार के सभ करे के बा, बईठीं, इत्मीनान से आ खूब समझदारी से काम करे के बा, ठोस निरनय लेवे के बा! देखीं परसों मधुरापुरी में सलाना उत्सव राज महल में होखे वाला बा जवन साले-साल बड़ी धुम-धाम से मनावल जाला। शामिल होखे के नेवता बा। हम नेवते लेके आईल बानीं। एह में ढेर एने-ओने से माथा-पची नईखे करे के। राजावा से हमनी के छोटा-मोटा जागीरदारी के मेल मिलाप बनवले रहे के बा।"

"देखीं, विचार त करहीं के बा बाकिर एह में माथा, दिल, दिमाग सभ अझुरा के आपन नीक जबुन सभ काम बिलवावे के नईखे! आपन माल-मवेशी, बाल-बच्चा आ घर दुआर ठीक से रहे ई त सोंचहीं के बा। महाराज श्याम बलराम दूनों भगिनवन के देखे खातिर आ पहिरन देवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर बेअगर बाड़े! नाँव सुनले बाड़े त बड़ी उत्सुक बाड़े, आ ई सभ के होला, समाज परिवार के आ देश मुलुकऽके ई हो दुनियादारी ह। काल्हु आराम क के परसों फजिरहीं अनुमुन्हारे में दूनों लइकवन के, ओढ़ा पेन्हा के रथ से लिअवले चल जाइब आ रावाँ खा-पी के तइयार होके ऊपरी बेरा ले चहुँप के जलसा में शामिल हो जाईब!''

नंद जी उदास हो गईलन, गंभीर चिंता के बोझ से बोझिल हो गईलन, सोंच के कहलन, ''महाराज के आदमी, जन त एह लईकन के जनमे से उपदर कईले बाड़न स! हम त बेचैनी में जिनिगी काटऽतानीं, पचासों उत्पात महाराज के बूझते हो रहल बा गोकुल में? रावाँ अनजान लेखा बतिआवत बानीं?''

ओही घरी जसोदा आके बूझे लगली, ''का बात ह? इहाँ के जल्दी खियाव-पियावे के बा तऽ कवन बतकुचन करे लगलीं? रउआ त बतिआवे में सभ भुला जाईला अतना सोझबक हईं?''

नंद जी बड़ी दुख से कहलन, ''इहाँ के कंस महाराज, राम श्याम के सालाना जलसा में नया पहिरन खातिर परसों लिया जाए खातिर भेजले बाड़न?''

''ना ए दादा, हम अपना लइकन के ओहिजा ना भेजब, ऊ हत्यार ह, राक्षसन से मरवावे के क बे उपाय कईलक, ओकरा भीरी अपना करेजन के हम मरियो जाईब त ना भेजब, आ रवों, रउआ एकरा खातिर खुश रहीं चाहे नाराज होखीं! एह पार से ओह पार आकाश पाताल हो जाई तबो ई ना करब?''

''रावाँ हमार घर भसावे आईल बानीं, ईहे रावाँ हमार हितारों करे आईल बानीं कि हमार करेजा निकाले आईल बानीं?''

तबले कान्हा दूनों भाई गाय-गोरू गौशाल में बान्ह-छान के आ गईलन, बाबा के चुप आ मईया के रोवत देखलन। चाचा के दूनों जने पवलगी चिलऽगी कईलन आ चिहा के पूछलन जा, ''का बात पर गईल, मईया रोवे लगली?''

अक्रूर जी सभ विवरन सुनवलन आ कहलन, ''परसों महाराज के महल में सालाना जलसा बा, बबुआ, तहरा दूनों भगिना के महाराज के ओर से बोलाहटा लेके रथ सहीते आईल बानीं, भगिना लोगन के देखे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ नया सिलिकेन मिरजई धोती अंगोछा पहिरावे के उहाँ के बड़ी इछा बा, उहाँ के एह खातिर एकदम बेसऽबुर बानीं! हम बानीं त ले जाके तहरा लोग के आग में ना नूँ झोंकब? हमरा प पूरा भरोसा कर के चले के बा! मुदई मरजाद लूटे लागी आ चाहे धोखा क के जान प आ जाई त हम जी के का करब? ओकरा बाद हमनी के अँचार का परब रह के? हमनीओं के लोहा लेवे में रचिको सोंचे ना परी! जुझ जाइब जा! एह से बिना आह अलम के समझ के बेसबुर नईखे होके के। हम कवना दिने काम आईब? केहु के बिगाड़े बनावे अवला भगवान हवे, आदिमी के हाथ में कुछुओं नईखे, राजा-रंक सभे उनकरे प बा! एह से बबुआ अनगूते तइयार होके चलऽजा, चल के जलसा जमावऽजा। नेवतहरी अतिना नीक-जबून ना सोचे। हमनी के लश्कर लेके थोरे जाए के बा जे केहू चिहाई? हमनी से ठगहरिया करिहें त गोहार ना जुटावे परी, अपना भाग बसे दनवार! सभऽ करे खातिर ऊपरवाला बाड़े, उनुकरा से बड़ जोड़ वाला केहू नईखे! आ इहो जानि ल कि निरबल के बल राम! आरे ओहिजा जलसा के बाद सभ नेवतहरी आ हाकिम हुकाम के जवरे छपन भोग के जेवनार में मूड़ी गाड़ के हाथ धोवे के बा।''

''आफत आई त भगवान कवना दिन रात खातिर बाड़े? ऊ अपना प आश्रित भक्त के ना बिसारस! आ आपना भक्त के मरजादा चिउत ना होखे देलन, बूड़े, अवला के तिनका खर ना मोट बाँस बल्ला अस सहारा बन के मिसिरी के मीठ आवाज से तृप्त क देले! तहार मइया अनेरिया डरा तारी, चिहा तारी!''

कान्हा मईया के कहलन, ''मईया राजा के जलसा में जाये में का डेराये के बा? नेवता आ बोलहटा, आ उहो राजा के, ई त बड़ भाग के ईज्जत आवरू के, खुशी के बात बा! अईसन नीमन काम में त अवरू हाथे-पाथे लाग जाए के बा, सोचे के का बा? झाँपी कहाँ बा, हम आ दाऊ भईया आपन धराऊँ धोती मिरजई निकाल के असगनी प ध देतानीं जा। चलऽ दाऊ''

खूब फजिरहीं दूनों भाई धराऊँ कपड़ा पेन्ह के अक्रूर चाचा जवरे रथ प पलथिया गईल लोग। मईया से कान्हा गोड़ छू के कहलन,

''मईया, तुरते नेवता पुरा के आ जाईब जा, कुछुओ सोंचऽ समझऽ मत!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जसोदा मईया देखते–ताकते रह गईली, आँख से टपऽ टपऽ लोर झरे लागल आ झरना के फेल करे लागल!

गोकुल में रतिये बात फएल गईल। अनमुनाहें सैकड़ों गोप–गोपी हबकूरिए दउरले। रथ के चारू ओर गोप–गोपी के घेरावटा लाग गईल! कान्हा दाऊ जवरे उतर के सभ करे हाथ ध–ध के समुझवले, "दू–एक दिन में आ जाईब जा, ढेर दिन के जतरा नईखे, का सोचे के बा, उदास का होखे के बा? लईकन लेखा का घबराये के बा? सभ करे जवरे मिलले, सभ के सन्तोष देले!" फेनु ओह लोगिन के बाँह छोड़ा के रथ प चढ़ गईले। कुल जने फफक–फफक के रोवे लगले! धीरज के बान्ह टूट गईल, रथ बढ़ गईल! सभे घीव अस ककरा गईल! दूर जात रथ ओरे नजर लागले रह गईल, सभ गोपी लोग भी ओनही ताकत रहे आ भीतरे से हाँफते रहे!

बिहारी जी के अंग कांति के दर्शन के अभिलाषा, प्रेम के उत्कट अनन्यता आ रूप सुधा पान के अतृप्ति बोध, रस संपत्ति के चाह से अधिकांश गोपी लोगिन दउर के रथ के आगे सूत गईली, जा, गोड़ हाथ पसार के पर गईली ज़ा, पथ चारू ओर से जाम कर देली जा!

अक्रूर जी बड़ा फेरा में परलन। घोड़ा खड़ा हो गईलन स आ गोपी लोगिन के रोवाई से घोड़न के आँख से लोर टपके लागल। बातावरण एकदम गमगीन हो गईल। केहू के कुछ बुझाते ना रहे कि अब का कईल जाय? अक्रूर जी के भी आँख से लोर चुअत रहे। एगो–दूगो आदिमी के नाऽ समुझावे के रहे, ओहिजा त हजारों जुवतिन के समुझा के, बतिआ के चुप करावे के आ राह से हटावे के रहे। सभ भौंचक रहे!

अक्रूर जी आ बलदेव जी दूनों जने बिहारी जी के निहारे लगलन, कुछ बोलात, कहात नईखे ओहू लोगन से। बिहारी जी देखलन आ समुझलन कि अब काम चले अवला नईखे त धीरे–धीरे नीचे उतरलन। मुरली हाथ में लेले रहन, एगो मधुर तान छेड़ले, आ मुसुकी मरले, कटाक्ष पात कईले, मूर्छित होखे लगली जा! सुनरपन से आ मुरली के मधुर–आवाज से, ओहिजा मदहोसी छाये लागल! अतिशयित, अकल्यित स्थिति बन गईल। बलराम जी आ अक्रूर जी भी अपरभाषित ना रहलन। सारंग, गौड़ा गौड़ी राग से सभे पोर–पोर बउरा गईल, अपनहूँ राग के वशीभूत हो गईलन! जो गिरिधर कहाले ऊ मुरलीधर हो गईले! ओही स्वाद में सभे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुला गईल। सभ लोगिन के देह के कवनो खोज खबर ना रहल, ओठ से मुरली हटावते ना रहन, मोहक रूप ध लेले आ सभे मोहित हो गईल। राग राम कली, जयंत श्री, नट, गूजरी, विहागरी, सूहों भैरव, सारंग, कल्यान, धनाक्षी के रंग से पूरा वातावरण आ दिल-दिमाग गमगीन से रंगीन बना देलन, विमोहित क देलन!

सभ लोगिन जवरे मिललन, देह धईलन, बाँह धईलन, गलबाहीं कईलन, उठवलन, बईठवलन आ गाल आ ओठ सूँघलन, सभ लोगिन रोवल बन क के मुसुकी मारे लगली, उनकरा से सट के लपटाये लगली, सटे खातिर पूरा छटपटाए लगली!

मुस्कुरा के कहलन, "हम कहीं जा तानीं, हम लुटा तानीं? आरे दू-चार दिन में मधुपुर के उत्सव देख के, सभ काम निपटा के हबकूरिए दौरल आईब ना त तहरे लोगिन लेखा हमरो ठटाई? हमरो तहरा लोगिन से मिलला बिना रहाई? बरदास से बाहर हो जाई, हमरो एहिजा अईला बिना आ रास-रंग बिना छटपटी लेस दी, हमहूँ बेचैन अश बेअगर हो के मरे लागब! तुरत आईब, निश्चिन्त रहऽ जा।"

गोपी लोगिन कहली जा, "हमनी के कोदो मसूरिया देके नइखीं जा पढल, हमनी के छटपटी लेसले बा, रावाँ प रचिको भरोसा नईखे होत? तबकी त रास के समय गायब हो, गईलीं त हमनी के रउरा के खोजे ढूँढ़े में दउरत दउरत फिफिहिरी भईल रहीं जा, गोड़ के छाल छूट गईल रहे, अवहीं ले छाल के छाक मेटल नईखे। जुझ गईल रहीं जा, कतिना फेरा में पड़ल रहीं जा। बुझात रहे कि सनकी बउराहिन भईल रहीं जा। फेन ओइसहीं हमनी के आफत में पर जाईब जा, रउरा छलिया हईं, हरमेसा हमनी से छलबाजी करत रहीला, हमनी के रावाँ प रचिको विसवास नईखे होत, कईसे पतिआईं जा। रउरा मुरली के तान प केहु के मोहित क लिहीला आ फेन छल परपंच करे लागीला। अतिना दही मखन जियान करीला तबो केहू अनसाय ना, केहू खिसिआय ना बाकिर टाईंम अईला प रउआ एकदमे फरफेन करे लागीला! परेम के पींग बढ़ा के अब रउआ परदेश के व्यापार करे चल देलीं? हमनी के नेह में नया आयाम देल चाहऽतानीं जा आ रउरा अंगूठा धमुचा पढ़े लगलीं! ई फलटिंग कब ले चली? रउरा सिरिअसली सोचीं कि रउआ चल गईला प अतिना जुवतिन के जिनिगी अफतरा में पर जाई, सभे असहाय हो जाई, हमनी के तन-मन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रउरा से बन्हाईल बा, तनी एकरो खेयाल करीं! हमनी के देह के त दुर्गति हो जाई, केहू पुछार करे वाला ना रह जाई, जिनिगी ए सरकार: जंजाल हो जाई, जियान हो जाई! आधार बिना देवाल भरभरा के निढाल हो जाई! कवनो बात बेसोचले समझले निधड़क मत बोलीं। अविश्वास से हमनी के आँख फैल गईल बा, करेजा काँपता। डर समाईल बा! हमनी के त रउरा आँख में बईठल रहीं जा, अब कबना कारन दूध के माछी बनावऽ तानीं? नईखे बुझात! राउर नसीहत के पटी पढ़ावल बड़ी बाउर बुझाता। रउरा प कवनो अछरंग नइखीं जा लगावत बाकिर हमनी के चाहत प पानी फेरे के कुचाल मत चलीं, सभ गुह मुत करे प तईयार बानीं जा! बाकिर राउर ई जातरा से एकदमे बेसबुर बानीं जा, राउर मीठ बात से रचिको सबुर नईखे होत सरकार! रउरा पेयार के छीना झपटी नईखीं जा करत, हमनी के त असहाय हो के, हाथ जोर के निहोरा करऽ तानीं जा। जे ना कहे के तवने रउआ कहऽतानीं आ हमनीं के भीतर-बाहर जरऽतानीं, पलकन पानीं ढाँपऽतानीं, देही में आग लगा के तापऽतानीं! सभ फ़जीहतिया हो गईल! अब भाग-पराह कइले बानीं, हमनी के मतिया हेराईल बा! बिना इंजिन के रेलगाड़ी शंट हो जाई, एही जे परान सुखाईल बा, परान त हर लेले बानीं, बाँह धईला के मान राखीं! बाँह राउर धरऽतानीं जा, दाढ़ी धरऽतानीं जा, पाँव परऽतानीं जा! अबतऽ हाल बेहाल बा, अब अउरी का करीं जा! रउये में मन हरदम टंगाईल बा!

एह घरी हमनी के तीन पाढ़ के साड़ी आ रंगल झुला बैंगनियाँ सभ भुलाईल बा, अकिल काम नईखे करत! छव अंगुरी के तोई अवला ब्लाउज आ चालीस नम्बर के गंजी ढीली हो गईली स। सभ सुघरई घरे चल गईल!''

सभ गोप-गोपी के समझा के, सभ के से परेम से हिल-मिल के, बिहारी जी दूनो हाथ जोर के रथ प बईठलनआ अक्रूर जी के ईशारा आँखि से कईलन! रथ बढ़ चलल!

सभे चिचिया-चिचिया के बोलता, आपन गाल-छाती धोवता, पेयार-दुलार करे अवला, परेम के डोर बान्हे अवला, जिनिगी के भरोसा देवे अवला, सभ से नीमन अवलम्ब खोवता, छाती पीट के सभे निरंतर रोवता!

तनी दूर रथ चहुँप गईल त कुँज भवन के नियरे अक्रूर जी प ताक के रसिकवर जी पपनी नीचे कईलन! उहाँ के घोड़न के ईशारा कइलीं आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रथ धीरे–धीरे हो के रूक गईल। कुँवर जी धीमे जमीन प छउकलीं! धीमी गति से, बाकी चिहाईल आगे सरऽकलीं! ओने तीन पतई कुँज भवन के हिलली स, अचके में कुँवर जी के देखते हरियइली स, फूल पती खिलली स, कुँअरी जी प तकली स, बहुत कुछ बकली स!

कुँवरी जी मौन रह के ओने झँकली, लोर तेज धार में कंचुकी के राह धईलक! चेहरा करखाये लागल, कांति चमक भागे लागल! कुँवर जी हबकूरिए दउर के हाथ बढ़बलन त कुँवरी जी जोर लगा के दूनो हाथ कस लेली जे अब हाथ ना छोड़ब, आ जिनिगी में साथ ना छोड़ब! ऊ हाथ छोड़ा के गाल प धार पोछल चाहत रहन आ भविष्य में एकदम निरधार कईल चाहत रहन!

ई हाथ कसले रही, छोड़त ना रही, करेजा के घाव फोड़त ना रही, नाव हिलकोरा में थरथरात रहे; ई रचिको डोलत ना रही!

हाथ ना छूटल त जबान खुलल! ''तहरा कवनो चिंता–चिन्तन में कबहुँ उन्मन नईखे होखे के। बरियार डाढ़ प बानीं जा, एने–ओने छउकला से अंतर नईखे आवे के। गहराई में बानीं जा, जुदाई नईखे बुझाये के, एके हईं जा, रिहाई नईखे करावे के, कवनो अंतर नईखे, काम एक बा धाम एक बा, राधे श्याम नाम एक बा! तूँ हम, हम तूँ! तकबू त हम बानीं, झँकबू त हम बानीं, सोचबू त हम बानीं, सपना में हम बानीं, अपना में हम बानीं, कल्पना में हम बानीं, आराधना में हम बानीं, अर्चना में हम बानीं, सर्जना में हम बानीं! कँगना में हम बानीं! हे तहरा अँगना में हम बानीं!''

कुँवरी जी के हाथ ढीला पड़ गईल, सामने शिला पड़ गईल, आँख गीला रहि गईल! मुस्कान के थकान देके, आसरा के बिहान देके राह धईलन!

कुँवरी जी सोझे ताकत रही, कुँज भवन से डाढ़ हटा के झाँकत रही, कुँज भवन चीकन रहे तबो धूर फाँकत रही, तलफत आग में काँपत रही!

आपन अंतरंगा शक्ति से अवतरित होखे वाला मधुसूदन के रथ तीव्र गति ध लेलक आ हंस सुता के दर्शन भईल: दिल दिमाग में प्रिया जी के मूरत रहे धईल! विचार आ भावानुभाव में लगातारे गोता लगवले रहे से नहाये–धोवाय से मधुसूदन के देह के छूटत रहे मईल! मौन रहन, चुपचाप रहन।?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाचा जी रथ रोक के उनकरा से परेम से राय लेलन, "तनी हम नहा धोवा के शेष शायी के पूजा-अर्चना कर ले तानीं। ऊ बोललन ना, ईशारा से कहलन, पपनी गिरऽवलन। ई नीचे उतर गईलन, जमुना में धंस गईलन! अर्चना में रम गईलन! मधुराति मधुर ध्वनि में हाथ जोर के, आनंद सागर में बूड़की मार के उचारे लगलन,

"प्रिय परमात्मन! रावाँ कुल कारक के अनन्त कारन हईं, आप एकदम से अविनाशी, अचिन्तनीय, पूरा ब्रह्माण्ड के कर्ता आ धर्ता हई, भूमि, जल पावक, गगन, समीर हई, सभ करा से गंभीर हईं, अवरू अमीर हईं, अवतरित होके अहीर हईं, सभ जीवात्मा के नियमन में गहीर हईं, पापी लोगन के बात आ चिचिआहट से बहिर हईं! सभ देवी-देवता के पूजा वास्तव में राउरे पूजा अर्चना होला। ज्ञानी लोग चिन्तन से रावाँ नियरा पहुँचऽले। आर्त लोग चिचिआ के रउरा भीरी चहुँपऽला। जाने के इच्छुक लोग शोध से बोध करेला, अर्थ के अर्थी लोग भारी कूद फान के रउरा के धरऽले!

देवी-देवता, राजा-प्रजा, सभ जीवात्मा रउरे में पनाह लेला। सभ जीवात्मा के अज्ञान, भ्रम, संदेह, आ दुख से छूट्टी दिआवे खातिर राउर अवतार होला! रउरा में कतिना ब्रह्माण्ड बा, गिनती से बाहर बा। परलय के समय परगट होखे अवला मत्स्यावतार, मनदराचल के उछाले अवला कच्छप, पृथ्वी के सागर के भीतर से बहरी करे अवला बराह, दीवार फार के प्रह्लाद रक्षक नृसिंह, बली के समूचे धरती राज के तीन डेग में नापक बामन, छत्री राजा लोगन के मान मर्दक भार्गब, रावण के रोवावे वाले राम के अवतार के इयाद क के हम नत मस्तक होत बानीं।"

इहे सभ कह के नहाँ के डुबकी लगवलीं त मधुसुदन के दर्शन भईल! पानी से मुँह ऊपर कईलीं त बिहारी जी रथ प विहरत रहन, मुसुकी छाड़त रहन। फेर बूड़की लगा के परमात्मा के इयाद कईलन त बिहारीए जी लउकलन, चिहा के फेर बूड़की मरलन त माधवे के दर्शन भईल! मधुसूदन के पहचान लेलन! जान गईलन इहे परमात्मा हवन! अब रचिको संदेह भ्रम ना रहल। रथ भीरी आ के हाथ जोर के आँख मूँद के मौन हो गईलन।

मधुसूदन मुस्कुरा के मीठ स्वर में कहलन, "चाचा जी, धबराई मत। जवन काम ले के आईल बानीं ओकरा के इयाद पारीं, रथ बढ़ाई ना त मधुपुर के उत्सव में चहुँपे में बड़ी देर हो जाई, राजा नाहक नाराज होइहें आ खेल बिगड़ जाई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल्दी-जल्दी कपड़ा इहाँ के बदललनीं आ घोड़न के रास थम्हलीं। रथ गति ध लेलक।

मधुसूदन मधुपुर में परवेश कईलन! हाथ में माला लेके कुब्जा रंगोत्सव में जात रही त जल्दी-जल्दी ऊ उत्सव स्थान के राह धईले रहन। कुब्जा से आँख चार भईल। ई लहालोठ हो गईली! कमल पुष्प परफूलित हो गईल, बिहारी जी चरनियाँ मुसुकी छोड़लन, कुब्जा उनका ओरे बाँह बढ़ा के घेंघ में माला डाले के चेष्टा कईली। ऊ इनकर कमर ध के तनी ऊपरे उठा देलन, तड़ दे ना आव देखली ना ताव, माला उझुक के डाल देली, ऊ मुसुका के देरी देरी से ताकते रह गईली, उनकर हो गईली। उनकरा में हो गईलीं, आपन आपन में ना रहली, पूरा दाम प बिका गईली। ठहरे घर रहे, बढ़ चलली। उहाँ के आनंद भाव से जवरे ढुक गईलीं! मनोहारी दृश हो गईल, इनकर तन-मन निछावर हो गईल! फांड़ा से, अंचरा से गोड़ पोछली त दूनों हाथ देह ध के उठा लेलन आ फट दे अँकवारी में कस के चुमा के बौछार क देलन, बेरोक टोक हो गईलन, भरपूर गति में एकदम सरपट हो के सहक गईलन आ पूरा बहक गईलन। ई त नवीन गुदगुदी से समर्पित हो गईली। मूँद गईल पलक! खुल गईल अलक!

इनकर ठुडी कर कंज से तनी ऊपर उठा के आँख में समा गईलन!

मुसुकी मार के गाल में मईस देलन आ बोललन, महाराज के नेवता पुरावे के बा, उत्सव में, देर हो जाई, बढऽतानीं, इयाद राखब!''

बढ़ गईलन।

महल के दुमुहाँ में ढुक के, जइसे गरूड़ साँप के घसीट के टाँग लेला-ओईसहीं कुबलयापीड़ गजराज के तुरंत देख देलन आ मल्लजुध के रंगभूमि में परवेश कईलन। कंस के खेयात मल्लचाणुर, मधुसूदन से आ मुष्टिक बलराम से उलझ गईलन। दूनों जने दूनों के नानी के इयाद परा के पछार देलन, यम लोक के ठहरे राह देखा देलन।

उछल के मधुसूदन मंच प मामा कंस के पाँवलगी कइलन आ ऊ आँख तरेरलन त नीचे धंसोर देलन आ उनकरे प धम दे कूद गईलन। कंस के आँख तड़ेरा गईल, ओही घरी खेल खतम भईल!

माई-बाप देवकी बसुदेव के सींकड़ हाथ-गोड़ से कटबा देलन आ गोड़ ध लेलन! देवकी गोदी में बईठा के कस लेली। बुझाईल कि ऊ अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकरा के अपना से दूर ना जाये दीहें।

अब मधुसूदन के सामने राजकाज सजावे सँवारे, भाई बंधु परिवार के सम्हारे आ उलुटा पुलटा करे अवला सभ दुश्मन के सरिआवे के भारी बोझा उतारे के काम-काज में लग जाये के रहे। उत्सव में शामिल होखे आ हाथ बँटावे में जे हित मित्र लागल रहे ओकरा के परेम से अरियाते में ऊ लीन हो गईलन। सभ गोप आ साथी संघतिया के गला से गला आ छाती से छाती मिला के भावमय ढंग से अरियातल गईल। तुरते राज-काज से फुरसत मिलते गोकुल चहुँपे के उहाँ के धीरज धरऽवलीं।

नंद बाबा, के पाँव छू के प्रार्थना कईलीं, "बाबा हमार लरिकाईं के भूल-चूक माफ करिह! सभ ईयाद परता, अनेकन अवाटी अवला काम कइलीं, छमा क दीहऽ! मइया के दूनों हाथ जोरऽतानीं कि जइसे पोसली पलली, भुलइहें मत! एहीजा के सभ सम्हरते हम एक सूरिए दउरल आके उनका अँचरा से मुँह पोंछब! रचिको देरी ना करब! उनका हाथे मक्खन मिसिरी जली ले ना खाईब, तली कल ना परी!"

अतिने कह के फफक के रोवे लगले! लोर के तोर ना टूटे! नंद बाबा के भी आँख गीला हो गईल, गमछा से पपनी पोंछलन!

नंद बाबा भावुक होके कान्हा के कान्हा धईलन आ निहोरा कईलन, "बबुआ, जसोदा तहरा बिना, बिना मणि के फणी बन जइहें, छटपटा के मर जईहें! उनकर जियन-मरन तहरे हाथ में बा, देरी मत करीहऽ! कल परते चल अईहऽ! मईया के अतिने खेयाल करीहऽ!"

कह के नंद बाबा जीव जँतले राह धईलन। कंस के ससुर जरासंध आग बबूला होके सतरह वे लगातारे चढ़ाई कईलक आ पत वे मधुसूदन ओकरा के धूर चटा देले, तबो फेन चतुरंगिनी सेना सजावे लागल। ऊ ई सुनले रहन त सभ परिवार के साथे हँड़िया-डलिया, चुल्हा चकिया लाद के गाय-बछरू हाँक देलन। बहुत दूर, इनका पहुँच से बाहर दुअरिका में जमीन से भी ढेर दूर समुद्र में घर-दुआर, महल बनवलन आ बाल-बच्चा, मेहरारू-लईका में लागि गईलन! पारा-पारी सोरह हजार एक सौ आठ राजकुमारी लोगिन से बियाह उनकर भईल। सभ जानी खातिर एके रूप-रंग, आकार परकार आ डिजाईन के महल बनावे में व्यस्त हो गईलन, अलगे आपन डिजाईनदार घर विरज बनवलन, घर बसावे में अझुरा गईलन आ अउरी सभ भुला गईलन! चिट्ठी-पतरी के तोरे ना टूटत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे, बाकिर हजारों लाखों परिवार के माया मोह में लतर लेखा पूरा लपटा गईल रहन। (भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया)!

***

(14)

श्री प्रिया जी के जीभ जंता गईल। बोलती बन हो गईल। लोर चूए लागल। अब लोर सूखते नईखे। कंचुकी भींज के चहवोता भईल रहता। हरमेसा बरसात एहीजा हो गईल बा। अवरुओ बस्तर भींजले रह ऽ ता। लोर चूअऽता त चूअते रह ऽ ता। भूख पियास मेट गईल बा। खाये - पीए के इयादे नइखे रहत। असालतन बरसात से पिंड छूटे के कवनो उपाय़ नईखे। केकरा से के कहो आ क़ेकरा से के पूछो?

सुफलक सुत क्रूर बन गईले। एगो आदिमी रहन जे जिनिगी सिरा गईल बाकिर भिखारी के कहिया भीख देले रहन उन्हुकरा इचिको ईयाद ना रहे आ उनकर नाँव दानी बाबा रहे! ओई - सहीं ई क्रूरता के एकदम हद क दिहले। समूचे नन्द गाँव, बरसाने, गोकुल, वृन्दावन उनका क्रूरता से दिन रात रोवता, लोर चूआव ऽ ता आ उनकर नाँव अक्रूर? पता न बनारस के राजा के दमाद सुफलक ई नाँव उनकर रखले रहन कि केहू दोसर उनकर उलुटा नाँव रखले रहे, ई अचरज भरल बा।

प्रिया जी के प्रिय सखी ललिता, कम्पमलिका चाहे विशाखा आदि सभ जानी त बिहारी जी के वृन्दावन से मथुरा चल गईला से असालतन रोवते रही जा, सँउसे वृन्दावन में गमी छवले रहे त के प्रिया जी के धरहर बनो, के रोवाई बन करावो, के चूप करावो! के कपड़ा कतिना बे सुखावो?

प्रिया जी के मन ऊव चुभ में परल बा, अईसन आफत में ई कबों ना अझुराईल रही। इनकर कवनो विवेक काम नइखे करत, बड़ी भारी झमेला में पर के मन उकिल, बिकिल भईल बा, कुछुओ बुझाते नईखे। गगरी भरल खिंचाते नईखे, लोग-बाग के चोन्हा, आ गाँव-घर के मेहना अब रचिको सहाते नईखे!

बृन्दावन में जगहे-जगहे गोपी लोगिन के रोवाई सुनाता, सिसकी आ करेजा के टीस सगरो बुझाता, ओकरे से कुंज भवन में चार घरी चार पहर माथा टकराता, मन के भरोसा भहराता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेचैन बाड़ी जा, स्तन के कुंकुम धोवा गईल, सभ गहना ढीला पड़ गईलन स, आपन कपड़ा सम्हारल मुश्किल हो गईल। देह थाक गईल बा। कवनों अंग सही काम करे के हालत में नईखन स। कमल माल टूट–फूट के अस्त–व्यस्त हो गईल बा। कवनों बात के सुधि लेवे से सभे एकदमे बेफिकर हो गईल बा। होश–हवास नईखे। सभ जानी एह घरी अवरूद्ध सौरतः हो गईली जा। बेसुधपन में सभ भुला गईल बा, उदीपन–आलम्बन विभाग के अभाव हो गईल, हाव–भाव सभ लुप्त हो गईल! रोवाई खाली बा, हाहाकार सगरो व्याप्त बा!

रसिकवर जी के चुमा आ अलिंगन ईयाद करऽतारी जा। कईसे वृन्दावन में देही में लपटा जात रहन, कइसे ओठ आ छाती छू के गुदगूदी बरा देत रहन, देह एकदमे गनगना जात रहे। पुलकावली से सोझे अपने आप पटकाजात रही जा। कइसे उनकरा जवरे नाचत–नाचत आनंद में लोट–पोट हो जात रहीं जा। भाई–बाप घर–दुआर, आपन अन्हकर सभ गेआन गुम हो जात रहे, एके बे सभ जानीं हजारों के संख्या में हाहाकार करे लगली जा। राधिका जी जोर–जोर से रोवत रही। हांफ बढ़ल जात रहे। सभे त रोवते छटपटात रहे त केहू के चुप के करावो? राधिका के हालत बेहालत आ बदहाल रहे। मौन रही, कुछुओ बोलते ना रही, लोर गाल प ढरकत रहे, फरऽ–फरऽ हरमेसा सँवारल अंग फरकत रहे, फर – कइनी रहे। राधा रोवत रही आ तुलसी ओर ताकत रही! सखी लोगिन तुलसी से पूछत रही,

"तहरा त उनकरा से ईयारी बा जरूरे जानत होइबू, कहिया अइहें? फेर पृथ्वी से पूछे लागल लोग, तहरा से एकदम नियराहुत सम्बन्ध विहारी जी के बडुए, जरूर जानत होइबू, बतावऽ साँच–साँच, कहिया अइहें? हमनियों के तहरा से सखि औरा रही, तहरे गुइयाँ रहब जा! दया करऽ बताव? फेर मधुवन के रूख विरिछ से, चिरई–चुरुंग से एह बारे में बतिआवे लागल लोग। जमुना से, उनका घाट से पूछे लागल लोग, तूँ कहऽ, अब कहिया धूम धड़ाका होई? तहरो त हमनीएँ अतिना बेचैनी बा? तूँ त समदुखी सखी आ इयार बाड़ऽ! तूँ कुछ खोज खबर रखले होइब? तूँ अनटियावऽ मत। तूँ त बराबरे अइसहीं करऽ लऽ। एह दुख में ना सहयोग करबऽ?"

कम्पमलिका कहली, "बड़ी हल्ला बा विहारी जी मधुपुरी में एगो कुबरी प निछावर हो के ओकरे जवरे लपटाईल बाड़े, शोर भईल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चारू ओर एही प जीभ चलऽ तारी स, जबान जवानी प बा, सभे ताजुब में परल बा।''

प्रीति कूट के पुरन की पाठशाला के प्रधानाचार्य मुरएकिल साह के मेहरारू रोज अन्हारे – पन्हारे झाड़ू से देह झार के राजपथ प खदेरा खदेरउअल करत रही काहे कि ऊ अपना मेहरारू के छोटकी कमसीन बहिन प आँख मारत रहन आ रोपेया पईसा जीभ चटकारे के दे देत रहन, ई त सुनले रहीं जा, बाकिर विहारी जी अईसन लफंगई करिहें, एह बात प कान देके कुछ सोचल सहूर के चाल कहाई। कउआ कान ले के उड़ गईल, एह प भरोसा कईल जाला कि आपन कान टोवल जाला? ऊ अरुमा के सहूर गुरु हवन जे लइकिन के आपुस में रगर–झगर कईला प छतिए मईंस देत रहन, फेन ऊ लोगिन के रगर–झगर करे में नानी ईयाद पर जाली। विहारी जी दस आदिमी के बीच के नू आदिमी हवन, ऊ अईसन लड़कपन कबो ना करिहें!'' ललिता रूआँसा हो के सभ सझुरवली।

सभ गोपी लोगिन उनकर मुँह ताके लगली आ एह मुसीबत के धार में गहराई के थाहे लगली। फेर अछोधाह होके प्रिया जी के फफकत देखली जा त कुल जानी के लोर टपके लागल, सिसकी बन्हा गईल, विरज लोर के लहर में दहाये लागल, सभ जानी के अकिनदारी बुझाए लागल कि बे उन्हुकरा अइले ई विरज अब बूड़ जाई!

ललिता विशाखा से ना ठटाईल त कहली, आरे बिहारी जी तहरा कुल्ह लोगिन के विसार देलन, सभ हारा हँसी, रास–हास चउल मजाक रहे, लरिकाईं के धूर के घर देवांल रहे, ऊ अब जिनिगी सवाँरे में लाग गईलन, शादी–विआह क के बाल–बच्चा जनमावे आ पोसे पाले सम्हारे में लाग गईलन। रूक्मी के अनुजा रूक्मिनी के अपहरन क के प्रद्युमन्न, चारुदेष्ण, सुदेष्ण, चारुदेह, सुचारु, चारुगुप्त, भद्रचारु, चारुचन्द्र, विचारु आ चारू पुत्र के जन्मवलन।

सत्राजित से स्यमंतक मणि झटके खातिर उनकर सुन्दरी कन्या सत्यभामा के हथिया के भानु, सुभानु, स्वर भानु, प्रभानु, भानुमान, चन्द्रभानु, वृहद्भानु, अतिभानु, श्रीभानु आ प्रतिभानु अस वीर पुत्र पैदा क देलन।

एही तरी जाम्बवान से खूब लड़लन, फेन इयारी बन्हा के उन्हुकर छबीली पुत्री जाम्बवत्ती के फुसिला लेलन आ उन्हुकरा से साम्ब, सुमित्र,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरजित, सतजित, सहस्रजित, विजय, चित्रकेतु, वसुमान, द्रविड अउर क्रतु जईसन एक से एक बउँकार बेटा पैदा कईलन। अतिने ना दुर्योधन के बेटी से जाम्बंती पुत्र साम्ब के विआह रचा के दुर्योधन के समधी बनगईलन।

कोशलाधीश नग्नजित कन्या नग्नजीति सत्या के पत्नी बना के वीर, चन्द्र, अश्वसेन, चित्रगु वृष, आम, पसु आ कुन्त के जन्म देलन जेकरे वीरता से सर्वत्र चकाचौंध पैदा हो गईल। उनकर सात गो सोखाह मरखाह बैलन के नाथ देलन त गोबिन्द कहाऐ लगलन?

एकरा बाद सूर्य सुता कालिन्दी के भी पटरानी बना के श्रुत, कवि, बृष, बाहु, सुबाहु, भद्र, शान्ति, दर्श, पूर्णमास आ सोम अस दक्ष पुत्र पैदा कईलन।

भद्र देश के नामी गरामी राजा के राज्य कन्या लक्ष्मणा से प्रघोष, गात्रवान, सिंह, बल, प्रबल, उर्ध्वंग, महाशक्ति, सह, ओज आ अपराजित के जनम भईल। अवन्तीपुर (उज्जैन) की श्रीकृष्ण की बुआ की पुत्री मित्र विन्दा से भी विवाह भईल रहे। मित्र विन्दा से विहारी जी के वृक, हर्ष, अनिल, गृध्र, वर्धन, अनाद, महांस, पावन, वलि और क्षुधि नामक पुत्र जनमलन।

उनकर आठवीं पटरानी भद्रा के संग्रामजित, वृहत्सेन, शूर, प्रहरण, अरिजित, जय, सुभद्र, वाम, आयु अवरू सत्यक जुझारू बेटा पैदा हो चुकलन।

कुल्ह सोरह हजार एक सै अवरु जवन जुवती लोगिन के वियाह क के रानी बनवले बाड़े, सभ जानी से दस-दस गो बहादुर पुत्र जन्मा देलन!

आपन सभ से बड़ बेटा प्रद्युम्न के बिआह सरबेटा रुक्मी के पुत्री से आ पौत्र अन्निरुद्ध के विआह सार के पौत्री रोचना से कर चुकलन। अनिरुद्ध के विआह वाणासुर के बेटी उषा से भी भईल। बिहारी जी के परिवार अब पूरा भरल-पूरल बा। ओही में लरिकाई के कुल बात भुला के परिवार के पालन-पोषण आ देखे सुने में अझुराईल बाड़े! अब ओह में से निकलल आ चाहे ओह में से अपना के निकालल आसान अउर इचिको सहज सरल नईखे रह गईल। परिवार अब लाखों में पहुँच गईल, रावाँ सभनी अब ओह भरम में मत भुलाईं कि रासलीला करे आ रउरा सभनी के मन रखअउल करे, मन टोवे रस में चभोराये के समय मिले के चाहे समय निकाल के निकल चले के उहाँ के सम्भावना इचिको नईखे! रावाँ सभे विचार करीं, खेयाल करीं कि ऊ लईखेल करे आवस कि आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाखों के परिवार बाल-बच्चा, मेहरारू, लईका सम्हारस? अईसन ना समझ दुनिया में के डगरल चलता कि आपन तेयाग के दोसरा में अनेरिया अझुरा के बेकार समय बर्बाद करो?''

''रउरा सभनी रोंवल-धोवल छोड़ के अवहुँ चेतीं! रोवला-चिचिअईला आ पत्थर प माथा पटकला से अब कुछ उजिआये के नईखे। दू-चार हजार गोपी लोगिन से विहारी लइखेल करस कि आपन घर-बार देखस? नन्हीं चुकी बात बुझात नईखें? उनुकरा सोरह हजार एक सौ आठ रानी लोगन के देख रेखआ सम्हारल एगो अदिमी खातिर पहाड़ प चढ़े के बा, आ जेकरा अतिना मेहरारून के आ ओहनी के लईका-लईकी, नाती-पोता परपोता आ करोड़ों चेंगना-चेंगनी के घर-दुआर, कपड़ा लता, खाना-पीना, बरतन-बासन, तियन-तरकारी, चाउर-दाल, आटा-पिसान, रगर-झगर, तीज-जिउतिया, परब-तेवहार, नेवता-हँकारी, जियनी-मुअनी, उठकी-बइठकी सभ देखे-सुने, खोज-खबर, ईजत आवरू में समाईल रहे के बा! खाली अपने में ना अझुराईल रहे के चाहीं। लोगिन के मन में बिचार करे के चाहीं। उनुकरा प कतिना भीर बा, बोझा बा। ऊ बिहारी जी हो ओझा लोगिन लेखा ना हवन कि दिन भर कहावलन ओझा आ रात भर बान्हलन बोझा! निमनो आदमी उनकर परिवार के बिना तेल भेसलीन के हरमेसा कोंह काँह करे अबला मशीन में ऊख लेखा पेराईल देखी त अकिल भुला जाई, सनक जाई। सात गो-आठ गो लईका फईका बाला मरद, लरकोरी लेखा निहुर जा तारे, आ उनुकरा त पाँच दस लाख लईका-लईकी के कोरा में ढोवे के बा, धुरूव के बाप दूईए गो लरिका सम्हारे में सनक गईल रहन आ धुरुव के कोरा से उतारे परल।

ई सभ चरचा आ बतकूचन सुन के सभ के सभ सखी लोगिन, गोपी लोगिन पूँका फार के रोवे लगली जा। राधिका जी भी सभ कान दे के सुनली, लोर ढरकत रहे, कंचुकी भींजत रहे, मौन सधले रही, मन मरले रही!

सभ जानी हाहाकार करत रही। सबेरे कुल जानी नन्द-यशोदा के पाँव छूए जात रही त नन्द जी धीरज बंधावत रहन आ यशोदा चुपचाप रोवत रही! ई कुल जानी राधा जवरे रोवत रही । केहू कुछुओ बोलत-चालत ना रहे। सभे बेचैनी में रहे, बेअगर रहे, व्यथित रहे! सभके करेजा सालत रहे, सभे कपड़ा सारत रहे, सभे माछी मारत रहे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशाखा सखी बड़ी गहीर रही! सभ जानी ओर मुखातिब हो के समुझावे लगली।

''प्रीति क के केहू सुखी, सन्तुष्ट आ अनन्दित नईखे भईल। ईहे इतिहास बा। दीया से पतंग पेयार करे ला, पाँख जवरे परान पखेरू के लूति लग जाला। कमलिनी से चंचरीक रस लेबे जाले, अपना कोरा में कस लेली, फंसे अस ना फंसस, राति भर छटपट करे में पाँख कबर जाला। मृगी आवाज सुने में बेसुध हो जाली, बान प कुर्बान हो जाली। हमनी के माधव के वाँह धइलीं जा, जाये के बेरी जीभ जाँत लेलन, जियरा जरा देलन, दूना दुख में विसार देलन!''

''विरज में बाढ़ आ गईल! करिया बदरी साज सज के चढ़ अईली स, आन्ही-पानी जियल जंजाल क देलक, चातक, मोर, कोईल कपरवाह कईले बाड़े स, बिजुरी चमक के करेजा कंपावत रहऽ तीया! मदन के सेना से जुझारू जवान, सिंकिया पहलवान अस अखाड़ा से भाग-पराह कईलन! अब फउज के सम्हारी, के लोहा लीही? ''

''देखऽ जा, फेन मोर बोले लगलन स! हमनी के प्रियतम परदेश परऽईलन, सभ अदिमी अकसरुआ हो गईलीं जा, चातक, मोर, चकोर, पपीहरा, कोइलर सभ चोर जुट गईलन स! हमनी के त जियरा जरतीया, करेज में बाती बरऽतीया, परेशानी गेयान हरऽतीया माथा प बाना फरऽतीया।''

''ए सखि! पपीहरा हमनी के जिअवले बिया। रात मे पिय, पिय रटावत रहऽतीया, प्रितम के ईयाद परावत रहऽतीया! सुन्दर कंठ से अमृत रस के पान करावऽतीया! हमनी के, विरहिनी के ईयाद तरो ताजा करावऽतीया, पर काज के, पर उपकार में रात बितावऽतीया!''

सभ गोपी लोगिन, सखी लोगिन प्रिया जी से सलाह मशविरा क के रसिकवर जी के पांती लिखे लगली जा।

''प्रियवर जी, हमनी के रउरा एक ईशारा प सबकुछ त्याग देलीं जा! गाँव-घर, भाई-भौजाई, माई-बाप, बेटा-भतार, लोग-बाग, आपन सभ छोड़ दिहलीं जा। हमनीं के सभ कुछ इहाँ तक ले कि आपन देह धाजा भी अब त राउरे छोड़न रह गईल, हमनी के आपन अब किछुओ ना रहि गईल, सभ रउरे हो गईल। रउरा अनभिग्य नईखीं, सभ जानऽ तानीं! हमनी के रउआ बेसाह लेलीं, किन लेलीं! त अब हमनी के केकरा भीरी जाईं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केकरा से कुछ कहीं सुनीं? रावाँ बताईं? हमनी चारु ओर से, देश-दुनिया से हट गइलीं जा, सभ करे से कट गईलीं जा जहिया रउरा से सट गईलीं जा! जवन बात रउरा समझे के चाहीं ऊ अब अफतरा में पर के हमनी के समझावे के परऽता, ईयाद पारे के परऽता। अईसन बुझाता जे रउरा अबोध लईका बानीं, बे गेयान के, बेशहुर के बानीं! रउरा तेरह के पहाड़ा पढ़ीला आ ईहे नव-छव ना जानीं? काहे अनटिआव तानीं, हमनी के इचिकों नईखे बुझात! अफतरा में परला प अदिमी के परीछा होला, पहचान होला, के आपन ह आ के आन्ह ह?''

अब कवना दिन -रात खातिर रउरा बानीं, हमनी के कवन इम्तहान ले तानीं? विरह के आग में जरऽ तानीं जा, जरीये जाइब जा त आ के का करब? कतिना दिन धीरज रखीं जा? धीरज के कवनो कियामत नईखे! हमनी के आँख के सामने अन्हार भईल आवता। अब रउरे प भरोसा बा त ईहो भरोसा के तार टूट त जाता! अब एकदम बेसहारा हो गईलीं जा, अब तनिको नईखे ठटात!''

''आछा, रावाँ कहीं, का कहले रहीं जाये के बेरी? अतिना जल्दी भुला गईलीं, हमनी के ईयाद पारे के परऽता? हमनीं के जानऽ तानीं जा रउरा भुल्लकड़ ना हईं! रावाँ जान बूझ के एहतरी अनटिआवऽ तानीं। हमनी के का कमी कईले बानीं जा? हमनी कें त रउआ के हाथे हाथ धईले चललीं जा, कवना कसूर के बदला ले तानीं? अपना बुझईला भर में कवनो कमी नईखीं जा कईलें? रावाँ कादो एगो कूबड़ी के फेरा में पर आँख मिलऽउअल करऽ तानीं! सुने में आईल ह कि कवनो कूबड़ी के पाछ धइले बानीं। ऊ कईसन बिया आ कवना तरी रावाँ के बझऽवले बिया। रावाँ तो बहुत चतुर चलाँक हईं, ओकरा बाँह में कइसे बान्हा गईलीं? हमनियों के बुझाता कि ऊ कउड़ी कमेछया के नैना जोगिनी से सीख लेले होई आ एहतरी रावाँ के सुगा बना लेलक! नैना जोगिनी के मन्तर के परचार बा, हमनियों के ई सुनले बानीं जा। रावाँ रचि मनी हमनी के जना देब त हमनी के जुट के उन्हुकरा के झोंटा-झोंटी करे में देरी ना लागी! रउरा के तुरते दू-चार के गिनती करे करें में छोड़ा लेहब जा। हमनी के त अइसहीं बूड़ऽ तानीं जा, अपना रहला गईला के कवनो फिकिर नईखे। हमनी के अइसहीं पाँख कबर गईल बा, अब पोंछ उखाड़ होखे के कवन डर बा? रउरा आँख के कोर निहारऽ तानीं तानीं जा, तनी मनी में उन्हुकरा के ममोर के झपलिया देब जा!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बाकिर एगो अउरी नया बात सुने में आईल बिया! कादो एगो–दुगो ना, ओहिजा दुअरिका जी में अउरी दूर भाग के सोरह अठारह हज़ार रानी बनवले बानीं? दू–चार गो ना एके में सोरह हजार लइकी रउरा कहाँ भेंटा गईली स? आ सभ के सभ जिला जवार के लइकिन के अउरी एको मरद मधुपुर से दुअरिका तक ना भेंटइले, कुल भछनी, राँड़ी, रउरे खातिर दुबराईल रही स? रउरे पाँछ ध लेली स आ रउरा लेखा जवान मरद जे सभन प पसीज गईलीं! सभ आँख मूँद के राउर चेरी बन गईली स? रावाँ लेखा दोसर एको डँटीगर आ सोखाह मरद सैकड़ों कोस तक ओहनी के ना लउकल? कईसन घिनाबन रही स जे कवनो दोसर मरद ओहनी प ना पसीजले आकिर सभ मरद प बजर पर गईल रहे? आरे सत्राजित, भौमासुर, शिशुपाल, पौन्ड्रक, विदूरथ, रोमहर्षण, दन्तवक्र, द्विविद, बल्बल, कुल्ह के कुल्ह बीर के मर्दानगी ओरा गईलं आरे रउरा के सतरह बे पसीना–पसीना क देलस आ गाँव छोड़ा देवे वाला जरासंघ ओहनी के ना भेंटाईल गलबाहीं करे अवला, रउरे सभनी के एगो मरद मिललीं? बड़–बड़ भूत कदम तर रोवे आ मूआ माँगे पूआ? अतिने मर्दानगी बा त हमनी से आँख लड़ा के, काहे चुहानी में लुका गईलीं, कहाँ बहादुरी बिला गईल, कहाँ चतुराई भुला गईल? जेकरा अपना बात के पानी नईखे ऊ अतिना लोगिन के पानी राखी?"

"महाराज जी, रावाँ रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बबती, सूर्य कन्या कालिन्दी, अवन्तीपुर (उज्जैन) के राजा बिन्दा, अनुबिन्द के बहिन मित्र विन्दा, कोशल राज नग्नजित की पुत्री सत्या, आपन बुआ श्रुतकीर्ति कन्या केकय राजकुमारी भद्रा आ मद्रास नरेश के राजकुमारी लक्ष्मणा से विआह क के सोरह हजार एक सै रानी लोगिन से ऊपर आठ गो पट रानी बनां के काम भोग के रस में बूड़की लगा के राधा रानी जवरे हमनी सभ गोपी के एकदम लतार देलीं। दुनियादारी इहे ह? एकरा से केहू बाँचल नईखे। एही दुनियादारी में रावाँ जोरवा के बन्हनवाँ लेखा हो गईलीं! 'तत्रैव गच्छ .... पूर्व बन्धो श्लथायते' अवली द्रौपदी के द्वारा अर्जुन के फटकार सुनले बानीं जा, जे सुभद्रा से आँख मिचौनी कईलन आ अपहरण क के ले अईलन त कहली, 'ओहिजे जा जहवाँ शाश्वत वंश अवली सुभद्रा बाड़ी!'

अर्जुन पूछ बईठलन, 'ई काहे, तहरा भीरी ना हम आईं? ' ऊ कहली, 'झूठपुराई मत करऽ, इ रसी के बन्धन के फेन से हुमच के बान्हल जाला त पहिलका बन्हन ढीला पड़ जाला!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब का बाकी रहि गईल बा? सभ गुड़ गोबर हो गईल। हमनी जवरे कतिना लाड़ लड़वले रहीं रउरा, सभ अदहन के फेन लेखा बहरी फेंका गईल, एकदम जियान हो गईल! जे गईल से गईल, रावाँ त पाँचों अंगुरी घीवे में बा, रावाँ बेफिकिर हो गईलीं! रंग में रंगा गईलीं!"

"दोसरा के मरला-जियला के कवन फिकिर बा? मरबऽ चाहे जियबऽ गईला घर के कवनों लेखा बा? का करी लोगिन? रो-धो के अपने शान्त हो जाई लोग!"

प्रिया जी सभ चिठी पढ़त रही धेयान से आ टुकुर-टुकुर देखत रही। ई चिठी के मजमून देखि के जीभ जँतली आ जोर से हाँफे लगली, लोर झरऽ-झरऽ गिरे लागल! देर ले ताकते रह गईली। बोलती त उन कर बन बा त बने बा। देह के भी कवनों फिकिर नईखे। बराबरे रोवाईन-पराईन दुर्दशा? खाये-पिये, बोले-बतियावे के, सभ छूट गईल। साँचों रसिकवर जी के विना जिनिगी झार बन गईल! कुछुओ निमन नईखे लागत। कुछुओ करे के नईखे, कुछुओ धरे के नईखे। कुछुओ कहाते नइखे, कुछुओ बुझा ते नईखे! कुछुओ सुनाते नइखे, सहाते नईखे, कहला बिना रहातो नईखे! जियरा जरऽता, भितरे दिया बरऽता! आग लाफ मारऽता, करेजा कारिख बनता! जीभ में जान नईखे, जियला के मान नईखे, आँख के कान नईखे!

गोकुल के राहगीर लोगिन से बात मधुपुर में चहुँप ऽतीया। पाँती आग के चिनगारी के कहानी कहऽतीया। वृन्दावन के पतझड़ से पता उड़िया के अन्हड़-झगड़ के जोर से सगरो छितरा जाता। विरहाग्नि के दंवक विहारी जी के अवांढ़ जरावे लागऽतिया। बेचैनी से उकिल-बिकिल हो के उपंग सुत के खोजऽ तारे।

"दोसरा केहू से ई काम फरिआए अवला नईखे! ब्रज, तुरते बिना देर कईले जा, गोकुल बूड़ जाई त जाके का करबऽ? सभ आग के आँच में जर जाई, राख हो जाई, त गईला से का होई? अपना गेआन के गगरी से चिनगारी बोतावऽ! खोज खबर ले आवऽ। जब से हम मधुबन अईलीं, फेर केहू ना गईल! गोकुल, वृन्दावन के राधा कुल गोपी जुवती, अतिना चतुर, चालाक आ समझदार बाड़ी कि तहरा बिना दूसर कोई ना बुझा समझा सके। एक तो उद्धव, तू परम प्रिय मित्र हवऽ आ दूसर कि तहरा लेखा परवीन के बा जे ओह लोगिन के भरोसा करा के पेयार के पाठ पढ़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सके? ओह लोगिन के पियार के भरोसा टूटत होई। तुरते वापसी के भरोसा दे के सभ तरी समझा बुझा के चल आईल रहीं! एहिजा राज काज सम्हारे सरिआवे आ परिवार के जंजाल जान छोड़त नईखे! विरह के आग में ऊ अदिमी तलफत होइहें, फफोला से छछनत होइहें। तूँ चहुँपऽब त लोगनि के ठंढ़ई भेंटाई, आग के आँच नरमाई, शान्ति मिली!''

श्याम के ई सभ बात सुन के उधो जी भीतरे संतुष्ट भईले। उनकर आज्ञा मान के जाये खातिर पगरी बान्हे लगले।

विहारी जी गुोकुल के सभ करनी धरनी ईयाद पार के बना के पाँती लिखे लगले। मइया के पाँव लगी करिहऽ! सभ गोप आ गोवार सखा लोग से मिल-मिल के कंठ लगईह। अवरू वृज नर-नारी से प्रेम पूर्वक मिसिरी घोर के मीठ बोली बोलिहऽ। अईसन जोग के पाठ पढ़इहऽ कि ओह लोगिन के अटपटाह मत बुझाय। तूँ त महान गेयानी हबऽ, गेयान के राह धरा दीहऽ! परा शक्ति के पहुँच करा दीहऽ! कुल लोगिन के आत्म गेयान हो जाय। तूँ त पढ़ावे के टैक्टीस सभ जनबे कर लऽ। देव गुरू के चेला हवऽ। तहरा के ढेर का सीख देवे के बा? हमार पाँती अपना हाथे दीहऽ आ जसोदा मईया के कहिहऽ कि रोज दिन-रात कबो ओह लोगिन के ना बिसारी ला! सभ राज काज सँवार के बड़ी बेताबी से ओह लोगिन के पाँव छूअव! ''हमरा मइया दूध पिया के अइसन सेयान कईले बाड़ी! नन्द बाबा आ जसोदा मइया हमार लरिकाई के सभ गलती माफ क देत रहे लोग। हम त अबाटी रहीं!''

''राधिका कहीं खटिया धईले होइहें, अड़ान-पड़ान बदहोस होइहें, देह सूख के कांटा भईल होई! चिरई अस सिंकिया गईल होइहें, देही में मांस ना होई, नाड़ी लउकत होइहें स, बहुविध, समझइहऽ, हम तुरते आ के सभ बात बताईब, कहिहऽ कि हमरा भूल के ऊ ना समझिहें त दूसर हमरा प के पतिआई? हमार भीर ऊ जानऽ तारी, अकुतइहें मत! हम उनकरा से भीर कम होते भेंट करब! हमरा उनकरा में कवनो अन्तर नईखे!''

''हम, राधिका, तहरा से कबहुँ अलग ना होखीं, हरमेशा तहरे जवरे रहीला! दिन होखे चाहे रात, अन्हरिया होखे चाहे अंजोरयि, सूतला में चाहे जागला में, एहिजा चाहे ओहिजा, मधुबन चाहे वृन्दावन, हम हरछन, हर घरी तहरे जवरे रहीला! तूँ त सभ बात जानऽ तारू, तहरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के जादे का, आ कतिना बतावे-समुझावे के बा? तहरा बिना त हम छनों भर कतहीं ना रह सकीं । तूँ ही हमार देह हऊ, अंग हऊ, हमार मन हऊ तन हऊ, तूहीं हमार बुद्धि हऊ, तूहीं हमार आँख हऊ,कान हऊ, जान हऊ, जहान हऊ! तहरे जवरे आईला, जाईला, सूतीला-जागीला, हँसीला-मुसकाईला, तहरे जवरे गाईला आ सभ के भाईला, रंगाईला, नहाईला-खाईला, हरदम जग जगाईला, कबो ना भरमाईला? तहरा जवरे तहरा सखी लोगनि के, गोपी लोगनि के सुनीला, सुर्नाला, समझीला-समुझाईला, सहीला-सहाईला आ भाव के अभाव होला, गते से पराईला?''

पाँती सभ सरिया के आ पंडित के बड़की पगरी बान्ह के बड़का घोष व्यापारी उधो जल्दीए गोकुल गईलन आ नन्द जसोदा के पाँवलगी कईलन। नन्द जी आशीरवाद दे के ऊँचका पीढ़ा जवन उनकरा विआह में ससुरारी मिलल रहे, ओही प असनी दे के परेम से बईठवलन। मीठा पानी के बाद समाचार के विचार उत्सुक हो के पूछे लगलन, कूला कलाली के बाद कन्हा के खान-पान उठकी-बईठकी, रहन-सहन जाने समुझे के चर्चा कइलन। सभ जाने खातिर बेअगर भईलन।

जशोदा जी बइठ के चूपेचाप धेयान से सुने में मगन हो गईली, जियरा के आग के आंच नरमाये लागल, बरफ लेखा ठंढाये लागल। बल बुझाए लागल, कल परे लागल।

उपंग सुत चरचा बढ़ऽवलन, ''श्रीकृष्ण बड़ी भावुक हो के कहलन, जसोदा मइया, ठीक से रहिह। हम आ हलधर भइया चार-पाँच दिन में आइब जा। हम जहिया से तहरा से विछुरल बानीं, केहू कन्हैया ना कहलक ह? सबेरे के कलेवा के त किरिया हो गईल? साँझ खानी गइया के दूध सपना हो गईल? हमार बँसुरी सम्हार के रखिहऽ, ना त अबेर-सबेर राधिका ओकरे जवरे कुछ खेलौना चोरा के भाग जइहें। नन्द बाबा से कहिहऽ, कतना 'निठुर' हो गईलन, मधुपुरी में चहुँपा के तब से कवनों खोज खबर ना लेलन, मखन-मिसिरी भेजे के तो अलगे बात बा? मइया व्याकुल मत होइहें। तहार कतिना नाँव इयाद करीला कि दूध पिया के सेयान कइलू? नन्द बाबा से कहिह, दूनों जने दुखी मत होखस। धूमरी आ धवरी गइयन के खेयाल करीहें। मथुरा में हाथी घोड़ा, धन-दौलत अफरात बा। तहरा बिना किछुओं सोहाता? ब्रजबासी लोगन से तुरते भेंट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क के जियरा जुड़ाइब! हमरा से कन्हैया इहे कहले बाड़े कि हमरा मइया से मिलीह आ कुशल-मंगल जनऽईह, बाबा नन्द जी के पालगी क के गोड़ धरीहऽ, बार-बार, जहिया से हम मधुवन अईलीं, तूँ तनिको खोजलऽ ना, हम कइसे बानीं, कइसे जिनिगी कटऽता? किरिया खा के कहिहऽ काहे 'निठुर' बन गईले? कहिहऽ बलराम-श्याम अब अइहें! यदुराई, से कहिहऽ कर्म के रेख ना मिट सके। विधाता इहे संजोग लिखले रले हा। माखन भोग तज के मधुपुरी आवे परल! हमरा से कहलन, तू हमार हितैषी हवऽ, बालक जानि के राजा डरे हमरा के एहीजा पठा देलन!''

कुब्जा हमरा के एहीजा आवत जनली त अपना महल में बोला के पाँती लिखली, ''राधा आ गोपिन के बड़ाई लिखले बाड़ी, हमरा प अपराध लगावऽ तारू जा, हमरा प त उहाँ के अनायासे किरिपा क देलीं, रउरा सभे हमरा प दोष मत लगाईं जा, हम कोरा में नइखीं कसले! ''

उधो जी, हमार ई, पाँती राधा के हाथ में दीहऽ। हम सुनत बानीं जे ऊ होत प्रात हमरा के गारी देली। हम नईखीं फँसवले, नन्द नंदन राजा हो गईलन, एह से नन्द गाँव जाये के भुला गईलन! हमरा कूबर प काहे लोगिन नाराज होता, आँख देखावता? लरिकाईं से जसोदा मखन चखा के रसरी में बान्हत रही। जसोदा आ गोपी सहित राधिका उन्हकर हजूर बनल रहे लोगनी? अनजान नईखन, बहुरी ब्रज जइहें।'' राधा से कहिहऽ, ''श्याम जी जइसन हमरा लूल लंगड़ प किरिपा कइलन, अइसने किरिपा उहों हमरा प करिहें! करत रहीहें! तूहीं देखऽमन में गुनऽ, बिना तप के हमरा काशी भेंट गईल! हमरा प का खिसिआए के बा, हम त राउर दासी हईं! तूँ त उनकर अर्धांगिनी हऊ, बूझऽ, ओहिजा काहे नईखन जात!''

राधिका से कहिहऽ, ''काहे के एहीजा आवे देली! अब का पछता तारी?''

एही बीच में गोपी लोग में शोर हो गईल, कान्ह अस एगो अउर अदिमी मधुपुर से आईल बाड़न! तुरते गोपी लोगिन के मेला जम गईल, रेला हो गईल, राधिका जी भी चहुँप गईली!

ऊ चरचा बन ना कईले, ''राधिका काहे के हमरा प तोहमत लगावत बाड़ू? हम त कूबरी हईं, तूँ लामा डाँटी के लमहर डँटीगर छरहरा बाड़ू! दुखी मन से हमरा के गारी दे तारू, हमरा तहरा में जतिना अन्तर बा, बनवारी से छिपल नईखें! मधुप हवन, जहाँ रस मिली ओही जे मुरली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टेरीहें! जवना रस के केहू चीख लेला ऊ फीका हो जाला! एगो कुँवर हमार हरण क के जस ले लेलन, तहरे चलते हमार रस भंग हो गईल, तूँ इयाद पर गइलू! तूँ सभ जानीं गँवार अहीरिन हऊ? रस चातुरी के पाँजरा ना चहुँपबू! हम तहार निहोरा नईखीं करत, एगो मरद के कब्जा ना कइलू त कुब्जा के गरियावऽ तारू? एहीजा विधाता भी ना चहुँपस, जेकरा गोड़तरिया रहि के कमला निरंतर कमाल करऽली!''

''तूँ गोकुल जा तारऽ पाँछा क के गोपी लोग से कहिहऽ, आपन माता पिता देवकी बसुदेव के नेह में पर के श्याम जी मधुपुरी अईलन, ना तऽ कन्हइया तहरा लोगिन के ना प्रीतम हवन, ना जशोदा के जामल! अपना जियरा में देखऽ समुझऽजा, उनकरा के का सुख देले रहू जा? बन-झाड़ के फिफिहिरी क के सुगा बना लेले रहू जा, पिंजड़ा के सुगा! मोका पा के तोता उड़ उड़ गईल! तनी मनी दही देखा के जसोदा रोज ललचावत रही, तोहनी लोगिन छेछिया के छाँछ खातिर दिन-दिन भर नचावत रहू जा! राधिका, बेचारे के पानी पिया देली से तू लोगिन अनजान नईखू। ओही लाजे मोहन ब्रज तेयाग देलन!

राधिका जी से कम्पमलिका, ललिता आदि सखी लोग दउरल जाके खबर कईल कि श्याम जी आईल बाड़े! बड़ी शोर बा, ओईसने रथ आईल हा ओनहीं से आईल ह! जईसन रथ प सुफलक सुत आईल रहन। ओइसने धाजा-पताका आ घरघराहट के आवाज रहे। जवना राह से कान्हा आवत रहन ओही राह से गोपी लोग के हर्षातिरेक में बूड़ावत रथ आईल ह! जसोदा के घर भीरी रथ पहुँचते भारी जाम लागल बा,लालू जी के महारैला हो गईल बा! हल्ला बा कि अकेले श्याम पधरले बाड़े! जे गोपी जहाँ सुनऽता ओहिजे से हबकूरिए दउर परता! पानी बिना तरसत मृगी सभ जरत रली ह जईसे बरखा होखे वाला बा! सभ गोपी के देह में पुलकावली छा गईल! सभे गदगद बा!

उपंग सुत उधो के देखि के सभ जुवती मुरझा गईली! कन्हइया ना हवे उनकर संघतिया हवे, जान के सभ जानी निराधार हो गईली, सूख गईली! नयनन से नीर बहे लागल, रोवते बतिआवे लागल लोग कि ओइसने मुकुट, कुन्डल, आ पीताम्बर धारन कईले बाड़े!

आछा भईल कि कुशल-मंगल पूछे खातिर संघतिया पठवले। आपुस में बतियावऽ तारी जा कि हमनी के ईयाद कईले! श्याम जी उजर पाँती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेजले बाड़े, परबोध भईल, मन में कान्हा से इनका रूप रंग आ ठाट-बाट क तुलना करऽ तारी जा ! ''ईहे उनकर सखा हवन, सुनीं जा का कहऽ तारन? हरि के नीमन संदेश दीहें, सुने के चाहीं!''

इनकरा रथ के घेर लेली जा! जशोदा अपना महल में लिया के आव भगत कइली। पूछे लागल लोग, ''कबहुँ गोपाल जी हमनियों के सुध लेले? अपने अस साज आ ठाट बना के रावाँ के भेजले बाड़े,अपनेअस विश्वास घात करे के रावाँ के सीखवले बाड़े?'' सभ गोपी इनकर परदछिना क के उनकर कुशलात पूछऽ तारी।

''रउआ अइलीं, आच्छा कइलीं! किरपा कईलीं! अब उहाँ के सिखावल -पढ़ावल बात कहीं! आपन नीति जनाईं?''

उधो समझवले खूब जोर देके,

''उहाँ के पाँती देले बानीं, जल्दीए आईब चार-पाँच दिन में, कंस के मार के नाना उग्रसेन के राज देलीं आ सभ साज सजा देलीं, अब जादे भीर नईखे। अउरी तुरते उहाँ के आ के एहीजा मिलब, बात-विचार होई!''

गोपी लोग पूछता, ''अपने हाथे पाँती लिखलन हँ? अपने कूबरी के अधिकारिनी बनवले बाड़े आ हमनी के नीमन संदेश भेजऽ तारे! हमनी के जोगिनी बन जाईं जा, ऊ रंग में बूड़ल बाड़े! हमनी के उमर ओरा गईल? उनकर पाँती के पढ़ी? एहीजा आग के चिनगारी लाफ बिगऽता! हमनी के अबला के सामने गेआन के गीता झारऽ तारे आ अपने कमल अस चेहरा, कमल अस हाथ पैर, आँख, सभ कमल बनबले बाड़े त कवना तरह से भँवरा अनुराग छोड़ दी? कतिना होशियारी करऽ तारे? रावाँ एहीजा आके निर्गुन के नीमन पाठ परसतुत करऽ तानीं!''

पता चलल, श्रीकृष्ण जी आपन सखा उधो के सन्देश देके भेजले बानीं त गोपी लोग एकांत स्थान में उनकरा के ले जाके बईठावल, आसन देके, मुक्त होके सवाल करे लगली जा। बतीआवे लगली जा,

''हमनीं के जानऽ तानीं जा, रावाँ श्रीकृष्ण के जिगरी संघतिया हईं! एही से ऊ अपना माई 'बाप के हाल-चाल जाने खातिर आ एह लोग के खुश करे खातिर रावाँ के भेजले बाड़ें। कतिनो केहू तेयागी होई, माई बाप के ना छोड़े। साधु सन्यासी भी परिवार के चिन्ता रखऽ ला। अवरू वृन्दावन से, कुँज भवन से उनकरा अब कवनो काम नईखे! ऊ अब नगर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवासी हो गईलन, चमक–दमक में रहे लगलन, अब गाँव के डगर प गोड़ में घूर लागे के डर बा, गाय–गोरू भीरी पीताम्बर जवरे अपनहूँ देह लेटा जबइन!''

राधिका के सखी कहली जा, ''भौंरा फूल भीरी तबे जाला, गुनगुना के मनुहार आ निहोरा करेला जब ओकरा पराग के लूटे के होला, ओकरा अपना काम के मतलब रहला, फूल मउरा तारे कि सूखऽ तारे, अपने जानस, जीयस, सम्हारस! मन भर गईल त फूल से का ताना–बाना अनेरिया बूने के बा! पेआर करे अवला के धन ओरा गईला प कोठा वाली दूरदूरा देली! कन्हइया नाया उदम नईखन करत। ओहिजा गोड़ हाथ करे अवली कुब्जा मिलिए गईल बिया! लईका पढ़ के पास हो जाला त पाठशाला में गईल बन क देला। गुरू जी से साटिकफिटिक लेके गोड़ लाग लेला! आपन मन तृपित हो गईल त हमनी ग्वारिन के जोग सिखावे लगले, राधिका जी के हरछन गोड़ के अंगुरी चूमत रहन, अब कुब्जा के पिछुअवले चलऽ तारे! जग करावे अवला बाभन जजमान से दछिना पावला के बाद जजमान के तेयाग देले। अतिथि भोजनोपरांत खिआवे अवला के पाँछ छोड़ देला। जंगल में आग से घास के जर गईला प मृगी ओने झँकबो ना करे। ओइसहीं मरद प्रेमिका से मन भर गईला प दोसरा डाढ़ में लपटा जाला।''

राधा रानी से कन्हइया अतिना सट गईल रहन कि दूनों जने दू देह एक परान हो गइल रहन! एह से उनकर चर्चा में ओह हद तक मगन हो गईली कि एगो भँवरा गोड़ भीरी गुनगनाईल त ओकरा से बतिआवे लगली! उहो कन्हइया लेखा करिया रहे। पियर रंग लपेटले रहे आ उनकर मुरली अस गुनगुनात रहे?

राधिका जी जनली, श्रीकृष्ण गुनगुना के मोहऽ तारे ई बतिआवे लगली, काहे कि उधोजी भी ओइसने रूप में रहन। एह से ओकरा से बोलली,

''तूँ उनकर सेवक हवऽ आ दूत बन के आईल बाड़ऽ! कान्हा एगो ग्वारिन के संग धईले रहन त उनका हार प कुमकुम लाग गईल रहे। उहे कुमकुम त तहरों मुँह प लागल बा, तू ओही अंहकार में बाड़ऽ। उनकर सन्देश ले के आइल बाड़ऽ, हम आपन गोड़ छूवहूँ ना देब! तूँ बे भरोसा अवला मालिक के छली प्रपंची दूत हवऽ। हमरा तहरा संदेश खातिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेचैनी नईखें।'' उधो के सुनावे आ चिढ़ावे खातिर एह तरी बोलऽ तारी उनका के कन्हइया अस समझली छलिया!

कहली, ''छलिया छल के आ परा गईल, मुरली कहाँ दो गईल, अब तूँ गुनगुनाये अईलऽ ह, हम अंगूरिओ ना छूवे देब! उनकरे लेखा एगो फूल के पराग लेके दोसरो फूल के दुआरे रिझावे के कोशिश करे लागऽ तारऽ! ओकरो रस ले के तड़ दे उड़ जातारऽ, हम पहिचानऽ तानी! उहो अपना ओठ से रस पान करा के परा गईलन, अब तूँ बड़ भारी गेयान के गठरी ले के आइल बाड़ऽ! लक्षिमी लेखा हम लपटाइब ना, हमरा से चिन्हा गईले? तूँ उनकर बड़ाई क के ईनाम लेल चाहऽ तारस त एहीजा दाव ना लागी! ऊ सखा से सखियारो क के क गो सखि बनवले बाड़े। एहीजा तूँहू चिन्हा गईलऽ, कवनो परपंच ना चली। का तहरा बुझाता कि हम फेन उनकरा पर भरोसा करब जे सभ सुख चैन आ धन ले के परा गईल आ एकदमे विसार देलक! हमरा भीरी अब कवन धन बा जे लूटे अईलऽ ह? ओहिजा कुब्जा छूवे ना देत होइहें त फेर हमनीं के टोवे खातिर तहरा के पठवलन हँ, लिया आवऽ जे फेन रस में हाथ चभोरीं? सभ बुझाता, अतिना बउराहिन का बानीं? उनकर त मनोहारी मुस्कान बा, कतहीं कवनो जुवती के पाँछ ध लीहें, लम्पटई, करे लगिहें त झूठपुराई करे के तहरा के का पठवलन हँ? क गो दाव जानऽ ले, उनकरा का अभाव बा? उनकर अब आगे बात मत बतिआवऽ! मन मोंह में परे लागता!''

मधुप ओहिजा से उड़ गईल त चिन्ता में प्रिया जी पर गईली, ई त जाके सभ कही आ भारी दुखी होइहें एही तरी सोचते होश भागे लागल, मौन हो गईली, आँख झँपा गईल, चेहरा मुरझा गईल!

उधो जी सभ गोपी लोगिन के उत्कर परेम देख के विमोहित रहन बाकीर गेयान देवे शुरू कईलन, ''श्रीकृष्ण खातिर तहरा लोग के बेचैनी बा, बेअगरता बा, छटपटाहट बा, हम समझ सकऽ तानीं, बूझऽ तानीं, अच्छा होई, कि परमात्मा के प्रेम में लगतू जा, उत्सर्ग करतू जा त कल्यान हो जाईत, उद्धार हो जाईत आ मुक्ति मिल जाईत, मोक्ष मिल जाईत! दुनियादारी से दूर हो जा, परमात्मा में लीन होके, जागत-सोवत तन-मन -परान उनकरे के सउँप द जा, सभ दुख दर किनार हो जाई, परा जाई! अपना के उत्सर्ग क द जा! दुनिया के मोह से छुटकारा हो जाई! तहरा लोगिन के अन्तरदशा से परिचित हो गईलीं। अब असावधानी के तेयागऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा तबे मोक्ष मिली! पुनर्जन्म से जान छूटी! परात्पर जोति आ प्रकाश में पहुँचला प सभ चिन्ता, दुख, दर्द, टीस, फिस हो जाई! नवलता के सुन्दरता से आत्मा अपने आनन्दित हो जाई! अदभूत अलक्ष्य ना रह जाई, असंभव संभव हो जाई, आकाश पुष्प अपने प्राप्त हो जाई! सचमुच संजीवनी मिल जाई! सौरत रस के आसव के खुमारी मिटते रसानन्द, परमानन्द में आत्म विस्मृति अनुभूत होई आ परात्म से आवद्धवक्ष हो जइबू जा! अनतरंगता में बूड़ के अतरंजित व्यंजित हो जाये के बा! अनुराग के उच्चतम स्थिति में पराकाष्ठा में पहूँच हो जाई, प्रयोजन प्राप्त हो जाई, व्यथा बिलुप्त हो जाई, सालोक्य आ सारूप्य समीप हो जाई!''

सभ गोपी लोगिन एके बे खिसी में तीसी पीसे लगली जा, जोर से, चिचिया के पूछे लगली जा,

''उधो जी रावाँ बताईं ओह निर्गुन के बरहम के, के बाप ह? माई उनकरो जसोदा लेखा हई? कवना देश के बासी हवन? जेकरा के रावाँ कहऽ तानीं ऊ हार पहिरऽलन? उनकरो हार दोसरा गोपी के कुमकुम से लाल भईल रहला? ऊहो पारा पारी सभ गोपी भीरी जाले? विहारी लेखा रस लम्पट हवन? दही खा के मटकी फोरे अवला हवन? रस लोभी बन के लाँगट-उधार ना नूँ करीहें, झाका झूमर क के, रगर-झगर ना नूँ करीहें? ऊ अंकवारी में ना नू बनिहें? सभ बात बता दीं कवनो सक सुबहाँ, नइखे नूँ? करीअऊ लेखा अबाटी ना नूँ हवन, बरजोरी ना करीहें? नहाइब जा त लूगा-झूला ले के परइहें ना नू? उनको जवरे कउल करार करे परी? उनकरो लहरावल आग में जरे झुलसे परी? छलिया ना नूँ हवन? भरोसा अवला आदिमी हवन नूँ? रोवा-रोवा के मुअइहें ना नूँ? कवनो आन्हर लंगड़ मेहरारू के मेहररूई बाझ में, चूमा-चाँटी में फंसीहें ना नूँ? उहो हमनी से गोड़परीया करऽइहें? उहों नव नतीजा करीहें? उहो नव के पहाड़ा पढ़िहें! अंगूठा-धमूचा पढ़ल बाड़न? रास रचा के, राधिका के कन्हइया लेके कन्हइया लेखा छलीहें ना नूँ? आधरतिया में बाँसुरी प सारंग, धनाश्री, कल्यान रामकली, गौरी, केदारो, आसावरो, विलावल, मलार, गुंडमलार आ मारू के राग छेड़ीहें ना नूँ? रोज प्रतिरोज दान घाट प दही खातिर चोन्हा करिहें? कुँज भवन से अस्नान कुँज में भिखार बन के भिनसार करिहें? तीन पतिया चोली आ रेशमी बैंगनिया तीन पाढ़ के साड़ी उहो लसार दीहें, चीर फार करिहें? राँवा कुल्हीए बात बतावत काहे नईखीं? सोझे-सोझे समुझावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काहे नइखीं, एकदम दिल के करोर छोड़ के ओरि आवत काहे नइखीं, हमनीं के मन के मरोर के बोतावत काहे नईखीं?''

अतिने में भौंरा राधिका के चरन कमल भीरी पैंतरा देवे लागल, गुनगनाए लागल, मंड़राए लागल, विहारी के राधिका सन्देश सुना के उनकर उत्तर ला के उतराए लागल, भुनभुनाए लागल!

कम्पमलिका, विशाखा आ रंगा कहली,

''हे राधिके, घनीभूत प्रेम रस में रस विह्वले, रस के लगातार बरखा करे वाली, माधुर्य के, मधुरिमा के उमगत सागर में हर छन बूड़की लगावे वाली कारूण्य कल्लोलिनी करुणागार, वृन्दावनी, विश्व विमोहिनी, कृष्ण के देदीप्यमान कान्ति, नवकुंज विहारिनी राधे, हमनी के तहार क्रीत दाई हईं जा, ई भौंरा छलिया के पढ़ावल फेन-फेन छल परपंच लेके दउरल बा, ठग ह, ठगे खातिर खातिरदारी करऽ ता, चेतल रहिहऽ! सजग रहिह! उधो के ठगहीं खातिर भेजल गईल बा, बेचैनी अतिना बा कि तली ले फेन एगो परपंची दूत भौंरा मुरली से राग विलावल के तान देवे लागल, परान पखाउज बनावे लागल, छले खातिर गीत संगीत से ओइसहीं रिझावे लागल, जिनिगी मटिया मेट करे खातिर राग टोढ़ी आ विहागरो, बिहाग राग से मोह के रसरी लगावे लगाल, रसे-रसे रिझावे लागल!''

राधिका विचार करे लगली

''दूत के जरिए फ्रूट के सन्देश ले गईला प भी ऊ अतिना दया के, करुना के उमड़ल समुन्दर बाड़े कि अपना भीरी पहुँचावे खातिर फिर से भौंरा के अरियतले बाड़े!''

अबकी बे प्रिया जी, परेम रस से सराबोर सावधान बाड़ी, उनकरा के दुखदायी कठोर कुछ बोल के निरदई, निठुर ना बनिहें, लरीकाईं ना देखइहें! ऊ अतिना दयालू बाड़न कि कड़ा सन्देश भेजला प भी नाराज ना भईलन, आ करेजा में क्रोध ना धईलन, फेन तहरा के पेठा देलन! उनका करेजा में हम समाईल बानीं, सखा, तूँ जवन चाहऽ हमरा से बिना संकोच के माँग लऽ, हमार केलि कुँज मनमाना ढंग से धाँग ल, हमरा परेम के पराग टाँग ल आ उनकरा सभ बात कह के उनकर जियरा जा के पूरा-पूरा जान लऽ! ऊ मधुपुरी में नया जुवती लोगिन के जाँघ से जँताईल बाड़े, परेम के खेल में अनाड़ी बाड़े, अहंकार से जानऽ ले कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिनियर खेलाड़ी बाड़े, हमरा के ओहिजे तहरा मारफत बोलावतारे त तूँ नन्हीं चुकी बाड़ऽ, हमरा के कइसे ले जईब? कईसे जमुना लंघईबऽ? कुब्जा जवरे लपटाईल होइहें, उनकरा में समाईल होइहें त हमरा के उनकरा भीरी कईसे ले जइबऽ? ई सभ छोड़ऽ, उनकर कुशल-मंगल बताबऽ, ऊ हमनी भीरी फेन अइहें, हमरा सूखल झँवाईल देह में फेर अझुरइहें? विहारी जी फेर से हमरा बाँह से बाँह, गोड़ से गोड़ आ देह से देह लपटइहें?

मणि मणिक्य से चमक-दमक अवली किंकिणी, मंजीर से सजल सुशोभित विलास रसोत्सव में भागी बन के लाल जी की लमहर बाँह, हमरा गरदन में कव लपटाईं? जीवन के प्रणयिनी के रूप में कब हमरा के दुलरिहें, आलोड़न में हमरा के विमोहित करे खातिर कब मुरली के तान छेड़िहें? कब अपना अंकवारी के कारागार में अचके कैदी बनइहें? हमार प्रीति पराग प्राप्त क के कब हमार जियरा जुड़इहें? जिया के जरनी कब ठंढ़इहें? पेयार के अमृत सागर में कब हाथ बाँह ध के जवरे नेहइहें? रस विधान आ रसिक जीवन निर्माण के कब श्री गणेश करिहें? भृकुटी के सुन्दर नाँच देखा के, भुज गृहीत क के हमरा के कब प्रीति क्रीड़ा के कोप से कुपित कम्पित करिहें? वृन्दावनस्थली में, कुंज भवन के लिए कुंज में, कब अनंग के रसोत्सव में अधर के सुधासव से आस्वादित करा के बदहोस बनऽ इहें? महाकायबेग के भरपूर अनुक्रम जनित महा रति पराक्रम से ऐकान्तिक केलि कुंज में नयन निमिलीत कब करिहें? हे मधुकर, हम अतिने जानल चाहऽ तानीं आ आपन जियरा जुड़ावल चाहऽ तानीं, भरपूर जीवन्त बनावल चाहऽ तानीं, दसों अंगुरी घीव में बूड़ावल चाहऽ तानीं, कुटिल अलकावली अवला, मोती अस बगबगात दाँत अवला नवपल्लव अस टहटहात अमृत रस से ओठ अवला, चंचल मकराकृत, कुंडल अवला, मृगछौनी अस अकचकात आँख अवला सुघर चेहरा उनकर जल्दी से जल्दी देखल चाहऽ तानीं, परमानन्दित भईल चाहऽ तानीं! ई हमार सभ जिज्ञासा रसिकवर लाल जी भीरी रखिहऽ!

उधो ओहिजे सभ धेयान में सुनत रहन आ उनकरा जनाईल कि राधा भावा वेग में उन्मादित बाड़ी! उनका बड़ अचरज भईल कि सभ गोपी श्रीकृष्ण के परेम में सदा चिन्तन में दुखी व्यथित रहऽ तारी। ऊ श्रीकृष्ण से जवन लिखित सन्देश ले आईल रहन सभ जानी के सुनावे लगलन, "राधा जी आ गोपी गण तूँ लोग भारी त्यागी आ तपस्विनी बाड़ू! हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तहरा लोगिन के गतरे-गतरे जानऽ तानीं तोहनी लोग एकदम पवित्र आ कलुष रहित बाड़ू। तहरा लोग के भक्ति के, पेयार के पहुँच पराकाष्ठा प आ सीमा तक बा, अब कवनो कमी अभाव नईखे रहि गईल! अथाह आ अशेष तक पहुँच आ चेहटा बा! हम सभ समझ गईल बानीं! कवनो कोर कसर नईखे! तहरा लोग के भक्ति, निष्ठा आ समर्पण सराहे लायक बा! तूँ लोगिन तथ्य के तह तक चहुँप गईलू जा! हमरा सभ पता आ जानकारी बा! पूछे, जाने, समझे के बाकी नईखे। हम एहीजा राज-काज के अझुरा में पर गईल बानीं। हमरा एह में कवनों रुचि आ अनन्द नईखे, हम हर कोशिश करऽ तानीं कि एह अझुरहट से भागीं। तनिको फाँफर होई त सरपट भागब आ तहरा लोग से हिलब-मिलब, तबे जीव में जीव परी, शकुन होई! हमहूँ चैन से नइखीं, हमार विवशता आ लाचारी समझ के, जान के खीस-पीत मत करीहऽ जा, आपन समझ के विचार करीहऽ जा! राह मिलते हम दउर चलब आ इचिको बिलम ना करब! आपन जिगरी आ ज्ञानी दोस्त से सन्देश भेजऽतानीं। ई बहुत बात बतईहें आ धीरज दीहें, अजीजी संघतिया हवन, बहुत गेयान के बात बतइहें!''

उधोजी, समझावे लगलन, ''रउरा सभनी के मन श्रीकृष्ण जी में लागल बा आ परेम सराहनीय बा। विशुद्ध प्रेम बा, एकरा के विष्णु में, परमेश्वर में मोड़ दीं, उनकरे उपासना करीं, उठत-बइठत, चलत-फिरत ईश्वर के भक्ति करीं, उनके चिन्तन करीं! गीता में श्रीकृष्ण कहले बाड़न कि सभ के दिल में ईश्वर विरजमान बाड़न! माया के सवारी प, जईसे यन्त्र के गाड़ी पर सभ करे के घूमावत भरमावत रहेलन! उनकर धेयान कईला से, धेयान में मगन भईला से आ इन्द्री जवन बाड़ी स आँख, कान, मन सभ ईश्वरे में लगावे से माया के बन्धन कट जाई, मुक्ति हो जाई, फेर एह दुनिया में जनम लेवे से जान छूट जाई!''

स्वयं श्रीकृष्ण परमात्म रूप में बाड़े, इयार अन्तरंग दोस्त हवन आ उनकरा से हम बहुत सीखले बानीं। अईसे त हम वृहस्पति शिष्य हईं बाकिर श्रीकृष्ण से दोस्ती में बहुत सोचले समझले बानीं। रउरा सभनी उनकरा खातिर तन-मन से समर्पित बानीं, हम जवन सुनले रहीं ऊ सभ आँख से देख लेलीं, रउरा सभनी बहुत महान् बानीं। रउरा सभनी के उहाँ से अन्तरंगता बा, नियरापन बा एह से चिट्ठी लिखे के बेरी उहाँ के बोली भारी हो गईल रहे आ रूआँसा चेहरा हो गईल रहे, रउरा सभनी के ईयाद क के उहाँ के आँख में आँसू झलकत रहे!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"श्रीकृष्ण के बोलल शब्द कहऽ तानीं, राधाजी आ गोपी लोगिन! कवनो समय, कहियो आ कबहूँ हम तहरा लोगिन से इचिको दूर नइखीं, हम हरदम, हरछन तहरा लोगिन के जवरे बानीं, हमनी में खाली एक रूपता ना, अभिन्नता बा! हमनी के कवनो अन्तर नईखे! हम कारन कार्य रूप में हर छन हरदम सगरो बानीं, जहँवा खोजबू जा, जवन चीज में, जेकरा में खोजबू जा, हम तुरत तहरा लोगिन के लउक जाईब! दूरी नईखें! तूँ लोग हमरा से नियरे बाड़ू! जे हमरा के अपना दूर जानऽ ला, ऊ रोगी बा, ओकर मन साफ नईखे! हमरा के पावे के तहरा लोग के जवन परेम के, पेयार के राह बा, ई सभ राह से नीमन आ सहज, आ सरल बा! संसार भी हमरा से अलग नईखे, सभ हमरे बा, हमहीं सभ हईं, तूँ लोगिन जखनी आ जहँवा खोजबू हम भेंट जाइब, इचिको चिन्ता नईखे करे के, दुखी नइखे होखे के! कुब्जा हमरे खातिर जियत मरत रही, त कईसे अनादर करीं? नीमन जबून जे हमरा से अनुराग चाहऽ ला, हम सभ के आदर करी ला, केहू के ना दुत्कारी ला, तहरा लोगिन के असालतन, हर घरी रहीला! इन्द्रिय दमन आ तेयाग के भाव हरदम रखऽ जा। सभ के आदर करऽ, सभके में हम बानीं, सभ के आदर हमार आदर होईं! सभे हमार ह, केहू दूसर नईखे! तहरा लोगिन के हमरा से पेयार के पवित्र आदत बा, एह में कवनो कमी आ हरकत नईखे, एह से तोहनी के दूसर कवनो कोशिश करे के नईखे, दूसर राह ओरे, दूसर डगर देने तकहूँ के नईखे, हम हर घरी भीरिए बानीं, नियरे बानीं!"

उधो जी फेन कहे लगले, "ई श्री कृष्ण के कहल बात ह, गोपी लोगिन! ई बात प धेयान द, कवनो स्थिति में, काल में आ चाहे कवनो स्थान में हमनी के, विरह आ जुदाई ना हो सके। हम त सभ में बेयाप्त बानीं। बढ़ियाँ से ईयाद करऽ जा कि हम तहरा लोगिन से एको छन दूर रहीला? हम त हरमेशा तहरा लोगिन के मन में विराजत रहीला।"

उधो जी समझवले, "जल, जमीन, आग, हवा, आकाश से जीव के निर्माण होला। श्रीकृष्ण (भगवान) के दू गो शक्ति होली, परा आ अपरा। एही से सूक्ष्म जीवन आ सांसारिक जीवन के परिचालन होला। सभ के संचालक जन्मदाता, पालक आ संहारक उहाँ के हईं आ तीनों रूप में उहाँ के (श्रीकृष्ण) हरमेशा वर्तमान रहीले। ऊ अविनाशी हवन। तहरा लोगिन में उनकर जवन भक्ति बा, संलिप्तता बा, एकात्मता बा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभ दृष्टि भाव सहजे प्राप्त बा, एह से तू लोगिन परम भाग्यशाली बाड़ू। जीव भगवान के समय पा के भुला जाले काहे कि ऊ लोग अपना के उनकरा से अलग मानऽ लां। रउरा सभनी श्रीकृष्ण से सट गईल बानीं आ उनकरा के अपना दिल से कबहूँ अलग ना करीं। ईहे कारन बा कि रउरा सभे सिद्ध अवस्था में चहुँप के उनकरे में सट गईल बानीं आ राते-दिने एको छन विसारत नईखीं, उहो रउरा सभनी से छनो भर अलग ना होखस। रउरा सभनी के परेम भक्ति से हम परिचित हो गईलीं, हम सभ बात उहाँ के बताईब!"

"राधिका जी! रउआ धन बानीं कि कन्हइया खातिर अपना के एकदम बिसूर गईल बानीं, उनकरा में समा गईल बानीं। राउर ई आत्मसात सराहनीय बा! उहों के रउरा बिना हर छन बेचैन रहीला। दूनों ओरे बराबरे ई छटपटी लेसले बा। कुमुदिनी पुष्प आ चाँदनी जुक्त रासलीला के रूप आ रस के हरदम चरचा करत उहाँ कबहुँ अघाईल, सुसताईल हम नईखीं देखले। रउरा सभनी के घुंघरू के झंकार से उहाँ के मन हरमेशा भरल रहेला ओत-प्रोत रहेला! खास कर के राधिका जी, रउरा नाम के जबान से कबहुँ ना हटे देस, राउर चेहरा देखत रहले आ आह भरत रहले। ऊ बार-बार कहले, उनकर जे खेयाल करेला आ उनकरा के सभ करे में देखेला आ उनकर धेयान करे ला, उहो उनकरा कबहुँ ना छोड़स! राधे, राधे हरछन जपत रहले। उनकरा बुझाला कि राधे के जवरहीं ऊ हरमेशा रहले!"

"रउरा में उनकरा (श्रीकृष्ण) में कवनो भेद भाव नइखे, अन्तर नईखे! राउर बेचैनी देख के हमहुँ बेचैन बानीं। अईसहीं उहों के छन-छन रउरा खातिर छछनत रहीला, भजत रहीला! एको छन रउरा के ना छोड़िला! रउरे रूप में अपना के देखत रहऽले, समुझत रहले, हरषत रहले आ तरसत रहले। हमहुँ उहाँ से सटले रहीला, रउरे लेखा परेम आ भक्ति खातिर लपकत रहीला, खखनत रहीला!"

एह तरह से उधो जी गोपी लोगिन से आ राधिका जी से आत्मसात क लेलन। उनकरा बुझाए लागल कि ऊ खुद गोपी हवन, राधिका हवन आ श्रीकृष्ण खातिर बेचैन बाड़े, दर्शन करे खातिर, मिले-जुले खातिर बेचैन हो गईले, बदहवास हो गईले! श्रीकृष्ण से अनुरोध आ प्रार्थना करे लगले, "कहाँ बानीं, हम त अब एहीजा एकदम लीन हो गईल बानीं, पूरा के पूरा मिल गईल बानीं! हम गोपी लोगिन के आ राधिका से अभिन्न हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गईल बानीं! रउरो के तऽ हर छन एही लोगिन में देखत रहत बानीं, रउरा आवे के दिन धरे के नईखे, रउरा त एहीजा आईल बानीं, कन-कन में एहीजा रउरा समाईल बानीं, रेंगनी में रंगा के रमाईल बानीं, अझुराईल बानीं। रउरा आपन कुल्ही लीला में लीन बानीं, रउरा आपना काम में लवलीन बानीं जईसे राधिका जी रउरा से अभिन्न बानीं!''

''हमहीं मतिहीन बानीं जे दोसरे समझ के आईल रलीं हँ! राधिका जी त अब परसन बाड़ी, रउरा भीरी आ रउरा में अपना के सोरहों आना पा के गदगद बानीं! इनकरा बुझाता कि राउर पद कमल के अपना उन्नत उरोज प ध के जीव जुड़ावत बानीं। अपना सभ सांसारिक दोष से छुड़ा ले लीं, अब रउरे में बानीं!''

रउरा चरन कमल में सभ देवता अझुराईल रहले आ वन्दना अरचना करत रहले, ऊ इहाँ के प्राप्त क के प्रसन्न बानीं।

हमहूँ गोपी लोगिन के आ राधिका जी के भक्ति भाव, परेम नेह में भुलाईल बानीं! ई स्वाभाविक परेम हम दोसरा जगे कतहीं नईखी देखले, अब हमहुँ सचहुँ एहीजा बिकाईल बानीं!''

उधो जी जवन गेयान के गठरी ले के आईल रहन आ निरगुन के घोष बेवपारी रहन अब गोपी लोगिन के आ राधिका के चरन धूल कइसहूँ लेवे खातिर बेचैन रहन। चाहत रहन कि चले के पहिले ई परापत क लीं! वृन्दावन के घास प गोपी लोगिन आ राधिका जी के चरन रज सगरो लागल रहे, चुपके से ओने जा के घासिन में माथा सटा के लगवले, बार-बार आरजू निवेदन कईले, गोपी लोगिन के आ राधिका के परम, चहुँपल नेह के मेह में बन्हईले आ धन्य भइले!

गोकुल में नन्द जी के जसोदा मइया के गोड़ प गिर के विदाई मँगले, आशीरवाद ले के गोप लोग से छाती से छाती सटा के बड़ी परेम से चलले।

आगे गोपिन लोग से नेह के नयन मिलवले आ राधिका जी के हाथ जोर देले। राधिका जी से आँख के कोर से आँख में भरपूर झँकले! आँख में पानी भर गईल! पीछा मुँह क के मधुपुरी के राह रथ धरवले!

मधुपुरी में पहुँच के श्रीकृष्ण से हबकूरिए जा के हाथ-बाँह ध के मिलले, गदगद हो गईले, दूनों जने के आँख सजल हो गईल। कुछ छन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुपी रहल, केहू केहू से बोलत नईखे, आँख आपुस में सभ समुझत रही स! बतिआवत रही स, परेम के पराकाष्ठा के भाषा उचरत रहीसऽ!

उधो जी कहलन, हे माधवजी, जे परेम उल्लास, परात्पर रस के चमत्कार वैचित्री, सुनरपन, अनिर्वचनीय रूप लावण्य आ लीला माधुर्य के सीमा राधिका बाड़ी ऊ रावाँ भाव अभाव में एकदम निष्क्रिय अउर उन्मत्त अस बेवहार करऽ तारी, उनकरा दुख आ व्यथा के सीमा समाप्त हो गईल बा! ओईसहीं गोप-गोपी लोग के छटपटाहट देखल नईखे जात आ बरदास नईखे होत? वृन्दावन के लता पता सभ असालतन बन आ उदास हो गईल बा। बाबा नन्द मइया जसोदा के रोवाई से सभ गाय भी रोवत रहऽ तारी स। समझावला के कवनो असर नईखे!''

''गोपी लोग राउर चाल, मुस्कान आ सभ विनोदी शब्द के इयाद करत रहऽ तारी जा। रावाँ के भुला देल ओह लोगिन खातिर एकदमे संभव नईखे। ओह लोगिन के आत्मा में विश्वास बा कि श्रीकृष्ण, वृन्दावन विहारी, दुखी भक्तन के मुक्तिदाता अइहें आ दुख सागर से छुटकारा जरूर दिअईहें!''

''विरह ज्वाला में जरऽ तारी जा बार-बार राउर तरह-तरह के क्रीड़ा के गान में लीन हो जातारी जा। रउरा संगति के सतत कामना करऽ तारी जा। हमरा बतावला समझावल से ऊ लोग के अब बुझाता कि लीला विहारी से ऊ लोग वियुक्त नईखे। हमार संदेश से ऊ सभ लोग अकस्मात मरन सें बाँच गईल बा लोग, अधीरता कुछ हद तक त कम भईल बा। अब ओह लोग के बुझाए लागल बा कि माधव जी बराबर ओह लोगिन साथहीं बाड़े, भीरिए विराजमान बाड़े, एह से दम परल बा!''

''राधिका जी, बेसुध रहऽ तारी। उन कर दशा असामान्य बा! राउर एक-एक बात आ एक-एक क्रीड़ा के चेहटा ईयाद क के कबो ठंढा हो जातारी, कवो रोवे लागऽ तारी आ कबो रउरा हर क्रीड़ा के अनुकृति करे लागऽ तारी! उनकरा के हमरा सिखावे के ना परल कि श्रीकृष्ण के धेयान भईला से कष्ट दूर हो जाई! ऊ तऽ अपने रउरा में निरन्तर ध्यानस्थ रहऽ तारी!''

***

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(15)

राधा आ गोपी लोगिन जवन उधोजी से कहले रही जा, उनकरा ईयाद पर गईल सोच में पर गईले, "बिहारी जी हमनी के मोह लेले बाड़े, अब टोह लेवे के नईखे? उनकर चाल, बोली, सम्बोधन, मिलन, एकोभाव भुलाई ना, मरियो जाईब जा तऽ इयादे रही, ओह इयाद के मियाद नइखे?"

राधिका जी उन्मत्ता लेखा बोलत रही, "मोहन प्यारे, हम तहरा संगे ना खेलव, सारी लहँगा फारि के बहियाँ झकझोर देलऽ। चोलिया के बनवाँ भंग क देलऽ। ढंग से खेलल जाला सउंसे लउके लागल अंग, ई कवन खेल के रंग ह?"

गगरी लेके जमुना में जल भरेजात रहीं, डगर रोक देलऽ, कंकड़ चला के गगरी फोर देलऽ, भर अंकवारी कस के देह मइंस देलऽ। गर्दन में बांह डाल के हजार के मोतीहार तूर देलऽ, रगर-झगर के बाँह ममोर देलऽ, सारी चोली फार के बेपानी क देलऽ, लंगट उघार कके सभ गति क देलऽ, का छोड़ले बाड़ऽ?" "तहार पीताम्बर पहिर के हमहुँ त मुरली बजावते रहीं, राग टोड़ी ना टेरत रहीं?

जागत सूतत, सपनात रहऽ राधा के तऽ अब राधा के विसार देलऽ? केलि के कोमल कला के करोड़-करोड़ बैचित्री विकास अब रचिको दिमागे में नईखे आवत! प्रेमानंद, सौन्दर्यामृत राशि आ नयन कटाक्ष काफूर हो गईल? रूप लावण्य के समान गंजायमान नईखे? रास के हल्लीसक नृत्य कहाँ चल गईल? ईयाद नईखे परत! अब हजारों चन्द्रमा के दूधिया अंजोरिया से स्वर्ण कमल के मकरन्द के झरना ना झरमराई? सुधाकर के रस माधुरी के झूठा बनावेवाली राधिका के मधुरिमा प आफत आ गईल?"

"मधुर प्रेम मेलिमय वृन्दावन के केलिकुंज में मधुर संगीत ध्वनि सहित कुसुम सुवासितसुरत केलि विस्मृत हो गईल? केलि शष्या के शीत्कार आ मधुर वाणी के सुखद प्रताड़न ना सुनाई पड़ी? रसाधिक्य के मधुर जोग के समापन समझ लियाय? मुग्धावस्था के मिठास सपना हो जाई? रस क्रीड़ा के कोटि-कोटि रस बाहुल्य के धारा में उलट-फेर हो जाई? उल्टी गंगा बहे लगिहें? माल महराज के आ मिरजा खेलस होरी? अईसन चतुराई आ गईल कुबुजा में, रस विदग्धा बन गईली? लीलामयी गति आ नेत्र भंगी दृश के लोप हो जाई? रसोपासना के सिद्धि साधन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधिका नकार दिअइली? कोटि-कोटि सुन्दर मधुर उपादान राधा के असफल हो गईल? राधा के प्रेमामृत हाव-भाव आ तरंगायित भौं संचालन आ परिचालन अंतरंग-बहिरंग क्षुभित करे में अशक्त असमर्थ हो गईल? रसोद्‌गार आ आनन्द विभोरता के आभाव बुझा गईल? नित्य प्रणयिनी रससिक्त नागरी के रसधार के मधुरिमा बेकार हो गईल, प्ररभावहीन हो गईल, अनुरागाधिक्य आधार हीन हो गईल? प्रिया जी के प्रियता आ पारंपरिकता पूर्ण हो गईल? मधुर स्पार्शानुभव में थकावट आ गईल?''

उधो जी के ईयाद परता, राधिका कथन, ''चाँद के शीलता कहाँ गुम हो गईल? हमरा के जरा के बुझाता भसम क दीहें। बुझाता जे आग के धुआँ आकाश में चारू ओर छा गईल बा। विरह के आग में जीव तलफत बा, छटपटी लेसले बा देही में?'' रसिकवर जी मधुपुर आ जईहे त ई हाल ना भईल रहित, शरद के महीना बीत रहल बा, श्याम जी के कवनो अता पता नईखे! एने पपीहा के बोली अउरी आग लहकाव तीया, करेजा जरे लगता। चनरमा कुमुदिनी कुल के अनंदित करऽतारे आ हमनी प खिस निकालऽतारे,फेर जाने हमनी के उनकर का बिगड़ले बानीं जा? उनका ससुर राजरोग के सरपले बाड़े त हमनी प बउराईल बाड़े! अपने त गलती कइलन, अनटी कइलन जे एके जवरे लपेटाईल रहलन आ छबीस गो के छाड़ देलन, खेयाल ना कईलन त हम का उनकर बिगड़ले बानीं जे अनसाईल बाड़े? देही में आग सुनुगावत रहऽतारे? उलुटें जबाना बा, खेत खाय ग़दहा, मारल जाय जोलहा! ईहो सनक गईल बाड़े।''

उपंगात्मज उधो अचरज से सभ देखले रहन, सभ दिमाग में छा गईल बा। सोचऽतारे का का श्री कृष्ण से कहीं, बरनन करीं? अतना बा कि ओरईबे ना करी कहत कहत! केने से कहाँ से शुरू करीं? जोग के बात त समझावला प राधा सहित सभ गोपी एकदम पिनक जात रही। निर्गुन के माई-बाप के नाँव पूछत-पूछत हमरो के सनकावे के ठेकान लगवले रही जा, उतऽ हम अपना चतुराई आ गेयान से कइसो-कइसो सम्हरलीं, तनिको सुसताहुँ के मोका ना लागे देल लोगिन?'' ''नंद जी अलगे छटपटात रहन, कहत रहन कि मोहन अस सुत के मधुपुरी छोड़ अइलीं? आ अपने गोकुल आ के मुअऽतानीं! हमरा परान के बसुदेव छिन लेलन! आपन धन दोसरा हाथ में थाती ध अईलीं! ओने जसोदा जब मखन देखस त कहें लागस कि ई त ऽ हमार लाड़ला कन्हइया के खाये जुगुत बा, एकरा के संगो के सिंकहर प धरब''!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ओने गोपी आ राधिका पत बे चिचियात रही जा कि निरगुन के बात नईखे बुझात, हमनी के त मोहन जवरे सारूप, सालोक आ सायुज मोक्ष भोगत रहीं जा, हमनी के दोसरा से का मतलब बा, उतऽ करेजा में बंसी अस गड़ गईल बाड़े, कईसहुँ निकालला प करेजा निकल जाई, करेजा मुँह के आ जाई! जिया के जरनी ना बोताई! राधिका त हरमेशा रटत रही, चंचरीक चम्पा के बगईचा ओरे कबहुँ, तकबो ना करे! हमरा जियरा से माधो कईसे निकल जईहें? हम निरगुन फिरगुन के कुछ नईखी देआनत, कुछ नईखीं जानत!"

उधो जी गोपी के आ राधिका के जान गईले कि कन्हैया बिना ई लोग जी ना सके, ऊ एहनी लोगिन के मन में अस्थिर बईठ गईल बाड़े, कवनो उपाय एहीजा ना लागी त धीरज धरऽवले कि जल्दीय श्री कृष्ण अईहे! उ तऽ तहरा लोगिन के भीरिए बाड़े! आ उनकर नाँव जपत रहऽजा, एको छन ऊ अलग ना होइहें। जेने तकबू जा ओनीएलउकीहें, जब चहबू जा उनकर मोहनी मूरत, उनकर आँख, उनकर चेहरा, उनकर हाव-भाव, उनकर देह, उनकर रंग रूप देखत रहबू जा। उनकरा में धेयान लगावऽ जा, ऊ तहरा लोगिन जवरे हरदम लपटाईल रहिहें। ऊ अपना प्रेमी लोग के कबो साथ ना छोड़स? ऊतऽ अपना संगी साथी से संघतियारों खूब निबाहले? सुदामा अस बाबाजी के फटेहाली प धेयान ना देस, उन कर पूजा करऽलन? तहनी लोगिन उनकर धेयान करऽ जा?"

एह तरह से राधा जी आ गोपी लोगिन अहीर पुत्री रही जा, बाकिर ऊ लोगिन सर्वोच्च श्रीकृष्ण प्रेम विकसित कर लेले रही जा। आत्म साक्षात्कार खातिर उच्च कुल में जनम कवनो जरूरी नईखे। कृष्ण भावनामृत में सिद्ध बने खातिर राधिका जी के आ गोपी लोगिन के अपना प्रेम के अलावा दोसर कवनो गुण के जरूरत ना रहे। कृष्ण भावनामृत में सिद्ध बने खातिर राधिका जी के आ गोपी लोगिन के अपना प्रेम के आलावा दोसर कवनो गुण के जरूरत ना रही। ऊ लोगिन अनन्या बन गईल रही? श्री कृष्ण के हर छन नियरे ऊ लोगिन रहे लागल, उनकरा जवरे बीते लागल? उनकरे में पहिले अस लाग गईली जा? राधिका कुंज भवन में माधव जवरे रहे लगली, गावे लगली, भावे लगली, रूसे लगली, माने लगली आ सोरहो घरी आँख लड़ावे लगली?

उधो जी माधव भीरी पहुँचलन। माधव हहुआ के उधो के अंकवारी में कस लेलन आ बार-बार पूछे लगलन, "जसोदा मईया कइसे बाड़ी?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का कहली ह? कवन सन्देशा देले बाड़ी? नन्द बाबा का कहलन, कइसे रहत तारे? उनकर का सन्देशा बा? गोप-गोपी लोग के हाल-चाल कहऽ? सभ लोग से बढ़ियाँ से भेंट कइल? हमार राधिका के बरनन करऽ? का करत रही, कईसे रहऽ तारी? हमरा प अनसईली ना नूँ? राधा तहरा से भेंट कईली, का-का कहली? मनगर बाड़ी कि ना? ठीक से बति अवली, बोलऽ लीं? रूसल ना नू रही? हमरा के कुछ कहली? उदास नइखी नूँ? खुश बाड़ी नूँ? लहँगा पहिरले रही? आसमानी साड़ी रहइन? आपन देह आ सभ अंग बढ़िया से तोपलें रही नूँ? कुछ कहत रही? बढि;यां से बोलली नूँ? कुछ कहत रहीं? बढ़ियाँ से बोलली नूँ? तहरा के कुछ बोलली ना नूँ? हमरा प खिसिआइल नईखी नूँ? हँस-हँस के बोलऽत रही, गोड़ के नोह से जमीन कोड़त रहीं? मुँह प से अँचरा हटवले रहीं? बईठ कें बतिआवत रही कि खड़े रही? चहुँपलऽ ओही दिन राधिका तहरा भीरी आ गईली कि आवे में देरी भईल? तहरा से हंसीओ मजाक करत रही कि भनकल रही?''

उधो जी भावुकता के वशीभूत होके सभ कहे लगलन, ''माता जसोदा हर छन राउर नाँव जपऽतारी! कवनों काम करऽली ओकर परिनाम कन्हैया तक चहुँपऽला। दही महऽली त घीव रउआ खाये खातिर रखऽली, मक्खन निकाल के माधव खातिर संचऽली! कन्हैया खातिर धईले धईल खटतुरूस हो जाला। दिने राती कन्हइए में लागल रहऽली। हम राउर चरचा करत रहीं त अछोधाह होके रोवे लागत रही।''

''अइसहीं नन्दबाबा राउर चरचा बड़ी धेयान से सुनत रहन आ एकदम उदास हो जात रहन! कवनो बात में कन्हैया के परतुक देत रहन आ कबहुँ उनका के हँसत-बिहंसत न देखऽलीं! भीतर से बड़ी दुखी व्यथित लगले। उनकरा दुख के थाह ना रहे।''

''गोपी लोगनी आ गोप लोग के छटपटहट देख के हमरा रोवाई छूट जात रहे, हमार मन ओह लोग भीरी भारी रहत रहे। पूरा गोकुल में, नन्द गाँव में, वृन्दावन में दुख के व्यथा से सागर लहरात रहे। सुख चैन के कहीं नामो निशान ना रहे। सभे अथाह सागर में बूड़ते रहे! खुशी आनंद कहीं ना लउकल! सभे लरिकाई के विचित्र कथा कहानी के चरचा क के रूआंसा हो जात रहे, रोवे लागत रहे। केहू हंसमुख, सुखी ना लउकल! हमहुँ जब से ओहीजा चहुँपलीं, रोवते बीतल। हँसे मुस्कुराये के चानसे न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलल। गोपी लोगिन के टीस त सहाते ना रहे, हमार गेयान झारल कवनो काम ना आईल। हम त दुख आ चीत्कार देख के हक्का बक्का रहीं। हमरो से ऊ दुख आ दरद रचिको ठटाते ना रहे आ सभ खिस्सा सुनल बिना रहाते ना रहे!

"प्रेम परम तत्व ह? प्रेम से ही संसार के संचालन हो ला। प्रेम आनन्द ह। प्रेम आनन्द ह। प्रेम अविनाशी ह। जवन भाव नष्ट ना होखे, उहे प्रेम ह। ईख के रस धीरे-धीरे गाढ़ा के गुड़ बन जाला, ओई-सहीं प्रेम दिल के द्रंवित करऽ ला त सनेह कहाला, प्रेम स्नेह के रूप में मधुर होत जाला। राधिका के रउरा प्रति प्रेम, नेह के रूप में गाढ़ा गईल बा। नीला हार, नीला कंगना आ नीला तीन पाढ़ के लहंगा पहिर ले उदास, बहुत उदास रहऽ तारी आ कबो-कबो झरऽ झरऽ लोर ढरके लागता। कन्हैया खातिर उनकर अनुराग अथाह बा, अशेष बा, हद तूर देले बा? कहल समुझावल काम नईखे आवत। ऊ कबो एकदम मौन हो जातारी त कबो खूब मुखर हो जा तारी। उनकर रूप देखला प रोवाई, नइखे ठटात। ऊ उदेलित क देतारी। ऊ प्रणय रस सिक्त बाड़ी। अपना अकिल के हरमेसा धिक्कारत रहऽ तारी, पहिले कबहुं रूसल रहीं, ओकर अफसोस करे लागऽ तारी? कन्हैया से एको छन अलग नइखी। "ऊ हमार हवन, कहके भावुक हो जातारी। स्नेह के माधुर्य में सीमा तक चहुँप जातारी? रावाँ साथे जवन भीतर के अनन्यता बा ऊ बाहरो सोझ आ साफ लउकता, हद तक चहुँप बा।" पूरा आत्म समर्पण बा, दूरी आ विलगाव ओरा गईल? अंतरंगता, अनन्यता, अभिन्नता, अशेषता तक चहुँप गईली, अब बाकी का बा? अनुराग तक पहुँचल बाड़ी ऊ प्रेम के पराकाष्ठा प बाड़ी। एही तरी गोपी लोगिन के दशा बा?"

"अपने बड़ी कष्टदायक तकलीफ में बाड़ी जा बाकिर रावाँ के कवनो दुख तकलीफ कबहुँ रचिको नईखी जा देल-चाहत। राउर कुशलता के चाह में व्याकुल बाड़ी जा! सभ जानी उन्माद के स्थिति में रहऽतारी।"

"राधिका जी से रावाँ जवन-जवन चेष्टा-परचेष्टा जवरे मिल के कइले बानीं, ऊ रोजे ऊ सभ करऽतारी, कुँज भवन में ओईसहीं नहा तारी, कपड़ा धारन करऽतारी, शयन कुँज में, क्रीड़ा कुँज में पहिलके सभ गतिविधि अपना के ओईसहीं करऽतारी जईसे राधा-कृष्ण सभ लीला आ क्रीड़ा पहिले हो चुकल बा! कबहुँ दिवसा भिसारिका, कबहुँ कृष्णाभिसारिका,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबहुँ मुग्धा, मध्या आ स्वकीया परकीया के भाव बोध देखावऽतारी, आ ओही में मगन हो जा तारी! कभी–कभी पौधा के प्रगाढ़ आलिंगन चुम्बन त कभी परिरम्भण शुरू क के आनंदातिरक में संलग्न हो के मगन हो जा तारी। हमरा के देख के बार–बार परलाप करे लागत रही। रवाँ रूप, भाव, चित्र आ भावानुभाव के अन्धाधुन्ध अनुकरन करे लागऽतारी। कबहुँ रोवऽतारी, कबहुँ हँसऽतारी!''

कबहुँ उनकरा बुझाता कि रावाँ कवनो मधुपुर की जुवती से संगम प्रस्तुत करऽतानीं त तुरत खिसिया के रूस जा तारी आ ओकर भाव परगट करऽतारी।''

''रावाँ से उनकर अनन्यता देख के हमार इच्छा रहे कि उनकर चरन चूम लीं। हम निहुरे के कइलीं ओही धरी एगो भौंरा उनका गोड़ ओर गुनगुनाइल कहे लगली, राधिका जी फटकरली, आरे धूर्त आ ठग के मित, हमार गोड़ मत छुवऽ। तहार संघतिया क बे ई गोड़ छू के धन्य भईल बाड़े आ धोखा देके ठग लेले बाड़े। तूँहूँ ठगे आईल बाड़ऽ। एहीजा तहार, चाल हम जानऽतानीं, धूर्तई ना चली, दोसर जगे जा!

भौंरा, भाग जाता आ दूसर सखी कम्पमलिका ओरे जाता, ई देख के कहऽतारी, तहार संघतिया क बे हमार गोड़ छूबे के ना मिलल त सखी लोगिन के गोड़ प गिर के ठगले रहन। भागऽ ओहिजा से, अईसन दाव नइखे लगावे के, एहीजा ना तऽ ओहिजा रंग करबऽ! तान मारे आईल बाड़ऽ राग विहागरो के!

एह तरी राधिका जी के नेह परवान प बा आ राउर वियोग में उनकर हालत अईसन हो गईल बा कि अपना देह ईज्जत, सभ भूल गईल बाड़ी! ऊ रचिको भर नईखी जानत कि कब का हो रहल बा, खाये पीए के भी सुधि नईखे रह गईल! ऊ रावाँ में एकदम लीन हो गईल बाड़ी, उनकरा आ उनकर सखी लोगिन के गोपी लोगिन के अगल–बगल के अउरी किछुओ जानकारी नईखे! केहू गोकुल में होश हवास में नईखे। सभ के कुछ भुला गईल बा आ कहिए से मिलत नईखे। रउरा के छाड़ि के कवनो कामो–धंधा नईखे! अईसने कारन बा कि राधिका भौंरा से लड़ऽतारी, डाँट डपट करऽतारी! भौंरा के कपटी के मित्र कहऽतारी, आ ओकरो के महा कपटी आ प्रपंची बतावऽतारी! हमरा के ऊ ना देख सकली, एह से निश्चिन्त होके खूब फटकारतऽतारी!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर बदल गईलीं आ बड़ी प्रेम से भौंरो से मधुराति मधुर आवाज में बोलली, "जाके जल्दी गोपाल के मना के ले आवऽ। जइसे बने छल से बल से पकड़ ले आवऽ! सभ ओरहन देब आ मेल-मिलाप क लेब! तूँ बहुत बात बना के मना लीहऽ! नंद बाबा के किरिया खा के हम मेल जोल क लेब!"

हमरा से अनुरोध कईली, "उधो जी, श्याम जी के इहाँ ले आवऽ कह सुन, आ हर तरह से समुझा के। एहिजा के ब्रजबासी लोग के चातक खातिर स्वाति नछत्र के पानी के दू चार बूँद पियावऽ! बिना देर कईले जा आ हमनी के दशा के बरनन करिहऽ। सभ कमल दिन मणि बिना झुलस गईल बा! आ के विकसित करस। आ एहीजा आवे में कवनो कठिनाई बा, त कहिहें त, हमनी के ओहिजे बोलवा लेस। हमनी के ओहिजा पहुँचे में कवनो लाज शरम के बात नईखें। तब, उधो जी रउरा तीनों लोक के जस मिली, सभे राउर गुनगान करी!"

सभ गोपी लोगिन बोलली जा आ खखनली जा, "हमनी के उनकर का बिगरले बानीं जा जे भाग गईले? जोग करे के काहे के चिठी लिखले बाड़े? पखंड अवला पेयार कईले बाड़े हमनी से उनकर अवधि बीत गईल जवन कहले रहन, ओहिजा त कुबजी जवरे रंगरेली करऽतारे आ हमनी के जोग के सीख दे तारे!"

उधो जी कहे लगलन, "हम त सभ तरी समुझवलीं, ऊ सभ के में विराजमान बाड़े! जल में, हवा में, आकाश में, पताल में, चउदहो भुवन में, पेड़ पत्ता में, हमरा में, तोहरा लोगिन में, हर चीज में, बरतमान बाड़े। देखला के जरूरत बा! सोचऽ आ आँख से पलक उठा के देखऽ, सगरो आ सोरहो घरी लउके लगिहें! ऊ त पुरन ब्रह्म हवन! पंडित में, रिसि मुनि में, विलासी में, भीतर-बहरी सगरो विराजत रहले! उनकरा से तोहनी के काहे वियोग के बात सोचत बाड़ जा? सभ ब्रजबासी में ऊ बाड़े, चिंता के कवनो बात नईखे!"

अंत में सभ ब्रज बासी आ गोपी आ राधा भी इहे कहल लोग, "हमन के जोग के आ निरगुन के नाम सुन के डरातानीं जा। ई जोग आ गेयान आपना घरे ले जा! हमनी के अहीर अहीरिन ब्रजबासी अतिना गेआन अवला ना हईं जा। आपन गेयान के गगरी ले जा के उनके के, गोपाल जी के सउँप दीहऽ! केकरा के कहऽतारऽ आ के एहीजा सुनऽता?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू ना सुने में अलर–बलर केहु के मन नईखे लागत! उनका बिना अईल, ई बेचैनी दूर होखे अवला, कभतर होखुँ अवला नईखे! जल्दीए जा आ उनकरा के सभ समाचार सुना के, हमनी के सभ हाल बता के जल्दी भेजऽआ चाहे जल्दी लिया आवऽ! दूसर कवनो दवाई नईखे!''

उधो जी बरनन करऽतारन, ''राधा बराबरे जपऽतारी,'' ''हरि जी के नयन त देखहीं लायक नू बा! चंचलता में त मीन मृगछौना आ खंजन के लजवावत रहऽता! कमल जइसे श्वेत कमल, नील कमल, लाल कमल, आ सहस्र दल कमल सभ रात बंद हो जाले स, बाकिर हरि जी के नयन रात दिन चलायमान रहेलन स। हरमेशा खिलल रहेलन स! लागला कि तीनों मुख नदियन के तिरबेनीं संगम ह, ई शोभायित रहेलन स। उनकर निरखे के भंगिमा के त कवनो तुलने नईखे। हमरा त ऊ कबहुँ भुलाते नईखे आ देखला बिना रचिको सहाते नईखे! उनकरा आँख प त केहू लोभा जाला। अउरी उनकर बोली के शैली कवनो मरद के नईखे! श्याम सुन्दर के सुन्दरता, उनकर चाल के गति, उनकरा छरहरा शरीर के सुधरपन हमरा आजु तक कतही तनिको लउकले नईखे! उनकर कटाक्ष त अनमोल ह! उनकर उपमा केहू से ना देल जा सके, एही से मधुपुर के सभे ललना के भबँर के चकोह में अझुरा गईले! आ अब त जेनहीं सुनऽतानीं ओनहीं कै जुवती उनकरा से लपटा जा तारी स! भछनी सभ के सभ उनकरे पाछ ध लेतारी सन! मद्र देश में कैकय देश में रूक्म कीहाँ, जहाँ जा तारे ओहिजा के जुवती उनकर पाछे, नईखी स छोड़त आ उनकर अइसन सुभाव ह कि जवन उनकरा से सटल चाही ओकरा के हरि जी हटल ना देल चाहस! सभ के सभ गोपी लोगिन के रिझा लेलन! हम त रास करत रहीं तली कुल्ही जवरे नाचे लगले। उहे उनकरा के लेके दूर भगलीं! ऊ शोभा के समुनर हवन, उनकरा ओर समुन्दर के कवनो जानी समा जाली, लोगिन के अथाह में परला प रचिको थाहे ना चले, उकिल–विकिल होके लोग उनकरे से लपटा जाला, एही से नू नईखन आवत! ऊ बिलमे अवला ना हवन, बाकिर ऊ करस का ? चकोह में परल बाड़े, बड़का चकोह में! ऊ शोभा के खान हवन आ ओतिने चल बिधर हवन! उनकर बाँह साँपिन लेखा लपलपात रहली सन। बिजली जस देह चमचमात रहलीं, घुंघराला बार देख के त केहू विमोहित हो जाई। कान के कुण्डल त बदरी में सुरज अस चमकत रहेलन स। वैजयन्ती माला आ मोती के लर अवली माला पर मन झूमे लागला! पीताम्बर के शोभा बरनन से परे बा, के बखान करे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दमदार बा, केहू ना! मुरली के आवाज प त दुनिये मोहित हो के काम-धाम छाड़े प विवश हो जाली, एगो-दूगो जुवती के के कहो? मोहनी वेश धारन क के मोहन बन जालन, सभे पिछुआ ले ला! उनकरा से भेंटा गईला प केकरा दम बा कि फेर उनकर साथ छाड़ दीही? एही सभ कारण से उनकरा एही जा आवे के सोचहूँ ना लेवे देत होईहें स! उहो अईसन सोझबक हवन कि कूबरी उनकरा के बझा लेलक, जवन सुनर, सुभेख होई ऊ उनकरा के एने आवे दीही?''

''भौंरा फेन गुनगुनाए लागल त राधिका कहे लगली, डाँटे फटकारे लगली, तू कुमकुम लगवले बाड़ऽ हम सभ के छाती के कुमकुम ह! श्याम सुन्दर के वनमाल में लपटाइल रहें रास के टाइम प त तूँ उनकरा लपेट ले आइल बाड़ऽ! हम जान गईलीं! गोपी लोगिन के कुमकुम श्याम सुन्दर के मोती माल से लपेट के ले आईल बाड़ऽ! जल्दी दूर होखऽ, हमरा देही में आग मत लगावऽ जात कूँचा से ध के कूँचबस देव! हमरा भीरी मुरली के राग मल्हार सुनावे आईल बाड़ऽ! हम अहीर के बेटी हईं त अतिना गँवार बउराहिन हईं जे ठगे चललऽ हऽ! ऊ एक बे ठगलन त दुबारा तूँ उनकरें राह ध के डगरी अइलऽ हऽ! ना दूर होखबऽ? हम मूड़ी ममोर देब, हमरा भीरी, आ हमरा गोड़ ध के माफी माँगे अइबऽ त! खीस मत बरावऽ, उनकरे लेखा डरेस बना के पियर फेंटा बान्ह के आईल बाड़ऽ! सोझिआ के मुँह कुकुर चाटे लागेला। अतिना बुरबक समझले बाड़ऽ? अब ले उनकर पाँछे दउरत-दउरत तरवा तरूआ गईल, अब तूँ छाल छोड़ावे अइलऽ ह! नाक प फोरा मत बनावऽ? तहरा के चूल्हा में धंसोर देब, घुनसार में ढकेल के चबेनी बना देब!''

''विजल्प, अज्जलप के पहाड़ा पढ़त रहऽतारी, कुहुँकत रहऽतारी! जादेतर अईसहीं बड़बड़ा तारी ना तऽ मौन रहऽतारी, एकदम चूप रहऽतारी! कवनों सुर ध ले तारी।''

''तूँ त रस लेके फूल से भाग जालऽ काहे कि फेन फूल नीरस हो जाला। ऊ त रस लेके आ रस भरल बा तबो पड़ दे उड़ गईलन! ऊ एगो अलगे हवन! अपने रस पान करा के आ फेर आँख मूंद लेलन! अब त ताकतो नईखन, अईसन निरदई, निठुर, बन गईलन, जियरा झकम्झोर के परा गईलन, अइसन अबाटी जगत में नईखन जे झट दे झपट के हवा हो गईलन! अनटी-अबाटी के कवनों कियामत न हऽ! जेकरा रहला गईला के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो फेरा ना ह ओकर कवन भरोसा बा? फेर डगराई कि ना? मधु बटोर के पट दे परा गईलन, कहाँ धराई दे तारन? हमरा प्राण विवर्तकी के का असर होखे अवला बा, हम अतना सेयान नईखीं! हम का करऽतानीं, हमार का भाव बा के समुझे के कोशिश में बा? हमरा करेजा में कवन आगि धधकता, के देखेवाला बा, हमरा टीस के पीस देवे अवला बा, हमरा चिचिअइला के के सुने अवला आ फुहार डाले अवला बा? उनकर कथा कहानी के हम कईसे छाड़ीं? ई नईखे छूटे भर के! उनकरे बात घुमा फिरा के एह से कहऽतानीं कि उनकरा बिना चयन नईखे!''

''हमनी के अपने सुख के फिकिर में नइखीं जा मुअत! उनकरा सुख-चैन खातिर बेचैनी बा, खास करके हमरा उनकरा सुख के, आनन्द के आ मउज के जादे चिन्ता लेसले बा! ऊ कईसे बाड़े? कइसे रहऽ तारे? बोलऽ तारे, बतिआवऽ तारे, नाचऽ तारे, गावऽ तारे, मुरली से विलावल आ कन्हारो के तान कईसे छेड़ऽतारे, ई जाने खातिर बेचैनी लेसले बा? कईसे मुसका तारे, कईसे आँख नचावऽ तारे, कईसे सुतऽ तारे, कईसे करवट फेरऽ तारे ई जाने के लालसा बा, ललक बा, का झलक बा? कईसे रूसऽ तारे, कईसे हाव-भाव करऽ तारे? ई जाने के, देखे के आ जवरे उठे बईठे, निहारे के जिज्ञासा बा! कतिना परगट कईल जा सकला? का आ कईसे सभ कहल जा सकला? मन में कुछ बुझाते नईखे, अवरी त भुलाते नईखे? संजल्प त सहाते नईखे?''

रधिका जी रोवे लगली, ''हे उधोजी, हमार परेम के कवनो कीमत नइखे? हरि जी कबे एहीजा से सिधरले आ तन अबहीं ले ज्यों के त्यों बा, जर के खाक हो जाये के चाहत रहे! विरह के बान छेद क देता! तहरा सन्देश के सुन के हृदय फाटल ना! बंजर से कठोर बात सुन के हृदया में आगिना लागल! आँख लोर ढरकावऽ तिया, दिल में दरार ना भईल! पथर बनल बा? शरम से सिर झुक जाता? अरे भौंरा, का सिखावे आईल बाड़सरे हमार आँख त माधो के रूप रस के पियासल बिया ई दूसर कुछ करे प तइयारे नईखे? जोग जुगुती के आ बरहम के कवनो गेयाने नइखे? नवल किशोर के मिरदुल मूरति से आँख उलझले बिया, आछा भइल कि उहो आके सभ दासा देख लेलन! अब इनका बरनन से हरिजी जरूर नाव डूबे से बचइहें आ किनारा लगइहें! आपन गेयान के गूदरी मधुपुर ले जा, हम त गूदरी अवरू फार के फेंक देब! ओहिजा के जुवति ई जनि हें हम त एह गेयान के पाव लागऽ तानी! चिलऽगी करऽ तानी!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जदी श्यामसुंदर नीमन अदिमी हवन त आ के चेहरा जल्दीए देखावस! कवनो उपाय, करबऽ मछरी पानी बिना ना जीही!''

''उधो जी, हमरा के जोग मत सिखावऽ? जवना जतन से रतन मिली उहें बात कहऽ! निरगुन आ मोछ अपना घरे रही, हमरा त सुनहुँ के नइखे? जवना लटे में फूल खोंसाईल ओह में राख के लगाई? कईसहूँ उनकरा के विरज में भेजऽ! जब से माधो जी वृन्दावन से गईले तबे से जोगा करऽ तानी! जबसे सनेह हटल तबे से चन्दन के भसम देही में रगर के जोग करऽ तानीं! भोग त ओही घरी से सभ भुला गईंल! के भोग में लपटाईल बा? अनरियां का बतिआवे के बा? परम गुरू रतिनाथ माथा प हाथ फेरऽतारे? यदुराई से कहिह सभ बात! आपन फोकट के गेयान जा के कतही अउर जगे बाँटऽ!''

''ए उधो, एहिजा से जा के ब्रज के कुल बात कहिहऽ! सुनऽ श्याम जी, तहरा बिना वृन्दावन में आग लागल बा, सभ जरत बा! कोइल के ढेला मार के लोग खदेरत बा! सभ लोग के देह सूख गईल बा, कतहीं हरियर नईखे! ओह राह से राहगीर चलल छोड़ देले काहे के सभ लोग राहगीर के चिठी देवे लागता, राहगीर अजीज हो के परेशान हो गईल बाड़े! राहगीर के चरन में लोग लपटाए लागऽता!''

''रात दिन हरि हरि के रट लागल बा! श्याम जी, रउरा बिना सभे परान तयाग ता! गोपी, ग्वाल, गाय सभ के मरन हो गईल बा! सभ के देह सूखाईल बा! सभे जरऽता, हम त गेयान के बोझा उझिल अइलीं बाकिर, माधो जी के रटनी लागल बा! तहरा पेयार में सभे परान तेयागऽता! कवनो बात से ओह लोगन के परबोध नईखे होत! करूना अवतार हव, तहरा करूना, बिना ओहीजा से छटपटहट आ दुख भेटे के नईखे!''

माधो जी सभ बात आ हालत सुन के गमगीन हो गईले! रूआँसा चेहरा हो गईल। सभ बात ईयाद हो गईल! कईसे बृन्दावन में खिलकट होत रहे आ कईसे रासलीला भईल! देह, लपट उपट कइसे होत रहे! कईसे आनंद से दिन रात कटत रहे! झाका झूमर में दिन रात के गेयान ना रहत रहे! एहीजा सभ सुख बा बाकिर वंशीवट के इयाद झकझोरत रहऽ ता! ''हे उधो, हमरा व्रज नईखे विसरत! वृन्दावन, गोकुल आ कुंज भवन के इयाद से देह के सुध नईखे रहत! मन बेसुध हो जाता! सबेरे नन्द, जसोदा हमरा के देख के गदगद हो जात रहे लोग! सबेर हीं से ग्वाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाल लपटा जात रहन! गोपी लोगनी आ राधिका के इयाद से रोआई आवत रहऽ ता, मन बेचैन हो जाता! मखन मिसिरी खा के मन भर जात रहे। गोपी गोप लोग जवरे तुरते दिन सिरा जात रहे! एहीजा अन धन, हीरा सोना सभ भइले बा बाकिर ओहिजा के मखन भोग भुलात नईखे! गाय दूहे के बेरी कईसे रधिका गाल प दूध के धार फेंकला प नाराज हो जात रही आ कईसे मनावन करत करत थाक जात रहीं, ईयाद परऽ ता त सभ बात भुला जाता, अउरी कुछुओ नईखे सोहात!''

कान्हा बार-बार रोवऽ तारे, लोर ढरकता, रोवाई बन नईखे होत! पितामह भीष्म अन्ठावन दिन तक शर शइया प पड़ल रहन बाकिर रधिका जी त असालतन, बिना दिन गिनती कइले शर शइया पर मर गईली, दुनिया खातिर मर गईली, अपना आन प अड़ गईली! कमल नाल से झर गईली, केहू गार देल त पूरा के पूरा कपड़ा अस गर गईली, केहू के नजर में मर गईली, केहू के मंजर में तर गईली!

कंस मरा गईल त ओकर ससुर जरासंध लड़ाई के सुर बान्ह देलक, ताबड़ तोड़ चढ़ाई करे लागल। पत बे हार जाय तबो फेन चढ़ाई, क देबे, तबाह तबाह क देलक।

श्री कृष्ण रण छोड़ के भाग चलले। सभ साज बाज के साथ दुअरिका भाग गईले। ओहीजा घर दुआर बनावे बसावे में, दिन-रात एक क देले। बड़ी-बड़ी मुसीबत आईल, सभ के सामना कईले। क गो राजा से राछस से लड़ाई भईल, ठेकान ना रहल। दुनियादारी में एकदम अझुरा गईले। चैन ना रहल! मार-झगरा मेटा के अनेकन जुवती से, राजकुमारी से विआह रचा के, घर बसावे में सभ बिसर गईल! हजारों रानी आ गईली, हजारों लाखों बाल-बच्चा के जनभावे पोसे-परले, विआह शादी में समय कटे लागल!

राधिका जी रोवत-रोवत मौन हो गईली! सखी लोगिन घेरले रहस, तबो ऊ कुछ बोलत ना रही! चुपचाप सुनत रही, सहत रही, अपनें आप में रहत रही, कबो-कबो बहत रही! अब परलाप ना करत रही! इयाद करत रही, कुछ ना कहत रही! भारी जहमत में पड़ल रही, बहुत कुछ पढ़त रही, भाव के किताब मढ़त रही!

राधिका जी के चित स्थिर हो गईल, शांत हो गईल! राधा-माधव ऐक्य भाव स्थायी हो के उनकरा के उहापोह से एक बिन्दु प खड़ा कर देलस! चित्त के चंचलता धीरे-धीरे ओरा गईल। जिनिगी के लक्ष स्थिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भईला से ई लौकिक-परलौकिक हर चीज से लगगाव के अनुभूति करे लगली, तटस्थ हो गईली! इनकर भीतर बाहर सात्विक रूप में बदल गईल! दुनियादारी के एकदम लोप हो गईल। परमात्मा खातिर, कन्हैया खातिर सरधा हो गईल! एकात्म भाव में रम गईली!

जिनिगी के परम लक्ष्य प्राप्त हो गईला प आत्मा के शांति मिल जाला आ परमात्मा से नियरापन, सामीप्य के बोध हो जाला, मुमुक्षा में विवेक लग जाला। हृदय सात्विक हो जाला। अभिन्नता के भाव में आत्मा लीन हो जाली। तीनों दोष चाहें ताप के समापन हो जाला।

राधिका जी ओह रूप के भाव के, विवेक के धरातल प पहुँच गईली। संशय आ भ्रम के स्थिति ना रहि गईल। अब दूसर कवनो बात सुहाते नईखे, सहातो नईखे! परेम के पराकाष्ठा प चहुँप के एकात्म हो गईली! राधा माधव माधव राधा के रूप में रहे लगलीं। प्रियतम में तन-मन-धन-धरम-करम सभ लग गईल! सांसारिक आकुलता, चेष्टा एकदम शांत हो गईल। ई उहे हो गईली!

ओही में रम गईली! मुग्ध हो गईली।

उधो जी माधव से साफ-साफ शब्द में समझा के बतवलन कि ब्रज में दस महीना रह के हम गोपी लोगिन के शोभा के अपनोदन कर देलीं। ऊ लोगिन में अइसन भाव बोध करा देलीं कि हमरा के श्री कृष्ण समझ के हमार खातिर भाव लोग करे लगली, पूजा करे लगलीं जा! विरह वेदना के अपशयन हो गईल। जब कबहु विरह वेदना जगे त हम राउरा बानी के गान करे लागत रहीं। ई सुन के ऊ लोगिन भीतरे-भीतरे सोच में लीन हो जात रहीं अंतरमुखी हो जात रही जा।

राधिका जी त मौन हो गईली त मौन अटुट हो गईली! नित्य लीला में मिलन के अनंद में तल्लीन हो गईली विरह शोक दूर भाग गईल, कहाँ दो परा गईल!

राउर रूप गुन के कीर्तन के, गुन गान में नंद जसोदा भी अन्तर्लीन हो गईली। दुखानुभूति सुखानुभूति में सभ करे बदल गईल! उधो जी के दस महीना के अंत में तदरूप भाव महिमा के आमने-सामने चाक्षुष दर्शन ब्रज में भईल! सुललित आस्वादन में आप्रकाम से उच्चता तक चहुँप गईलन, ओहिजा राह में चहुँपलन जेकरा आगे अब राह नईखे, हद कहाला ओहिजा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुआरिका में रूक्मिनी से माधो बतिआवऽतारे! हमरा व्रज नईखे बिसरत। कदम के मन लुभावन छाँह में जमुना किनारे खेलत रहीं! गोप लोगन से हाथ बाँह ध के गरदन प हाथ ध के वृन्दावन में विहरत रहीं, विचरत रहीं, दिन सिरा जात रहे, कहियो कहियो अन्हरिया के चदर सगरो बिछ जाय आ माता पिता लोग चिंता में पड़ जात रहे। विनोद में लीन हो जात रहीं। सभ बरनन संभव नईखे। सभ सखा आ नंद जसोदा त भुला ना सकस। ऊ आनंद अब नईखे! एहीजा दुआरिका में कवनो तकलीफ नईखे बाकिर वृन्दावन के सुख अब कहाँ मिले अवला बा? सभ ईयाद क के पछतात रहऽतारे!

''रूक्मिनी, चलऽ एक वे मधुपुरी चलीं जा! तहार दुअरिका, गोकुल वृन्दावन अस नईखे! जमुना किनारे डाढ़ प लटकत रहीं त मजा आ जात रहे। गाय सभ घेरले रहत रहीस! सुगंध से वृन्दावन हरदम गमगमात रहे! वृन्दावन के केलि कुंज, स्नान कुंज, शयन कुंज दान घाट आ रमन रेती त भुलाते नईखे-ऊ अनंद, सुख सपना हो गईल! कदम्ब के छाँह छोह छोड़ देलक! दुआरिका के दुआर प अँटक गईलीं!''

पूर्ण सूर्य गरहन के चरचा दुअरिका में जोर से चलत रहे। सभ जगे लोग इहे बतिआवत रहे। हर कल्प के अंत में ब्रह्मा के दिन के अंत होला त आसमान में सगरों बदरी लग जाली, सगरो छा जाली, पूरा सूरज ढंका जाले।

कुरूक्षेत्र में समंत पंचक नामक स्थान प ओह दिन सभ के जुटे के तय भईल। पूरा दुआरिका के लोग मरद, मेहरारू, राजा, रानी, परिवार, परजा के ओहिजा जाये के तय भईल।

परशुराम जी छत्री लोगन के एकईस बे मार के ओहिजे महान जग कईले रहन। ऊ जगह अब तीरथ हो गईल रहे। परशुराम जी जग क के ओहिजा प्रायश्चित कईले रहन।

जदुवंश के सभ मरद मेहरारू रंग विरंग के धउाऊ कपड़ा आ गहना गुरिया से सज-धज के मेला चलले। आपन-आपन सवारी, घोड़ा-हाथी सजा के नधाईल। पालकी प रानी आ जुवती लोग सवार भईल। स्वर्ग के देवता लोग लेखा पूरा समाज सज सवँर के राह धईल।

कन्हइया जी तेज दूत नंद-जसोदा गोप-गोपी लोगन भीरी आ राधिका जी भीरी समुझा के सिखा पढ़ा के खबर देवे खातिर अरिअतलन। सभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग के गिन गिन के बोलहटा गईल। मेला में सभे जुटे जेखम सुख-दुख, भीतर-बाहर के समाचार, बात विचार होई, भेंट मुलकात, दरस-परस आ बतकही, मेल जोल, मिलन छिलन, रंग-ढंग के बतकूचन बेवहार होई, मिलल-जुलल, पवलगी-चिलऽगी होई!

कुरूक्षेत्र में पूरा साज-बाज के साथ यदुवंशी लोग चहुँपल, शास्त्र के नियमानुसार सभ लोग नहाईल आ सूर्य ग्रहण काल लोग उपवास रह के पवित्रता से समय गुजारल! जब गरहन समाप्त भईल त फेर से पशुरामी झील में लोग विधिवत नहा के ब्राह्मण के दान कईल! चाउर छू के जनेऊ लोग बदलल, गाय खूब सजा के लोग दान कईल, ब्राह्मण लोग के सभे भोजन करा के संतुष्ट कईल।

कोशल, कुरू, विदर्भ, उशीनर, मत्स्य, सृंजय, केकय आ काम्बोज आदि देश के राजा लोग पूरा लाव लश्कर सहित चहुँपल रहे। सभे आपस में खूब परेम से मिले जुले में लग गईल।

वृन्दावन आ गोकुल वासी भी सभे जुटल रहे। बहुत दिन के वियोग के बाद खूब चाव से सभे मिले-जुले लागल। बहुत सुन्दर दृश्य हो गईल। केहू पैर छू के मिलल केहू छाती से छाती सटा के, गलबाहीं देके, मिलल। खुशी के धार में सभे तैरत रहे, बूड़त रहे, गोता लगावत रहे।

सभ जनानी लोग भी आपुस में खूब परेम से मिलत रहे आ बतकहीं करत रहे। बसुदेव जी नंद जी से बड़ी सरधा से मिललन। जसोदा जी से देवकी, रोहिनी जा के मिलली आ गदगद हो गईली। श्री कृष्ण के सभ रानी लोग द्रौपदी, सुभद्रा से मिलली जा। बलराम, कृष्ण, जसोदा के पाँव छूवले त जसोदा गोदी में बइठा लेली।

बसुदेव जी बहिन कुन्ती से मिलले आ सभ दुख-सुख के चरचा में लीन हो गईले, बसुदेव जी विस्तार से बतवले कि कईसे दुख में पर गईलीं आ कंस कैद क लेलक। फेन बलराम कृष्ण ओकरा के मार के आ माई-बाप के कैद से, निकलले आ उग्रसेन के राजा बनवले। दुख कम ना भईल। कंस के ससुर खिसिया के सतरह बे मधुपुर पे चढ़ाई कर देलक आ पत बे हार के भाग जाय। ओकरा से अजीज हो के हमनी के दूर भागे के परल। दुआरिका में घर दुआर बनावे बसावे में बरसों लाग गईल। एह से ऊ बहिन से बीच में ना मिल सकले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कृष्ण के देख के सभ राजा महरांजा लोग खूब अनन्यित भईल। जुधिष्ठिर सहित सभ पाण्डव, आदि श्री कृष्ण से मिलल लोग। सभे प्रसन्न रहे। व्यास जी , नारद जी, देवल जी, आदि अनेक मुनि लोग के चरणोदक सिर प छिड़क ओह लोग के भोजन से तृप्त कईल लोग। दूनों पक्ष के रानी लोग आ राजकुमारी लोग भी आपुस में मिलत जुलत रहे। जसोदा जी देवकी रोहिणी से खूब परेम से बतकूचन में लागल रही। एही बीच में मोका देख के मोहन सभ गोपी लोगिन के जमात में चहुँप गईलन। उहो लोग उनकरा के देखे खातिर, बतियावे खातिर आ साहचर्य सानिध्य खातिर एकदम बेअगर रही। मधुर मिलन बहुत दिन के बाद भईल!

आनंद सागर में गोता लगावे लगली जा! सभे घेर लेलक। हजारों गोपी लोगिन के बीच में माधव जी सभे के ओर ताक के, सभ के के निहार के, सभ के ओर मुखातिब होके बड़ी मीठ मिसिरी घोलल बोली से पुकार पुकार के आश्वासन देत रहन। कंस आ जरासंध के लड़ाई के, सभ परेशानी के बात समझावत रहन। कईसे कठिनाई में परल रहन आ बीच-बीच में कईसे समय आईल त रूक्मिनी, सत्यभामा, जाम्बवती, लक्ष्मणा आ सोरह हजार एक सो आठ राजकुमारी लोगिन से विआह कईलन! घर दुआर महल अटारी बनाबे में कतना समय लागल? "एको छन हर लोगिन से हम दूर न रहीं! छने छने ईयाद करत रहीं! हमं जानत रहीं कि तहनियों जानी कबहूँ हमरा के विसरलु ना! जीयत रहीं! तहरा लोगिन के सभ बात इयाद ना रहित आ ओह सभ भाव से दूर रहला प हम साँचो के सनक जईतीं! तनिको भनक ना लागित! तहनियों लोगिन के हमरा प पूरा भरोसा ना रहित त झनक जइतु जा, हम महँक जईतीं आ बमक जईतीं! आजु आमने सामने पा के हम चहक गईलीं! ढेर जानी के लोर ढरकत रहे, कंचुकी भींजत रहे! मनमोहन समझावत रहन," अब तू हम सामने बानीं, भीरिए बानीं, त हँसे के मुस्कुराए के बा, अबका रोवे के बा? हम कहली नूँ कि एकोछन सपनों में हम तहरा लोगिन से दूर ना हटब, सटल रहब! कबहूँ जिनिगी में ना भुलाइब! भरोसा करऽजा! हम हर दम तहरा लोग में रहब, भलहीं हम जतिना होई सहब बाकिर दुर ना रहब! बाल बच्चा के पोसे पाले में खूब नीमन मन से विचार से बेवहार से परिवार के परसन रखऽजा, आपुस में खूब मिल जुल के साँच मन से घर गिरहस्ती में लागल रहऽजा, हम तहरा लोगिन के हर काम में हर छन जवरे रहब, जवरे जवरे उठब, बइठब, सूतब आ जागब, कबहुँ धोखा ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देब, पराईब ना! छली, परपंची कहाईब ना, झूठ के गगरी से नहाईब ना! सुख चैन के मियाद घटाईब ना, आपुस के बात के दोसरा से फरियाद कराईब ना! कवनो मदद करे में कबहुँ संकुचाइब ना! जवन पानी तहरा के खातिर बा, दूसर जगे बेकार खोदाइब ना! गंगाजल छाड़ि के कतहुँ कूआँ खोदाइब ना आ काशी–मथुरा छाड़ि के गड़हा में नहाईब ना! भरोसा आ भाव कबो ना तूरब!''

बिहारी जी भीरिए रूक्मिनी जी सरस चितवन से ताकत अपना सुन्दरता से सभ के के सरसावत रही, सुनरपन, सरलपन, सोझपन में सभ जानी के लजावत रही, सरल मुस्कान से सभ के तरसाबत रही, रस बरसावत रही। रधिका के देखे खातिर बेचैनी देखावत रही! माधो से धीरे से पूछली,'' हरि जी, रउआ त सभ मन हरन कर लीला, रउरा के हरन करे अवली आ रउरा के मन बरन करे अवली, रउरा चंचल मन के शरन देवे अवली रउरा बालापन के जोरी, जे रउरा के ब्रज खोरी में डोलवले चलत रही आ रउरा घरे गाय दुहऽबावे नित प्रति जे चहुँप जात रही आ दूध के घार से जेकर चोली भींज जात रहे नया पलो आ सुगंधित फूल से रात खा जे सेज सवाँरत रही, ओह रधिका के देखे खातिर हमरा एक छन एक जुग अस बुझाता! एह सभ जानी में बृषभानु किशोरी कवन हई? कवन रधिका जी हई? नबोज उमर में रउआ के अतिना चतुर शिरोमनि बनावे अवली राधा जी से तनी भेंट कराईं? लरिकाइएँ में कल, बल आ बुद्धि से चोरी करें के जे सीखवले रही, कहाँ बाड़ी? जेकर गुन माला गूँथत रहीला आ कबहुँ हृदया से हटे ना दीं? हमेशा जेकर सुमिरन करत रहीला, जीभ से उनकरा के दूर ना होखे दिहीला! आपन, लरिकाई के जोरी के तनीं जल्दी देखाईं?''

मनमोहन जी हाथ से देखवलन, ''ह ऊ देखऽ, जुवती लोगिन के बीच खड़ा बाड़ी! नीला ब्लाउज सारी बा आ गोर कंडा अस छरहरा शरीर! इनकर चितवन हमार मन के अपहरन क लेलक जियरा इनके में बस के जीवन्त हो गईल!''

''हमरा में समा गईली, हमरा के बेवजह बेसाह लेली! चित चोरा लेली, करजदार बना के, नीन उड़ा देली, चंचल बना देली, मकोह में अझुरा देली, दुनिया भुला देली, अपना भीरी बुला देली, छाती प सुता लेली, हियरा में जियरा जुड़ा देली, भाव के भूख जगा देली, परेम जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भींजा के सराबोर क देली! करेजा खंखोर लेली! चमड़ा के भीतर नचोर देली, रोटी ऊख के रस में चभोर देली! भीतरे ढुक के पानी हलकोर देली, कलाई गते ममोर देली!''

''उहे सभ देखिं के हम राधा के एको छन ना बिसरीला। हम इनकरा खातिर आछा ना कइलीं! जे हमरा खातिर निसदिन, हर छन हर घरी बेचैन बा, हरदम रोवत रहता ओकरा के अइसन आफत में ना डाले के चाहत रहे, बाकिर हम त तहरा लोगिन के चकोह में नूँ पर गईल रहीं। जदपि सकल संभोग दुअरिका में बा, सभ सुख बा, बाकिर बृन्दावन के आ कुंज भवन के ईयाद हमरा के झकझोर देता! वंशीवट आ ललिता, राधा के संयोग चित के चंचल बना देता, भीतरे से हिला देता! हम एही से उधो से संदेश भेजले रहीं जवन कवनो छाप ना छोड़लक! राधिका के आ राधिका के देह देख के रोवाई छूटता, मन हलकोरता! बदहवास करऽता, बेचैन करऽता!''

''रूक्मिनी! ब्रज नईखे विसरत, जमुना तट आ कदम के छाँह नईखे भुलात! राधिका के गरदन में बाँह डाल के विचरत रहीं, अनेक, विनोद में लागल रहत रहीं! रचिको भुलात नईखे! बड़ी पछतावा होत रहता! तहार दुअरिका मधुपुरी लेखा नईखे! कुंजन में सरस सुगन्धित मलयगिरी के हवा झुरझुरात रहे आ ओह बीच में रधिका के नयन बान करेज में समा जात रहे, चुभ जात रहे!'' ओने राधिका जी मेला में माधव के देखलीं दूनों आँख डबडबा गईल! आँचर उड़े लगल, हाथ से संम्हारते बीते! गदगद हो गईली! आँख छने छने फरके लागल! बसंती वातावरण हो गईल, फूल खिल गईले स। दरसन भईल! सखी से कहऽतारी, पूछऽतारी, ''नियरा आ गईलन श्याम, कब मिलिहें, नईखे ठटात!''

रोवे लागऽतारी, अँचरा से आँख पोंछऽतारी, फेन लोर भर जाता! देख के कन्हइया चंचल हो जा तारे! मन करऽतरइन कि अंकवारी में बान्ह लेस! बाकी ढेर लोग बा, बेबस बाड़े, रूक्मिनी जवरे खड़ा बाड़े! रूक्मिनी सभ समझ गईली, छोह क के राधिका के सखी कह के माधव भीरी बोला ले अइली! राधा हिरनी अस ताकत रही! लपटाये के मन कईलक बाकिर कुछ सोचे लगली! गोड़ के अंगुरी से धरती नोचे लगली, खुरचे लगली, उनका गोड़ प आँख गड़ऽवले रही ना त मुहँ प चेहरा प तकला प रोवाई छूट जाईत! कइसो कइसो मन जँतले रही, अपना के भीतरे से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्हरले रही! भीतरे त हलचल मचल रहे! छाती दलकत रहे, स्तन फरफरात रहन स, बाँह में बेचैनी रहे, जाँघ में झुरझुराहट बुझात रहे! भीतर से अजबे सुगबुगाहट रहे! बोलत ना रही बाकिर भीतरे से हिंडोल अस डोलत रही, ऊपरे से नेह खोलत रही!

ओनहूँ ओतिने बेचैनी रहे। मिसिरी अस बोली सुने के एकदम बेअगरता रहे! सभ के सामने, खासकर रूक्मिनी भीरी कुछ कहे में लाज बुझात रहे, भारी संकोच रहे! जान एगो अलगे आफत में परल रहे! दिन भर सहत रहे बाकिर सहाय के जोग ना रहे तली रूक्मिनी माधो के आँख मरली आ राधिका के अपना घर में जहाँ ठहरल रही बाँह ध के परेम से लिया गईली। कन्हइयो संगे-संगे गईले! कम्पमलिका आ ललिता कहली, "अब का देह नोचऽतारू, काहे के कुछ सोचऽतारू? हमनी ओर आँख गुड़ेर के अब का सोच तारू? अब नैनन से जल काहे मोचऽतारू?"

राधा के रूक्मिनी अपना भीरी अपना जवरे बईठवली। अइसन लागत रहे जइसे एके बाप के दूगो बेटी बहुत दिन से विछुरल रही जा आ आजु भेंट भईला प खूब अतिशय पेयार से संगे बईठ के दिल के बात बतिआवऽतारी जा आ कन्हइया के ओर ताक के ललचावऽतारी जा, आ कुछ-कुछ लजावऽतारी जा! ऊ चुपचाप दूनों जानी के निहारऽ तारे! सभ सखी लोगिन मटकी मारऽतारी जा! आनंदमय दृश बा, मनोहारिनी छटा बा, छबि बा, शोभा बा!

रूक्मिनी आ राधा दूनों जानी गोर आ अतना कमल अस टहटहात रही। दूनों जानी में रचिको अन्तर ना रहे। मुसकुरात रही जा त फूल झरत रहे। एके सुभाव रहे आ दूनों जानी उनकरा ऐके अस पेयारी रही! दूनों जानी के चेहरा प टुकुर-टुकुर ताकत रहन! रचिको नजर ना हटावत रहन! रूक्मिनी अपना मंदिर में ले जा के बहुत तरी पहुनाई कइली। छपन भोग करावे में तन-मन से लाग गईली! रधिका जी तनी-मनी सभ चिखत रही आ पेट गुजगुजा गईल! अब अधिका खाय के मन ना रहे बाकिर उनकर मन राखत रही आ जीभ चटकारत रही, कन्हइया ओर पत बे ताकत रही! उहो टकटकी लगवले रहन, मटकी मारत रहन, अन्हार ना रहे! उहाँ दूनों ठकुराईन रही आ ठाकुर जी मुस्कात रहन!

रूक्मिनी जी के ना बुझात रहे कि रधिका के कहाँ बइठाईं, कहाँ बतिआईं, का खियाईं? का-का बतिआईं? कबहुँ कहस कि एहीजा आवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में गोड़ दुखा गईल होई द दबा दी! त रधिका जी हाथ हटा देस, गोड़ छुबहूँ ना देस! रूक्मिनी जी कहस कि दिल खोल के बोलत नईखू, हमरा से लजा तारू? हम तहार आपने, एकलाद के बहिन हईं, तहरा में तनिको अंतर नईखे, हमरा बात में, बेवहार में कवनो कभी होखे त माफ क द बहिन! उनकर आँख भर गईल, डबडबा गईली, दूनों जानी एक दूसरा के अंकवारी में कस लिहली!

ढेर देर ले दूनों जानीं एक-दूसरा से लपटइले रहली! माधव जी गदगद रहन। दूनों जानी के अभिन्नता से, आपसी सद्भाव से, समीपता से, नियरापन से, एकरूपता से, परेम मिलन से, एकजुटता से, रसातिरेक में बूड़ल रहन, कुछ कहत ना रहन, बोलत ना रहन, आँख मूँद लेत रहन, मुसुकी छोड़त रहन! उहो लोगिन दुनिया के भुला के अपना में मस्त रही जा। खूब अनन्दित रही जा, विह्वल रही, प्रेमधिकता से पूरा के पूरा परिपूरित रही जा, एक दोसरा में सटल रही जा, हटल ना चाहत रही जा, एक दोसरा में समाईल रही जा, जईसे परेम रस के ढेर दिन से भूखाईल बाड़ी जा, अनन्द खातिर अकुताईल बाड़ी जा, पेयार से एके जवरे लपटाईल बाड़ी जा, प्रेम रस से सराबोर नहाईल बाड़ी जा, रसाधिक्य से दहायित बाड़ी जा! रस सिरोमनी से तनिका भर लजायित बाड़ी जा, उनकरा प ताक-ताक ललचावत बाड़ी जा आ नजर गड़ा के फुसिलाबत बाड़ी जा! ओहीं रस धार में उहो दहाये लागऽ तारे आ आपन सभ कुछ भुलाये लागऽ तारे, ओही में उहो भरपूर समाये लागऽ तारे!

फेन रूक्मिनी जी रधिका के पहुनाई में लीन हो जातारी। मर मिठाई के तईयारी में लाग जात बाड़ी, पकवान बनावे लागऽ तारी।

एने घर में रधिका के अकेले देख के माधव फुरती से उनकरा में लतर लेखा लपटा जातारे! दूनों जने के बहुत दिनन के। भेंट भईल त राधा माधव देह से, हाथ से, गोड़ से, छाती से, ओठ से, जाँघ से, कमर से, सर्वांग से सट जा तारे, एक हो जा तारे! राधा माधव आ माधव राधा हो गईलन, भृंग कीट अस अनन्य बन गईलन, अन्तर समाप्त हो गईल! दूरी भाग गईल, दीवार ढह के बह गईल! परा गईल! माधव राधा में समा गईलन! राधा माधव के निरंतर अबाध परेम अनिर्वचनीय, बरननातीत हो गईल। उनकरा आँख में आँख डाल के कहलन, "जीव, छिति, जल, पावक, गगन, समीरा से सँवरल बा, जीवात्मा हमार अंश ह ई भौतिक रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में कैद हो गईल बा। एकरा अपना आनंद के, परम सुख के भरोसा आ मिथ्या धारना बा, अहंकार भी बा। हम तू भौतिक बंधन से, संसार के अझुरहट से दूर बानीं जा। हमनी में कवनो दूरी नईखे, अंतर नईखे! तहरा दुख दरद के, निरासा के, उहा पोह के, भरम के, कवनो कारण नईखे। हम तूँ सरबदा एक हईं, अलगाव दुराव के जगह नईखे! नित नवीन ब्रज बिहार में बिहरऽ!''

रधिका, कम्पमलिका, सुदेवी आ ललिता से कहली, ''भेंट भईल, कुछ कहल ना गईल त, भीतरे से सहल ना गईल ह आ आँख से रहल ना गईल ह त कंचुकी भींज गईल ह। ऊ कंचुकी दूनों हाथे गरलन हँ आ मुस्कुरा के ओठ प अंगुरी धईलन हँ त देह एकदम गनगना गईल ह, ओठ प ओठ धइलन ह त सऊँसे देह के झनझना गईल ह!'' ''चकचिहाईल आ ठगाईल रह गईलीं हँ। अपना कमल कुटी में समुचित आसन न। दे सकलीं हँ! हिरदय निछावर क के आँचर से अरघ ना दे सकलीं, ना समझ बन गईलीं हँ। कंचुकी के भीतर भीतर कुच कलश रहि गईलन स, मांगलिक रूप देबे में भुला गईलीं हँ। अब जब होने गोपी लोगिन भीरी चल गईलन त अपना करनी प शरम आवऽ ता? बाकिर ऊ तबहूँ निरास ना भईलन हँ, मुस्कुरा के मिललन हँ आ इचिको दुराव ना लागल ह, अस बुझाईल ह कि हमरे में गतरे-गतरे, पोरे-पोरे समाईल बाड़न, आ असालतन अझुराईल बाड़न! अकुताईलन ना बाड़न! भाग, पराह से डराईल बाड़न! पूरा नियराईल बाड़न''

''देखलीं ह, छिपल ना रहे, राधा प्रिय पुजारी पद में, राधा चरण विलोड़ित नजर से नजर टकरात रहे, बे तक ले ठटात ना रहे! प्रियतर बनल रहन! उनकर अलौकिक अनन्द रस सार लहरी हमरा अंग-अंग के भिंजावत रहे, बूड़ावत रहे। कटाक्ष के अमृत सिंचन से हमरा मन मिजाज के सींचावत रहे, पटावत रहे। भावामृत रस प्रवाह परिरम्भ रसोत्सव के अंगेया दे के बीजे करावत रहे! हम त चकचिहाईल रहीं, लजाईल रहीं!''

''उपासक के सम्पूर्ण पेयार उपास्य रूप हमरा में भी अनन्यता, चटपटापन, अतृप्ति, दीनता, अधीनता, जवरे बोखार के टीस जगावत रहे। क्रीड़ा कर्ता होके भी अभिलाषा पूरित रहन! शैयासीन होखे के उदार भावना विस्तरित रहे, सुललित चरणार विन्द के भूखाईल रहन बाकिर नीरस उपदेश खूब पियावत रहन!''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हम त प्रीतिवश एकदम असावधान रहीं। उनकरा प्रेमोत्सर्ग के हमरा उत्सर्ग से, चेष्टा से, तन, मन, प्रान के निछावरता के कवनो तुलना रहे, उनकर भाव मोह ना रहे, अचूक रहे, अमोघ रहे हमार अन्तर्दशा उनकरा सामने छिपल ना रहे, बाकिर बाग विदग्धता के हमार अभाव से ऊ परभावित रहन, रस लेत रहन!"

"ऊ समुझावत रहन, परतेक जीव परम आत्मा के अंशी ह, परम आत्मा पूरा हवन। हमरा तहरा में ओईसन दूरी नईखे, एकदम अनन्यता बा! अंशी से मिल गईला प ईहे होला जवन हमरा तहरा में हो गईल बा, एह से सोच के दर किनार करऽ! चिन्ता के पंजरा नईखे आवे देबे के?"

"तूँ हमार अन्तरंगा हऊ, अभिन्न हऊ। रसोपासना के धार हऊ, परान हऊ, दुनिया के जान हऊ, एह से सभ से महान हऊ, विचारवान हऊ, सभ के सहित साँच सरल अरमान हऊ!"

"हम उनकरा नजर में परेम निष्ठा के परमान हईं, उनकरा पेयार के पहिचान हईं, उनकरा आनन्द के आधार हईं आ उनकर सर्वाधिक विसवाशी अवरू जीवन के पूरा समाधान हईं!"

हमार मुँह बवा गईल, हम ताकते, निहारते, सुनते सम्हारते रह गईलीं! सर्व सिद्धि कहावते रह गईलीं!

सभ सखी लोगिन, गोपी लोगिन सोचऽ तारी जा, प्रियवर जी प्रिया जी से मन मना के एकान्त में बतिआवऽ तारे, बहलावऽ तारे, आ आपन वाग्विदग्ध बानी से उनकरा जियरा के लहराऽव तारे, गुदगुदावऽ तारे त जरूर से जरूर वृन्दावन के श्रेष्ठ आ सभ से नीमन लनामन्दिर में तीव्रतर कामोन्मत्त रति कला से चमत्कृत करे चलिहें आ हमनियों के रस सागर में बूड़इहें, सरावोर क के घनघोर संसार जनित आग के ताप शान्त करे के उपाय करिहें! सांसारिक कामाग्नि क जरली से जान बचइहें! हमनियों के भुलइहें ना। सौरत रस के आसव के खुमारी के खेयाल करिहें। अधर रस के शीतल बना के पूरऽ मिठास भरिहें! रस विहार में विहारी जी विहारी जी, जी जुड़ऽ इहें। प्रिया जी जवरे हमनियों के रसदार करिहें आ जिया के जरनी मेंटऽ इहें! मान के अनेक भंगी भंग करिहें! देखलीं हँ जा, उनकरा कटाक्ष आ आँख के चाल चल बिधर बतावत रहे, रस रंग के पाठ पढ़ावत रहे, चउअनी अठन्नी ना, उंतऽ सोरह आना के समूचा पाठ पढ़ावत रहे! सवईया ना सोझे अंगूठा घमूचा रटावत रहे। वृन्दावन के सीमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में सन्निविष्ट करिहें, भरोसा बा। भरोसा ढहे के सवाले नईखे! हमनियों के प्रेमोत्सर्ग के उनकरा पूरा पता बा, परिचय-पहिचान बा। हमनियों प ऊ आपन कोटि तन, कोटि मन आ कोटि परान पहिले लेखा निछावर करिहें, अपनुइहें, कहिहें, पुच करिहें, समुझिहें, समुझिइहें, सुतऽ इहें, बुतऽ इहें! आकुल-व्याकुल देख के विस्फारित नेत्र से जनिहें, जिअइहें!

उनकरा से भेंटऽइला प आजु श्रीकृष्णाराध्या राधा चकचिहाईल नईखी। बड़ी ईत्मीनान से बाड़ी, घबराइल नईखी, शान्त बाड़ी, समुझऽ तारी, थाहऽतारी, अवगाहऽतारी! आँख से, आँख के कोर से मोर अस नचावऽ तारी, भाव में बहावऽ तारी! मन में समावऽ तारी! बार-बार, घरी-घरी बिलमावऽ तारी! आगे बढ़े में ब्रेक लगावऽ तारी! 'के शव कहि न जाई का कहिए' के रूप देखा के दरससावऽ तारी!

रसानन्द के पूंजीभूत निकुंज में भौंरा गुंजन नईखन करत, सुन्दरातिसुन्दर ललित परिहास भाव भी एह धरी एकदम विलुप्त बा, आज वातावरण के गहराई अनन्तता के ओर लरकलबा, उहा-पोह नईखे, अधीरता अधियाईल बा, चपता निलाईल बा, मनुहारता जुड़ाईल बा!

वृषभानुजा श्यामसुन्दर के चेहरा प ताकत टिकल बाड़ी, मन के भीतरे समा के पढ़ऽ तारी, सभ बात विचार विवेक से कान देके समुझऽ तारी! तर्क वितर्क से दूरी बना के इचिको हिलत नईखी। जतिना बाड़ी ओतिने बाड़ी, खिलत नईखी! अईसन भी नईखे कि मिलत नईखी!

अनंग के रसोत्सव से प्रीतम श्यामसुन्दर के अदभूत सुधासन के आस्वादन में मन ही मन पुलकित, प्रफुलित रसपूरित रही बाकिर उनकर भाव भरल विचार बानी में भी ध्यानस्थ रही। विचार प्रसून माला से भी भूषित आवेष्टित होत जात रही। शान्ति भाव से आलोड़ित विलोड़ित रही। दर्शन चिन्तन के पराकाष्टा प पहुँच बनावत रही, श्यामसुन्दर के भाव सौन्दर्य से टकरात रही, उनकर निष्कर्ष प, निरनय प, आखिरी सोपान प चहुँपत रही। उनकरा साथ सम्बन्ध के दिव्य स्थिति तक प्राप्ति के सुखानुभूति में रत होत जात रही, जइसे सोरहो आना मत होत जात रही।

कम्पलिका, विशाखा, रंगा देवी, ललिता अउरी सखी लोगिन कुंज भवनी राधा के एक दिन के बात आ भंगिमा ईयाद करत रही जा। बड़ी इत्मीनान से कन्हइया कुंज भवन में बईठ के बाँसुरी में राग विलावल के राग छेड़ले रहन। प्रिया जी उनकरा चरणाविन्द में सट के परल रही। आँख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूंदले रही, बेसुध रही। ''उनकरा अंग-प्रत्यंग के संचालन से, भौं परिचालन, कटाक्ष पात, पद विन्यास आ हाव भाव कुटमित, बिबोक से हमनी के रंगारंग क्रीड़ा कौशल से अनन्दित रहीं जा,'' सखी लोगिन विचारत रही जा। प्रिया जी मद चंचल नयन से कोटि-कोटि चाँद के भरमावत रही सुकुमारता से शची के आ रति के निरन्तर ललचावत लजावत रही! हमनी के उनकरा प्रणय रस मयी निर्झारिनी में अपना से जइसे गोता लगावत रहीं जा। राधा केलि रस में गोता लगा के सराबोर रहीं जा! हमनी के मन में अनन्द से भरल रहे आ चाहत रहीं जा कि अईसहीं प्रिया जी के हरदम परसन्न देखत रहीं जा। रसिकवर जी से ढेर दिन के बाद प्रिया जी मिलल बाड़ी! प्रिया जी जवरे रसिकवर जी वृन्दावन के कुंज भवन में चल के मधुर-मधुर तान से, बंशी ध्वनि से, सुरत केलि के अनूठी रचना से, रस मगन आ अनन्द में बूड़ा दिहीते त रस के उदगार में, रस निचोड़े में आ ओह में बूड़की लगावे में हमनियों के असालतन रस सिक्त आ रस लिप्त हो जईतीं जा, सुध गँवा दिहितीं जा माजा आ जाईत!'' आपुस में बतियावत रही जा कि मधुर आ आधरस के प्रेम प्रफुल्लित केलि कुंज भवन में चतुराचितुर श्रीवर जी प्रेमिल प्रिया जी के साथ लता नियर लपटा जईतन त कुंज रन्ध्र से सादृश मजेदार शोभा निरख के हमनी के गदगद हो जईतीं जा, फजिर में प्रिया जी के रति केलि क्रीड़ा के ईयाद पार के लजवा दिहीतीं जा आ सराहना से सराबोर करत रहतीं जा। गोधूलि के समय जुगलवर विहार करत अनेकानेक रस क्रीड़ा में लीन होईते त हमनियों के रस के बाढ़ में नहात रहतीं जा आ ताना मार के दूनों जना जवरे गतरे गतरे भींजत रहतीं जा। प्रियवर जी मनमाना रस में बूड़ के जब प्रिया जी के अंग-अंग के शोभा आ कमल अस मुलायमियत के बरनन क के अघाये लगिते त उनकरा अनंग रंग के विलसित क्रीड़ा तरंग में हमनियों के तरंगगित हो जईतीं जा आ सरग सुख के अनुभव से हरमेशा भींजल रहतीं जा, ओईसने रस में सराबोर होखे खातिर हाथे हाथ भींजल रहतीं जा। ऊ अनन्द आ माजा हमनीं के जिनिगी भर विसूरतीं जा ना। ऊ भुलइबे ना करीत। अकथनीय अनन्द क चरचा हरदम चलत रहती आ जिनिगी आ जहान रंगीन बनल रहीत! सभे चारू ओर चिहाईल रहीत। हमनीं क सरग सुख में, मजेदार हाव-भाव में सदा-सर्वदा लवलीन रहतीं!

राधिका जी, रस लम्पट रसिकवर साथे राउर रस केलि चरचा सुन के हमनीं क रमन सेज प चहुँपा दिहितीं जा आ केलि क्रीड़ा में अलकावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुल जाईत, राउर आँख अनन्द में मूँद जाईत त हमनी के तत्पर चंचल हो के रसोत्सव में बूड़े खातिर सवाँर दिहितीं जा, फेनू सजा देतीं जा, बतिया के कबहुँ अनमना उदास ना होखे दिहितीं जा। पता ना जे ऊ माजा आई, कि ना, ऊ दिन फेनू वापिस आई कि ना, विधाता बाम होले कि सोझ रहले?

हमनीं के तऽ ओह दिन खातिर, ओह छन खातिर, ओह रस खातिर, ओह माजा खातिर ललायित बानीं जा, खखुआईल बानीं जा, बउआत बानीं जा, कउआत बानीं जा! "

"प्रबल काम संग्राम के धूरिया उड़ान तूफान से जब रसिक प्रिया गतरे – गतरे पसीना – पसीना हो के आकुल – व्याकुल हो जईहें त हमनी के बेनियाँ डुला के बयार करे के कब मोका मिली, ई नईखे बुझात, उनकरा केलि जुध के हरारत मिटावे के अब मिलबो करी कि ना, नईखे मालूम! हमनी के त निढाल हो जाईब जा, बेसबुर हो जाईब जा, कईसे धीरज रही? कईसे दिन कटी, कईसे रहब जा, का दिन देखे के बाँचल बा, जिनिगी जियान हो जाई, हमनी के झवान हो जाईब!"

रसिकवर जी, राधा प्राणेश्वर, रसिकलाल रस शिरोमनी, माधव समुझावऽ तारे, सिखावऽ तारे, जवना के आगे अब कवनो राह नईखे चहुँपावऽ तारन!

"राधे! दूरी बम बोलऽ ता, हमार तहार खिंचाव अडिग बा, अटल बा, अटूट बा, सटाव अजगूत बा! अबाध बा, अभेद बा, अलेख बा, अशेष बा, अनन्त बा! सभ जानऽ तारू, तबहुँ कहला बिना ठटात नईखे, बे कहले रहात नईखे! तूहीं हमार देह हऊ, हमार नेह हऊ, हमार गेह हऊ, तू हीं हमार मेह हऊ!"

"हमार आँख हऊ, कान हऊ, हाथ हऊ, गोड़ हऊ, माथ हऊ, पट हऊ, पीठ हऊ, बोली हमार मीठ हऊ! तूहीं हमार गात हऊ, बात हऊ, दिन हऊ, रात हऊ? हमार साज हऊ, सिंगार हऊ, कर निहार हऊ, वृन्दावन विहार हऊ, रमन रेती के इयार हऊ, कुंज – भवन के पेयार हऊ, जवानी के खुमार हऊ, जीवन आ जियरा के आधार हऊ!" हास हऊ, परिहास हऊ, सुमन के सुबास हऊ, हरदम के हहास हऊ, कल्पना के कयास हऊ, परभात के परकाश हऊ! फूल के पराग हऊ, कल्पना के पराग हऊ, सुनरपन में बेदाग हऊ, सभ करे भाग हऊ, कान्हा के अनुराग हऊ, राग के विहाग हऊ! माँग के सुहाग हऊ!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

''राधिका! अब त कवनो बात नईखे, विचार नईखे, अउर कवनो खेयाल नईखे! हमरा-तहरा बीचे देवाल नईखे, दबाव नइखे, दरार नईखे, अनजान, अनचिन्ह, अबूझ सवाल नईखे! कवनो बवाल नईखे, जंजाल नईखे, आ कवनो मलाल नईखे!''

''देखत रहिहऽ, निरेखत रहिहऽ, रहत रहिहऽ, सहत रहिहऽ, सीखत रहिहऽ! मिलत रहिहऽ, खुलत रहिहऽ, खिलत रहिहऽ! जियत रहिहऽ, जागत रहिहऽ, उलुटा पुलुटा से भागत रहिहऽ। साजत रहिहऽ, सँवारत रहिहऽ! कुछ-कुछ सिखावत रहिहऽ, मन के मनावत रहिहऽ, रसे-रसे दबावत रहिहऽ, सखी लोगिन के समुझावत रहिहऽ समय-असमय सुनावत रहिहऽ, साथ निभावत रहिहऽ। मन के मरोरत रहिहऽ, लिटी घीव में चभोरत रहिहऽ!''

राधिका के दूनों हाथ धईलन, आँख में आँख मिलवलन, मिललन, खिललन, अरियतलन!

प्रिया जी रसे-रसे डगर धईली, तनी पाँछे फिर के तकली, चले लगली, नापे लगली, ताके लगली, चाँपे लगली, हाँफे लगली, काँखे लगली!

***

(16)

राधा कुंज भवनी हो गईली! आना-जाना, रहना, सहना, सोना, जागना, सोचना समझना, रोना-धोना, सुनना, सीखना, करेजा में सहेजना सभ ओहिजे सरके लागल, दिन, महीना, साल भागे लागल, सखी लोगिन के, गोपी लोगिन के जमवड़ा लागे लागल। उनकर मौन साधना चले लागल!

बात ओरा गईल, विचार बोता गईल! अब राधा से कुछ कहात नईखे। कुछुओ, कवनों हालत में बोलात नईखे! अउर कुछुओ सोहात नईखे? देह से, हाथ से कुछुओ होवात नईखे!

मन के बात कुछ नईखे बुझात, अंदाज अनजान हो जाता, मुँह बन हो जाता। सखी लोग, गोपी लोग आ के बईठऽता, बोलऽ तारी जा, बतियावऽ तारी जा? सभ बात ईयाद पारऽ तारी जा, चरचा करऽ तारी जा। दिन भर बातकही चलऽ ता, बतकही ओरात नईखे, कथा-कहनी सेरात नईखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधिका जी सुनऽ तारी, समुझऽ तारी, बूझऽ तारी, टुकुर-टुकुर ताकऽ तारी, अगल-बगल झाँकऽ तारी! कबो-कबो हाँफऽ तारी! उनकर समझावला सीखवला के लाज राखऽ तारी! हरदम, चार पहर आठ घरी ताकऽ तारी, साख राखऽ तारी, मन तुरंग के हाँकऽ तारी! उठऽ तारी, बईठऽ तारी! भीतरे भाव के रसरी अईठऽ तारी, कबो-कबो मींजऽ तारी, भीतरे भीतरे भींजऽ तारी!

राधिका जी सामान्य साधारन कपड़ा पहिन के कुंज भवन में ओठंघल बाड़ी। शान्त, सरल, विनम्र चेहरा, मुस्कराहट के भाग पराह ले ले बा! चल बिधर आँख आ कटाक्ष के त कहिए से लूती लेले बा, ओह लोगिन केत एने फटकहुँ के बेंवत नईखे, सभे भ्रू, भौं, भंगिमा अपना नईहर पराईल लोगिन!

आठो सखी लोगिन आ खास तौर से आजु चन्द्रावली सखी फजी रहीं से आईल बाड़ी। समुझावऽ तारी जा,

"आपन तीन पाढ़ अवली बैंगनी साड़ी आ छव अंगुरी के तोई अवली झूला पहिर के रहऽ। अईसे नीमन नइखू लागत। ई देख के हमनी के रोवाई आवे लागता! पान कसईली कचरे के ना कहब जा! मार्केट ठंढ़ा हो गईल त लूगा झूला सरिआवे के का ना कहब जा। सतुआ नून प काम चली, कवनो फेर नइखे! सातो रस के माँगऽ ता? गूहो मूत क के जिनिगी जोराई!"

" 'रा' माने देवे के आ 'धा' माने होला निरबान ना तऽ सेवा। सखी, तहरा जिनिगी भर दुनिया के रूप, रंग, रस दे के सराबोर कईले रहे के बा! रसिक सिरोमनि के तूँ प्रानाधिका हऊ! रसिक प्रिया हऊ, सरब लोकेश्वरी हऊ, रासवासिनी हऊ, रास रासेश्वरी हऊ? सभ रासलीला तहरे सुनरपन के परकास ह! तूँ कृष्ण स्वरूपिनी, कृष्णप्रिया, कृष्णातमा, कृष्णवामांगा, परमानन्द रूपिनी, सतीसिरोमनी, रसिकेश्वरी हऊ! सतचन्दनिभानना, चन्द्रकान्ता हऊ!" सखी, देह, परान, बुद्धि, इन्द्री, अभिलाषा, आसक्ति, आशा, तृष्णा, कामना, माया, मोह, ममता, प्रेरना तूहीं हऊ! अपना के भूल मत, जानऽ, पहिचानऽ! कन्हैया के प्रियतमा हऊ, प्रेयसी हऊ, उनकरा के ईयाद करत रहऽ, सहत रहऽ, सुनऽ त रहऽ समुझत रहऽ? दीनता के दूर करऽ, जगत आहला दिनी हऊ त हहरऽ मत, हहास बनले रहऽ, माधव में मन बनवले रहऽ! तूँ त माधव में दिन रात रत रहलू, लागल रहलू। तूँ त उनकर आत्मा हऊ, दिल हऊ, दिमाग हऊ, करेजा हऊ! तूँ त उनकरा के अतिना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हद तूर के सटल बाड़ू कि एको छन उनकरा बिना जी ना सकऽ? उनकर जीवन हऊ, उनुकर परान हऊ! तहरा बिना उहो एको छन अलगाव दुराव सह ना सकस स! तहरा के सभ बात कहले होइहें, तहरा जिए के राह आ उपाय जरूर बतवले होइहें! ऊ तऽ सभ दर्शन, चिन्ता रहित भेदाभेद के आधार आ अर्थ सभके के समुझइबे कइलन हँ। सभ बतऽइबे कईलन ह! बतावे के कुछ छोड़लन ह ना! निराकार रूप में, हमरा में तहरा में सभ के में सभ जीव जन्तु में ऊ वर्तमान बाड़े। शक्तिमान से शक्ति भिन्न नईखी। जवन ऊ हवन तवने तूँ हऊ? इचिको भर तूँ अलग नइखू। तूँ कन्हइया में पहिल लेखा लागल रहऽ, उनकरो इयाद करत रहऽ आ मन में अनुराग आ उनकरा पेयार से, परम पराग से परिपूर्ण रहऽ, बूड़त रहऽ, धीरज से उनके में रमत रहऽ, झमत रहऽ!

राधिका जी, कुछ बोलत ना रही आ तनिको डोलत ना रही। अइसन लागत रहे कि उनकरा नियरे बाड़ी, उनका के ताकऽ तारी, छन–छन भीतरे झाँकऽ तारी, अउरी कवनो भाव के, विचार के हरदम हाँकऽ तारी, धीरज के धूर फाँकऽ तारी!

वृन्दावन से कुंज भवन से उनकरा जवरे दुअरिका जाये के इचिको नईखी सोचत आ कुछुओ सपनो में नईखी खोजत! जिनिगी के हर मोड़ प, हर छोर प उनकरा पावऽ तारी, जिनिगी के मड़ई सचहुँ छावऽ तारी! कुंज भवन के अलावे माधव के कहीं अलग संगति के चाह नईखे, चिन्ता नईखे। लालसा, जड़ता, कृशता, जागरन, उद्वेग, व्यग्रता, व्याधि, उन्माद, मोह आदि से दूर होके कान्हा के दर्शन करत रहऽ तारी, जईसे नियरे रहऽ तारी! भोग प्रपंच भाव के एकदम तेयाग कर चुकल बाड़ी। सर्वस तेयाग भाव साफ लउकऽता। विलास सुख के आकंक्षा से आगे बढ़ के राग–द्वेष, काम, क्रोध आ दर्प, अभिमान से ऊपर चहुँप गईल बाड़ी, एकरा आगे कवनो रहा राहता के बात नईखे बतिआवे के! भाषा के अनिवार्यता के लतार देले बाड़ी। चिन्ता आ चाह मेट गईल। मोह के बोखार परा गईल, हवा हो गईल। अपने प्रेम आ प्रेमास्पद बन गईली! साध के साधना आ कामना के लोप हो गईल। सभ तेयाग हो गईल त प्रेम के समर्पण तक, पराकाष्ठा तक पहुँच बन गईल! निधड़क बोली बन हो गईल। आँख फयललबन हो गईल। टिकुली, बिन्दी, चोली सारी के सोच सियार हो गईल। माधो के उपऽदर के लोप हो गईल त चोली सारी के दरकल दरक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल ऊ कथा कहानी बन गईल। बावन वीर दिल में समा गईलन! अब देह पिसान अस पिसाईल सपना हो गईल। सभे जिनिगी के अगिला मोड़ से आगे बढ़ गईल। अब का होई, का करे के बा, केहू कहनिहार नईखे। मगनी के मिरजई के कवनो मोल ना रह गईल। के जोरन दी, केकर होई घीव, झमेला के समापन हो गईल। मन में शूल नइईखे उठत, कुल फूल हो गईल। हाड़ में जाड़ नईखे समात, दाढ़ी धरे के आ बाँह धरे के समसेया अपने ओरा गईल। अब जर-मर के जीव राखे के खेयाल खतम हो गईल। ना हँसी-मुस्कान बा, ना फिफिहिरी बने के बा। जे ना कहे के से चट से कह देवे अवला, जे ना करे के से चट-पट कर देवे अवला भीतरे बस गईलन त पगार फाने के बाते बोता गईल।

अब प्रिया जी के, रसिकेश्वरी, रासेश्वरी के रतिया खा छतिया में बतिया नईखे जरत! चल बिघर में चिन्ता नईखे। अब पगहा नईखे धरावे के, खूँटा प जमल रहे के बा, चेरिया के छेरिया नईखे बने के। आस टूट गईल, कहियो साँस टँगा जाई! ना तीन के पहाड़ा पढ़े के बा आ, ना तेरह के। पहथन घीव नईखे खाये के, पहलवान नईखे बने के। परिरंभन के परकार नईखे खोजे के, फुफुती बन्हनवाँ प हाथ नईखे धरे के, काहे कि रेशमी चीर नईखे खिंचाये के! कुंज भवनी राधा चुप बाड़ी! बैंगनी लहंगा निहारऽ तारी! सघन अनुराग रस के सार सरोवर के मुख कमल खिलल नईखे! मालती पुष्प से वेणी गुन्थन खातिर ललितादिक सखी घेरले बाड़ी!

हबेली, नगरी, ठहरे ठहरे, साँवरिया ढूँढऽतारी!

★★★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचन्द्र प्रसाद सिंह 'निठुर'

ग्राम – हबेलीपुर (नगरी), भोजपुर (बिहार) 802223

जन्म-तिथि – शिवरात्रि, मार्गशीर्ष, 1857 शके।

प्रवेशिका – 1954 ई॰ उच्चतर +2 विद्यालय, पीरो, भोजपुर

बी॰ए॰ (हिन्दी प्रतिष्ठा), जैन कॉलेज, आरा, 1958

एम॰ए॰ (हिन्दी), पटना विश्वविद्यालय, 1960

पुस्तकालय विज्ञान, पटना, 1961 डिस्टिंकशन

एम॰एड॰, पटना विश्वविद्यालय, 1966

'ग्राम-वाणी' पाक्षिक पत्रिका, सम्पादन, 1964

'ग्राम-गौरव', पाक्षिक पत्रिका, सम्पादन 1965 से

विशिष्ट प्रशिक्षण (हिन्दी) एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰, भुवनेश्वर, 1972

6 मार्च 1961 से 1998 तक 37 वर्ष, शैक्षणिक सेवा।

प्रधान सचिव, शाहाबाद, जिला मा॰ शिक्षक संघ, 1969 से 1974

अध्यक्ष, भोजपुर जिला मा॰ शिक्षक संघ, 1992 से 1997

बिहार प्रांतीय भोजपुरी कवि सम्मेलन, पीरो, प्रधान सचिव, 1966

अध्यक्ष, साहित्य प्रेरणा परिषद्, भोजपुर (आरा)

'मुनवाँ का महुआ' (धारावाहिक), उपन्यास, 1965

'विश्वास नहीं होता' कहानी संग्रह (हिन्दी), 1968

'खोलऽतानीं' भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास 2014

उपन्यासकार आर॰सी॰ 'निठुर' जी एह उपन्यास में समाज के चीलर के चह तूर देले बानीं कि विश्वास नइखे होत इचिको।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Janaki Prakashan
Publishers & Distributors
Ashok Raj Path, Chauhatta
Patna-800 004 (Bihar)
Mob. : 09430246278, 09334062206
Ph. : 0612-2355310 (R)
www.janakiprakashan.com
e-mail : janakiprakashan@gmail.com

ISBN: 978-93-84767-27-3

PATSAN GRAPHICS, 09334117729

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.